रॉबिन शर्मा

DISCOVER YOUR DESTINY

किस्मत की खोज में...

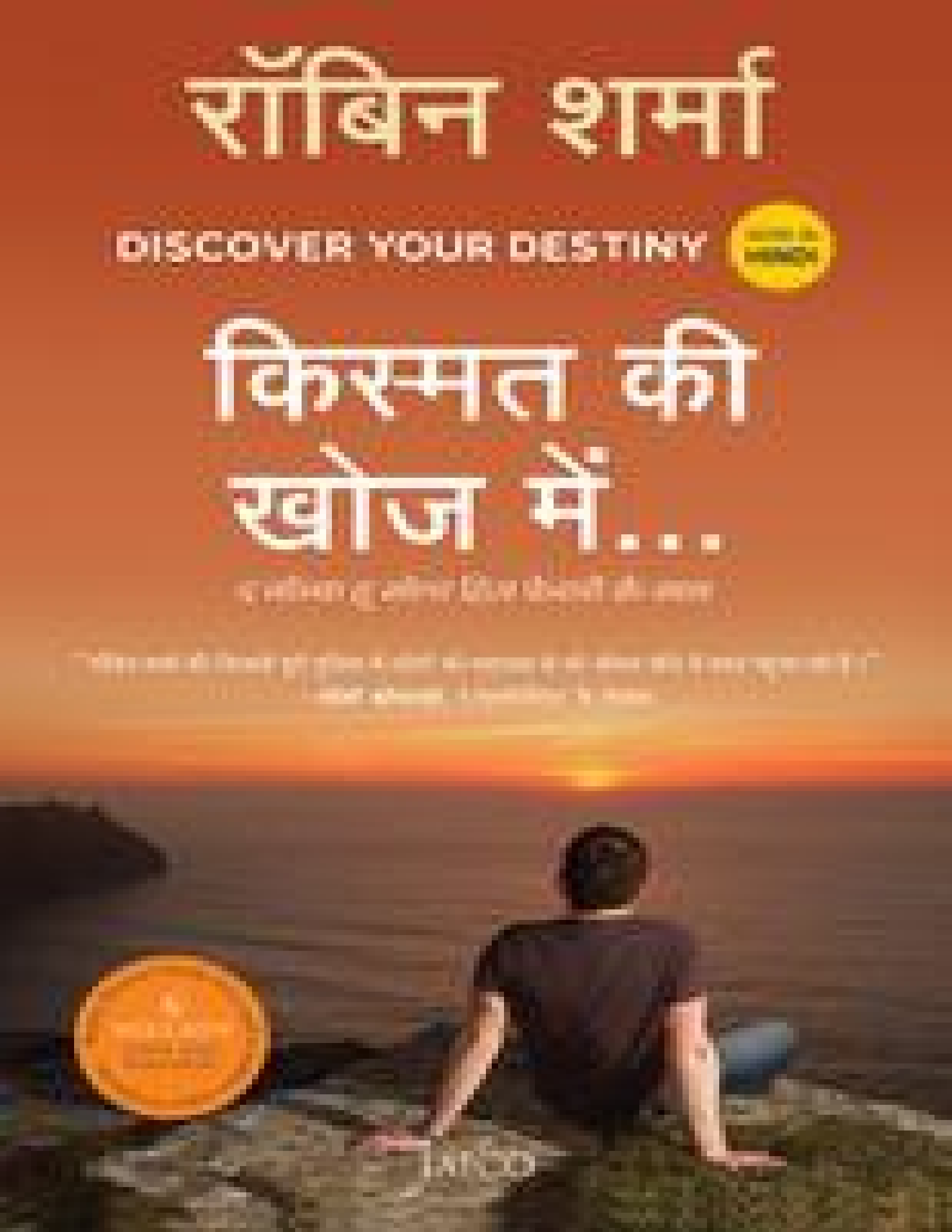

VISIT…

‘संन्यासी जिसने अपनी संपत्ति बेच दी’ के लिए मिली प्रशंसा

एक मंत्रमुग्ध कर देने वाली कथा, जो आनंद देने के साथ-साथ शिक्षा भी प्रदान करती है।

पॉलो कोएल्हो, द ऍल्केमिस्ट के लेखक

इसे एक आप खलबली मचा देने वाली सुंदर पुस्तक से कम नहीं मान सकते। यह पुस्तक आपके जीवन को धन्य कर देगी।

मार्क विक्टर हैंसन, चिकन सूप फॉर द सोल के सह-लेखक।

रॉबिन शर्मा ने मंत्रमुग्ध कर देने वाली एक ऐसी कहानी लिखी है, जिसमें शामिल किए गए साधन, जीवन के सादे दर्शन में भी रूपांतरण ला सकते हैं। एक आनंददायक पुस्तक, जो आपके जीवन को सदा के लिए बदल देगी।

एलन सेंट जेम्स,
सिंपलीफाई योअर लाइफ और इनर सिंपलीसिटी के लेखक।

यह एक रोचक, आकर्षक व सुंदर रोमांच है जो व्यक्तिगत विकास, व्यक्तिगत प्रभावोत्पादकता तथा व्यक्तिगत प्रसन्नता के क्षेत्र में ले जाता है। इसमें विवेक का ऐसा खज़ाना समाया है जो प्रत्येक व्यक्ति के जीवन को समृद्ध बना सकता है, उसे संवार सकता है।

ब्रायन ट्रैसी, मैक्सीमम अचीवमेंट के लेखक

रॉबिन एस. शर्मा के पास हमारे लिए एक विशेष संदेश है – एक ऐसा संदेश जो हमारे जीवन को बदल सकता है। उन्होंने इस आपा-धापी से भरे युग में, व्यक्तिगत संपूर्णता के लिए एक अनूठे प्रकार की नोटबुक तैयार की है।

स्कॉट डीगार्मो, पूर्व प्रकाशक, सक्सेस मैगज़ीन

..... जीवन के बड़े प्रश्नों पर प्रकाश डालती है।

द एडमंटन जर्नल

संन्यासी जिसने अपनी संपत्ति बेच दी एक सामंजस्यपूर्ण, उपयोगी तथा निश्चित रूप से पठनीय पुस्तक है...यह निश्चित रूप से पाठकों को चूहा दौड़ का सामना करने में मदद कर सकती है।

द किंग्सटन विग-स्टैंडर्ड

एक अद्‌भुत पुस्तक। रॉबिन एस. शर्मा ही अगले ओग मैंडीनो हैं।

डॉटी वाल्टर्स, स्पीक एंड ग्रो रिच के लेखक

....सादगी से भरा विवेक, जिससे कोई भी लाभ उठा सकता है।

द कैलगेरी हेराल्ड

इस पुस्तक को व्यक्तिगत विकास के लिए 'द हैल्दी' बारबर कह सकते हैं। इसमें प्रमुख अवधारणाओं से जुड़े गहरी पहुंच वाले संदेश शामिल किए गए हैं जो हमारे दिन-प्रतिदिन के जीवन में महान संतुलन, नियंत्रण तथा प्रभावोत्पादकता लाएंगे।

इंवेस्टमेंट एक्जीक्यूटिव

....एक खज़ाना.... सच्ची सफलता और प्रसन्नता के लिए एक सुंदर व शक्तिशाली फार्मूला। रॉबिन एस. शर्मा ने युगों के इस विवेक को संग्रहित किया और आज के कोलाहलपूर्ण युग के लिए प्रासंगिक बना दिया। मैं इसे पूरा पढ़े बिना रख नहीं सका।

जो टे, नेवर फीयर, नेवर क्विट के लेखक

...अपनी संभावनाओं तक पहुंचने के लिए बने सादे नियम....

द हेलफैक्स डेली न्यूज

एक अद्‌भुत कहानी जिसके पाठ, आपके जीवन को भरपूर बना सकते हैं।

केन वेगोत्सकी, द अल्टीमेट पावर के लेखक

एक अद्‌भुत रूप से रची गई नीतिकथा जो किसी के भी जीवन की गुणवत्ता में सुधार के लिए सादे किंतु आश्चर्यजनक रूप से शक्तिशाली उपाय सुझाती है। मैं अपने सभी ग्राहकों को सुझाव दूंगा कि वे इस अनमोल पुस्तक को अवश्य पढ़ें।

जॉर्ज विलियम्स, प्रेजीडेंट, करात कंसल्टिंग इंटरनेशनल

रॉबिन शर्मा आध्यात्मिक पथ पर चलने के साथ-साथ व्यक्तिगत संपूर्णता का वरदान भी देते हैं।

द ओटावा सिटीजन

रॉबिन अतीत और वर्तमान की कथाओं को बहुत ही सुंदर तरीके से पिरो कर पेश करते हैं। इसमें अपने-आप करने वाले कुछ अभ्यास तथा चरणों के अनुसार दिए गए उपाय व्यक्तिगत उपलब्धि में वृद्धि करने में सहायक हैं। सफलता के रहस्यों में शारीरिक फिटनेस तथा मानसिक सहजता शामिल है। रॉबिन शर्मा का संदेश इतना शक्तिशाली है कि यह एक लेज़र बीम की तरह काम करता है। उनके शब्द जादुई हैं।

द हिंदू

रॉबिन शर्मा के सुपर संप्रेषण कौशल ने उन्हें दुनिया के सफल उत्कृष्ट चिंतकों में ला खड़ा किया है, जो व्यवसाय तथा जीवन में नेतृत्व पर बहुत सुंदर विचार रखते हैं।

द टाइम्स ऑफ इंडिया

प्रत्येक व्यक्ति एक नेता है..काम में नया नेतृत्व दिखाने से आप और अधिक मान तथा काम का सकारात्मक अनुभव पाएंगे। रॉबिन मानते हैं कि जीवन के हर पहलू में संतुलन सधा होना चाहिए। उनकी पुस्तकें सभी प्रमुख लीग स्पोर्ट्स स्टार तथा अनेक हॉलीवुड हस्तियों द्वारा भी सराही जाती हैं।

द इकनोमिक्स टाइम्स

उनके सेमीनार सभी लोगों को मोहते हैं जिनमें एम.डी. से ले कर एक्जीक्यूटिव तथा निर्देशकों से ले कर फिल्मस्टार तक सब शामिल हैं। दीपक चोपड़ा एक आध्यात्मिक लेखक हैं जबकि रॉबिन कहीं अधिक व्यावाहरिक हैं और दर्शन को सादा बनाने की चेष्टा करते हैं।

द इंडियन एक्सप्रेस

रॉबिन शर्मा आज एक अंतर्राष्ट्रीय बेस्टसेलर लेखक हैं, एक ऐसा नाम जो हर जगह पहचाना जा चुका है।

सिटी इंडियन एक्सप्रेस

एक खुशनुमा व्यक्तित्व, मुस्कुराते चेहरे तथा व्यक्तिगत संपर्क बनाने की योग्यता के साथ यह देखना कठिन नहीं था कि रॉबिन एक प्रशिक्षण गुरू के रूप में कैसे सामने आए, एक ऐसा नाम जिसे वे मानने से इंकार करते हैं।

द फ्री प्रेस जर्नल

यह पुस्तक एक सफल वकील की सादी किंतु प्रेरक कथा है, जो एक भरपूर जीवन जीने के लिए संघर्ष कर रहा है। उसके भीतर एक नया अर्थ, प्रसन्नता व संतुष्टि पाने की गहरी ललक है।

डीएनए

रॉबिन भी उसी तरह की सकारात्मक ऊर्जा से भरपूर हैं, जो उनकी पुस्तकों से झलकती है, वे व्यवसाय तथा आत्म–विकास दोनों के लिए ही जुनून रखते हैं। रॉबिन मानते हैं कि उनके अनुभवों ने अनेक लोगों की मदद की है, खास तौर पर उनकी जिनके लिए वे कार्पोरेट सत्र चलाते हैं।

द एशियन एज

रॉबिन से भेंट करने के बाद व्यक्ति केवल यही सोचते हुए वापिस आ सकता है कि यह व्यक्ति एक जीनियस है।

डेक्कन हेराल्ड

उल्लेखनीय आत्म-विकास गुरू, रॉबिन शर्मा की पुस्तकों को अनेक व्यक्तियों ने मान्यता दी है, जिनमें भूतपूर्व इजरायली प्रधानमंत्री तथा नोबल पुरस्कार विजेता, सीमोन पीरेस, मिशेल योह तथा रिकी माटिर्न आदि विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। विजय टाइम्स

शर्मा अपने पाठकों का प्रबोध की ओर मार्गदर्शन करते हैं।

द क्रॉनीकल हेराल्ड

वे प्रेरक वक्ताओं के दायरे में एक जाना-माना नाम हैं परंतु अपने-आपको गुरू कहलवाना पसंद नहीं करते। इसी से पता चलता है कि एक कार्पोरेट कोच के रूप में, उनका नाम उन भारतीय नेताओं में क्यों लिया जाता है, जो एक विश्वस्तरीय संगठन को चलाने की योग्यता व विज़न के लिए जाने जाते हैं।

द न्यू इंडियन एक्सप्रेस

लीडरशिप विज़डम फ्रॉम द मॉन्क हू सोल्ड हिज़ फेरारी के लिए प्रशंसा

साल की सबसे बेहतरीन व्यावसायिक पुस्तकों में से एक..। प्रॉफिट मैगज़ीन।

बहुत ही ज्ञानवर्द्धक, पढ़ने में आसान तथा उपयोगी...हमने अपनी प्रबंधन टीम तथा स्टोर ऑपरेटर्स को भी इसकी प्रतियां बांटी हैं। इसकी फीडबैक बहुत ही सकारात्मक रही है।

डेविड ब्लूम, सीईओ, शॉपर्स ड्रग मार्ट

रॉबिन शर्मा बहुत ही स्पष्ट व सादे तरीके से, तनावपूर्ण नेतृत्व मसलों के लिए शक्तिशाली समाधान सुझाते हैं। व्यावसायिक लोग इस समय कई तरह की समस्याओं से घिरे हैं और यह उनके लिए ताज़ी हवा के झोंके के समान है।

इआन टर्नर, प्रबंधक, सेलेस्टिका लर्निंग सेंटर

यह पुस्तक साधारण ज्ञान तथा विवेक के लिए किसी सोने की खान से कम नहीं है।

डीन लैरी टैप, रिचर्ड आइवी स्कूल ऑफ बिजनेस,
यूनीवर्सिटी ऑफ वेस्टर्न ओंटेरियो

एक ऐसी पुस्तक, जो किसी भी व्यवसायी को प्रभावी रूप से जीने के लिए नेतृत्व प्रदान करेगी।

जिम ओ नील, डायरेक्टर ऑफ ऑपरेशन्स,

डिस्ट्रिक्ट सेल्स विभाग, लंदन लाइफ

मौंक व्यवसाय में संतुलन लाने के लिए उपाय सुझाते हैं..पुस्तक कारगर है।

द टोरंटो स्टार

लीडरशिप विज़डम फ्रॉम द मॉन्क हू सोल्ड हिज़ फेरारी बेस्टसेलर सूची में अपना नाम शिखर तक ले जा रही है।

इंवेस्टमेंट एक्जीक्यूटिव

शर्मा का मिशन यही है कि पाठक को एक विज़नरी नेता बनने के लिए गहरी समझ प्रदान की जाए, उनके व्यवसाय को रूपांतरित करने में मदद की जाए ताकि वह इस परिवर्तनशील युग में भी फल–फूल सके।

सेल्स प्रमोशन मैगज़ीन

शर्मा पश्चिम तथा पूर्व के महान दार्शनिकों की महान प्रज्ञा का मेल करते हुए, उसे व्यावसायिक जगत पर लागू करते हैं।

द लिबरल

शर्मा पिछले मास्टरों द्वारा प्रयोग में लाए गए उपायों को अमल में लाते हुए प्रकाश डालते हैं कि हम उच्च–तकनीकी तथा तेज़ी से बदल रहे संसार के तनावों से कैसे जूझ सकते हैं।

द रेड डियर एडवोकेट

किस्मत की खोज में...

द मॉन्क हू सोल्ड हिज़ फेरारी के साथ

DISCOVER YOUR DESTINY

रॉबिन शर्मा

जयको पब्लिशिंग हाउस

अहमदाबाद बेंगलोर भोपाल भुबनेस्वर चेन्नई
दिल्ली हैदराबाद कोलकाता लखनऊ मुम्बई

प्रकाशक
जयको पब्लिशिंग हाऊस
ए-2 जश चेंबर्स, 7-ए सर फिरोजशहा महेता रोड
फोर्ट, मुंबई – 400 001
jaicopub@jaicobooks.com
www.jaicobooks.com

© रॉबिन शर्मा

हारपर कालिन्स पब्लिशर्स लिमिटेड,
टोरंटो, कनाडा के सहयोग से

DISCOVER YOUR DESTINY
किस्मत की खोज में...
ISBN 978-81-8495-754-9

अनुवाद: रचना भोला 'यामिनी'

पहला जयको संस्करण: 2015

बिना प्रकाशक की लिखित अनुमति के इस पुस्तक का कोई भी भाग, किसी भी प्रकार से इस्तेमाल नहीं किया जा सकता, न कॉपी कराई जा सकती है, न रिकार्डिंग और न ही कम्प्यूटर या किसी अन्य माध्यम से स्टोर किया जा सकता है।

यह पुस्तक उन जिज्ञासुओं, उन वीर आत्माओं को समर्पित है जिनमें भीड़ से अलग हट कर, अपने घर तक वापिस जाने का साहस है, जिसे प्रामाणिकता कहते हैं।

आपका जागृत होने और सच्ची शक्ति के साथ जीने का संकल्प अदम्य हो सके। आपके जीवन में अभी जिन पाठों को प्रकट होना है, वे कोमलता के साथ सम्मुख आएं। आपकी आत्मा शीघ्र ही अंधकारमयी रात्रियों से बाहर आ जाए और आप इतना चमकें कि आपके अंतिम दिनों में, सभी यही कहें, आह! ऐसा कोई था, जिसने जीवन को भरपूर व संपूर्ण रूप से जीया।

विषय सूची

आभार

रॉबिन शर्मा की ओर से एक परिचय

1. एक आध्यात्मिक आपातकाल

2. जिज्ञासु व गुरू की भेंट

3. जिज्ञासु जीवन की सच्ची पुकार व नियति के छिपे अर्थ को सीखता है

4. जिज्ञासु आत्म–विश्वासघात के अपराध व जंजीरों से मुक्त होने का उपाय सीखता है।

5. जिज्ञासु मनुष्य द्वारा किए जा सकने वाले एकमात्र चुनाव को तलाशता है।

6. जिज्ञासु द्वारा विस्मय तथा संभावना में प्रवेश

7. जिज्ञासु गुरूओं से निर्देश पाता है।

8. छात्र रूपांतरण द्वारा स्वयं को नए सिरे से गढ़ता है।

9. जिज्ञासु की परीक्षा ली जाती है।

10. जिज्ञासु जाग्रत हो उठाता है।

आत्म–जागरण के सात चरण

पांच नियमित श्रद्धापूर्ण कर्म

रॉबिन शर्मा के साथ निजी कोचिंग सेवाएं

रॉबिन शर्मा के विषय में

आभार

मैं बहुत ही सौभाग्यशाली हूं कि मुझे जीवन में बहुत ही असाधारण लोगों के साथ रहने का अवसर प्राप्त हुआ। उनके बिना, मेरे लिए वह सब करना संभव न हो पाता, जो मैं कर रहा हूं और दूसरे लोगों को उनके उच्चतम जीवन तक जाने में सहायता देने का मिशन भी कभी पूरा न हो पाता। मैं उन सभी के प्रति हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करता हूं, जिन्होंने मेरे विचारों को मूर्त रूप देने, बड़े सपने देखने का प्रोत्साहन देने और मेरे संदेश के प्रचार-प्रसार में सहायता की।

मैं शर्मा लीडरशिप इंटरनेशनल में अपने दल को विशेष रूप से धन्यवाद देना चाहूंगा। विशेष रूप से, मेरी अद्‌भुत कार्यकारी सहायिका मारी विटन; अल मोसकारडेली, जो मेरे अनेक कामों में सहायक हैं; और मैरनी बॅलेंन, जिनकी उमंग व जोश मुझे सदा प्रेरित करते हैं।

मेरे लिए हार्पर कॉलिन्स की पूरी टीम के प्रति आभार प्रकट करना भी बहुत महत्व रखता है, जो मेरे काम में बहुत ही सहयोगी रही है। मैं आइरिस टुफोल्मे, डेविड कैंट, अक्का जैंनसन, केविन हैन्सन, नोले जिट्‌जर, लीसा जारिज़की, मार्था वाटसन, लॉयड कैली, डेविड मिलर, क्रिस्टीन कोक्रेन, माईकेल कॉरनेल, नील एरिकसन, एलन जोंस व इयान मुर्रे के साथ एकाउंट प्रतिनिधियों को भी धन्यवाद देना चाहता हूं जिन्होंने, द मौंक हू सोल्ड हिज़ फरारी, पुस्तक श्रृंखला की प्रत्येक पुस्तक को मेरे अनमोल पाठकों तक पहुंचाने में सहायता प्रदान की।

मैं अपने संपादक निकोल लैंगलुईस के उल्लेखनीय कार्य के लिए भी धन्यवाद देना चाहता हूं, जो आरंभ से ही मेरे साथ जुड़े हुए हैं। आपके साथ हर अवसर पर कार्य करना अपने-आप वाकई आनंददायक रहा। निःसंदेह मुझे शर्मा लीडरशिप इंटरनेशनल के कार्पोरेट ग्राहकों का भी धन्यवाद करना चाहिए, जिन्होंने मुझे प्रबंधन परामर्शदाता, एक्जीक़्यूटिव कोच तथा प्रमुख वक्ता के रूप में अपने कर्मचारियों के साथ नेतृत्व, सर्वोत्कृष्ट प्रदर्शन तथा आत्मसंयम पर अपने विचार बांटने का सुअवसर प्रदान किया। मैं यह भी कहना चाहूंगा कि मैं अपने पाठकों से मिले सहयोग के कारण भी बहुत सौभाग्यशाली अनुभव कर रहा हूं। मैंने जो भी किया, अपनी पुस्तकों के पाठकों के लिए किया और मैं आपमें से प्रत्येक व्यक्ति के प्रति अपना हार्दिक आभार प्रकट करता हूं क्योंकि आप सबने मुझे अपना अप्रतिम विश्वास सौंपा और मुझ पर अपना भरोसा जताया। धन्यवाद, आपने मुझे मेरी नियति जीने का अवसर प्रदान किया।

मेरे परिवार ने मुझे पहले दिन से ही प्रोत्साहित किया है। तब मेरे पास स्वयं प्रकाशित की हुई एक किताब और कई बंद दरवाजों के सिवा कुछ नहीं था। उन्होंने मुझे बुनियादी प्रेरणा के साथ-साथ अविस्मरणीय सहयोग प्रदान किया। मैं सौभाग्यशाली हूं कि मैंने ऐसे माता-पिता पाए, जिन्होंने अपने विवेक तथा दयालुता के बल पर मुझे ऐसा आकार दिया, जिसे मैं

शब्दों में प्रकट नहीं कर सकता। असाधारण कोटि के मनुष्य, मेरे भईया संजय तथा उनकी पत्नी सूसॅन, जो कि एक अद्भुत महिला हैं; उनका भी धन्यवाद करना चाहूंगा। उनके दो बच्चे नील और इवान मेरे जीवन में जो उपहार ले कर आए हैं, भला मैं उसे कैसे भुला सकता हूं। मेरी प्रिया नीना के लिए विशेष धन्यवाद। तुम मेरे जीवन में जितना भी प्रेम व सौभाग्य लाई हो, उसके लिए आभार! और अंत में मैं अपने दो अद्भुत बच्चों कोल्बी व बियांका का भी आभार प्रकट करना चाहूंगा, जिन्होंने मुझे निःस्वार्थ प्रेम, असीम रचनाशीलता तथा निष्कपट आनंद के मायने समझाए। तुम दोनों ही मेरे जीवन में असीम चमत्कार लाए हो, और मैं तुमसे इतना प्यार करता हूं, जिसे शब्दों में प्रकट नहीं किया जा सकता।

तुम्हारी आत्मा के भीतर छिपे झरने को बाहर आना ही चाहिए और बुदबुदाहट के साथ सागर की ओर रवाना हो जाना चाहिए।
और तब तुम्हारी असीम गहराईयों का कोश तुम्हारे सम्मुख उद्घाटित होगा।
परंतु तब तुम्हारे उस अज्ञात खज़ाने की माप के लिए कोई तराजू नहीं होना चाहिए;
अपने ज्ञान की इन गहराईयों को किसी दंड या पानी मापने के यंत्र से न मापें।

खलील जिब्रान, द प्रोफ़ेट

हे कब्र खोदने वाले! जब तुम मेरी कब्र खोदो तो क्या तुम उसे थोड़ा उथला बना सकते हो ताकि मैं वर्षा को अनुभव कर सकूं।

डेव मैथ्यूज़, सम डेविल

रॉबिन शर्मा की ओर से एक परिचय

आप उससे भी कहीं अधिक महान हैं, जितना महान होने के बारे में आपने कभी अपने सपने में भी नहीं सोचा होगा। और इससे कोई अंतर नहीं पड़ता कि आप इस समय अपने जीवन में क्या अनुभव कर रहे हैं, यह विश्वास रख कर चलें कि सब कुछ अच्छा हो रहा है और उसमें ही आपकी भलाई छिपी है। हो सकता है कि यह दिखने में अच्छा न लगे, परंतु यह वास्तव में वही है, जिसे सीखने के बाद, आप उस रूप में सामने आ सकते हो, जिस रूप में नियति आपको देखना चाहती है। आपके जीवन में जो भी घट रहा है, वह एक मनुष्य के रूप में आपके महत्तम विकास को प्रेरित करने तथा आपको आपकी सच्ची शक्ति के पास लाने के लिए ही रचा गया है। जीवन से सीख लें और इसे आपको वहां ले जाने की अनुमति दें, जहां आपको जाना है – यह आपका भला ही सोचता है।

आप इस पुस्तक के पृष्ठों में, अपने जीवन के अनेक महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर पाएंगे। मैं प्रार्थना करता हूं कि आप बहुत से सत्य पाएं और इस संसार के काम करने के तरीके और इसमें रहते हुए सफलता प्राप्त करने की विवेक बुद्धि भी पाएं। परंतु अंतत:, आप जितने भी प्रश्नों के उत्तर तलाश रहे हैं, वे आपके ही हृदय की गहराईयों में छिपे हैं। इसके लिए आपको कहीं और ताकने की आवश्यकता नहीं है।, हां, मेरे शब्द आपके लिए कुछ द्वार खोल सकते हैं और आपको वह स्मरण करवाने में मदद कर सकते हैं, जो आप अपने भीतर से, पहले ही जानते हैं। परंतु इस बात में कोई संदेह न रखें कि आपके भीतर वास्तव में विवेक, शक्ति तथा प्रेम का गुप्त कोश समाया है – जो आपके सर्वाधिक साहसी अंश द्वारा जागृत होने की प्रतीक्षा में है। क्या यह जानना वास्तव में अद्भुत रूप से प्रेरणादायी नहीं है? आपके पास तो वह सब कुछ पहले से है, जो कि आप बनना चाहते थे। केवल आपको आंतरिक रूप से थोड़ा काम करना है ताकि आप उन बाधाओं व अवरोधों को हटा सकें, जिन्होंने आपको ढक रखा है और आपके मूल स्वभाव को आगे नहीं आने दे रहे।

मेरे अनुसार, मनुष्य के जीवन का परम उद्देश्य यही है कि वह अपने महान जागरण के पथ पर चले और उस घर तक वापिस आ सके, जहां आप पहले कभी थे (और वह स्थान जिसे आप पहले कभी जानते थे।) मेरी एक दृढ़ मान्यता है कि नवजात बालक जिस संपूर्णता का प्रतिनिधित्व करता है और जिस अवस्था में होता है, हममें से प्रत्येक को उसी अवस्था में वापिस आना है। आप जिस समय जन्मे थे, तब आप निर्भीक, विशुद्ध प्रेम, निष्कपट, असीम रूप से बुद्धिमान, अनंत संभावना से भरपूर तथा उन अनदेखे हाथों से

बहुत ही खूबसूरती से जुड़े थे, जिन्होंने इस ब्रह्माण्ड की रचना की। जब आप छोटे बालक थे तो आप विस्मय से भरपूर तथा जीवन के प्रति जीवंत थे। उस समय आप प्रबोध के बहुत निकट थे (प्रबुद्ध होने का अर्थ है, प्रकाश में आना: कोई ऐसा जो केवल प्रकाश हो, जिसमें कोई साया, कोई अंधेरा पक्ष, कोई भय, कोई क्रोध, कोई रोश और कोई सीमा न हो।)

वर्तमान में इस ग्रह पर हममें से अधिकतर लोग अपने इस प्रामाणिक स्वरूप से अपना संपर्क खो बैठे हैं, उस मूल अवस्था में हमें अपनी असीम संभावना तक जाने और सितारों तक पहुंचने से कोई भय नहीं लगता था। हम नहीं जानते कि हम कौन हैं। हम उन लोगों में बदल गए हैं, जो स्वार्थ व भय के साथ पेश आते हैं और पीड़ा देने का कारण बनते हैं। यह व्यवहार हमारे अनिवार्य स्वभाव का अंग नहीं बल्कि उन घावों का प्रतिबिंब है, जो हमने तब खाए जब हमने अपनी निष्पाप मासूमियत को खोया और अपनी जीवन यात्रा में आगे बढ़े। जो लोग स्वयं पीड़ित होते हैं, केवल वही दूसरों को पीड़ा दे सकते हैं। जिन लोगों ने चोट खाई हो, वही दूसरों को चोट पहुंचा सकते हैं। जिन लोगों के दिल न खुले हों, वही किसी से दिल खोल कर नहीं मिल सकते।

मेरा तो यही मानना है कि, हमारे जीने का एकमात्र कारण यही है कि हम अपने महान अस्तित्व तक पहुंचें और उस सत्य को याद करें कि वास्तव में हम आधारभूत रूप से क्या हैं। इस जिज्ञासा को पूरा करने में जीवन आपको पूरा सहयोग देगा। आपको ऐसे लोग, घटनाएं व परीक्षाएं दी जाएंगी, जो आपको अपनी बुद्धिमता को पहचानने तथा संभावनाओं की तलाश करने का अवसर प्रदान करेंगी। प्राय: आपके ये पाठ सरलता से सामने नहीं आएंगे। पीड़ा व कष्ट सदा से ही गहन आध्यात्मिक वृद्धि का साधन रहे हैं। जो अपने महानतम अस्तित्व के साथ सामने आए हैं वे वही हैं, जिन लोगों ने अपने जीवन में पीड़ा सही हो, वही दिल ही दिल में दूसरों का दर्द जानने की शक्ति रखते हैं। कष्ट सहने वाले ही जीवन के प्रति विनय रखते हैं और दूसरों के लिए कहीं उदार, करूणावान तथा वास्तविक होते हैं। हो सकता है कि हम पीड़ा का दिल से स्वागत न करें परंतु यह हमें कई तरह से अपनी सेवाएं देती है। यह उस खोल को तोड़ती है, जिसने हमारे हृदय को ढांप रखा है, हमें अपने अस्तित्व के बारे में सोचे गए झूठ से आजाद करती है, यह हमें बताती है कि हम यहां क्यों हैं और हमारा यह अद्भुत जगत कैसे कार्य करता है। एक बार खाली होने के बाद हम स्वयं को अच्छे, भले व कल्याणकारी सच से भर सकते हैं यदि हम उन्हें ऐसा करने की अनुमति दें तो समस्याएं हमें रूपांतरित कर सकती हैं। जोसेफ कैंपबेल के शब्दों में: 'जहां आप लडखड़ाते हैं, आपका खज़ाना वहीं है।

किस्मत की खोज में..., यह पुस्तक आपके सबसे महान जीवन के दावे से जुड़ी है। मैंने प्रयास किया है कि इन पृष्ठों पर अपना दिल निकाल कर रख दूं और आपके साथ निजी नेतृत्व, आत्मअन्वेषण तथा प्रामाणिकता के स्थान से जुड़े सभी विचार बांटूं। आपको पता होना चाहिए कि मैं भी एक इंसान हूं। मैं भी नियमित रूप से अपनी सीमाओं, अपने भयों से जूझता हूं, जिन्हें मैं अपने प्राचीन ढांचे कहता हूं, ये मेरे व्यवहार के वे पुराने तरीके हैं, जिन्हें

मैंने अपनी यात्रा के दौरान सीखा। मैं स्वयं को एक ऐसे व्यक्ति के रूप में पाता हूं, जिस पर निरंतर कार्य चल रहा है और स्वयं को निरंतर चुनौती देता रहता हूं कि हर दिन को एक ऐसे मंच के रूप में लूं, जहां काम करते हुए, अपने जीवन को उच्चतम शिखरों तक ले जाया जा सकता है। ऐसा मिथक है कि इस तरह की किताबें लिखने वाले लोग प्रबुद्धजन होते हैं, जिनके दिन परमानंद व अनुभवातीत ज्ञान के बीच बीतते हैं और वे पर्वत शिखरों से अपने विवेक की व्याख्या करते हैं। जबकि यथार्थ में, मैंने पाया है कि हममें से प्रत्येक के पास करने के लिए कोई न कोई काम अवश्य होता है, भले ही हम अपने पर कितना भी काम क्यों न कर चुके हों और हम कितने भी जागृत या उन्नत क्यों न हों। हम सबके भीतर एक श्वेत व एक श्याम पक्ष होता है। हम सबको अपने भीतर के भावों व दोषों पर काम करना होता है, जो आरोग्य पाने के लिए व्याकुल हैं। हम सबकी आत्मा व्यथित है, हम अपने आध्यात्मिक पक्ष को मानवीय पक्ष के साथ संतुलित करने का प्रयास कर रहे हैं। दरअसल हमारा यह अधूरापन ही हमें मनुष्य बनाता है और मैं अपने भीतर जितना गहराई तक उतरता हूं, मुझे उतना ही एहसास होता है कि मैं कितना कम जानता हूं। जैसा कि मैंने **द सेंट, द सर्फर एंड द सीईओ** में लिखा है, 'एक पर्वत का शिखर, दूसरे पर्वत का तल है।' हम जब पर्वत पर चढ़ते हैं तो क्या पाते हैं? हमें और भी कई शिखर पार करने हैं। स्कूलहाउस अर्थ पर यह जीवन ऐसा ही है। कभी समाप्त न होने वाली वृद्धि जो एकमात्र उद्देश्य से आती है, या फिर उसे हम आत्मा का उद्देश्य भी कह सकते हैं। यह हमें उस महानता व प्रमाणिकता का स्मरण करवाते हुए, उसे पाने के लिए प्रेरित करता है, जिसे दुर्भाग्यवश हमने भुला दिया है।

हालांकि मेरी भी कुछ मानवीय सीमाएं हैं, पर मैं यह भी स्वीकार करना चाहूंगा कि मैं उन बाधाओं को पार करते हुए, जल्दी ही बहुत आगे निकल आया हूं, जिन्होंने मुझे छोटा बना रखा था। यदि आप भी आगे दिए गए पृष्ठों के विवेक को अपना सकें, तो आप भी ऐसा कर सकते हैं। केवल कुछ ही साल पहले, मैं एक वादी वकील था जो भौतिक सुखों, सफलता, धन व मान आदि के पीछे तेजी से भाग रहा था। मैं अपने भीतर से जीवन जीने की बजाए बाहर से जी रहा था (इसमें कोई संदेह नहीं कि वह बिल्कुल कारगर नहीं हो रहा था।) मैंने तलाक की त्रासदी को झेला और अब एक सिंगल पिता के रूप में अपने उल्लेखनीय बच्चों का पालन–पोषण कर रहा हूं। इस दौरान, बहुत सी समस्याएं सामने आईं। ऐसा लगता था कि ये निजी परीक्षाएं कभी खत्म ही नहीं होंगी। परंतु सबसे बड़ी चुनौतियों से ही हमारा विकास तेज़ी से होता है। मुझे एहसास हुआ है कि मुझे ये अनुभव इसलिए भेजे गए थे कि मैं अपने कर्मों को सुधार कर, अपनी दुर्बलताओं से ऊपर उठ सकूं। सही मायनों में, जीवन के सबसे बड़े दुःख निजी विकास, सकारात्मक रूपांतरण तथा अपनी प्रामाणिक शक्ति को पाने के अद्भुत अवसर होते हैं, जिन्हें आपने तब छोड़ दिया था, जब आप अपनी नवजात अवस्था की संपूर्णता से बाहर आए थे। उन्हें उपहारों की तरह अपना कर गले से लगाएं।

मुझे इस जीवन में जितने भी उतार–चढ़ाव मिले, मैंने अपनी ओर से जवाबदेही लेने के संकल्प को कभी नहीं तोड़ा और इसी प्रक्रिया में अपने आत्म जागरण तक जा पहुंचा। मेरा मानना है कि हम जितना कुछ भी जीवन में अनुभव करते हैं, वह हमारे लिए आवश्यक होता

है परंतु मेरा यह भी मानना है कि मनुष्य होने के नाते हमारे पास अपने सपनों का प्यारा सा जीवन बनाने के लिए असंख्य चुनाव होते हैं। भाग्य व चुनाव मिल कर ही, हमारे जीवन की रूपरेखा गढ़ते हैं। हमारे सजग चुनावों के बाद ही अंतत: हमारी नियति प्रकट होती है। यदि हम इसे भूलते हैं तो शिकार हमें ही बनना होता है। इस सत्य की अवमानना, उस शक्ति को मानने से इंकार है, जो आपको वह सब पाने के लिए दी गई है, जिसे आप पाना चाहते हैं।

मैंने पुस्तक में जिस आत्मजागरण के पथ का वर्णन किया है – आत्म–जागरण के सात चरण, वे किसी नायक या नेता की शाश्वत व मूल यात्रा का प्रतिबिंबन करते हैं। **द मॉन्क हू सोल्ड हिज़ फेरारी** की पिछली पुस्तकों की परंपरा में, इस पुस्तक के संदेश, जूलियन मेंटल के कथात्मक रोमांचों से प्रकट होते हैं। परंतु यह याद रखना भी बहुत महत्व रखता है कि वे बहुत ही वास्तविक तथा अपवादित रूप से शक्तिशाली हैं। सातों चरणों में गुंथा विवेक, पूर्वी तथा पश्चिमी विवेकपूर्ण साहित्य के अनेक महत्वपूर्ण प्राचीन ग्रंथों में, विविध रूप से पाया जा सकता है। आप ही अपने जीवन के नायक अथवा नायिका हैं। यदि आप एक मनुष्य होने के नाते अपना सबसे बड़ा दांव खेलना चाहते हैं (और मैं जानता हूं कि आप खेलना चाहेंगे।) तो आपको इस पथ पर अवश्य चलना चाहिए। इस पर चलने से प्रामाणिक सफलता का आश्वासन दिया जा सकता है।

सीखने का सबसे बेहतर तरीका यही है कि आप सिखाएं। यदि आप इस सामग्री को सही मायनों में अपने जीवन में उतारना चाहते हैं तो आपको चाहिए कि इस पुस्तक को पढ़ने के चौबीस घंटों के भीतर इसे किसी और को सिखाएं। इससे दो उद्देश्यों की पूर्ति होगी: आपको ज्ञान को आत्मसात् करने का अवसर मिलेगा और दूसरे, आपके आसपास के लोगों को यह जानने में मदद मिलेगी कि वे सही मायनों में कौन हैं। जब आप **किस्मत की खोज में...** पढ़ें तो अपने प्रियजन को अवश्य बताएं कि आप क्या पढ़ रहे हैं। अपनी उन सभी बातों को उनसे बांटें, जो आप यहां से सीखें। अपने बृहत्तर जीवन की ओर जाने के लिए आप जिन बदलावों को अपनाना चाह रहे हैं, उन्हें भी बताएं। इस तरह आपका संकल्प और भी पक्का होगा और वांछित परिणाम आने में देर नहीं लगेगी।

इस पुस्तक को पढ़ने के लिए बहुत–बहुत धन्यवाद; आशा करता हूं कि ये आपकी उम्मीदों पर खरी उतरेगी। वह सब दे सकेगी, जो आप इससे चाहते हैं या संभवत: उससे भी अधिक। मैं आभारी हूं कि आप मुझे अपने जीवन के कुछ अनमोल घंटे देते हुए, इस पुस्तक के पठन–पाठन व मनन में थोड़ा समय लगाएंगे। आप अपनी नियति की तलाश में जा रहे हैं, अपने जीवन का बड़ा कदम उठाने जा रहे हैं, मैं आपके प्रति आदर प्रकट करता हूं। जब आप यह पुस्तक तथा **द मॉन्क हू सोल्ड हिज़ फेरारी** श्रृंखला की अन्य पुस्तकें पढ़ेंगे तो आप पूरे संसार के उन स्त्री–पुरुषों की सूची में आ जाएंगे जो एक समुदाय का अंग बन गए हैं। हमारे यहां असाधारण स्तर का संप्रेषण जारी रहता है, robinsharma.com, जब आप अपनी नियति के पथ पर चलेंगे तो इस वेबसाइट पर आपको अपनी सहायता के लिए अनेक उपयोगी साधन व सहयोग प्राप्त होगा।

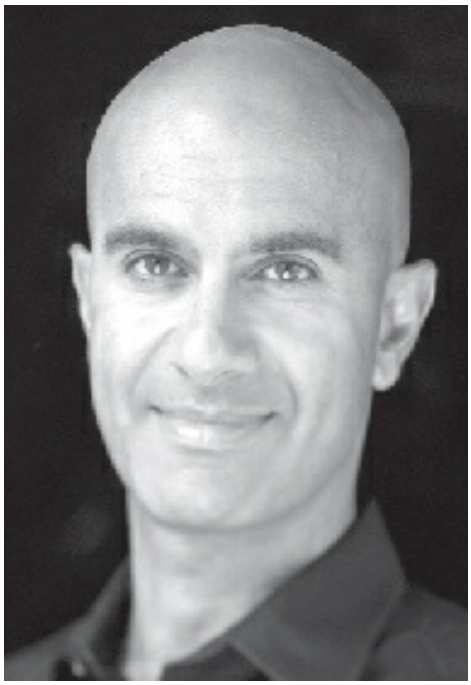

हम सभी अदृश्य स्तर पर आपस में संबंध रखते हैं। जब आप स्वयं को आरोग्य प्रदान करेंगे तो इसी प्रक्रिया में संसार का भी कल्याण होगा। जब आप अपने विवेक को जागृत करेंगे तो मौन रूप से आपकी प्रज्ञा, आपके आसपास के लोगों को भी ऐसा ही करने के लिए आमंत्रित करेगी। जब आप अपने जीवन को सबसे बेहतर व उच्च स्तर पर ले जाने के लिए कार्यरत होंगे, तो उस समय आप दूसरों के लिए एक आदर्श के रूप में काम करेंगे, जो अपने जीवन को उच्चतम स्तरों तक ले जाना चाहते हैं। और जैसा कि मेरे कोचिंग ग्राहकों में से एक, प्राय: कहते हैं, यह बहुत ही खूबसूरत बात है। मैं आपको जीवन रूपी इस यात्रा पर चलने के लिए अनंत आशीर्वाद देता हूं।

सस्नेह

रॉबिन शर्मा

अध्याय 1

एक आध्यात्मिक आपातकाल

जीवन आपके तर्क नहीं सुनता; यह बिना किसी बाधा या विघ्न के, अपने ही तरीके से चलता है। आपको जीवन की इस आवाज़ को सुनना होगा; जीवन आपके तर्क को नहीं सुनेगा, यह आपके तर्क की परवाह नहीं करता।

–ओशो

मैं अपने सिर से सटे उस लोहे की ठंड को महसूस कर सकता था। यह सब ऐसे कैसे हो सकता था? दरअसल मैं एक होटल के गंदे से कमरे में बैठा था, कनपटी से बंदूक सटी थी, और मैं उसका घोड़ा दबाने के लिए तैयार था। मेरे माथे से टप–टप पसीना टपक रहा था और दिल बड़ी तेज़ी से धड़क रहा था। मेरे हाथ अनियंत्रित रूप से कांप रहे थे। कोई नहीं जानता था कि मैं कहां था। ऐसा लगता था मानो अब किसी को परवाह ही नहीं रही थी। मेरे पास जीने के लिए कुछ नहीं बचा था इसलिए अब मैं मरने के लिए तैयार था।

मैं अपने मृत्युलेख पर लिखी पंक्तियों को अभी से देख सकता था : डार सैंडरसन, इंटरनेशनल होटल उद्यमी, तीन बच्चों का तलाकशुदा पिता, चवालीस वर्ष की आयु में अपने ही हाथों मारा गया।

पर ज्यों ही मैंने अपनी आंखें बंद कर, अंतिम प्रार्थना के शब्दों को जोर से दोहराया, कुछ अनपेक्षित – नहीं, चमत्कारिक – घटित हुआ। मेरा सिर चकराने लगा और मैं वहीं जमीन पर गिर गया, बंदूक मेरे हाथ से छूट गई। जब मैं वहां बेसुध पड़ा था तो मेरा शरीर एक चकाचौंध कर देने वाले सफेद प्रकाश से भर गया पर इससे पूर्व कि आप मेरी कहानी को यूं ही हवाबाज़ी मान कर उड़ा दें, कृपया यह जान लें कि मैं हमेशा से ही एक स्थिर तथा विवेकी व्यक्ति रहा हूं। मेरे साथ इससे पूर्व, कभी ऐसा कुछ नहीं हुआ था। मैं प्राय: रहस्यमयी कहानियों को सुन कर दबी हंसी हंसता और उन्हें विचित्र व अविश्वसनीय कह कर नकार देता। मैंने आज तक कभी देवदूतों से बात नहीं की और न ही करता हूं। मैं ग्रहों व नक्षत्रों की

दैनिक चाल के हिसाब से अपना जीवन नहीं जीता। यद्यपि, फिर भी, आज से केवल बारह माह पूर्व, होटल के उस कमरे में मेरे साथ जो भी हुआ, मैं उससे इंकार नहीं कर सकता। क्या वह कोई दैवीय अनुभव था? क्या वह कोई आध्यात्मिक जागरण था? क्या वह मेरे द्वारा अनुभव किए जा रहे तीव्र तनाव की शारीरिक प्रतिक्रिया मात्र थी। सच कहूं तो मैं नहीं जानता। मैं तो केवल इतना जानता हूं कि वहां जो हुआ, उसने मेरे जीवन में घटनाओं की एक ऐसी श्रृंखला प्रस्तुत कर दी, जिसने मेरे उस जीवन के एक–एक अवयव को रूपांतरित कर दिया, जिसे मैं कभी जानता था।

वह प्रकाश तीव्र से तीव्रतर होता जा रहा था और मेरा पूरी देह इस तरह कांपने लगा, मानो मुझे कोई बड़ा दौरा पड़ गया हो। मेरी बाजुएं, टांगें और धड़ उस ठंडे और गंदे फर्श पर पड़े कांप रहे थे और पूरे शरीर से पसीने की धाराएं बह रही थीं। ऐसा लगा मानो अनंतकाल से मेरे साथ ऐसा ही हो रहा था। फिर, जाने कहां से, वे शब्द सुनाई दिए, जिन्होंने मुझे गहराई तक भेद दिया: तुम्हारा जीवन एक ख़ज़ाना है और तुम जो जानते हो, तुम उससे कहीं अधिक हो। मेरी देह की कंपकंपाहट थम गई। मैं वहीं पसीने के कुंड में डूबा लेटा, एकटक छत को ताकता रहा। मैंने अपने पूरे जीवन में कभी ऐसी आंतरिक शांति का अनुभव नहीं किया था। मैं अपने पूरे शरीर तथा हृदय के साथ जागृत था। तुम्हारा जीवन एक खज़ाना है और तुम जो जानते हो, तुम उससे कहीं अधिक हो।

कुछ देर बाद, मैं हौले से उठ खड़ा हुआ और अपना सामान सहजने लगा। मेरे भीतर मानो गहराई तक कुछ बदल चुका था, यद्यपि मैं इसे व्यक्त नहीं कर सकता – मैंने इसे अनुभव किया। अब अपने जीवन के बारे में बात करने की रुचि नहीं रही थी। हो सकता है कि वह स्वर ठीक ही कह रहा था – हो सकता है कि मैं जितना जानता हूं, मेरे भीतर उससे भी कहीं अधिक क्षमता रही हो।

प्राय:, जब भी हम कठिन घड़ियों के बीच होते हैं, हम सोचते हैं कि हम संसार को जिस रूप में देखते हैं, वह उसका ही प्रतिबिंब है। यह एक भ्रांत अवधारणा है। हम संसार को उस समय संदर्भ के निराशाजनक ढांचे से देखते हैं। हम सारी बातों व वस्तुओं को उदास व निराशा से भरी नज़रों से देख रहे हैं। वास्तविकता तो यही है कि हम बेहतर महसूस करने लगेंगे, तो संसार भी बेहतर दिखने लगेगा। जब हम आंतरिक प्रसन्नता की अवस्था में लौट आएंगे, तो हमारा बाहरी जगत भी उसी भावना को प्रतिबिंबित करेगा। मैंने यह सीखा है कि यह संसार एक दर्पण है। हम इस जीवन से वह नहीं पाते, जो हम चाहते हैं बल्कि हम यह जानते हैं कि हम कौन हैं? मैंने यह भी सीखा है कि हमारे जीवन की भी ऋतुएं होती हैं और पीड़ादायी समय सदा नहीं रहता। यह विश्वास करें कि आपके दु:खों की शीत के बाद, आपके आनंद की ग्रीष्म ऋतु अवश्य आएगी, जिस प्रकार प्रात:कालीन प्रखर किरणें, सदा रात्रि के अंधकारमय पथ के पीछे चलती हैं।

अब मैं कोई ऐसा निराशावादी नहीं रह गया था, जो सदा ग्लानि से घिरा रहता हो। अब मुझे ऐसा नहीं लगता था कि कोई राह नहीं बची। उस दिन मानो मेरे पास कोई शक्ति लौट

आई थी। और हालांकि, मेरा जीवन अब भी पूरी तरह से अस्त–व्यस्त था, परंतु सच कहा जाए तो मैं यह जानने लगा था कि मैं उसमें सुधार लाने की शक्ति रखता था। जाने किसी अज्ञात कारण से, मुझे ऐसा विश्वास होने लगा था कि मुझे शीघ्र ही सहायता प्राप्त होगी और प्रसन्नता से भरे दिन आने वाले थे। मैं यह कतई नहीं जानता था कि यह सहायता कितनी अद्‌भुत होगी और मेरा जीवन कितना अद्‌भुत हो जाएगा। परंतु इससे पूर्व कि मैं आपको इन बातों के बारे में विस्तार से बताऊं, आप यह सोच सकते हैं कि ऐसी कौन सी परिस्थितियां थीं, जिनके कारण मेरी आत्मा का इतना पतन हुआ कि मैं अपने ही प्राण तक लेने पर उतारु हो गया।

केवल कुछ ही वर्ष पूर्व, मैं सोचता था कि मैं वैसा ही जीवन जी रहा था, जिसे जीने का सपना हर व्यक्ति देखता है। मेरे पास एक प्यारी और बुद्धिमान पत्नी थी जो मुझे दिल से प्यार करती थी। मेरे पास तीन स्वस्थ व प्रसन्न बच्चे थे, जो अपने हर चुने गए काम में श्रेष्ठता का प्रदर्शन करते। मैं इतना धन कमा रहा था, जितना कि मैं कभी कल्पना तक नहीं कर सकता था, मैं संसार के परिष्कृत स्थलों पर बने होटलों की श्रृंखला का मालिक था। मेरे ग्राहकों में आमतौर पर फिल्मी सितारे, अत्यधिक धनी व सामाजिक हस्तियां शामिल थीं। मैंने बहुत से आकर्षक स्थलों की यात्रा की, बहुत सी वस्तुओं का संग्रह किया और अपने काम के क्षेत्र में एक जाना–पहचाना नाम बन कर उभरा।

फिर, एक दिन मेरा सारा संसार चूर–चूर हो गया। मैं जिस संपत्ति को खरीदना चाहता था, उसके मालिक के साथ देर रात की व्यावसायिक डिनर दावत के बाद घर पहुंचा। रैचल प्राय: मेरे लिए कुछ बत्तियां जला कर रखती थी, पर उस दिन पूरा घर गहरे अंधेरे में डूबा था। यह बात कुछ समझ नहीं आई – अभी तो केवल दस ही बजे थे। रैचल कहां थी? बच्चे कहां थे?

मैं भीतर गया और हॉल व रसोई में बत्ती जला दी। वहां तो चारों ओर खामोशी ने मेरा स्वागत किया। परंतु रसोईघर की मेज पर रैचल की चिर–परिचित लिखावट में, मेरे नाम से लिखा गया एक नोट दिखाई दिया। उसमें लिखा था:

डार, मैं बच्चों को अपनी मां के घर ले जा रही हूं। मैं अब तुमसे और प्यार नहीं करती। मुझे माफ कर देना। मेरा वकील कल सुबह तुमसे फोन पर बात करेगा।

कोई भी चीज आपको इस तरह के **ख़त** के लिए तैयार नहीं कर सकती। हालांकि मैं यही दिखावा करता आया था कि मेरा विवाह कारगर था पर मैं जानता था कि हम भीतर ही भीतर एक दूसरे से अलग हो चुके थे। हमेशा घर से बाहर रहना, काम के सिलसिले में यात्राएं करना और काम में मग्न रहना, इसने मेरे विवाह और परिवार के लिए नियत समय को खा लिया था और कभी जिस प्यार ने हमें एक साथ बांधा था, वह अब कहीं ओझल हो गया था। मैं एक अच्छा पिता होने का दिखावा भी करता आया था, और बाहरी तौर पर, मैं काफी हद तक वैसा लगता भी था। परंतु मेरे बच्चों की बुद्धिमान आत्मा सारा सच जानती थी। यहां तक कि जब मैं उनके पास बैठा होता था, तब भी मैं उनके पास नहीं होता था। मेरा दिमाग

अपने काम-काज के घेरे से बाहर ही नहीं निकल पाता था और भावात्मक रूप से मेरा उनसे कोई लगाव नहीं था। मेरे अनुमान से, संभवत: सच यही था कि मैं असाधारण रूप से स्वार्थी व्यक्ति बन गया था। मेरा मानना था कि सारी दुनिया मेरे आसपास ही चक्कर काटती थी। किसी और की जरूरतें या भावनाएं, मेरी जरूरतों या भावनाओं के आगे कोई मायने नहीं रखती थीं। मैं धनी बनना चाहता था। मैं अपने लिए नाम कमाना चाहता था। मैं जीतना चाहता था। और इस प्रक्रिया में, मैं वही गंवा बैठा था, जो मेरे लिए सबसे अधिक महत्व रखता था।

उस पत्र और तलाक के मुकदमे ने मेरे दिल को चीर कर रख दिया। मुझे मेरे ही घर से निकलने के लिए विवश कर दिया गया और मैं अपने बनाए होटलों में से, एक में रहने लगा। मैं अपने बच्चों को हर कुछ सप्ताह के बाद, सप्ताह में केवल एक बार ही मिल सकता था। मैंने बहुत अधिक मात्रा में शराब पीना शुरु कर दिया और लज्जाजनक रूप से अच्छा-खासा वज़न बढ़ा लिया। मैं हमेशा से ही चुस्त व दुरुस्त रहता आया था पर अब वह सब भी असफल हो गया था। मैं सिर में माईग्रेन के भीषण दर्द के साथ उठता और वह तब तक मेरा पीछा नहीं छोड़ता था, जब तक मैं अल्कोहल की भारी मात्रा अपने भीतर न उड़ेल लेता। भगवान का शुक्र है कि मैंने अपना काम-धंधा नहीं गंवाया था। मैं इतना चतुर तो था ही कि अपने लिए एक उच्च-स्तरीय प्रबंधन दल का प्रबंध कर चुका था, जिस समय मैं अपने ही घावों को सहलाने में मग्न था, तो वह दल मेरे प्रति निष्ठा का प्रदर्शन करते हुए, सब कुछ संभालता रहा। हां, यह तो तय था कि इस दौरान मैं उनकी सारी मीटिंगों में हिस्सा लेता रहा और सारी बेतुकी सौदेबाजियां भी निभाता रहा। परंतु, अधिकतर मैं घर में अकेला ही रहता और अंधेरे कमरे में बैठ कर पुराने बिली हॉलीडे गाने सुनता रहता या जैक डेनियल के साथ लंबी बातचीत करता। यही वह दु:ख था जो अंतत: मुझे मेरे अपने होटल के उस कमरे में ले गया, जिसके बारे में मैंने आपको बताया था। परंतु आपको यह भी पता होना चाहिए कि यही वह पीड़ा थी जो मुझे मेरी मुक्ति की ओर भी ले गई।

मैंने यह जान लिया था कि पीड़ा व संकट, व्यक्तिगत वृद्धि के लिए दो शक्तिशाली साधन हो सकते हैं। कुछ सीखने, तीव्र विकास करने व उभरने के लिए इससे प्रभावी साधन कोई हो ही नहीं सकता। यह सबसे बड़ा अवसर है, जिसके माध्यम से आप एक व्यक्ति के रूप में अपनी प्रामाणिक शक्ति को पाने का दावा कर सकते हैं। हमारी आँखे इसे एक नकारात्मक अनुभव के रूप में देखते हैं। यह एक विशुद्ध परख है और इस झूठे विश्वास के पीछे विशुद्ध भय छिपा है। आप देखिए, जब कुछ हमारी मर्जी से नहीं घटता, तो हम पीड़ा का सामना करते हैं। जब जीवन हमें कोई नई अवस्था या अनपेक्षित घटना सौंपता है तो ऐसा होता है। और हमारे जीवन में किसी नई अवस्था या दशा की उपस्थिति जैसे रोग, प्रियजन से वियोग या फिर आर्थिक रूप से हानि आदि का अर्थ होता है कि हमें अपने भीतर बदलाव लाते हुए, उन किनारों को छोड़ना होगा, जिनसे हम अभी तक चिपके बैठे थे। हमें हमारी अपेक्षा से परे जाने को कहा जाता है और इस तरह का त्याग भयावह हो सकता है।

हम चिर–परिचित सुरक्षित छोर को छोड़ने से कतराते हैं। हमारा जीवन जिन अनजान रास्तों पर हमें ले जाना चाहता है, हम उन पर चलने से बचना चाहते हैं। ऐसा करने का विचार मात्र ही हमें भयभीत कर देता है। किसी भी नई घटना के प्रति विरोध के मूल में भय ही होता है।

परंतु इसमें भयभीत होने वाली कोई बात नहीं है। हमारा यह ब्रह्माण्ड हमारे एहसास से भी कहीं अधिक मैत्रीपूर्ण है। ऐसी नाव जो अपने लंगर की हद से कभी बाहर नहीं जाती, वह कभी नष्ट नहीं होगी परंतु उसे इसलिए नहीं बनाया गया था। ठीक उसी प्रकार, जो व्यक्ति अपने जीवन के अज्ञात पथों पर कदम रखने का साहस नहीं संजो पाता, वह कभी आहत नहीं होगा / नहीं होगी; परंतु मनुष्यों को इसलिए तो नहीं बनाया गया था। हमें उस वृद्धि के अनुभव के लिए बनाया गया था, जो आजीवन एक यात्री के रूप में, विदेशी स्थानों की यात्रा करने से प्राप्त होती है। हमारे बुद्धिसंपन्न नेत्र इस सच को जानते हैं और वे परिवर्तन व पीड़ा की वास्तविकता को पहचानते हैं: यह एक देखरेख करने वाला चिकित्सक है, जो हमारे अस्तित्व के रोगी पक्ष की चिकित्सा करने आया है। पीड़ा हमें गहराई प्रदान करती है। पीड़ा हमारी सहायता के लिए आती है और हमें यह बताती है कि हम सही मायनों में कौन हैं? पीड़ा हमें उघाड़ कर रख देती है, वह हमें विवश कर देती है कि हम अब तक जिसे जानते थे या जिससे चिपके हुए थे; उसका त्याग कर दें, जैसे कि कोई बच्चा अपने स्कूल जाने के पहले दिन, अपनी मां का हाथ छोड़ कर, दोस्तों से भरी नई कक्षा में जाने से भयभीत होता है, जहां उसे कितनी नई व सुंदर बातें सीखने का अवसर मिलने वाला है। अज्ञात में ही तो 'नयापन' छिपा है और नया ही संसार में ऐसा स्थान है, जहां आप असीम संभावनाएं पाएंगे। प्रत्येक व्यक्ति को कष्ट व पीड़ा सहन करने होते हैं ताकि वह अपने जीवन में संभावना तथा क्षमता तक जा सके। हम सभी को महान बनने के उद्देश्य से रचा गया था। तो जब पीड़ा ही आपको बेहतर बना सकती है तो आप इसे बुरा कैसे कह सकते हैं? जी हां, जब हम इसे सहन करते हैं तो हमारा मानवीय पक्ष पीड़ा को अनुभव करता है और यह स्वाभाविक है परंतु यह पीड़ा धीरे–धीरे शांत हो जाएगी और आप कहीं धनी, बलवान तथा बुद्धिसंपन्न रूप में सामने होंगे।

'अज्ञात से भयभीत न हों, क्योंकि इसी में तो आपकी महानता का वास है।' यह बात मेरे एक बहुत ही विशेष टीचर ने कही थी, जिनके बारे में आप बहुत कुछ जानेंगे। अधिकतर लोग, अपने जीवन के बेहतरीन वर्ष, ज्ञात क्षेत्र में ही बिताते हैं। उनमें विदेशी या अनजान क्षेत्र में जाने का साहस नहीं होता और वे भीड़ से अलग होने से डरते हैं। वे सबके बीच ही रहना चाहते हैं, उनमें अलग खड़े होने की क्षमता नहीं होती। वे सबकी तरह वस्त्र धारण करते हैं, बाकी सबकी तरह सोचते हैं और बाकी सबकी तरह ही व्यवहार करते हैं; भले ही ऐसा करना उन्हें अनुचित ही क्यों न जान पड़ता हो। वे अपनी अंतरात्मा से उठते स्वर को नहीं सुनना चाहते और नई वस्तुओं को नहीं आजमाना चाहते, वे सुरक्षा के घेरों से बाहर आने से इंकार कर देते हैं। तो वे वैसा ही करते हैं जैसा कि सब करते आए हैं। ऐसा करने की प्रक्रिया में उनकी सदा चमकने वाली आत्माएं गहरी अंधेरी हो कर, बुढ़ाने लगती हैं। रोमांचप्रिय अल्वा

साइमन के शब्दों में, 'मृत्यु, आपका जीवन समाप्त करने के बहुत से उपायों में से, केवल एक उपाय है।'

यदि आप अपने जीवन के सुरक्षित किनारों से ही चिपके रहने का चुनाव करते हैं तो जान लें कि आपने अपने ही बनाए भय की कैद में रहने का निर्णय लिया है। आप अपने जीवन के हाथों बने बकसे में रहते हुए, यह भ्रांत धारणा भी पाल सकते हैं कि आप स्वतंत्र हैं, परंतु मेरा विश्वास करें, यह ऐसा ही है: एक भ्रम – एक ऐसा झूठ, जो आप अपने–आप से बोलते हैं। जब आप नए परिदृश्यों के लिए इस बॉक्स से बाहर आना चाहेंगे और भीड़ के पीछे चलना छोड़ देंगे, तो निश्चित रूप से भय का सामना तो करना ही होगा – आप एक मनुष्य हैं। परंतु साहस की यह मांग है कि आप इस भय का सामना करें और किसी तरह आगे बढ़ जाएं। भय के अभाव को साहस नहीं कह सकते, साहस का अर्थ होगा कि आप अपने भय से पार जाना चाहते हैं ताकि अपने लिए महत्व रखने वाले उद्देश्य तक जा सकें। अगर आप एक सुरक्षित किनारे पर रहते हुए, ज्ञात के साथ ही चिपके रहते हैं तो आप जान लें कि आप जीते–जी ही मृतकों के समान हो गए हैं। जब आप अज्ञात की ओर छलांग लगाते हुए, अपने जीवन के अज्ञात स्थलों का अन्वेषण करते हैं, तो आप फिर से जीवंत हो उठते हैं और आपका हृदय एक बार फिर से स्पंदित होने लगता है। जीने का रोमांच व उत्साह लौट आता है। याद रखें, आप अपने सारे भय के पार जा कर ही अपना सौभाग्य पाएंगे।

मैं यहां आपको एक शक्तिशाली उपमा देना चाहूंगा। यदि आपने अपना सारा जीवन जेल की चारदीवारी के बीच बिताया है, तो जेल से मुक्त होने के दिन, बहुत से भय अपना सिर उठा लेंगे। जब आप जेल में थे तो भले ही आपके पास आजादी नहीं थी, आप एक ज्ञात क्षेत्र में जी रहे थे क्योंकि वहां आप कड़ी दिनचर्या में बंधे थे, आप जानते थे कि आप कब व्यायाम कर सकते थे और आपको यहां तक कि यह भी अच्छी तरह पता था कि आप कब और क्या खा सकते थे। अब चूंकि आप कैदी नहीं रहेंगे, तो आपको भय का अनुभव होगा। आप नहीं जानते कि क्या करना है और कहां जाना है। आपके पास अनिश्चितता के अतिरिक्त कोई ढांचा नहीं है। आपकी प्रवृत्ति यही है कि आप अज्ञात की असुरक्षा तथा अनिश्चतता से मुंह फेर कर, अपने लिए ज्ञात क्षेत्र में आना चाहते हैं। आप उस समय अपनी आजादी की इच्छा रखने की बजाए, एक कैदी बन कर जीना ही कहीं अधिक पसंद करेंगे। इस बात की कोई तुक नहीं बनती पर हममें से तकरीबन लोग इसी तरह अपने जीवन का संचालन करते हैं।

मैंने यह सारा दर्शन अपने एक टीचर से सीखा था, जिनका मैंने अभी थोड़ी देर पहले संक्षेप में वर्णन किया था। मेरे जीवन पर आज तक, इस टीचर का बहुत शक्तिशाली प्रभाव रहा है। केवल बारह माह पूर्व, उन्होंने मेरे साथ जो बुद्धिमता तथा अद्भुत सात चरणीय प्रक्रिया बांटी, उसने मेरे जीवन में पूर्ण रूप से क्रांति ला दी। मैं इतना प्रसन्न तो पहले कभी नहीं रहा था। मैंने अपने–आप को इतना जीवंत तो पहले कभी नहीं पाया था। मैं इतना

आत्म–विश्वासी भी कभी नहीं था। मैंने अपने जीवन के प्रेमधन को पा लिया है। मेरा स्वास्थ्य संपूर्ण है और मेरा व्यवसाय फल–फूल रहा है। मैंने कभी कल्पना तक नहीं की थी कि जीवन इतना अच्छा भी हो सकता था। यही सब आपके लिए भी सत्य है। मैंने जो उपहार पाए, वे सब आपके पास भी हैं। निश्चित रूप से, आपको कुछ नए चुनाव करने होंगे और कुछ खतरे भी उठाने होंगे। यह भी हो सकता है कि आपको अपने उन भव्य व महान अंशों से पुन: संपर्क साधने के लिए कुछ समय व ऊर्जा का निवेश भी करना पड़े, जिन्हें आप शायद खो चुके हैं। निश्चित रूप से कुछ भय ही सामने आएंगे, वे आपको नीचा दिखाएंगे; फिर भले ही आप यह बात मानें या न मानें। परंतु इस प्रक्रिया के दौरान, आप अपने उच्च व महान अस्तित्व को जाग्रत कर लेंगे। और इससे अधिक महत्वपूर्ण हो भी क्या सकता है?

मैंने जिस टीचर के बारे में कहा, वे मेरे परिचितों में से, सबसे अधिक ज्ञानी, बुद्धिसंपन्न तथा भले इंसान हैं। वे एक सनकी हैं – सही मायनों में मौलिक – और अगर कम शब्दों में कहें तो उनके तौर–तरीके भी अपारंपरिक हैं। दरअसल कई बार तो वे काफी हद तक दीवाने भी हो उठते हैं। आप ऐसे किसी व्यक्ति से न तो कभी मिले होंगे और न ही मिलेंगे। परंतु वे जीवन को जागृत कर देने वाला ज्ञान बांटने की इतनी उल्लेखनीय योग्यता रखते हैं कि सीधा आपकी आत्मा से संप्रेषण करते हैं और फिर आप ऐसे परिवर्तनों का अनुभव ले सकते हैं, जो एक सुंदर जीवन का द्वार खोल देंगे। यदि आप अपनी नियति की खोज करना चाहते हैं या एक आलीशान जीवन जीना चाहते हैं, जो कि आपका जन्मसिद्ध अधिकार है तो उनके सिखाए पाठ, आपके बहुत काम आ सकते हैं।

मेरा तो यह मानना है कि कुछ भी दुर्घटनावश नहीं होता। होटल के उस कमरे में, मेरे साथ घटी उस घटना के अगले दिन ही उस टीचर से मेरी भेंट हुई। मैं अपनी टीम के साथ मीटिंग के लिए काम पर गया, और उसी शाम, मेरा मानव संसाधन प्रबंधक, इवान जॉनसन किसी प्रेरणादायक सेमीनार के दो टिकट लिए, मेरे ऑफिस में आया। इवान को ऐसे कार्यक्रमों से बहुत लगाव है और वह व्यक्तित्व विकास आंदोलन के महान प्रशंसकों में से है। वहीं दूसरी ओर, मैं संदेहवादी था। यदि आपको ईमानदारी से कहूं तो मुझे तो ये प्रेरक वक्ता बिल्कुल नहीं भाते। मुझे तो ये हमेशा से ही बूढ़ी माई के उन मीठे बालों (मीठी कॉटन कैंडी) की तरह ही लगते आए हैं – जो कुछ पलों के लिए तो मीठे लगते हैं पर उसके बाद आप पाते हैं कि कुछ भी तो नहीं बचा।

उस दिन इवान के बेटे की पहली पियानो प्रस्तुति थी, तो इवान कार्यक्रम में नहीं जा सकता था। वह चाहता था कि मैं चला जाऊं। उसने सोचा कि शायद वहां जा कर मुझे थोड़ा हौंसला मिले और मैं अपने जीवन में कुछ परिवर्तन लाने की प्रेरणा पा सकूं, क्योंकि वह जानता था कि मुझे न केवल व्यावसायिक बल्कि व्यक्तिगत रूप से भी, सही रास्ते पर लौटने की बहुत आवश्यकता थी। मैंने उससे कहा कि मैं नहीं जाना चाहता था क्योंकि प्राय: प्रेरक वक्ताओं द्वारा दोहराई जाने वाली घिसी–पिटी कहावतों व उपदेशों को हजम नहीं कर पाता था। मैंने कहा कि मैं पहले ही बहुत सी बातों से जूझ रहा था और बेहतर था कि मुझे उस

शाम अकेला ही छोड़ दिया जाए। तभी एक रोचक घटना घटी। गहन अंतर्ज्ञानी, सहकर्मी ने मेरी आंखों में गहराई से देखते हुए कहा, 'डार, मेरा भरोसा करो', पता नहीं क्यों, मुझे लगता है कि तुम्हें इस सेमीनार का हिस्सा बनना चाहिए। मुझे बार–बार अपने भीतर से यही आवाज सुनाई दे रही है। कृपया तुम सेमीनार में जाओ।

मैं हमेशा ही उन लोगों में से रहा हूं, जो अपने दिल की बजाए दिमाग से काम लेते हैं और यही जुनून मुझे खींच ले गया। अगर मुझे बौद्धिक स्तर पर कोई बात नहीं जंचती थी तो मैं उसे ख़ारिज़ कर देता। मैं अपना सारा जीवन इसी तरह जीता आया था और मेरा जीवन अब भी ढर्रे पर नहीं आ रहा था। मुझे मूर्खता के बारे में आइंस्टाइन की परिभाषा बहुत पसंद थी : एक जैसे कामों को बार–बार करना और अलग–अलग परिणामों की अपेक्षा रखना। अगर मैं अपने जीवन में कुछ नए परिणाम चाहता था तो मैं जानता था कि मुझे कुछ नए तरीकों से पेश आना होगा। अन्यथा, जब तक मेरी मृत्यु नहीं होगी, मेरा जीवन वैसा ही दिखता रहेगा।

मुझे मानो भीतर ही भीतर किसी ने परामर्श दिया कि एक मनुष्य के रूप में पेश आने का कोई और तरीका भी तो होता होगा। मैंने हाल में ही दर्शन पर अपनी पहली पुस्तक पढ़ी थी, हालांकि मैंने अपने पूरे जीवन में ऐसे किसी किताब को कभी हाथ तक नहीं लगाया था। मैं नहीं जानता कि मैंने किस प्रेरणावश उसे उठाया पर मैंने उसे पढ़ा। हो सकता है कि मैं इतनी पीड़ा में था मैं मुक्ति पाने के लिए कहीं भी देखने को तैयार था। यह एक सत्य है कि हम अपने सबसे कठिन समय में ही गहरे उतरने की इच्छा प्रकट करते हैं। जब जीवन अच्छा होता है, तो हम कृत्रिम आडंबर के बीच जीते रहते हैं; तब इसके बारे में बहुत मनन करने का समय नहीं होता पर जब जीवन में कठिनाईयों का पहाड़ टूटता है, तो हम अपने–आप से बाहर आ कर विचार करते हैं कि यह सब इस रूप में सामने क्यों आ रहा है। संकट हमें दार्शनिक रूप से विचार करने पर विवश कर देते हैं। चुनौती के दौरान ही, हम अपने–आप से जीवन के बड़े–बड़े प्रश्न पूछने आरंभ करते हैं, जैसे हमें दुःख क्यों होता है, हमारी सबसे बेहतरीन योजनाएं भी अपेक्षा पर खरी क्यों नहीं उतर पातीं और यह जीवन संयोग के हाथों का मूक खिलौना है अथवा चुनाव की शक्तिशाली मुट्ठी है?

मैंने जो पुस्तक ली थी, उसमें लेखक ने लिखा है कि मस्तिष्क की शक्ति सीमित है जबकि हृदय असीम है। मस्तिष्क क्रूर भी हो सकता है, यह आपके जीवन के बेहतरीन वर्ष, अतीत पर बिसूरने तथा वर्तमान में उन बातों पर खीझने के साथ समाप्त करवा सकता है, जो कभी घटेंगी ही नहीं। मस्तिष्क बाहरी शक्ति की आकांक्षा रखता है, जो कि काफी हद तक आध्यात्मिक के स्थान पर भौतिकता पर आधारित होती है जैसे धन, पद व संपत्ति आदि। बाहरी शक्ति के साथ समस्या यह है कि यह अस्थिर होती है: धन, पद व वस्तुओं के जाते ही शक्ति भी हाथ से जाती रहती है। यदि आपने उन वस्तुओं के साथ अपनी पहचान बांध ली है, तो जब वे आपके हाथ में नहीं रहेंगीं तो आप यह भी नहीं जान सकेंगे कि आप कौन हैं। वास्तविक और प्रमाणिक शक्ति केवल वही है, जो आपको अपने भीतर से प्राप्त होती है।

इस पुस्तक के अनुसार, हृदय को ऐसे छोटे लक्ष्यों या उद्देश्यों की कोई आकांक्षा नहीं होती। हृदय वर्तमान के साथ जीना चाहता है, वह जानना चाहता है कि जीवन कहां जीना है। यह हृदय संपूर्ण आरोग्य, प्रेम, करूणा तथा अन्य मनुष्यों के प्रति सेवा भाव से जुड़ा है। यह जानता है कि हम सभी अज्ञात स्तर पर एक–दूसरे से जुड़े हैं, हम सभी एक ही परिवार के भाई–बहन हैं और सच्ची प्रसन्नता तभी मिलती है जब हम दूसरों को उनकी वृद्धि के लिए यथेष्ट सहायता व समर्थन प्रदान करते हैं। महान सूफी शायर रुमी ने कहा है : 'बूंद को छोड़ो और सागर बन जाओ।' हमारा मन इस सच्चाई को जानता है। हां, निःसंदेह मस्तिष्क भी अपनी तर्क व मनन की योग्यता के साथ, एक अच्छा साधन है, जिससे हृदय अपने कार्य की पूर्ति के लिए सहायता ले सकता है, एक ऐसा साधन जिसे हम नियोजन, शिक्षण व चिंतन के काम ला सकते हैं। परंतु ये कार्य हृदय के संयोजन के साथ किए जाने चाहिए और उसके मार्गदर्शन में संपन्न होने चाहिए। पुस्तक ने मुझे सूचित किया कि यदि कोई सुंदरता के साथ जीवन जीना चाहता है तो उसके मस्तिष्क व हृदय को आजीवन मैत्री के बंधन में रखना होगा। उन्हें पूर्ण सामंजस्य के साथ काम करना होगा। यदि आप पूरी तरह से अपने दिमाग के साथ जीते हैं तो आप जीवन की श्वास व लय को अनुभव नहीं कर सकते। यदि आप पूरी तरह से दिल के साथ जीते हैं तो आप पाएंगे कि आप एक मूर्ख भावुक हैं, जिसके पास परख या अनुशासन का अभाव है। यह सब संतुलन का खेल है, एक ऐसा खेल जिसमें समय, ऊर्जा व आपसी समझ का निवेश करना होता है। धैर्यपूर्वक प्रतीक्षारत इवान के साथ खड़े–खड़े, मैंने एक अन्वेषण के तीव्र आवेग को अनुभव किया। मैंने निर्णय लिया कि कुछ क्षण के लिए सतह से परे जा कर देखने का प्रयास करूंगा, मैंने तय किया कि कुछ क्षण के लिए स्वयं को तर्कों की सीमाओं से परे ले जाते हुए, अपनी आंतरिक भावनाओं पर विश्वास करूंगा। मैंने जाने के लिए स्वीकृति दे दी व उससे टिकट ले लिए।

इवान आगे आया और मुझे गले से लगा लिया, "तुम जानते हो न, हम तुम्हें बहुत प्यार करते हैं।"

मैं शांत था, मेरे पुराने सहकर्मी के मुख से निकले इन भावप्रवण शब्दों को सुन भीतर से भावुकता का ज्वार उमड़ पड़ा। मेरे जीवन में घट रही घटनाओं से उपजी उदासी व दूसरे व्यक्ति से मिले नि:स्वार्थ प्रेम के कारण मेरी आंखों में अश्रुकण झिलमिला उठे।

मैंने कहा, 'बहुत–बहुत धन्यवाद इवान! तुम बहुत अच्छे इंसान हो। मैं तुम्हारी बहुत कद्र करता हूं।'

'मेरा विश्वास करो डार, यह सेमीनार तुम्हारे लिए बहुत ही महत्वपूर्ण होने जा रहा है। और कौन जाने कि वहां तुम्हारी मुलाकात किससे हो जाए?'

तब मैं कहां जानता था कि सेमीनार में मेरी भेंट, एक ऐसे व्यक्ति से होने जा रही थी जो मुझे मेरे जीवन की महानता की ओर ले जाने वाला था।

अध्याय 2

जिज्ञासु व गुरू की भेंट

हमें कभी स्वयं को अन्वेषण से दूर नहीं ले जाना चाहिए। हम अपने सारे अन्वेषण के अंत में उसी स्थान पर आ जाएंगे, जहां से हमने आरंभ किया था और उस स्थान को पहली बार जानेंगे।

–टी.एस. इलियट

उस रात मैं अन्य पांच हज़ार लोगों के साथ एक हॉल में बैठा था, जो जीवन के बड़े प्रश्नों के उत्तर जानने की जिज्ञासा रखते थे। स्पीकरों से रॉक संगीत सुनाई दे रहा था और चकाचौंध कर देने वाली रोशनी ने गहरे अंधेरे और सुनसान कोनों को भी रोशन कर रखा था। उस कमरे में एक प्रत्यक्ष ऊर्जा का अनुभव किया जा सकता था। फिर वक्ता उपस्थित हुआ। वह बहुत ही सुंदर, सुसभ्य तथा आकर्षक व्यक्तित्व का स्वामी था। उसने बहुत ही स्पष्ट शब्दों में अपनी बात इस तरह कही कि पूरे दो घंटों तक श्रोता उसके साथ भावुक रोलर कोस्टर की सवारी करते रहे। उसने हमें हंसाया, रूलाया और यह सोचने पर विवश किया कि हम वैसे क्यों जी रहे थे, जैसा कि अब तक जीते आए थे और हममें से प्रत्येक हालात को और बेहतर कैसे बना सकता था? उसने अपने बचपन के बारे में बताया कि वह किस तरह अपने पिता के निधन के बाद पला–बढ़ा। उसने बताया कि वह जब कैंसर की चपेट में आया तो उसे जीवन की सादगी से भरपूर परंतु सामान्य किंतु उपेक्षित बातों से संपर्क साधने में सहायता प्राप्त हुई। और उसने अपनी कई बातों से हमें हंसा ही दिया, जैसे, आप जिंदगी से जिस एक बात की अपेक्षा रख सकते हैं, वह अनपेक्षित है। और अगर अगर आप ईश्वर को हंसाना चाहते हैं तो उन्हें अपनी योजनाएं अवश्य बताएं। मैंने उसकी विनम्रता को भी सराहा। उसने कहा कि वह कोई गुरू नहीं बल्कि जीवन का एक छात्र था और मज़ाक में कहा कि जब भी वह सुबह की प्रार्थना करता है तो उसमें यह पंक्ति अवश्य शामिल होती है, “हे ईश्वर! कृपया मुझे वैसा व्यक्ति बनने में सहायता प्रदान करो, जैसा कि मेरा कुत्ता मुझे समझता है।”

उसने अपने प्रदर्शन के दौरान बार–बार यही बात दोहराई, आपके घाव निश्चित रूप से

आपकी बुद्धिमता में बदलने चाहिए। यदि आप चाहें तो जिन पत्थरों से लड़खड़ा रहे हैं, वे ही आपके लिए ऊपर जाने के पायदान बन सकते हैं। संकट व त्रासदी के समय उत्पन्न होने वाले अनूठे अवसर को हाथ से जाने न दें। आपका जीवन उन सभी बातों से ही कहीं बेहतर हो सकता है, जिन्होंने आपका दिल तोड़ा है।

वक्ता ने अपने व्याख्यान के अंत में, प्रत्येक श्रोता को मंत्रमुग्ध कर दिया था। चारों ओर सन्नाटा छाया था और हम सब उसके एक-एक शब्द को मानो पी रहे थे। उसने निम्न वक्तव्य के साथ अपना प्रदर्शन समाप्त किया, "अधिकतर लोग अपनी मौत के पास आने तक भी यह नहीं जानते कि उन्हें कैसे जीना चाहिए – और यह बहुत ही लज्जाजनक है। 'अधिकतर लोग' अपने जीवन का सबसे बेहतरीन भाग, किसी कोने में बैठ कर, टी.वी. देखने में ही बिता देते हैं। अधिकतर लोगों की मौत बीस साल की आयु में ही हो जाती है पर उन्हें अस्सी साल की आयु में दफ़नाया जाता है। कृपया अपने साथ ऐसा न होने दें।"

श्रोताओं ने गड़गड़ाहट से भरी करतल ध्वनि के साथ खड़े हो कर, उसका स्वागत किया और वह मंच से चला गया। मैं वहीं चुपचाप बैठा रहा क्योंकि दिमाग में एक के बाद एक प्रश्न उमड़ रहे थे। 'मैं अपने जीवन में इतना खालीपन क्यों महसूस कर रहा था?' भले ही मैं कितना भी और धन क्यों न कमा लूं या कितनी भी सफलता क्यों न पा लूं, मुझे इस बात से कोई अंतर ही नहीं पड़ता था। मैं यह भी विचार कर रहा था कि क्या मेरे द्वारा चुना गया कैरियर वही था, जो कि मैं अपने लिए चुनना चाहता था या फिर कुछ ऐसा था, जिसे मेरे जीवन का काम बनना था। इसके साथ ही मैंने अपने-आप से यह प्रश्न भी पूछा कि क्या मैं अपने जीवन में कभी सच्चा प्यार पाऊंगा और क्या सचमुच सच्चे हमसफ़र हो सकते हैं। मेरे लिए यह बड़ी रोचक बात थी कि जब मैंने अपने लिए थोड़ा सा समय शांत और स्थिर रहने के लिए निकाला तो मेरे दिमाग में अनेक प्रश्न उत्पन्न होने लगे थे।

मैं जितना अधिक गहन विचार करता गया, और अधिक प्रश्न उत्पन्न होते चले गए : क्या मेरे पास कोई चुनाव था कि मेरा जीवन कैसा होगा अथवा यह सब किसी विशाल योजना के अधीन, पहले से ही तय कर दिया गया था? अगर मेरे पास चुनाव की सुविधा थी तो ऐसा क्या था, जो मुझे हालात को और बेहतर बनाने से रोक रहा था? क्या वास्तव में, मेरे लिए कहीं बेहतर और अच्छा जीवन प्रतीक्षा कर रहा था या यह केवल एक इच्छा मात्र थी? मैंने यह भी सोचा कि रैचल और मेरे बीच जो भी घटा, क्या वह प्रकृति की किसी अदृश्य योजना का एक हिस्सा था या फिर हमारे साथ जो भी घटता है, वह हमारे निजी चुनावों के प्रतिबिंब के अतिरिक्त कुछ नहीं होता: व्यवसाय को अपने परिवार से आगे रखना, अपनी ज़रूरतों को सबसे पहले पूरा करना, विशाल हृदय, करूणामय तथा दूसरों की देख-रेख करने वाला बनने की बजाए अपनी मर्जी से सब कुछ करते चले जाना। मैंने अपनी आंखें बंद कर लीं और इन महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तरों के बारे में सोचने लगा। फिर मैंने कुछ ऐसा किया, जो मैंने अपने जीवन में आज तक नहीं किया था: मैं उन उत्तरों को पाने के लिए प्रार्थना करने लगा।

केवल कुछ ही मिनटों के बाद, ऐसा लगा मानो किसी ने मेरा नाम पुकारा हो। मैंने

आसपास देखा परंतु मुझे कोई परिचित दिखाई नहीं दिया। पिछली रात के पीड़ादायी अनुभव के बाद अब ऐसा लगने लगा था कि क्या मैं पागल हो रहा था? केवल चौबीस घंटे पहले ही मेरे साथ अनुभव हुआ था कि एक श्वेत प्रकाश से मेरा पूरा शरीर भर गया था और मुझे एक संदेश प्राप्त हुआ: **'जीवन एक खज़ाना है और तुम अपने बारे में जितना जानते हो, तुम उससे कहीं अधिक हो।'** और अब लगभग खाली हो चुके ऑडीटोरियम में, मुझे कोई मेरे नाम से पुकार रहा था, जहां मैंने हाल ही में, कभी भुलाए न जा सकने वाले सेमीनार में हिस्सा लिया था। मैंने एक बार फिर से अपनी आंखें बंद कर लीं और फिर से अपना नाम सुनाई दिया। मैंने झट से आंखें खोलीं पर कोई परिचित नहीं दिखा। हालांकि, इस बार मुझे अपने साथ पड़ी कुर्सी पर एक विचित्र परंतु निश्चित रूप से संकेत दिखाई दिया: वहां एक सफेद रंग का लिफाफा रखा था, जिस पर लाल रंग की स्याही से सुंदर लिखावट में मेरा नाम लिखा गया था। वह मुहरबंद था। मैंने उसे खोल कर पढ़ा : "डार! अपने जीवन को एक झूठ की तरह जीना बंद करो। अपने प्रति सच्चाई अपनाओ और नियति स्वयं तुम्हारा दरवाजा खटखटाएगी। मैं तुमसे मंच के पीछे मिलूंगा। वैसे तुम्हारी शर्ट प्यारी लग रही है– मुझे धारियां पसंद हैं।"

ये सब हो क्या रहा था? बेशक इवान ने मुझसे कहा था कि इस प्रेरक कार्यक्रम में कुछ महत्वपूर्ण होगा, पर यह तो निश्चित रूप से कुछ अनूठा ही होने जा रहा था। मेरा दिल तेज़ी से धड़कने लगा और मैं सोचने लगा कि क्या कोई मेरे साथ मज़ाक कर रहा था या मुझे किसी खत़रनाक परिस्थिति की ओर खींचा जा रहा था। परंतु उस प्रेरक वक्ता ने मेरे भीतर तक कुछ हिला कर रख दिया था, मानो उसने कुछ ऐसे बीज बो दिए थे, जो अब अंकुरित हो रहे थे। मेरे दिमाग में एक शब्द झट से कौंध गया – विश्वास। मैंने वह कागज उठाया और उसे अपने गुची ब्रीफकेस के हवाले कर दिया। फिर मैं अपने स्थान से उठा और बिना किसी झिझक के, उस मंच की ओर बढ़ गया, जहां कुछ देर पहले उस वक्ता ने अपनी बात कही थी। मैं मंच के पर्दो की ओर बढ़ा और पीछे गया तो चारों ओर अफरा–तफरी मची थी। वक्ता तो दिखाई नहीं दिया किंतु ऑडियो वीडियो तकनीशियन अपने काम में मग्न दिखाई दिए। वे लोग अपने उपकरणों को एल्यूमीनियम के बक्सों में सहेज रहे थे। ऐसा लगा मानो किसी का ध्यान मेरी ओर नहीं गया। जब मैं मंच के पिछले हिस्से की ओर बढ़ता चला गया तो एक दरवाजा हौले से खुला, वहां से धीमी रोशनी दिखी, जिसने उस नीम अंधेरे में डूबे स्थान को जगमगा दिया। हालांकि सुनने में अजीब लगेगा पर मुझे लगा कि मुझे उस दरवाजे से भीतर जाने को कहा जा रहा था। सच कहूं तो ऐसा लगा मानो कोई मुझे उसकी दिशा में खींच रहा था; मैं वहां से निकला और एक गलियारे में आ गया। गलियारे से जाते हुए मेरा दिल धक–धक कर रहा था और बैचैनी के मारे पेट में उथल–पुथल मची थी। शरीर में एक अजीब सी थरथराहट के साथ यह अनजाना विश्वास भी पनप रहा था कि कहीं कोई था, जो सारी बातों का ध्यान रख रहा था।

वह गलियारा एक कमरे के दरवाजे के सामने समाप्त हुआ, जिस पर एक चमकीला सितारा बना था। मैंने अनुमान लगाया कि वह कमरा, उस ऑडीटोरियम में प्रदर्शन के लिए

आए कलाकारों के ड्रेसिंग रुम के रूप में आरक्षित रहता होगा। मैंने दरवाजे को तीन बार खटखटाया। किसी ने कोई उत्तर नहीं दिया। मैंने इस बार थोड़ा और जोश से खटखटाया। तब भी कोई जवाब नहीं आया। मैं कुछ पलों तक प्रतीक्षा करता रहा और फिर यही सोचा कि शायद मैं अपना समय नष्ट कर रहा था। उस नोट में मुझसे मंच के पीछे जाने को कहा गया था परंतु वहां तो कोई भी नहीं था। इन बातों की कोई तुक समझ नहीं आ रही थी। मैं थकान से चूर था और मुझे वाकई गहरी नींद लेने की जरूरत थी। पूरे दो दिन बहुत बेचैनी में बीते थे और शायद एक कप गर्म चाय, मेरे दिमाग की सनसन करती नसों को आराम दे सकती थी।

मैं मुड़ने ही वाला था कि मानो किसी जादू से दरवाजा अपने–आप खुल गया। मैं दरवाजे के दूसरी ओर तो किसी को नहीं देख सका पर दरवाजा पूरी तरह से खुला था। ज्यों ही मैंने कमरे में कदम रखा तो जो दिखाई दिया, उसे देख कर मैं दंग रह गया। फर्श पर गुलाब की पत्तियां बिखेरी गई थीं। मेरे सामने एक लंबी सी आकृति लाल सुर्ख रंग का चोगा पहने खड़ी थी, जैसा कि नेपाल के लामा पहनते हैं। उनकी पीठ मेरी ओर थी और वे अडोल खड़े थे। उनके चोगे की बारीक कारीगरी ने अपना ध्यान मेरी ओर खींचा। यह बहुत ही सुंदर और रंगों से सजी थी। पता नहीं क्यों, मैंने खुद को विश्रांत पाया और चैन की सांस ली। आप मुझसे न पूछें पर पता नहीं क्यों, ऐसा लगा मानो मैं किसी दोस्त के पास आ गया था।

वह आकृति धीरे–धीरे नाटकीय रूप से, मेरी ओर मुड़ी और मेरी आंखों में सीधा देखा। ऐसा लगा मानो उन्होंने अपनी उस नज़र से ही मेरी आत्मा तक को छू लिया था। मैं अपने जीवन में, कभी ऐसे किसी शक्तिशाली व्यक्तित्व से नहीं मिला था। वे एक सांवले रंग के युवक जैसे दिख रहे थे और गढ़े हुए शरीर के साथ सिर पर घने बाल थे, मानो बीते युग के कोई ग्रीक देवता अथवा हॉलीवुड का कोई फिल्मी नायक! और उनकी आंखें! मैं उन आंखों को कभी नहीं भूल सकूंगा। मैंने आज तक ऐसी उल्लेखनीय और भेद देने वाली आंखें नहीं देखी थीं।

वे कौन थे? वे मुझे टकटकी लगाए क्यों देख रहे थे? मुझे उनसे भय का अनुभव क्यों नहीं हो रहा था? मैं नहीं जानता था कि मुझे क्या करना है इसलिए मैं वहीं खड़ा रहा, उस सारे अनुभव ने मुझे स्तंभित कर दिया था। कमरे में शांति छाई रही और वह अजनबी भी बिना किसी भाव के स्थिर खड़ा रहा। फिर उनके मुख पर एक भीनी सी मुस्कान खेल गई और आंखें किसी बच्चे की आंखों की तरह चमकने लगीं। वे विश्वास से भरे स्वर में बोले “डार! केवल तुम ही अपनी नियति यानी किस्मत को पा सकते हो। केवल तुम ही यह जान सकते हो कि तुम्हारे लिए कौन सा पथ चुना गया है, वह पथ, जिस पर चलने के लिए तुम्हारा दिल तुम्हें पुकार रहा है। पर एक मार्गदर्शक होने से रास्ता कहीं सरल हो जाता है – हम सभी को जीवन में एक अच्छे कोच की आवश्यकता होती है ताकि हम अपने विशाल जीवनों तक पहुंच सकें। जेऩ गुरू कहते हैं कि शिष्य प्रस्तुत होगा, तो गुरू स्वयं उपस्थित हो जाएंगे। अब भले ही इस वाक्य का बहुत बार प्रयोग किया जा चुका है परंतु यह आज भी उतना ही सत्य

है। मैं बहुत प्रसन्न हूं कि तुमने अपनी अंतरात्मा के स्वर को मान दिया और आज रात यहां तक आए। मैं जानता हूं कि तुम्हारे साथ क्या बीती है। मैं तुम्हारे नुकसान के बारे में जानता हूं। मैं तुम्हारी पीड़ा के बारे में जानता हूं। मैं तुम्हारे भ्रम के बारे में जानता हूं। मैं तुम्हारी कुछ आकांक्षाओं के बारे में भी जानता हूं।"

"मेरी आकांक्षाएं? आप कहना क्या चाहते हैं?" मैंने हौले से पूछा

"आज इस ग्रह पर जिस प्रकार बहुत से जिज्ञासु हैं, तुम भी उनमें से एक हो। यह दुनिया बदल रही है क्योंकि अब तक जो लोग सामान्य जीवन जीना चाहते थे, वे अपने सुविधाजनक दायरों से बाहर आ रहे हैं ताकि असाधारण की इस बीहड़ता का अन्वेषण कर सकें। लोग अब अपनी प्रामाणिक शक्तियों से दूर रहते हुए, आधा–अधूरा जीवन नहीं जीना चाहते। वे एक महान जीवन जीते हुए, आकाश में ऊंचा उड़ना चाहते हैं, विशालकाय दैत्यों के बीच चलना चाहते हैं और सितारों के साथ नाचना चाहते हैं।" उनका वह बलशाली स्वर अपने आवेग के साथ पूरे कमरे में व्याप्त हो गया।

अब वे हंसने लगे। कैसी दिल को छू लेने वाली हंसी थी!

"माफ करना डार! मैं थोड़ा बहक गया था। दरअसल आज कल संसार में जो भी हो रहा है, मैं उसे देख कर बहुत उत्साहित हूं। लाखों –करोड़ों लोग एक बेहतर जीवन की आस में आगे आ रहे हैं। बहत से लोगों ने शिकार की भूमिका करने से इंकार कर दिया है और अब वे विजयी बनना चाहते हैं। बहुत से लोग, गहराई तक अपने भीतर उतर रहे हैं और अपने भय को वश में कर रहे हैं। सारी दुनिया में लोग उदार हो रहे हैं और वयस्क होने की प्रक्रिया में लोग अपने भीतर के जिस उल्लेखनीय व निराले हिस्से से परे हो गए थे, अब वे उसे वापिस पाने का दावा करने लगे हैं। वास्तव में जीवंत हो उठने के लिए असाधारण अवसर है। सारी दुनिया रहने के लिए एक बेहतर स्थान बनती जा रही है। दरअसल मनुष्य के लिए इससे पहले कभी, ऐसा बेहतर समय नहीं आया था।

"मुझे तो यह सब वैसे नहीं लगता।" मेरे भीतर का संशयी उभर आया था। "चारों ओर युद्ध, अकाल व अपराध का साम्राज्य है। सब ओर अफरा–तफरी मची है। कृपया मेरी बात को गलत अर्थ में न लें। मैं सामाजिक रूप से बहुत जागरूक व्यक्ति तो नहीं, परंतु मैं भी यह देख सकता हूं कि यह संसार एक अनिश्चित व कष्टों से भरा स्थान बन गया है।"

"बिल्कुल सच कहा!", उस व्यक्ति ने विनय से कहा मानो उनके पास मेरी बात को असत्य प्रमाणित करने के लिए कोई तर्क नहीं था, ऐसा करने से उनके अहं को कोई ठेस नहीं लग रही थी। "अब भी संसार में बहुत घना अंधेरा है। परंतु, मेरा विश्वास करो, अब चारों ओर पहले से कहीं अधिक रोशनी दिखाई देने लगी है। बहुत से लोगों को एहसास होने लगा है कि या तो आप अंधेरे को कोस सकते हैं या अपने भीतर इतना साहस पैदा कर सकते हैं कि आप एक मोमबत्ती जला सकते हैं। एक मनुष्य के रूप में यही तो नेतृत्व है – अंधकार के बीच मोमबत्ती जलाना। प्रकाश की अनुपस्थिति में ही अंधकार उपजता है। यदि उपमा के

रूप में कहा जाए तो सारे संसार में मोमबत्तियां जलाई जा रही हैं। हम सभी एक ऐसे बिंदु की ओर जा रहे हैं, जहां जा कर एक क्रांतिकारी परिवर्तन आएगा। वह समय अब दूर नहीं है। जब बहुत से लोग जागरूक होंगे और जान जाएंगे कि वास्तव में वे कौन हैं और वे अपने उच्चतम संभाव्य का दावा करेंगे, वही सबसे बड़ी छलांग होगी। यह सारा संसार वास्तव में बहुत ही प्यार बन जाएगा – धरती पर ही स्वर्ग!"

"धरती पर स्वर्ग? एक बड़ा परिवर्तन?"

"हां। बहुत से ऐसे लोग जो प्रामाणिकता व सच्चाई के पथ पर चलेंगे, उनके जीवन में एक बड़ा परिवर्तन आएगा – एक ऐसा पथ जिसमें आपको अपनी शर्तो, अपने गहनतम मूल्यों तथा उच्चतम आदर्शों के साथ जीवन जीना है। इस पथ पर आपको मुक्त हृदय तथा उदार विचारधारा के साथ जीना होगा। इस पथ पर आपको अपने सारे भय से मुक्ति पानी होगी और उन सभी बातों से छुटकारा पाना होगा, जो आपको छोटा होने का एहसास दिलाती हैं ताकि आपकी विशालता जगमगा उठे। यह सब बहुत ही सुंदर होगा!" अजनबी ने आंख दबाई।

"असंख्य लोगों के जीवन में एक भारी परिवर्तन आएगा, जो अपने अंधकारमय पक्ष को आरोग्य प्रदान करने के लिए तैयार होंगे और कभी ऐसा कोई काम नहीं करेंगे जिससे किसी के दिल को ठेस लगे या उसके कार्य में बाधा आए। ऐसे बहुत से लोगों के जीवन में भारी बदलाव आएगा, जो एक अच्छे, नेक और भयरहित जीवन से कम जीने के लिए इंकार कर देंगे। उन असंख्य लोगों के जीवन में बदलाव आएगा जो अपने जीवन में एक प्रमाणिक नेतृत्व पाना चाहेंगे। उन असंख्य लोगों के जीवन में भारी परिवर्तन आएगा, जो जिज्ञासु बनना चाहेंगे, डार! जो तुम्हारी तरह प्रसन्नता, आंतरिक शांति तथा गहन अर्थ से भरपूर जीवन की तलाश करना चाहेंगे। पूरी मानवजाति के लिए एक बड़े परिवर्तन की भूमिका तैयार हो रही है। सारी जातियों में परिवर्तन आ रहा है। हमने व्यक्तिगत महानता से कुछ भी कम पाने से इंकार कर दिया है", उन्होंने उत्सुकतापूर्वक कहा।

"विकासमूलक परिवर्तन से आपका क्या तात्पर्य है?"

"पूछने के लिए मेहरबानी। तुम तो जानते ही हो कि इस महत्वपूर्ण बातचीत के बीच मूर्खता से भरे प्रश्नों के लिए कोई स्थान नहीं है। मनुष्यों के रूप में आज तक हमारे उद्‌भव को, भौतिक व बाहरी मापदंड पर ही मापा गया है। अब तक तो यह सब संग्रह व संचय पर ही आधारित रहा है। सबसे अधिक महत्व इसी बात को दिया जाता रहा है कि कौन सबसे अधिक विजयी रहा, किसके पास सबसे अधिक यश व मान है, किसके पास सबसे अधिक संपदा है, किसके पास दूसरों से अधिक शक्ति है? और इसी मूल्य के साथ ही इस बात को प्रत्यय मिला कि 'सबसे अनुकूल' को ही उत्तरजीविता प्राप्त होगी। सारी बात प्रतियोगिता पर आ कर ही समाप्त होने लगी क्योंकि हम सबके जीतने लायक गुंजाईश ही नहीं है परंतु यह दर्शन अब हमारे लिए एक दौड़ का काम नहीं करता। यह अभाव से जन्मा है। इस अभाव की मानसिकता के पीछे भय छिपा है। हमारी मंशा तथा विचार, इस भौतिक जगत को देख

कर यही अनुमान लगाते हैं कि यहां हर वस्तु का अभाव है। यह हमारे लिए कभी पर्याप्त नहीं होगा। इस तरह यह चक्र आरंभ हो जाता है। हम कभी महसूस नहीं कर पाते कि हमारे पास पर्याप्त होगा और इस तरह हम कभी प्रसन्न नहीं हो पाते।"

"अद्भुत! मैंने आज तक ऐसी कोई बात नहीं सुनी।" मैंने वहीं कमरे में रखी एक कुर्सी पर बैठते हुए कहा। अजनबी लामा अपनी पीठ पर हाथ बांधे खड़े रहे।

"यहां विकासमूलक परिर्वतन से मेरा यही तात्पर्य है: इस ग्रह पर बहुत से मनुष्य अपने केंद्र को भौतिकता से हटा कर आध्यात्मिकता की ओर ले जा रहे हैं। हम सभी, 'मैं, मैं, मैं' से परे जाते हुए एक अंतःनिर्भरता की ओर बढ़ रहे हैं, जिसे सबसे अधिक महत्व दिया जाना चाहिए। हममें से बहुत से लोगों को इस बात का आभास हो गया है कि हम सभी एक ही परिवार के सदस्य हैं। आज संसार में हममें से सर्वाधिक उन्नत, प्रामाणिक नेता हैं और जब मैं नेता शब्द का प्रयोग करता हूं तो मेरा तात्पर्य सीईओ, प्रेजीडेंट तथा सेना के जनरलों से नहीं बल्कि उन स्त्री-पुरुषों से है, जिन्होंने भीड़ के पीछे चलने से इंकार कर दिया है – उन्हें एहसास हो गया है कि किसी गहन स्तर पर हम सभी आपस में जुड़े हुए हैं। वे जानते हैं कि जब आप किसी दूसरे को चोट पहुंचाते हैं तो उस समय आप स्वयं को भी पीड़ा दे रहे हैं। वे जानते हैं कि जब आप दूसरों की मदद कर रहे हैं तो उस समय आप अपनी भी मदद कर रहे हैं। यहां तक विज्ञान भी आज उन्हीं बातों को मानने लगा है, जिसे रहस्यवादी हज़ारों सालों से कहते आ रहे हैं। क्वांटम भौतिकविदों ने भी पाया है कि यह ब्रह्माण्ड आश्चर्यजनक रूप से आपस में जुड़ा हुआ ऐसा तंत्र है, जहां प्रत्येक वस्तु का दूसरे से संबंध है तथा वे एक-दूसरे से प्रभावित होते हैं। अंग्रेज़ कवि जॉन डोन ने इस सत्य को बहुत ही सुंदर रूप में प्रकट किया है: 'कोई भी व्यक्ति अपने-आप में अकेला द्वीप नहीं है; प्रत्येक व्यक्ति महाद्वीप का एक हिस्सा है, वह प्रमुख.... और मनुष्य की मौत मुझे छोटा कर देती है क्योंकि मैं मनुष्यजाति से संबंध रखता हूं...। उन्होंने हेमिंग्वे के उपन्यास की कुछ पंक्तियां पढ़ीं।

"यह तो बहुत ही रोचक है।" मैं इस नई जानकारी को जान कर दंग रह गया।

"हममें से अधिकतर लोगों ने बाहरी यात्रा से अपने ध्यान को हटा कर, भीतर की ओर केंद्रित कर लिया है। कई लोगों के लिए मनुष्य की यह यात्रा ही आंतरिक यात्रा बन गई है। हमें एहसास हो गया है कि सफलता का द्वार बाहर की ओर नहीं बल्कि भीतर की ओर खुलता है। महानतम खज़ाने वही हैं, जो हमारे भीतर छिपे हैं। हम एक जाति के रूप में, अपनी आत्माओं की आवश्यकताओं के बारे में पहले से अधिक विचार करने लगे हैं और निजी विकास, स्नेही रूप पाने, करूणावान बनने तथा एक विरासत छोड़ कर जाने की मंशा वाली गतिविधियों पर अधिक ध्यान केंद्रिंत करने लगे हैं। सफलता महत्व रखती है परंतु उसके मायने उससे भी अधिक महत्व रखते हैं। सारी दुनिया की बेस्टसेलर किताबों को तो देखो, उनमें से अनेक आत्म-ज्ञान तथा व्यक्तिगत विकास का वर्णन करती हैं। पूरे ग्रह पर लोग सामूहिक रूप से प्रश्न कर रहे हैं कि 'मैं यहां क्यों हूं?' 'मेरी नियति क्या है?' और जैसा कि मैंने कहा, लोगों में जितना बदलाव आएगा, संसार में भी उतना ही बदलाव आएगा। एक

बहुत ही खूबसूरत प्रक्रिया आकार लेने जा रही है। वास्तव यह समय जीवित रहने के लिहाज़ से बहुत ही अनूठा है।

अब मेरी बात को गलत अर्थ में मत लेना, पैसा कमाने में कोई बुराई नहीं है। अच्छी चीजों के साथ एक खूबसूरत भौतिक जीवन जीना भी बुरा नहीं है। हम सभी आध्यात्मिक जीव हैं जो मानवीय अनुभव ले रहे हैं और जीवन को, मनुष्यों द्वारा बनाई गई अद्भुत वस्तुओं के माध्यम से और भी आनंददायक बनाया जा सकता है। पैसे से जीवन जीना आसान हो जाता है और आप काफी हद तक आजादी के साथ जी सकते हैं। अगर कोई तुम्हें इस बात को किसी और अर्थ में बताता है तो जान लो कि वह ऑस्ट्रिच सिंड्रोम के साथ जी रहा है।" लामा ने कहा।

"वह क्या है?"

"बहुत से लोग ऐसे हैं जो सच का सामना करने से कतराते हैं। यह बहुत आसान है कि आप सच का सामना करने की बजाए किसी ऑस्ट्रिच की तरह रेत में अपना सिर छिपा कर बैठ जाएं। और सच्चाई यही है कि पैसा कमाने और अच्छी चीज़ों का उपभोग करने में कोई बुराई नहीं है। यह कौन कहता है कि आप अच्छी वस्तुओं का आनंद लेने के साथ-साथ आध्यात्मिक, भले व उन्नत नहीं हो सकते? एक अच्छे घर में रहो। बढ़िया कार चलाओ। सुंदर जगहों की सैर करो। खूब़सूरत कपड़े पहनो। मैं यह नहीं कहता कि आप सांसारिक अनुभवों का आनंद न लो। अंतत: ये सब उन्हीं अज्ञात बलों द्वारा रचे गए हैं, जिन्होंने झरनों, पर्वतों व वृक्षों की रचना की है। परंतु यह सदा स्मरण रखो कि यह सुंदरता सतही है। ये वस्तुएं आपकी प्रेरणा नहीं होनी चाहिए। अपनी पहचान व स्व-क्षमता को इन पर आधारित मत करना। तुम्हें जानना होगा कि ये सब नश्वर हैं। यह सब प्राथमिकताओं पर निर्भर करता है – ऐसी बाहरी वस्तुओं के संचय को अपनी प्रधान प्राथमिकता मत बनाओ। हम इस संसार में खाली हाथ आए हैं और खाली हाथ ही लौट जाएंगे। मैंने तो कभी नहीं देखा कि शववाहन में जा रहा कोई शव अपने साथ सामान से भरा वाहन भी ले जा रहा हो। यही बात तुम्हें हमेशा याद रखनी है। अपने पास सुंदर वस्तुओं का संग्रह करो पर उनके दास मत बनो। उनके मालिक बनो पर उन्हें अपना मालिक मत बनने दो। अपने जीवन के लक्ष्य को अन्य महत्वपूर्ण वस्तुओं पर केंद्रित करो जैसे तुम्हारी उच्चतम संभावना, अपने-आप को दूसरों की सेवा के लिए अर्पित करना और अपने से अधिक महत्वपूर्ण, किसी लक्ष्य के लिए जीवन जीना। सफलता पाना अच्छी बात है पर उसका महत्व उससे कहीं अधिक मायने रखता है।" उन्होंने अपनी बात पर बल देते हुए कहा।

मैं अपने जीवन के जिस दोराहे पर खड़ा था, वहां मेरे लिए ऐसे व्यक्ति की विवेक बुद्धि से अधिक कुछ भी महत्वपूर्ण नहीं हो सकता था। संभवत: मैं एक छात्र था और अंतत: ऐसे स्थान पर आ पहुंचा था, जहां मैं सीखने के लिए तत्पर था और मेरे अध्यापक भी मेरे सामने आ चुके थे। हो सकता है कि मैंने अपने जीवन में अब तक जो भी सीखा था, वह सब व्यर्थ ही रहा हो। हो सकता है कि यह सब होना पहले से तय रहा हो – यह सारी तैयारी हो कि मैं

स्वयं को इस बिंदु तक ला सकूं। यहां तक कि मेरा मानव संसाधन प्रबंधक, जो कि एक आध्यात्मिक व्यक्ति था, जब भी कुछ गलत हो जाता तो वह प्राय: एक जुमला दोहराता, 'इस ब्रह्माण्ड में सब ठीक है'। भले ही उसके निजी या कामकाजी जीवन में कोई भी बदलाव क्यों न आए, वह उस पीड़ादायी अनुभव को भी बेहतरी के लिए ही मान कर कबूल कर लेता। मुझे बात समझ आ रही थी कि वह बिल्कुल सच ही कहा करता था। संभवत: वास्तव में कुछ भी दुर्घटनावश नहीं होता और हमारा जीवन जिस संपूर्ण बुद्धिमता के बल पर संचालित होता है, उसे हम लाख चाहने पर भी समझ नहीं सकते।

"आशा करता हूं कि आप बुरा नहीं मानेंगे, परंतु क्या मैं आपसे यह प्रश्न कर सकता हूं कि आप कौन हैं?" मैंने अपना साहस बटोर कर पूछा और मन ही मन यह सोचने लगा कि कहीं वे मेरी बात का बुरा तो नहीं मान जाएंगे। मैं उस अद्‌भुत तथा अविस्मरणीय व्यक्ति को देख दंग था जो मेरे साथ अपनी गहन बुद्धिमता तथा विवेक बांट रहा था।

"मेरा नाम जूलियन मैंटल है और मैं यहां तुम्हारे मार्गदर्शक की भूमिका निभाने आया हूं, मैं यहां इसलिए आया हूं कि तुम्हें तुम्हारी नियति को खोजने में सहायता दे सकूं।" एक सादा व सरल सा उत्तर आया।

फिर उन्होंने अपने चोगे के कोने में बनी बड़ी सी जेब में हाथ डाला और वहां से एक केला निकाला। क्या आप विश्वास कर सकते हैं? एक केला! उन्होंने उसे छीला और बहुत संतुष्टि के साथ खाने लगे।

"क्या तुम भी खाना चाहोगे?" उन्होंने उदारतापूर्वक पूछा। "मेरे थैले में एक और रखा है।" उन्होंने कोने में रखे किरमिच के जर्जर हो चुके थैले की ओर संकेत किया। "केले शरीर को बहुत बढ़िया ईंधन देते हैं। यदि तुम चाहते हो कि शरीर अपनी पूरी क्षमता के साथ काम करे तो इसे केवल बेहतरीन भोजन ही दिया जाना चाहिए।"

मुझे उनकी कही बात का एक भी शब्द सुनाई नहीं दिया – मेरे दिमाग के घोड़े तेज़ी से दौड़ने लगे थे। जूलियन मैंटल! अविश्वसनीय! मैं जानता था कि जूलियन मैंटल कौन थे। मैं जितने भी लोगों को जानता था, वे सभी जूलियन मैंटल के नाम से परिचित थे। मैं अपने उत्साह को दबा नहीं पाया।

"जूलियन मैंटल! वही लामा जिन्होंने अपनी फरारी बेच दी थी? क्या आप सच कह रहे हैं?" वह सारा ही दृश्य अवास्तविक जान पड़ रहा था। वे मेरे सामने खड़े केला खा रहे थे और मेरे साथ अपने विवेकपूर्ण शब्द बांट रहे थे। ऐसा जान पड़ रहा था मानो मैं अपनी देह से बाहर आने का कोई अनुभव ले रहा होऊं, एक ऊंचाई से यह सब घटते हुए देख रहा होऊं। कल मैंने अपनी कनपटी पर बंदूक तान रखी थी और अपनी जान लेने पर आमादा था। केवल एक ही दिन बाद, मैं एक प्रेरणादायक सेमीनार के बाद, विचित्र से दिखने वाले लामा के साथ मंच के पीछे खड़ा बतिया रहा हूं, जो मुझे केला खाने से होने वाले लाभों के बारे में जानकारी देने के साथ–साथ, पूरे ग्रह में घट रहे आध्यात्मिक रूपांतरण के प्रति अपने विचार

बांट रहे हैं। सचमुच यह तो अविश्वसनीय है!

जब मैं छोटा था, तभी से जूलियन मैंटल के बारे में नियमित रूप से सुनता आया हूं। मेरे पिता एक अभियोग वकील थे, जो शहर की बड़ी फर्मो में से एक के साथ काम करते थे और वे निरंतर 'महान जूलियन मैंटल' की कहानियों के साथ मेरा मनोरंजन किया करते। जूलियन देश के सबसे बेहतरीन प्रतिवादी वकीलों में से थे और एक ऐसे व्यक्ति थे जो न केवल अपने प्रचुर मात्रा में पाए गए कानूनी उपहारों के लिए बल्कि जैट-सैट जीवनशैली के लिए भी जाने जाते थे। यदि सही मायनों में कहा जाए तो जूलियन मैंटल एक सुपरस्टार थे। उनके पास वह सब कुछ था, जिसके लिए कोई इंसान कामना कर सकता था परंतु उन्होंने एक दिन सब कुछ त्याग दिया।

जूलियन ने हार्वर्ड लॉ स्कूल से स्नातक की उपाधि ली थी और उनके जीवन में सफलता पहले से ही लिख दी गई थी। वे एक गोल्डन ब्वाय थे और देख कर लगता था कि उन्हें आगे बढ़ने से कोई रोक ही नहीं सकता क्योंकि वे सदा बड़े मुकदमों और ग्राहकों को अपनी ओर आकर्षित करते और एक के बाद एक जीत हासिल करते चले जाते। इसी दौरान, उन्होंने इतना धन एकत्र कर लिया जितना मेरे पिता एक वकील के रूप में कमाने के बारे में सोच तक नहीं सकते थे। जूलियन ने एक ही माह में इतनी लोकप्रियता पा ली थी जितनी वकीलों को अपने पूरे कैरियर के दौरान कभी नहीं मिल पाती थी। डैड का कहना था कि जूलियन शहर की सबसे हसीन लड़कियों से भेंट करते, जिनमें से तकरीबन फैशन मॉडल होतीं और इस तरह जूलियन अपने उस अदम्य आकर्षण व अनूठी जीवनशैली के लिए सराहे जाते। जब मैं छोटा था तो डैड अक्सर मुझे शहर के उस पॉश इलाके में ले जाते, जहां मैं जूलियन का विशाल मेंशन देख सकता था जो कि दुनिया के सबसे लोकप्रिय कहलाने वाले रॉकस्टार्स के घर के पड़ोस में ही था। जूलियन के पास संसार में किसी वस्तु का अभाव न था। उनके घर में ड्राईव-वे के बीच एक चमकदार लाल फरारी खड़ी दिखाई देती। मुझे आज भी याद है कि मुझे एक बालक के रूप में उनकी वह कार देखना कितना भाता था। मैं उसमें सवारी करने के लिए कुछ भी कुर्बान करने को तैयार था। डैड ने बताया था कि लाल फरारी जूलियन की सबसे प्रिय संपदाओं में से थी।

और फिर मेरे डैड के अनुसार जूलियन को कुछ हो गया। वे असफल होने लगे। उनका वज़न बढ़ गया और वे बहुत अधिक धूम्रपान करने लगे। वे बहुत ज़्यादा मामले हाथ में लेने लगे और उनमें से तकरीबन में उनकी हार होती। मैं पक्के यकीन से नहीं कह सकता था कि भला उनके साथ हो रही इन घटनाओं का क्या कारण था परंतु मैंने आज तक किसी और को महानता के शिखर से इस तरह नीचे नहीं आते देखा। मेरा अनुमान है कि आप जितना ऊपर जाते हैं, उतना ही ज़ोर से नीचे भी गिरते हैं। और एक दिन, एक बड़े मुकदमे की सुनवाई के दौरान, खचाखच भरे कोर्ट में ही जूलियन भरभरा कर गिर पड़े, शायद दिल का दौरा पड़ा था। मेरे डैड ने बताया कि वह जूलियन के जीवन के रूपांतरकारी क्षण थे। हम अपने जीवन में आने वाले ऐसे क्षणों का सामना किस रूप में करते हैं, उसके आधार पर ही यह तय होता

है कि आने वाले क्षण हमें क्या देने वाले हैं। इसके बाद जूलियन ने जो भी किया, उसने हमेशा के लिए उनके जीवन की दिशा बदल दी।

कई माह तक उपचार व चिकित्सा के बाद, जूलियन ने अपने काम से त्यागपत्र दे दिया और देश छोड़ कर चले गए। उन्होंने अपना विशाल बंगला बेच दिया। अपनी सारी चल-अचल संपत्ति बेच दी। उन्होंने भारत जाते समय अपनी प्रिय फरारी भी बेच दी और फिर रोमांच और प्रज्ञा से संपन्न भारतभूमि की ओर प्रस्थान कर गए। मेरा यह मानना है कि वे अपने लिए कुछ उत्तरों की तलाश में थे और शायद भारत में उन्हें उन उत्तरों के मिलने की संभावना दिखाई दी थी। इसके बाद बहुत लंबे अरसे तक जूलियन के बारे में कुछ सुनने को नहीं मिला, कई लोगों ने यह भी मान लिया था कि उनकी मौत हो गई थी।

कुछ माह पूर्व ही, मैंने एक समाचार पत्र में लेख पढ़ा, 'जूलियन मैंटल, एक ऐसा भिक्षु जिसने अपनी फरारी बेच दी। संसार में सुधार लाने के लिए एक व्यक्ति का अभियान।' उस लेख में लिखा था कि जूलियन मैंटल भारत प्रवास के दौरान एक उल्लेखनीय रूपांतरण की प्रक्रिया से गुज़रे। उन्होंने हिमालय के उत्तुंग शिखरों के बीच भिक्षुओं के एक अज्ञात दल से भेंट की। उन्होंने उनके साथ अपना प्राचीन व गहन दर्शन बांटा जो किसी व्यक्ति को निजी रूपांतरण तथा जीवन को महानतम रूप में जीने के लिए सहायक हो सकता था। जूलियन ने उनसे जो असाधारण प्रज्ञा प्राप्त की, उसके बल पर उन्होंने अपने जीवन में विशाल व उल्लेखनीय परिवर्तन किए। उन्होंने शारीरिक रूप से अपने आप को नए सिरे से रचा और वे अपनी वास्तविक आयु से बहुत छोटे दिखने लगे, वे एक ऐसे ओज से ओत-प्रोत हो उठे जो वास्तव में दुर्लभ था। उन्होंने बौद्धिक रूप से वह सारा विवेक पाया जिसके बल पर एक सच्चा व सार्थक जीवन व्यतीत किया जा सकता था और उन्होंने उन सार्वजनिक सत्यों को इस रूप में अपनाया कि इसी प्रक्रिया के दौरान वे आंतरिक शांति पाने में सफल रहे। भावात्मक रूप से वे उन सभी चोटों व मानसिक क्लेशों के प्रति सचेत हो उठे, जिन्हें उन्होंने बचपन में सहा था और वयस्क होने पर भी वे उन्हीं घावों को अपने साथ लिए चल रहे थे, जो उन्हें उन सभी आनंदों से वंचित कर रहे थे, जो कि हम सभी नियमित रूप से पाने के अधिकारी हैं। इस तरह उन्हें अपने भीतर बसे उस क्रोध को जानने में भी मदद मिली, जिसे वे बरसों से अपने साथ लिए चल रहे थे, जो उन्हें शारीरिक व मानसिक रूप से हानि पहुंचा रहा था। वे अतीत में पाए कष्टों से मुक्त होने में सफल रहे। उन्होंने आध्यात्मिक रूप से अपने गहन मूल्यों को पाया और उस उच्चतर भावना के साथ अपना संपर्क साधने के योग्य बन सके। जूलियन ने उस सामाजिक मुखौटे को उतार फेंका, जिसे उन्होंने आजीवन धारण कर रखा था और प्रामाणिक बन गए। अब वे अपनी ही शर्तों पर जीवन जीते थे, अपने मूल्यों व अपने हृदय व अंतरात्मा से उठते स्वर की ही सुनते थे, उनका ही पालन करते थे। उन्होंने दूसरों को प्रसन्न करना और दुनिया में अपनी अच्छी छवि दिखाने के लिए प्रयास करना बंद कर दिया था। उन्होंने भीड़ के पीछे चलना और किसी भी रूप में अपने-आप को नीचा दिखाने से इंकार कर दिया था। अब वे केवल यही ध्यान रखते थे कि वे जो भी करें, वह सच्चा और कल्याणकारी हो। जूलियन ने अपनी नियति को पा लिया था और उसने उन्हें एक

प्रसन्नमना व्यक्ति में बदल दिया था। मुझे अब भी उस लेख की पंक्तियां भूली नहीं थीं।

लेख में यह भी लिखा था कि जूलियन ने तय किया था कि वे पश्चिम की ओर वापिस आ कर अधिक से अधिक लोगों की सहायता करेंगे ताकि वे अपना जीवन बेहतर तरीके से जीते हुए, अपनी संपूर्ण क्षमता का प्रयोग कर सकें। उस लेख में यह भी बताया गया था कि किस तरह जूलियन अपने लाल चोगों में विभिन्न स्थानों पर प्रकट हुए और अपने पुराने मित्रों, पारिवारिक सदस्यों तथा अजनबियों को उनकी व्यक्तिगत महानता के स्तर तथा स्वास्थ्य से भरपूर जीवंत जीवन तक लौटने में सहायता की। रिपोर्टर ने लिखा था कि जूलियन के इस काम ने खलबली मचा दी थी और देश में कई स्थानों पर लोगों के समूह मिल कर, इस व्यक्ति की तलाश के लिए अभियान चला रहे थे। जूलियन एक तरह से लोकगाथाओं के नायक बन गए थे और उनके आसपास एक रहस्य सा घिरने लगा था। पर जूलियन वास्तव में एक अद्‌भुत मायावी थे: सक्रिय रूप से उनकी खोज करने पर भी, एक भी व्यक्ति उन्हें पाने में सफल नहीं रहा था। उस लेख में जूलियन का साक्षात्कार नहीं लिया गया था परंतु बहुत से लोगों ने उन्हें एक नाम दे दिया था 'ऐसे गुरू जो सामने नहीं आना चाहते'। इस युग में आध्यात्मिक रूप से तरस रहे लोगों के लिए जूलियन की कहानी पर एक अच्छी फिल्म बनाई जा सकती थी।

"क्या आप वाकई जूलियन मैंटल हैं?" हालांकि अब भी विश्वास नहीं हो रहा था इसलिए मैंने दोबारा पूछ ही लिया। "आप मुझे क्यों खोज रहे थे? मेरे डैड मुझे अक्सर आपके बारे में बताया करते। क्या आप जानते हैं कि वे आपके सहकर्मी थे?"

"मैं बहुत अच्छी तरह जानता हूं कि तुम्हारे पिता कौन थे?" वहां से बहुत ही सरल स्वर में उत्तर आया। "वे मेरे मित्र थे और मैं अपनी मित्रता को बहुत मान देता हूं। तुम्हारे डैड ने मुझे तुम्हारे बारे में बहुत कुछ बताया है और मैंने यह भी सुना कि हाल ही में तुम्हारे परिवार के साथ क्या हुआ। मैं तुम्हें अपनी सेवाएं देने आया हूं। यह तो तुम जानते ही हो कि सेवा देने वाले नेता सबसे अधिक शक्तिशाली होते हैं।" "मैं तो यह कभी नहीं जानता था।" मैंने उत्तर दिया।

"हालात हमेशा उतने बुरे नहीं होते, जितने हमेशा दिखाई देते हैं। जो परिस्थितियां हमारे जीवन में दु:ख और कष्ट लाती हैं, वही हमें शक्ति व साहस का पाठ पढ़ाते हुए, हमारे सच्चे स्वरूप से हमारा परिचय भी करवाती हैं।"

उन्होंने बात आगे बढ़ाई, "डार, मैं जानता हूं कि इस समय यह सब तुम्हारे लिए कितना कठिन रहा होगा। मैं तुम्हारे हालात के लिए पूरी तरह से संवेदनशील हूं और समझ सकता हूं कि तुम कैसा महसूस कर रहे होगे। भावनाएं आत्मा तक जाने का मार्ग होती हैं और उन्हें पूरा मान देते हुए निभाया जाना चाहिए। भावनाएं अपने साथ महत्वपूर्ण सूचनाएं लाती हैं और यदि सही तरह से अन्वेषण किया जाए तो आपके साथ संबंधों को पोषित भी करती हैं। यदि आप उन्हें अस्वीकार करते हैं तो जान लें कि आप अपने एक स्वाभाविक अंश को नकार रहे हैं। आप जो भी अनुभव कर रहे हैं, यह दिखावा करना कि आप उसे महसूस नहीं

कर रहे, ऐसा करना शारीरिक व मानसिक, दोनों ही रूपों से आपके लिए हानिकारक होगा। यदि आप अपनी भावनाओं का दमन करते हैं तो निश्चित रूप से आप अपने–आप को रोग की ओर ले जा रहे हैं। परंतु इसके अतिरिक्त एक और बड़ी तस्वीर भी है, जिसे तुम अपने वर्तमान परिप्रेक्ष्य के साथ नहीं समझ सकते। याद रखो, हम संसार को उस रूप में नहीं देखते, जैसा कि वह है, हम उसे उसी रूप में देखते हैं, जैसे कि हम हैं। जैसे–जैसे आप बदलते हैं, संसार को देखने के दृष्टिकोण में भी बदलाव आता है। सजगता के विस्तार के साथ–साथ आप उन बातों को भी जानने व समझने लगते हैं, जो पहले आपकी समझ और दृष्टि से बाहर थीं। यहां सब कुछ अच्छा ही है। आपके लिए जो भी रचा गया है, वह आपको बेहतरी की ओर ही ले जा रहा है। एक इंसान होने के नाते हमारी प्रवृत्ति रही है कि हम जीवन को वह सब सुनाना चाहते हैं, जो हम चाहते हैं। परंतु जीवन इस तरह काम नहीं करता। यह हमें वही देता है, जिसकी हमें आवश्यकता है, जो हमारे लिए बेहतर है, श्रेष्ठ है – जो सही मायनों में हमारे लिए कल्याणकारी है। जब आप सही मायनों में जीवन को सुनना सीख लेंगे तो आपका जीवन कहीं बेहतर तरीके से काम करेगा। नदी के विपरीत प्रवाह में बहने की चेष्टा करने से बेहतर होगा कि अपने–आप को प्रवाह के हवाले कर दिया जाए। और यकीन रखें कि जीवन आपको जहां ले जा रहा है, आपको सही मायनों में वहीं होना चाहिए। अपने सारे प्रतिरोध को त्याग दें और आपके सामने जो भी घट रहा हो, उसके आगे समर्पण कर दें। इस तरह करने से आप यह तो सुनिश्चित कर ही सकते हैं कि आप अपनी नियति, अपने लिए बने सच्चे पथ पर चल रहे हैं।"

"मैंने कुछ समय पहले ही समाचार पत्र में आपके बारे में एक लेख पढ़ा था। आप इस दुनिया को एक बेहतर स्थान बनाने के लिए जो भी कर रहे हैं, वह वाकई प्रशंसनीय है।"

"हां, मैंने भी वह लेख देखा था। जूलियन अपने चेहरे पर एक मुस्कान के साथ बोले। शायद मैंने उसे कहीं संभाला भी था क्योंकि मैं एक आदर्शवादी हूं और जब मैं उसे पढ़ता हूं तो मुझे लगता है कि मैं वाकई लोगों के लिए कुछ कर रहा हूं। मैं अपने जीवन को अपने दशकों से नहीं बल्कि अपने द्वारा किए गए कामों के आधार पर मापता हूं। मैंने सीखा है कि कुछ पाने से नहीं बल्कि देने से सच्ची प्रसन्नता प्राप्त होती है। चीनियों ने इसे बहुत अच्छे तरीके से कहा है: 'जो भी व्यक्ति किसी को गुलाब देता है, उसके हाथों में हमेशा गुलाब की थोड़ी सी गंध बाकी रह जाती है।' और जबकि हम सभी इस बात को बहुत जल्दी भूल जाते हैं। मिसाल के तौर पर, व्यवसाय में हम इस तरह काम नहीं कर पाते जिससे दोनों ही पक्षों को लाभ हो। हमारे भीतर हमेशा से यही गलत धारणा रही है कि अगर हमें जीतना है तो किसी को हारना ही होगा। हम अपनी सीमाओं की रक्षा करते हैं और उस संदर्भ को अनदेखा कर देते हैं जिसके अनुसार अपने आसपास के लोगों की मदद करते हुए भी सफलता अर्जित की जा सकती है। इसमें कोई सच्चाई नहीं है। हकीकत तो यह है कि आप अपने व्यवसाय में प्रगति तभी कर सकते हैं जब आप अपने ग्राहकों व उपभोक्ताओं को उनकी अपेक्षा से भी कहीं अधिक मान देने लगते हैं। व्यवसाय के सच्चे नेता जानते हैं कि किन लोगों की बदौलत उनकी मेज़ पर भोजन आता है और इसी तरह वे अपने ग्राहकों के साथ रॉयल्टी की तरह

पेश आते हैं। वे अपने ग्राहकों की सेवा कर, प्रसन्नता का अनुभव करते हैं। तुम जानते हो कि प्रेम या स्नेह अपने–आप में एक शक्तिशाली व्यावसायिक साधन है?"

"मैंने तो कभी इन बातों को इस तरह सोचा ही नहीं था।"

"मेरे दोस्त! यही सच है। और इससे पहले कि कोई तुम्हारी ओर सहायता का हाथ बढ़ाए, तुम्हें उसके दिल को छू लेना चाहिए। एक सूर्य की तरह बनो: सूर्य के पास जो भी है, वह सब दे देता है पर बदले में सभी फूल, वृक्ष व पौधे इसकी ओर मुख करके झुकते हैं। अपने व्यावसायिक जीवन में जब तुम अपने ग्राहकों के प्रति प्रेम व आनंद के लिए समर्पित हो जाओगे, तो तुम्हारे पास ऐसे सद्भावना दूतों का अभाव नहीं होगा, जो सारे संसार में भाग–भाग कर लोगों को बताएंगे कि तुम क्या करते हो और तुम क्या हो। यहां तक कि जब कभी आपकी तथाकथित प्रतियोगिता की बात आए, तो वही करने की कोशिश करो, जिससे दूसरों की मदद हो सके। उनके साथ संधि भाव उत्पन्न करो। उनके साथ मित्रता करो। सारा व्यवसाय संबंधों की नींव पर ही टिका होता है। वे जो भी चाहते हों, उन्हें वह देने की चेष्टा करो और इसी तरह आदान–प्रदान का प्राचीन नियम तुम्हारे काम आएगा, वे भी तुम्हें वह पाने के लिए सहायता करने लगेंगे, जो कि तुम पाना चाहते हो। जब आप देते हैं तो पाने की प्रक्रिया भी तभी आरंभ होती है।"

"बहुत अच्छी बात कही।" मैंने उस व्यक्ति के शब्दों में छिपी ताकत को भांपते हुए हामी भरी। "तो, जैसा कि मैंने कहा कि उस लेख में यह जान कर मुझे अच्छा लगता है कि मैं लोगों के जीवन में कुछ बदलाव लाने में सफल रहा हूं, इस तरह मुझे यह याद रहता है कि मैं अपने ही तरीके से लोगों के जीवन का कल्याण कर पा रहा हूं। पर सच कहूं तो मैं इस बात को इतनी गंभीरता से भी नहीं लेता क्योंकि जब आप स्वयं को ज्यादा ही गंभीरता से लेने लगते हैं तो कोई भी आपकी ओर ध्यान नहीं देता।"

मैं उनकी यह बात सुन कर मुस्कुराने लगा। वाकई वे तो बहुत अच्छे इंसान हैं।

मैं तो यकीन नहीं कर सकता कि वे मुझे एक संन्यासी कह रहे हैं। उन्होंने अपने चोगे से केला का कतरा उठाते हुए कहा, "मैं भला इन सब बातों के बारे में क्या जानता हूं। मैं तो एक आम इंसान हूं जिसने कुछ शक्तिशाली अध्यापकों के माध्यम से एक ऐसा दर्शन पा लिया है जो हर उस इंसान के लिए कारगर हो सकता है जो एक सुंदर जीवन जीना चाहता है। हर इंसान को अपने जीवन में एक दर्शन स्थापित करने के लिए समय निकालना ही चाहिए। यह उसके द्वारा किए जाने वाले कामों में से सबसे महत्वपूर्ण काम होगा। यदि कोई सही मायनों में पूरी महानता के साथ जीना चाहे तो उसे यह अवश्य परिभाषित करना चाहिए कि वह कैसा जीना चाहता है और उसका जगमगाता जीवन कैसा दिखाई देगा। हम सभी को एक कागज़ पर अपनी इन बातों को लिख लेना चाहिए और हर सुबह जब सारी दुनिया सो रही हो तो उठ कर उसे देखना चाहिए क्योंकि इस तरह वह हमारे लिए नैतिक दिशासूचक का काम करेगा और हम अपने लिए दिन में बेहतर चुनाव कर सकेंगे। यह एक लंगर की तरह हमें बिल्कुल सटीक जगह पर उतारेगा। इस तरह के किसी दर्शन दस्तावेज़ के अभाव में, आप

अपना जीवन किसी दुर्घटना की तरह जीएंगे और अपने सामने आने वाली हर घटना के लिए प्रतिक्रिया ही देते रह जाएंगे। यह तो अपने लिए मुसीबत मोल लेने की तरह होगा – मानो आप खुद कष्टों को न्यौता दे रहे हों। इस बात से मुझे एक कहावत याद आ रही है। 'अगर आप यह नहीं जानते कि आपने कहां जाना है, तब तो कोई भी पगड़ंडी आपको वहां ले जाएगी।'

"तो मुझे यह सोचने के लिए थोड़ा समय निकालना होगा कि मैं अपने जीवन से क्या चाहता हूं।"

"बिल्कुल ठीक डार! यह तो जीवन के आवश्यक कामों में से है। सफल और भरपूर लोग अपने जीवन में विचार, योजना व मनन के लिए समय निकालते हैं वे अपने जीवन के प्रति जागरूक होते हैं क्योंकि वे जानते हैं कि हर दिन अपने–आप में एक कीमती उपहार से कम नहीं होता। यदि तुम इस बात पर विश्वास नहीं करते तो घर लौटते समय किसी अस्पताल में रूको और वहां के कैंसर विभाग में दाखिल किसी रोगी से भेंट करो। उनसे पूछो कि अगर उन्हें अपने जीवन में एक और अतिरिक्त दिन मिल सकता तो उसके लिए वे क्या–क्या कर सकते थे।"

जूलियन की बात ने सीधे मेरे दिल पर चोट की। मैं तो जाने कब से जीवन का नाजायज़ लाभ उठाता आ रहा था। उसकी कद्र करनी छोड़ चुका था। मैंने कभी अपने जीवन के एक भी दिन को एक उपहार या अवसर के रूप में नहीं देखा था, जो कुछ महान रच सकता था या मेरे जीवन में बदलाव ला सकता था।

"अधिकतर लोग अपने जीवन की योजना बनाने की बजाए गर्मी की छुट्टियों की योजनाएं बनाने में अधिक समय लगा देते हैं। कितनी लज्जा की बात है! तुम्हें अपने जीवन के लिए विचारवान होना चाहिए। अपने–आप से पूछो : मुझे कैसा जीवन जीना चाहिए? अपने–आप से पूछो कि तुम्हें कैसा जीवन जीना चाहिए या तुम किन बातों को अपने जीवन में सहन नहीं करना चाहोगे या अपने लिए श्रेष्ठता के किन मापदंडों को अपनाना चाहोगे। यदि तुम श्रेष्ठता के प्रति समर्पण न करते हुए, यह जीवन जी रहे हो तो जान लो कि उन सभी अनमोल उपहारों व प्रतिभाओं का अनादर हो रहा है, जो तुम्हें प्रदान किए गए हैं।"

जूलियन आगे की ओर आ गए। उन्होंने अपनी बात का प्रभाव बढ़ाने के लिए हाथ को हवा में लहराते हुए कहा, "तुम कैसा जीवन जीना चाहते हो या तुम्हारे जीवन का लक्ष्य क्या है, यदि तुम्हारे पास ऐसा कोई सच्चा दर्शन नहीं है तो तुम अपने लिए उचित चुनाव कैसे कर सकोगे? अगर कोई दर्शन नहीं होगा तो तुम दूसरों की इच्छानुसार अपना जीवन जीओगे। तुम उन भेड़ों में शामिल हो जाओगे, जो कुछ भी जाने बिना उस भीड़ के पीछे चल रही हैं, जो खड़ी चट्टान की ओर बढ़ते हुए अपनी मौत को दावत दे रही है। कोई दर्शन नहीं रहा तो तुम शीघ्र ही स्वयं को मृत्युशैय्या पर पाओगे और यही विचार कर रहे होगे, 'क्या मेरा सारा जीवन एक झूठ ही था!"

इस तरह कार्ड पर लिखी पंक्ति का अर्थ स्पष्ट हो रहा है। 'अपने जीवन को एक झूठ की तरह लेना छोड़ दो।' "जूलियन! मुझे लगता है कि आपने ही मेरे लिए उसे लिख छोड़ा होगा।"

"बेशक! अगर जीवन में रहस्य न हो तो उसे जीने में क्या मज़ा है? अगर थोड़ा रोमांच न हो तो जीवन का आनंद जाता रहता है। मैं तुम्हारे जीवन में थोड़ा रोमांच लाने की कोशिश कर रहा था। मेरे दोस्त! तुम जिस पथ पर चलना चाह रहे हो, वह कमजोर दिल वालों के लिए नहीं है। इसके लिए बहुत साहस की आवश्यकता होगी। तुम्हें अपने सारे भय पर काबू पाते हुए, आगे बढ़ना होगा। यह आसान तो नहीं होगा परंतु तुम्हें ऐसे स्थान पर ले जाएगा, जिसे जानने के लिए तुम्हारे भीतर का कोई हिस्सा बेचैन रहा है। खैर, जैसा कि मैं पहले कह रहा था, मैं विश्वास नहीं कर सकता कि लोग मुझे गुरू के रूप में संबोधित कर रहे हैं। मैं तो जीवन का एक छात्र हूं जिसके पास बांटने के लिए थोड़ा सा शक्तिशाली दर्शन और विचार हैं। मुझे अपने गाइड के रूप में लो तो कहीं बेहतर होगा। मैं लोगों के जीवन में इसलिए कदम रखता हूं ताकि उनका सही दिशा में मार्गदर्शन कर सकूं। मैं ऐसे लोगों की तलाश में रहता हूं जो अपने जीवन में कुछ बड़े खतरे मोल लेना चाहते हैं, कुछ नए बदलावों के इच्छुक हैं क्योंकि वे मन ही मन जानते हैं कि वे जीवन से वर्तमान में जो भी अपेक्षा रख रहे हैं, यह जीवन उससे भी कहीं अधिक देने की क्षमता रखता है। मुझे रूमी की बात याद आ गई: 'जो भी व्यक्ति अपने मार्गदर्शक के बिना इस रास्ते पर कदम रखता है, उसे दो दिन का सफ़र करने में भी सौ साल लगेंगे।'

मैं दबी हंसी हंसने लगा। वाकई जूलियन की बुद्धिमता बेजोड़ थी। ये तो निश्चित रूप से जूलियन मैंटल ही हैं। उनके अतिरिक्त कौन ऐसी बातें कर सकता है? मैं थोड़ा और निश्चिंत हो गया। अब उस रहस्यमयी आदमी की पहचान पूरी तरह से स्पष्ट हो चली थी।

"मैं जो भी करता हूं, उसे देखने का एक बेहतर तरीका यह भी हो सकता है कि तुम मुझे अपने लिए एक लाइफ कोच मानो। मैं लोगों को कोच करता हूं कि वे अपने उन्नत स्वरूप को पाएं और मेरी सहायता से मनुष्य रूप में जीवन रूपी खेल को सही तरह से खेल सकें। मैं लोगों को उनकी नियति की तलाश करने और सपनों को साकार करने में मदद करता हूं। यह विश्वास करना कठिन होगा कि हम जिस संसार में जी रहे हैं, वहां अधिकतर लोग अपने सपनों को जीने की बजाए भीड़ के पीछे चलना और वही करना अधिक पसंद करते हैं, जो कि भीड़ कर रही है। मैं तुम्हें कुछ ऐसा बताना चाहता हूं जिसे तुम कभी नहीं भूलोगे। कम से कम मैं तो यही दुआ करूंगा : **जब कोई इंसान अपने जीवन के अंतिम दिनों में होता है तो उसे सबसे बड़ा पछतावा यही हो सकता है कि वह अपने सपनों को नहीं जी सका।** एक दिन जीवन के बीचों–बीच जागना या फिर जीवन के अंतिम दिनों में जाग कर यह देखना कि आप कभी साहस नहीं कर सके, आप कभी सितारों तक नहीं जा सके और कभी महसूस ही नहीं कर सके आपकी प्रतिभा का दसवां हिस्सा भी आपके काम नहीं आया। मेरा विश्वास करो, जीवन के अंतिम काल में मनुष्य उन्हीं खतरों के लिए पश्चाताप

करता रह जाता है, जो उसने अपने जीवन में नहीं उठाए। हम यही सोच कर गहरी उदासी से घिर जाते हैं कि हमने वे सभी खतरे नहीं उठाए, जीवन के अवसरों का भरपूर लाभ नहीं पाया और कभी कोई काम नहीं कर सके। मेरे मित्र! अपने जीवन को एक कायर व्यक्ति की तरह मत जीओ। मैदान में उतरो, आलोचकों की परवाह मत करो और अपनी प्रतिभा के साथ खुल कर खेलो। जीवन बहुत छोटा है और तुम्हारे हाथ से इन वर्षों को खिसकने में देर नहीं लगेगी। जिस तरह किसी समुद्र के किनारे, गर्मी से झुलसते दिन में, तुम्हारे हाथ से रेत के कण फिसलते चले जाते हैं। तुम चमकने के लिए ही बने हो और तुम्हारी प्रतिभा को सामने आना ही चाहिए। **जीवन में केवल एक ही असफलता है और वह असफलता है कि आपने प्रयास ही नहीं किया।** जीवन की सबसे बड़ी असफलता यही है कि आप अपने जीवन का बड़ा खेल खेलना ही नहीं चाहते या उन स्थानों पर कदम तक नहीं रखना चाहते, जिनसे आप भयभीत हो जाते हैं।"

"जूलियन! मैं सहमत हूं। मैं आपकी बात से पूरी तरह से सहमत हूं। मुझे अब तक जीए गए जीवन पर बहुत पछतावा है। अपने प्रति उदार बनो। हम अपनी भूलों से ही सीखते हैं। कहते हैं न, अनुभव से अच्छे निर्णय लेने की क्षमता आती है, अनुभव तब आता है, जब आप गलतियां करते हैं और गलतियां तभी होती हैं जब आपकी निर्णय क्षमता अच्छी नहीं होती।' तो तुमने भी कुछ गलतियां कीं। अब अपने-आप को माफ करो और आगे बढ़ जाओ। **अतीत एक कब्र है और अपना पूरा जीवन एक कब्र में बिताने की कोई तुक नहीं बनती। हर अंत एक नए आरंभ का प्रतीक होता है। या यूं कहें कि अगर आप पीछे का दृश्य दिखाने वाले शीशे की ओर ही ताकते रहे तो कभी जीवन में आगे नहीं बढ़ सकते।** जैसा कि सिसेरो ने कहा : 'बुद्धिमान व्यक्तियों की आत्माएं अपने अस्तित्व के भावी रूप को देखती हैं; उनके सभी विचार शाश्वतता की ओर ही केंद्रित होते हैं। आपको अपनी भूलों से सबक लेते हुए विवेक की नींव रखनी होगी। आपको स्व-दायित्व तथा आत्म-क्षमा के बीच मेल करना होगा। भयभीत हो कर एक जगह टिकने की बजाए निरंतर आगे जाना होगा क्योंकि आपके महानतम डर के उस ओर ही आपका महानतम जीवन आपके इंतज़ार में है। यदि आप अपने डर की इस दीवार को पार नहीं करते, तो आप कभी भी अपने जीवन में व्यक्तिगत स्वतंत्रता को प्राप्त नहीं कर सकते। आपके डर के उस ओर ही आपकी आजादी बसी है। आप अक्सर कितनी बार ऐसा सोचते हैं कि अधिकतर लोग भयभीत ही होते हैं?"

"मुझे कोई अंदाजा नहीं है।" मैंने ईमानदारी से जवाब दिया। "शायद कुछ माह में एक बार...अगर तुम नियमित रूप से इस भय को अनुभव नहीं कर पाते, तो तुम एक सुरक्षित बंदरगाह पर अपने ही किनारे से चिपके बैठे हो। क्या तुम जानते हो कि कोलंबस नई दुनिया तक कैसे आया?" जूलियन ने अपनेपन से पूछा। "नहीं, जूलियन मैं नहीं जानता। मैं इतिहास तो पढ़ता था पर मेरे पास तुम्हारे इस सवाल का जवाब नहीं है।" "वह प्रीपैंडीकुलर तरीके से गया था।" जूलियन ने अपने सुघड़ हाथों को आगे लाते हुए T की आकृति बनाई।

"इस बात से आपका क्या तात्पर्य है?"

कोलंबस से पूर्व, सभी रोमांचप्रिय नाविक किसी नए स्थान की तलाश में, केवल किनारों के आसपास ही घूमते रहे। पानी में यात्रा करने का वही तरीका स्वीकार्य था। कोलंबस ने सबसे अलग जाने का साहस दिखाया। उसने वह करने से इंकार कर दिया, जो कि दूसरे करते आ रहे थे। उसने एक खतरा मोल लिया; वह किनारे से T के आकार में, सीधा समुद्र की ओर चला। चूंकि उसने ज्ञात को छोड़ कर, अज्ञात से कुछ खोज निकाला इसलिए आज उसकी गिनती हमारे महानतम हीरोज़ में होती है। मेरे दोस्त, नायक क्रांतिकारी होते हैं। मानवजाति की सारी प्रगति उन्हीं लोगों के हाथों हुई है, जिन्होंने दूसरों की तरह सोचने, महसूस करने व काम करने से इंकार कर दिया था। जब जॉन एफ. कैनेडी ने कहा कि वे एक आदमी को चांद पर भेजने के लिए कड़ा परिश्रम करेंगे तो वे एक क्रांतिकारी के शब्द थे, एक ऐसा क्रांतिकारी जिसने भीड़ का हिस्सा बन कर, छोटे स्तर पर खेलने से इंकार कर दिया था। महात्मा गांधी की देश को आजाद कराने की कल्पना एक क्रांतिकारी की कल्पना थी, जिसने अपने भय से भयभीत होने से इंकार कर दिया था। मदर टेरेसा कोलकाता को गरीबी के शिकंजे से छुड़ाना चाहती थीं, यह उस क्रांतिकारी का आदर्श था जिसने उन लोगों की बातें सुनने से इंकार कर दिया था, जो चीख–चीख कर कह रहे थे कि ऐसा नहीं हो सकता और न ही ऐसा किया जाना चाहिए। जॉर्ज बर्नाड शॉ ने खूबसूरत शब्दों में यह बात कही है: 'तर्कशील व्यक्ति स्वयं को संसार के अनुकूल ढालता है और गैर–तर्कशील संसार को अपने अनुकूल बनाने की चेष्टा करता है इसलिए संसार की प्रगति उस पर ही निर्भर करती है।' सारी प्रगति उन्हीं लोगों के माध्यम से आई जिन्होंने अपने दिल की सुनी और भीड़ के पीछे चलने की बजाए अपनी राह खुद बनाई। सारी प्रगति खतरों के खिलाड़ियों की बदौलत है, ये वही स्त्री और पुरूष थे जिन्होंने उन राहों पर चलने का साहस दिखाया, जहां जाने से वे डरते थे।"

"जूलियन, बिल्कुल सही कहा! इस संसार में सारी प्रगति व तरक्की – आग के आविष्कार से ले कर व्यक्तिगत कंप्यूटर के निर्माण तक उन सभी लोगों के माध्यम से आई है, जिनके पास भीड़ को नकारने का साहस था और जो वही करने का साहस रखते थे, जो उन्हें सही लगता था। फिर भले ही ऐसा करने से उन्हें अनिश्चितता व आंतरिक भय का सामना ही क्यों न करना पड़ा हो।"

"खतरा मोल लेने से भय तो उत्पन्न होता ही है, दोस्त। पर यही तो सबसे अधिक जीवंत रहने का तरीका भी है। मेरा तो यही मानना है कि जब हम कोई खतरा मोल लेते हैं तो सबसे अधिक जीवंत तभी होते हैं। जब हम अपने जीवन के अज्ञात की ओर बढ़ते हैं तो जीवंतता अपने चरम पर होती है। **'बड़े खतरे, बड़ा जीवन। छोटे खतरे, छोटा जीवन।'** मैं तो जीवन को इसी रूप में देखता हूं। अगर जीवन को महान रूप में देखना चाहते हो तो महान खतरे उठाना भी सीखना होगा। अगर मोती पाने हों तो गोताखोर को गहरे पानी में उतरना ही होता है। उसे ऐसे स्थानों पर जाना होता है, जहां जाने के बारे में कभी भीरू लोग सोच तक नहीं सकते।

“वाह! बढ़िया मिसाल।”

“जब आप किसी से कुछ ऐसा मांगते हैं जो आपने कभी नहीं मांगा और उस समय आपका दिल जिस तेज़ी से धड़कता है, वही जीवंतता है। जब आप किसी से कुछ कहना चाहते हैं और उसके विचार मात्र से ही पेट में खलबली होने लगती है तो उस समय आप पूरी तरह से जीवंत होते हैं। जब आप कोई ऐसा कार्य करते हैं, जो आपने कभी नहीं किया पर आप मन ही मन जानते हैं कि यह आपके जीवन को बेहतर और समृद्ध बना सकता है तो उस समय आप पूरी तरह से जीवंत होते हैं।” महान हाई-वायर वाकर पापा वालेंडा ने अपने निरीक्षण के बाद बहुत खूबसूरती से इसे व्यक्त किया है : ‘जीवन तो केवल वायर पर ही है। बाकी तो केवल प्रतीक्षा है।’

जूलियन उसी उत्साह के साथ जारी थे, जो हमारे वर्तमान जगत में तो दुर्लभ होता जा रहा है। “तो मुझे अपने लाइफ कोच के रूप में देखो। सभी होशियार व्यवसायी के पास कोच होते हैं जो उन्हें उनके मनचाहे लक्ष्य तक पहुंचाने में सहायक होते हैं। हर संभ्रांत खिलाड़ी के पास एक कोच होता है जो उसे उसकी श्रेष्ठतम सीमा तक प्रदर्शन के लिए प्रेरित करता है। इस जीवनरूपी खेल में तुम भी एक खिलाड़ी हो और तुम्हें भी यहां बेहतर प्रदर्शन के लिए एक कोच की आवश्यकता है जो तुम्हें प्रेरित कर सके, तुम्हारा साथी बन सके और तुम्हें तुम्हारे लिए तय नियति की ओर अग्रसर कर सके। मैं जानता था कि आज तुम सेमीनार में हिस्सा लेने के लिए यहां आओगे। सेमीनार करने वाला लड़का भी बहुत अच्छा बोला। वैसे उम्मीद करता हूं कि मैंने तुम्हें अपने पास बुलाने के लिए जो तरीका अपनाया, उससे तुम भयभीत नहीं हुए होगे।”

“अरे नहीं जूलियन! ऐसी कोई बात नहीं है।” मैंने झूठ बोला।

“दरअसल मैं चाहता हूं कि मैं जिन लोगों के साथ काम करूं, उनमें खतरा मोल लेने की क्षमता होनी चाहिए। हमारे पास जीवन के हर कदम के साथ कुछ न कुछ चुनाव होते हैं। हम उन सभी बातों का सामना कर सकते हैं, जिनका हम प्रतिरोध करते हैं और इसी प्रक्रिया में हम एक इंसान के रूप में सामने आते हैं। या हम यह चुनाव भी कर सकते हैं कि अपने ही स्थान पर सिकुड़े रहें और सड़ जाएं। किसी तरह से कोई कदम न उठाएं। दूसरे शब्दों में, हमारे चुनाव ही हमें सीमित या स्वतंत्र करने की क्षमता रखते हैं। तो मैंने जानबूझ कर तुम्हारे सामने कुछ चुनौतियां रखीं ताकि यह देख सकूं कि तुम उनसे कैसे पेश आते हो।”

“खैऱ जूलियन, वैसे उम्मीद करता हूं कि मेरे जूलियन बुलाने से तुम बुरा नहीं मानोगे?”

“बेशक, बिल्कुल नहीं डार। आने वाले सप्ताहों में हम एक-दूसरे को और बेहतर तरीके से जान लेंगे। हमें सारी औपचारिकताओं को ताक पर रखना होगा।” जूलियन ने एवियन पानी की बोतल से पानी गुटकते हुए कहा।

“मुझे आपको अपने लाइफ कोच के रूप में पा कर बहुत प्रसन्नता होगी। दरअसल मुझे बहुत प्रसन्नता है कि आपने मुझे अपने अगली परियोजना के रूप में चुना। आप ठीक कह

रहे हैं। मैं वाकई अपनी नियति को खोजने और जीवन को सार्थक रूप से जीने के लिए तैयार हूं। कल मेरे साथ कुछ रहस्यमयी घटित हुआ जिसने मुझे भीतर से सजग कर दिया। मैं उसे अभी व्यक्त नहीं कर सकता पर सादे शब्दों में कह सकता हूं कि, मैं इस तथ्य को सराहने लगा हूं कि जीवन किसी अनमोल खज़ाने से कम नहीं है। मुझे यह एहसास भी होने लगा है कि हम सबके भीतर महान होने की इतनी असीम क्षमता भरी है कि जिसकी हम कल्पना तक नहीं कर सकते।"

"बिल्कुल सच कहा।" जूलियन ने हामी भरी।

मैंने अपनी बात जारी रखी, "जूलियन, मैं आपसे एक बुनियादी सवाल पूछना चाहता हूं और मेरे विचार से और भी बहुत से लोग इस बारे में जानना चाहते हैं: 'कोई वास्तव में अपनी नियति की तलाश कैसे कर सकता है?"

जूलियन ने अपने चोगे पर की गई कशीदाकारी पर हाथ फिराया। उन्होंने इस तरह आंखें मूंद लीं मानो किसी उच्चतम स्त्रोत से मार्गदर्शन पाना चाह रहे हों। एक लंबी चुप्पी के बाद वे बोले।

"कोई भी अपनी नियति की तलाश नहीं करता डार! तुम्हारी नियति स्वयं तुम्हें तलाश लेगी – केवल तभी ऐसा हो सकेगा जब तुमने अपने भीतर से इसे पाने की तैयारी पूरी कर ली होगी और इसके प्रस्तुत होने पर अवसर को पाने की क्षमता पा ली होगी। कारलोस कैसटेंडा ने बहुत अच्छे शब्दों में कहा है: 'भले ही हम योद्धा हों अथवा न हों, हम सबकी आंखों के सामने समय–समय पर, अवसर या मौके का क्षण प्रकट होता ही रहता है। एक औसत आदमी और योद्धा में केवल इतना ही अंतर होता है कि योद्धा पूरी तरह से सजग व सचेत रहता है, वह पूरे संयम के साथ प्रतीक्षा करता है और मौके की झलक पाते ही वार करता है, जबकि आम आदमी ऐसा नहीं कर पाता।"

"बिल्कुल सही कहा।"

"यही सबसे बड़ी कुंजी है। अपनी नियति की तलाश करने की चिंता छोड़ दो। अपने–आप को जानने में कुछ समय लगाओ। दुनिया के लिए जो झूठी आड़ बना रखी है, उसे तोड फेंको और अपने पर गहराई से काम करो ताकि तुम जान सको कि तुम वास्तव में क्या हो। अपने साथ संबंधों को नए सिरे से संवारने पर केंद्रित रहो। अपने गहन व सच्चे मूल्यों को पहचानो। अपनी प्राथमिकताओं व वरीयताओं को पहचानो – आपको उन मूल्यों को वरीयता देनी है, जिन्हें आप सर्वश्रेष्ठ मानते हैं। यह जानने का प्रयास करो कि क्या करने से तुम्हें आंतरिक प्रसन्नता प्राप्त होती है। वस्तुओं की प्रतिक्रियाओं के लिए बने अवचेतन ढांचों को बाहर लाओ ताकि उनका उपचार हो सके। अपने भय व चिंताओं को जानो ताकि तुम उनसे उबर सको। जब तुम जानने लगोगे कि तुम कौन हो, तब तुम अपनी नियति को पाने का दावा कर सकते हो क्योंकि वह स्वयं तुम्हारी ओर आकर्षित होगी। जब तुम सही मायनों में यह जान लोगे कि तुम कौन हो या किसलिए हो, तो तुम्हें भी अपनी आंखों के आगे आए उस

क्षणिक अवसर की झलक मिल जाएगी और मेरा यकीन करो कि एक दिन ऐसा अवश्य होगा। तुम उस अवसर का लाभ उठा सकोगे।"

"मुझे आपकी बात समझ आ रही है और मैं अपने लिए ऐसा आंतरिक कार्य करना भी चाहता हूं और अपने भीतर छिपे भय के सायों से मुक्त भी होना चाहता हूं।"

"क्या तुम जानते हो कि वे भय तुम्हें किसी ने दिए हैं। किसी ने तुम्हें उनकी शिक्षा दी है?"

"क्या आप सच कह रहे हैं?"

"बेशक! जब तुम्हारा जन्म हुआ। उस समय तुम बिल्कुल निर्भय थे। अपने जन्म के समय तुम बिल्कुल संपूर्ण थे।" हैनरी एमियल ने एक बार लिखा था : 'बचपन को स्वर्ग का आशीर्वाद है क्योंकि यह जीवन की क्रूरताओं के बीच स्वर्ग के एक टुकड़े को लाता है। प्रतिदिन जितने भी विशुद्ध और निर्दोष जन्म हो रहे हैं, वे हमारी विकृत प्रकृति के विरूद्ध लड़ने आते हैं।'

"बिल्कुल सही कहा जूलियन! बच्चे हमारे लिए उन्नत आत्माओं के रूप में आते है और वे वयस्कों से भी कहीं बेहतर सबक देने की क्षमता रखते हैं। मैं जानता हूं कि मैं कई बार उन सब को भूला हूं। बच्चे कई प्रकार से अध्यापक की ही भूमिका निभाते हैं। वे इतना अधिक जानते हैं कि हम उन्हें सब कुछ जानने का श्रेय दे सकते हैं।"

"बिल्कुल सही कहा दोस्त! हम नवजात बालकों के रूप में, पूरी तरह से संपूर्ण होते हैं। हम उसी बल से जुड़े होते हैं, जिसने इस संसार को रचा है। पर जब बड़े होने लगते हैं तो अपने आसपास के संसार के भय हमें जकड़ने लगते हैं। हम विकृत व दूषित होने लगते है। हम ऐसा इसलिए करते हैं कि हम दूसरों के आगे अच्छा बनना चाहते हैं। हम चाहते हैं कि माता-पिता हमें प्यार दें व सराहें। तो हम उनके मॉडल बनते हुए, उनके भय अपने पर ओढ़ लेते हैं। उनके सीमित विश्वासों व झूठी धारणाओं को अपनाते हुए, हम उनके जैसा ही बनने की चेष्टा करते हैं। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि हम उनका प्यार पाना चाहते हैं। तुम इस पल में जो भी हो, यह तुम्हारा असली रूप नहीं है। इस संसार में आने के बाद तुमने जो रूप लिया, यह वही है। इस संसार से तुमने जो भी भय लिए हैं, यदि उनसे मुक्त होना चाहते हो तो तुम्हें वापिस जा कर, अपने भय के सारे स्त्रोतों को पहचानना होगा। फिर उन पर तब तक काम करना होगा, जब तक कि वे तुमसे पूरी तरह से जुदा नहीं हो जाते। अपने-आप को जानना ताकि नियति तुम्हारे पा सके; तुम्हें अपने जीवन पर और अधिक ध्यान देते हुए, उन सभी सबकों पर केंद्रित होना होगा, जिन्हें सीखना बहुत आवश्यक है। तुम्हें अपने प्रति थोड़ा कड़ा रूख रखते हुए, अपनी कहानी की जांच करनी होगी।"

"मेरी कहानी?"

"हममें से प्रत्येक, भले ही अपने-आप को ही क्यों न सुनाए, पर अपने लिए एक कहानी गढ़ते हैं। कईयों के लिए तो यह दास्तान केवल इतनी ही होती है कि उन्हें किस तरह शिकार

बनाया गया। वे ऐसे इसलिए हैं क्योंकि उनका बचपन ऐसा ही था या वे ऐसे खराब माहौल व बातों के बीच ही पले-बढ़े। आज संसार में बहुत से लोग पेशेवर विपदाग्रस्त हैं। क्यों? क्योंकि शिकार बनना आसान है। इस तरह आपको यह जिम्मेवारी नहीं लेनी होती कि आपका जीवन कैसा दिखाई देता है। आप अपनी ओर अंगुली किए बिना, जीवन में हर दूसरे व्यक्ति को अपनी नाकामयाबियों के लिए दोषी ठहरा सकते हैं और कभी बदलाव लाने की कोशिश नहीं करते। **पर जब आप इस तरह की भूमिका निभाते हैं तो आप जिस पर सताने का आरोप लगाते हैं, आपकी सारी ताकत उसके पास चली जाती है। यह जीने का बहुत ही नपुंसक तरीका है।"**

"बिल्कुल सही कहा।" मैंने अपना सिर हिला कर हामी दी।

"लोग अपने लिए जो कहानियां गढ़ते हैं, उनमें से एक यह भी हो सकती है कि वे अपने सपनों का पीछा करने के लिए बहुत बूढ़े हो गए हैं, इतने आकर्षक नहीं रहे कि मनचाहा साथी पा सकें या ऐसा कुछ कर सकें, जिसे वे जाने कब से करना चाहते थे। यह सब यूं ही चलता रहता है। मेरा कहना यह है कि आपके लिए सबसे बेहतर कदम यही होगा कि आप अपने साथ-संबंधों में सुधार लाएं।"

"जैसा कि आपने अपने साथ हिमालय में किया था।" मैंने बात काटी।

"हां, जैसा मैंने हिमालय में किया था। अधिकतर लोग अपने साथ संपर्क खो देते हैं। वे यह भूल गए हैं कि वे सही मायनों में क्या हैं। यह देख कर मेरा मन उदास हो जाता है। हममें से प्रत्येक के भीतर महानता का डीएनए मौजूद है। हमारे जीवन इसलिए बनाए गए थे कि हम पूरे आनंद, उत्साह, स्नेह, शांति व सुंदरता के बीच जी सकें। प्रसन्नता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है। पर हम इसे अपने ही तरीके से लेने लगते हैं। हम सामान्यता के जाल में उलझ गए हैं। हम यह मानने लगे हैं कि हमारा जन्म चमत्कारों के लिए नहीं हुआ। हम इसी भय के साथ बड़ी उड़ान नहीं भर पाते कि कहीं हमें चोट न आ जाए, लोग हमें प्यार करना बंद न कर दें और हमारा जीवन काम का न रहे।"

"बिल्कुल ठीक। हम इसी झूठ के सहारे जीने लगते हैं कि पैसे से ही सच्ची प्रसन्नता पाई जा सकती है और हम अपनी आत्माएं बेच देते हैं। हम नहीं जानते कि हम क्या बन गए हैं और हमें क्या बनने के लिए भेजा गया था। हम अवचेतन रूप से ही बाहरी दुनिया की ताकत के साथ अपनी जन्मजात सिद्ध शक्ति का सौदा कर रहे हैं। हम सचमुच भूल गए हैं हम सही मायनों में क्या हैं और अगर आप नहीं जानते कि आप क्या हैं और आप सही मायनों में क्या पाना चाहते हैं, तो आप अपनी नियति को सामने आने पर कैसे पहचानेंगे या उसका लाभ कैसे ले सकेंगे? अपने-आप को जानो और मैं तुमसे वादा करता हूं कि तुम्हारी नियति एक न एक दिन तुम्हें खोज ही लेगी।"

जूलियन ने एक पल के लिए अपनी बात को विराम दिया। "अच्छा डार! हमारे पहले कोचिंग सत्र को विश्राम देने का समय हो गया है। बहुत रात हो रही है और मेरे अनुसार तो

तुमने एक रात के लिए बहुत अधिक उत्तेजना प्राप्त कर ली है।"

जब हम उस कमरे से निकल कर बारादरी की ओर जाने लगे तो जूलियन ने अपनी सुगठित बांह से मेरे कंधों को घेर लिया। जूलियन के साथ रहने से ही मेरे मन को असीम शांति मिल रही थी।

"मैं तुमसे केवल यही चाहता हूं कि तुम मुझ पर विश्वास रखो। अगर तुम चाहो तो मैं तुम्हें एक ऐसी जगह ले जाना चाहूंगा, जिसके बारे में तुमने कभी सपने में भी नहीं सोचा होगा। फ्रेडरिक फॉस्ट ने इसे बहुत सुंदर शब्दों में कहा है: 'हर व्यक्ति के भीतर एक दैत्य सोया है। जब वह दैत्य जागता है तो चमत्कार घटते हैं।' मैं तुम्हारे साथ वही राज़ बांटना चाहता हूं, जिन्हें मैंने हिमालय की ऊंचाईयों में पाया। मैं तुम्हें वह सब सिखाऊंगा जो जीवन का असली स्वाद पाने के लिए सीखना आवश्यक होता है। मेरे दोस्त, जीवन को एक बार खुल कर जीओ।"

"मैं आपका मतलब नहीं समझा। मैं तुम्हें बताना चाहता हूं कि हमें अपने भय और दुर्बलताओं से ऊपर उठना होगा तभी एक शानदार और उल्लेखनीय जीवन पा सकते हैं। मैरी चोलमोंडेले के शब्दों में यह बात और भी खुल कर सामने आती है। ये लो, यह तुम्हारे लिए सहायक हो सकता है।"

जूलियन ने अपने चोगे की जेब से मुड़ा–तुड़ा कागज निकाल कर दिखाया। लगता है कि उसे बहुत अधिक प्रयोग में लाया गया है। उस पर लिखा था:

जितने भी वर्ष मैं जी रही हूं, मुझे यह विश्वास होता जा रहा है कि हम जिस प्यार को नहीं दे पाते, जिन शक्तियों को प्रयोग में नहीं ला पाते, जिन खतरों से खेल नहीं पाते और उस दर्द से उबर नहीं पाते, जो सब कुछ विनष्ट कर देता है तो हमें जान लेना चाहिए कि जीवन व्यर्थ ही जा रहा है। जिस भी इंसान ने पूरे जीवन में एक बार भी दिल खोल कर न जीया हो, उससे अधिक गरीब तो कोई हो ही नहीं सकता।

"बहुत अच्छे शब्द हैं, जूलियन! कृपया मेरी सहायता करो, आप जो कहोगे, मैं करने के लिए प्रस्तुत हूं।", जूलियन ने एक लाइफ कोच के रूप में अपनी सेवाएं देने का जो सुनहरा अवसर मुझे दिया था, उसे पहचानते हुए मैंने झट से उत्तर दिया। मैं अपने व्यवसायी मित्रों से अनेक बार लाइफ कोच के महत्व के बारे में सुन चुका था औरों ने अपने–आप को भाग्यशाली माना कि जूलियन ने मेरे जीवन के इस मोड़ पर, मेरे जीवन में कदम रखा था। "मेरे रूपांतरण में कितना समय लगेगा?"

"डार! **व्यक्तिगत रूपांतरण कोई दौड़ नहीं होता। दरअसल कई बार आप बदलने**

की जितनी अधिक कोशिश करते हैं, उसमें उतना ही अधिक समय लग जाता है। तो अधिकतर लोग आत्म–अन्वेषण की इस प्रक्रिया को बहुत तेज़ी से पूरा करना चाहते हैं, वे चाहते हैं कि उन्हें तीव्र गति से आरोग्य प्राप्त हो जाए। वे एक के बाद एक पुस्तकें पढ़ते चले जाते हैं। वे एक के बाद एक गाइड के पास जाते हैं, सेमीनारों में हिस्सा लेते हैं। वे उन सभी बड़े सवालों के जवाब पाना चाहते हैं, जिनसे वे जूझ रहे हैं, परंतु जो व्यक्ति भय के साए में जीता है, वह कभी व्यक्तिगत रूपांतरण की इस प्रक्रिया का आनंद नहीं ले पाता।"

"सचमुच?" हमारी सभ्यता में तो कोई प्रक्रिया 'जितनी तेज़ी से घटेगी, उतनी ही बेहतर मानी जाएगी', और जूलियन द्वारा इस धारणा को नकारने से मुझे बहुत आश्चर्य हुआ। इस तरह उनके गैरपारंपरिक दर्शन के आसपास छाया कोहरा और भी गहरा गया।

"विश्वास रखो, हो सकता है कि तुम्हारा समय प्रकृति द्वारा तय किए गए समय से मेल न खा रहा हो। इस प्रक्रिया को सहज भाव से पूरा होने दो। तुम इसलिए नहीं बने कि तुम्हें सारे जवाब मिलने ही चाहिए, कम से कम अभी तो ऐसा नहीं है। जब तुम किसी एक खास सबक और शिक्षा के लिए तैयार हो जाओगे, तो वह अपने–आप सामने आएगा। अगर तुम्हें किसी फिल्म में आने वाले रोचक उतार–चढ़ावों की जानकारी पहले ही दे दी जाए तो उसे देखने का आनंद जाता रहेगा। मेरे दोस्त! तुम्हारा जीवन किसी थ्रिलर की तरह है– आधा मज़ा तो इसी में है कि तुम नहीं जानते कि इसके बाद क्या होने वाला है। जीवन बहुत ही तरल है। यहां सब कुछ निरंतर बदलता रहता है। तुम्हारे हिसाब से जो बदलाव आना चाहिए, यह आवश्यक नहीं कि ऐसा ही होगा। यही तो इस सारी प्रक्रिया का असली आनंद है। यह भी अपने–आप में किसी उपहार से कम नहीं है।"

"आप कहना क्या चाहते हैं?"

"जीवन के उद्देश्य का एक भाग तो यही है कि आप यह स्वीकारें कि यह सब एक रहस्य है। आपकी यात्रा का एक अंश यह भी है कि अगर कुछ आपके अनुसार न चल रहा हो **तो आपको उसके भय से मुक्त होना होगा।** जीवन कभी आपके सोचे हुए रास्ते पर नहीं चलता। एक बार यह बात समझ आने पर इसके रोमांच का सहज भाव से आनंद लिया जा सकता है। ज़रा मुड़ कर अपने बीते हुए जीवन का जायज़ा लें। क्या वह बिल्कुल वैसा ही रहा, जैसा कि आपने योजना बनाई थी?"

"मैंने पिछले कुछ सप्ताह में कई बार इस विषय में सोचा और पाया कि मैंने कभी इसे इस रूप में पाने की कल्पना तक नहीं की थी।"

बिल्कुल ठीक! प्रत्येक व्यक्ति का जीवन ऐसा ही होता है। और अगर तुम मेरे प्रश्न पर देर तक व गहराई से विचार करोगे तो मैं भविष्यवाणी करता हूं कि तुम यह जान लोगे कि भले ही तुमने जीवन में कुछ बुरे पलों की कामना नहीं की थी, पर ऐसा ही कुछ तुम्हारे जीवन में आए अच्छे क्षणों के लिए भी कहा जा सकता है।"

"हां, जूलियन! यह तो बिल्कुल सच है। इस समय मैं एक बुरे दौर से गुज़र रहा हूं पर

ईमानदारी से कहूं, तो मैं स्वीकार करूंगा कि मैंने कभी सपने में भी नहीं सोचा था कि मुझे इतनी सफलता मिलेगी। बिल्कुल अनपेक्षित रूप से, बहुत सी चीज़ें सामने आई हैं।"

"बिल्कुल ठीक! सबक यही है कि कोई भी जीवन को नियंत्रित नहीं कर सकता या इसके विशाल ढांचे को जान नहीं सकता। पर मेरा विश्वास करो, इसे संपूर्णता के साथ पाया जा सकता है। यहां तक कि तुम इस समय भी जो अनुभव कर रहे हो, भविष्य में मुड़ कर पाओगे कि ये क्षण भी तुम्हारे जीवन को समृद्ध व सार्थक बनाने के लिए कितने उपयोगी रहे।"

"सचमुच?"

"बिल्कुल सच, डार।"

"बहुत से लोग इस तथ्य को पचा नहीं पाते कि उनके लक्ष्य व योजनाएं, उनकी इच्छानुसार फलीभूत नहीं होंगे। इस तरह की सोच वाले लोग जीवन को अपने वश में रखना चाहते हैं। जीवन को वश में रखने की प्रवृत्ति के पीछे ही उनका भय छिपा होता है। ये लोग कुदरत के तरीकों पर विश्वास नहीं रखते। ये लोग, सृष्टि के उस कर्ता के प्रति प्रेम में भी विश्वास नहीं रखते, जिसने उन्हें रचा है। हां, योजनाएं बनाओ व लक्ष्य तय करो। कठिन परिश्रम करो व और सब कुछ पा लो। यह एक तर्कशील व्यक्ति की धारणा होती है – काफी हद तक यह उनके लिए सहायक भी रहती है। पर आपको अपनी योजनाओं व लक्ष्यों पर अपनी पकड़ थोड़ी ढीली रखनी चाहिए। प्राय: ब्रह्माण्ड आपको अनपेक्षित पैकेट में ही खज़ाना भेजता है और जिसे अपने लिए अच्छा मानते हैं, उसे कस कर थामने में आप इतना व्यस्त रहते हैं कि उसे उपेक्षित कर जाते हैं, जो आपके लिए कहीं बेहतर था।"

"मैंने तो आज तक ऐसी बातें पहले कहीं नहीं सुनीं। भारत के संन्यासी तो वाकई बहुत ही अद्‌भुत लोग होते होंगे।"

"मेरे दोस्त, यह तो कुछ भी नहीं है! तो मैं अपनी बात पर वापिस आता हूं।" जूलियन ने अपनी बात पर वापिस आते हुए कहा, नियति के पथ को नियंत्रित करने की इच्छा का दमन करो क्योंकि भले ही तुम कितनी भी कोशिश क्यों न कर लो, तुम ऐसा नहीं कर सकते। बेशक तुम्हारे चुनाव विवेकपूर्ण हो सकते हैं और उनसे प्रभाव भी पड़ेगा परंतु अंतत: तुम नियंत्रण में नहीं हो। हम मनुष्य बहुत ही दंभी होते हैं। हमें लगता है कि हम इस ब्रह्माण्ड से भी कहीं अधिक बुद्धिमान हैं। इस ब्रह्माण्ड ने सूर्यास्त व इंद्रधनुष रचे हैं। इसी ब्रह्माण्ड ने चांद व सितारे रचे हैं। हमें लगता है कि इस सारी सृष्टि व हमारे सर्जक की तुलना में, हम अपने बारे में कहीं बेहतर जानते हैं? यह बात तो सोचने से ही हास्यास्पद जान पड़ती है। हमारे भीतर विश्वास का कितना अभाव है।"

"यह सब हमारे भय की देन है। मैं इस बात को समझने लगा हूं।"

"सही कहा, भय ही वह पहला कारक है, जिसके कारण लोग एक अच्छा, विशाल व प्रामाणिक जीवन व्यतीत नहीं कर पाते। मैं तुम्हारे मूल प्रश्न पर वापिस जाता हूं कि इस

रूपांतरण में कितना समय लगेगा, मैं यह दोहराना चाहता हूं कि व्यक्तिगत रूपांतरण कोई दौड़ नहीं कि तुमने सबसे पहले फिनिश लाइन पर जाना है। यह तो एक प्रक्रिया है। मैं तुम्हारे भीतर गहराईयों तक जिन सबक या पाठों को पहुंचाना चाहता हूं, उन्हें समाहित करने के लिए तुम्हें अपना समय देना होगा। जब तुम किसी निश्चित सबक के लिए प्रस्तुत होगे, तो तुम्हें एक संपूर्ण अनुभव या व्यक्ति प्राप्त होगा, जो तुम्हारे लिए उस सबक को सीखने का अवसर प्रदान करेगा। और जब तुम वह सबक पा लो तो तुम्हें समय की परवाह न करते हुए, उसे अपने भीतर हमेशा के लिए संजोना होगा। इसमें कोई हड़बड़ाहट नहीं होनी चाहिए। यह एक बहुत ही मधुर यात्रा है। विश्वास करो, जीवन के किसी भी मोड़ पर, तुम जहां भी हो, तुम्हें सही मायनों में वहीं होना था।"

"अच्छा! मैं इस पकड़ को ढीला करने की कोशिश करूंगा। मैं देख सकता हूं कि यह कोई दौड़ नहीं है। मैं अपने रूपांतरण को आर्गेनिक प्रक्रिया से निकलने दूंगा, जूलियन!"

जूलियन मुझे उस लंबे बरामदे से होते हुए, ऑडीटोरियम की ओर ले आए। उन्होंने सीमेंट के फ़र्श पर सोडे का एक खाली केन देखा, जिसे किसी ने यूं ही भनका दिया था। उन्होंने उसे उठा लिया। वे बोले, हर छोटे से छोटा काम भी मायने रखता है। मैं समझ नहीं सका कि वे कहना क्या चाहते थे पर मैं शांत रहा।

आने वाले सप्ताह व महीनों में, मैं तुम्हारे साथ सात चरणीय प्रक्रिया बांटूंगा, जो तुम्हें उस संपूर्णता तक ले जाएगी, जो नवजात अवस्था में तुम अपने साथ लाए थे। यह प्रक्रिया तुम्हारे भीतर के उन्नत व जागृत स्वरूप को बाहर लाएगी। पर धैर्य रखना। यदि तुमने संपूर्ण निष्कर्ष तक इसका पालन किया तो तुम एक मनुष्य के रूप में प्रबुद्धता का आनंद ले सकोगे।

"प्रबोध! वाह।" मैंने उस भावी आनंद व उत्साह को अनुभव करते हुए कहा।

"डार! तुम्हें इस यात्रा के लिए प्रतिबद्ध होना होगा। तुम्हें आत्म-जागरण की सात चरणीय प्रक्रिया को पूरा करने के लिए पूरे साहस के साथ कदम बढ़ाना होगा और अपने आंतरिक रूप में बदलाव लाने के लिए कार्य करना होगा। कृपया यह जान लो कि इस प्रक्रिया के प्रत्येक चरण पर तुम्हारे पास एक चुनाव होगा – जब भी मनुष्यों को अपनी नियति को पहचानना होता है तो उनके सामने चुनाव आते हैं। तुम चाहो तो अपनी उस वृद्धि को गले से लगा सकते हो या उससे कतरा कर निकल सकते हो। और अगर तुमने वृद्धि करते हुए, अपने भय की दिशा में आगे जाने का निर्णय लिया तो तुम व्यक्तिगत स्वतंत्रता व महानता के उन्नत से उन्नत शिखर पर पहुंचते चले जाओगे। तुम्हें यह पता चल जाएगा कि वाकई यह जीवन क्या है? तुम उन सार्वजनिक तथ्यों और प्राकृतिक नियमों को जानने लगोगे, जो इस संसार के शासन को चालित करते हैं। जब तुम एक बार इन्हें जान जाओगे, तो तुम स्वयं को इनके साथ रखने का निर्णय ले सकते हो। और जब तुम स्वयं को, संसार को चलाने वाले प्राकृतिक नियमों के अनुकूल बना लेते हो तो तुम्हारा जीवन स्वचालित रूप से काम करने लगता है। तुम सच को तलाशने लगते हो। तुम यह जानने लगते हो कि तुम सही

मायनों में क्या हो। तुम अपनी निजी बुद्धिमता तथा अपने जीवन के सार में छिपी असीम संभावनाओं को पा लेते हो। तभी तुम्हारा जीवन एक जादू बन जाता है।"

"जूलियन! क्या इसके लिए मुझे कोई कीमत अदा करनी होगी?" जब हम ऑडीटोरियम से निकले तो मैंने जूलियन से पूछा। "मैंने सुना है कि व्यक्तिगत कोचिंग बहुत महंगी होती है।"

"बिल्कुल नहीं! मेरी सेवाएं निःशुल्क हैं – बस मुझे समय–समय पर केलों की आपूर्ति करते रहना।" जूलियन ने चेहरे पर एक बड़ी सी हंसी के साथ कहा। "सच कहूं तो मैं एक अभियान पर निकला हूं, जहां मैं लोगों को उनकी सच्ची क्षमता का एहसास दिलाना चाहता हूं। यदि मुझे अपने किसी जानकार की मदद करने का अवसर मिलता है तो यह मेरे लिए प्रसन्नता का विषय होगा। मैं इस अद्‌भुत ग्रह पर जीने के लिए निःस्वार्थ सेवा के रूप में भाड़ा चुका रहा हूं। मैं लोगों को दिखाना चाहता हूं कि एक पूरी तरह से सक्रिय व जागरूक मनुष्य कैसा होता है। इस समय संसार जिस दशा में है, उसे देख कर मेरे दिल को ठेस लगती है।" मैंने जूलियन को देखा। वे चलते–चलते थम गए थे और उनकी आंखें भर आई थीं।

"यह वह स्थान है, जहां लोग सपने देखना भूल गए हैं। मैं लोगों को मदद करना चाहता हूं कि वे फिर से सपने देखने लगें। अगर सारी मनुष्य जाति सपने देखने वालों के एक बड़े दल के रूप में सामने आ जाए तो यह अपने–आप में कितनी अद्‌भुत बात होगी। कल्पना करो कि तब हमारा संसार कैसा दिखेगा। उस विरासत की कल्पना करो, जिसे हम आने वाली पीढ़ी के लिए छोड़ कर जा सकते हैं। मैं लोगों को मदद करना चाहता हूं कि वे फिर से विश्वास करना सीखें। और मैं सही मायनों में जीना सिखाना चाहता हूं। तो मेरे दोस्त, तुम्हारी सहायता करना मेरा कर्तव्य बनता है। तुम्हारी सेवा करके मुझे आनंद मिलेगा। यदि तुम्हें मेरे ऐसा कहने से बुरा न लगे, तो मैं एक अनुचर नेता हूं। दूसरों को कुछ देने से मुझे असीम प्रसन्नता का अनुभव होता है। यह सब किसी पुरस्कार से कहीं अधिक है।" जूलियन ने कहा।

"जूलियन मैं एहसानमंद हूं।" मैंने उस व्यक्ति के लिए हार्दिक आभार प्रकट करते हुए कहा, जो मुझे मदद करने के लिए इतना उत्सुक था।

"हमारी सभ्यता में प्राय: कर्तव्य शब्द को गलत अर्थों में ले लिया जाता है। कई लोग इसे पसंद नहीं करते और उन्हें लगता है कि यह उन्हें उनके वर्तमान में जीने से रोक देगा। मेरे लिए कर्तव्य शब्द प्रसन्नता व स्वतंत्रता का प्रतीक है। महान भारतीय कवि रवींद्रनाथ टैगोर ने, मुझसे कहीं खूबसूरत शब्दों में इसे प्रकट किया है: 'मैं सोया और सपने में पाया कि जीवन आनंद था और जब मैं जागा तो पाया कि जीवन एक कर्तव्य था। और जब मैं काम पर गया तो ये क्या!! मैंने पाया कि कर्तव्य आनंद भी हो सकता है।' मेरी नियति यही है कि मैं दूसरों की सेवा करूं। और मुझे जिस काम के लिए भेजा गया है – जिस काम को करने के लिए मैं इस ग्रह पर आया हूं, उसे करना मेरे लिए किसी परम प्रसन्नता व परमानंद से कम नहीं है। वुडरो विल्सन ने इसके निरीक्षण के बाद कहा है: **'आप यहां केवल आजीविका कमाने के लिए नहीं आए हैं। आप यहां इसलिए हैं ताकि संसार को एक महान नज़रिए, आशा**

की महान किरण तथा उपलब्धि के साथ जीने के योग्य बना सकें। आप यहां संसार को समृद्धे बनाने आए हैं, और अगर आप इस काम से चूके तो स्वयं ही अभावग्रस्त होंगे।'

"ठीक है जूलियन! मैं एक अच्छा छात्र बनने का वादा करता हूं। मैं आपकी विवेकबुद्धि को ध्यान से सुनूंगा। मैं वादा करता हूं कि उन सभी बदलावों को लाने की कोशिश करूंगा, जिनके लिए आप सलाह देंगे। मुझे तलाशने के लिए आभार! बहुत-बहुत धन्यवाद! मुझे ऐसा प्रतीत हो रहा है कि आज शाम के बाद से, मेरा जीवन वैसा नहीं रहेगा, जैसा कि पहले हुआ करता था।"

"मेरे दोस्त! तुमने बिल्कुल सही कहा। मुझे कल सुबह 'क्यू' होटल में मिलना। हम अपना पहला सबक वहीं से आरंभ करेंगे।"

"वह तो मेरे ही होटलों में से एक है।" मैं हंस दिया।

"मैं जानता हूं। मैं वहीं रह रहा हूं। जैसा कि मैंने कहा कि एक सांसारिक रूप से सुंदर जीवन जीने में कोई बुराई नहीं है। बस जो भी है, उसे अपने पर हावी मत होने दो।"

"यह जान कर अच्छा लगा। अगर मुझे अपने परिश्रम से कमाई हर चीज़ का त्याग करना होता तो संभवत: यह जागरण इतना आनंददायी न हो पाता। इनमें से कुछ चीज़ें मुझे बहुत आनंद देती हैं, जैसे मेरी सेलबोट। मुझे गर्मी के मौसम में उसके साथ पानी में जाना बहुत भाता है। कुछ देर पहले तो मुझे ऐसा ही लग रहा था कि आप कहेंगे कि अगर मुझे प्रबुद्ध होना है तो अपना सब कुछ बेच कर, किसी पर्वत के एकांत में जा कर रहना होगा।"

"मेरा मानना है कि कई मायनों में वह भी एक बचाव ही हो सकता है। आपको किसी पर्वत के एकांत पर जा कर कुछ मायनों तक शांति भी मिल सकती है क्योंकि वहां कोई भी आपके बटन दबाने वाला या आपकी शांति भंग करने वाला नहीं होता। मैं उस भिक्षु की कथा नहीं भूल सकता, जिसने पूरे सात साल शांत-एकांत स्थल में बिताए थे, वह तिब्बत के किसी मठ में रह रहा था। वह प्राय: महीनों तक मौन में चला जाता ताकि अपने मन को स्थिर रखते हुए, उसकी अशुद्धियों से मुक्त हो सके। एक समय आया जब उसे लगा कि वह प्रबोध की अवस्था तक आ गया था। तो क्या तुम जानते हो कि उसने क्या किया?"

"मुझे बताओ?"

"वह न्यूयार्क शहर में लौट आया। जब वह लौटा तो उस महानगर में अपने लिए कुछ खरीददारी करने निकला। कुछ ही मिनटों में वह तनाव से घिर गया। तेज़ी से बजते हॉर्न, भारी भीड़ और उसके आसपास की गति ने उसे भयभीत कर दिया। अब वह किसी प्रबुद्ध की तरह प्रतिक्रिया नहीं दे पा रहा था। मैं यह नहीं कहता कि शांत व एकांत वातावरण का कोई महत्व नहीं होता। अपने-आप से जुड़ने के लिए इसके महत्व को नकारा नहीं जा सकता। महान दार्शनिक खलील जिब्रान ने एक बार लिखा था: 'मुख जो भी कहता है, उससे महान व शुद्ध सदा मौन होता है। मौन हमारी आत्मा को उजागर करता है, हमारे हृदय से

धीमे शब्दों में बतियाता है और उन्हें एक साथ ले आता है। मौन हमें हमसे ही दूर कर देता है। हम आत्मा के समीप होने लगते हैं और स्वर्ग के और पास हो जाते हैं।"

"बहुत सुंदर शब्द", मैं जूलियन द्वारा सुनाए जा रहे शब्दों का पूरा आनंद ले रहा था।

"तो अगर जीवन की सारी संभावनाओं से जुड़ना है तो शांति व मौन को नकारा तो नहीं जा सकता परंतु यदि आप शहर के बीचों–बीच स्वयं को प्रबोध पाने के लिए तैयार कर सकते हैं, तो यह कई मायनों में एक बड़ी चुनौती होगी, जिसका सामना करने के लिए बहुत साहस चाहिए। आप जहां हैं, वहीं आंतरिक शांति पा लेना ही कहीं बड़ी प्रज्ञा होगी।"

"उन भिक्षुओं के बारे में बताएं, जिनसे आप मिले थे। यदि वे न्यूयार्क में होते तो कैसे पेश आते?"

"ये भिक्षु सिवना के संत कहलाते हैं। बहुत कम लोग ही उन्हें आज तक तलाश सके हैं क्योंकि ये बहुत एकांत में रहते हैं और हिमालय के एक निश्चित दुर्लभ इलाके में इनका वास है। और तुम्हें पता होना चाहिए कि ये भिक्षु सही मायनों में प्रबुद्ध जीव हैं। उन्हें संसार में किसी भी स्थान पर और किसी भी परिस्थिति में खड़ा कर दो और मैं वादा करता हूं कि ये सहज भाव के साथ, उसी तरह स्थिरमन दिखाई देंगे। ये संत जादुई लोगों से कुछ कम नहीं थे। मैं जानता हूं कि मैं कभी उन जैसे लोगों से दोबारा नहीं मिल सकूंगा।" जूलियन ने फ़र्श को ताकते हुए कहा। शायद वह उन्हें बहुत याद करता था।

"आप कल सुबह क्यू में मुझसे कितने बजे मिलना चाहेंगे?" मैंने सादगी से पूछा।

"पांच बजे।"

"क्या आप मज़ाक कर रहे हैं?"

"दोस्त! क्या ऐसी बात में भी मज़ाक होगा? अगर तुम्हें किसी भिक्षु की प्रज्ञा चाहिए तो उसकी तरह ही पेश आना होगा। संतों का मानना है कि सुबह के प्रारंभिक चरण में कुछ रहस्यमयी विशेषताएं होती हैं जो कुछ सीखने व गहराई से मनन करने के लिए बहुत अच्छा अवसर प्रदान करती हैं।"

ये शब्द कहते ही जूलियन आगे आए और मुझे छोटी सी गलबांही देने के बाद आगे चल दिए। उनका चोगा हवा में लहरा रहा था। मैं वहीं, उसी मौन के बीच कुछ देर खड़ा रहा। मैं हिल तक नहीं सका। मैं अपने भाग्य पर विश्वास नहीं कर पा रहा था। जिस समय मैंने यह मान लिया था कि मैं कभी अपने सवालों के जवाब नहीं पा सकूंगा, ठीक उसी समय मेरे जीवन में एक सद्गुरू प्रकट हो गए थे।

ऑडीटोरियम से बाहर निकला तो पाया कि किसी का चमड़े का बटुआ वहां गिरा हुआ था। मैंने उसे उठा लिया ताकि उसे किसी सिक्योरिटी वाले को या नाइट–गार्ड को दे सकूं। फिर कौतूहल हावी हुआ तो मैं उसके भीतर का सामान देखने से खुद को रोक नहीं पाया। उसमें कोई पैसा, क्रेडिट कार्ड या ऐसा कोई सामान नहीं था, जिससे मालिक की पहचान हो

पाती। बटुए में केवल एक ही वस्तु दिखाई दी: उसके भीतर एक लेख की प्रतिलिपि थी, जो हमारे स्थानीय समाचार–पत्र द्वारा जूलियन व उसके रोमांचों के बारे में लिखा गया था। मैं उसे बाहर निकाल कर घूरने लगा। जूलियन निश्चित रूप से इसे मेरे लिए छोड़ गए हैं। लेख की अंतिम दो पंक्तियों को लाल स्याही से रंगा गया था। लिखा था: 'जूलियन मैंटल – जिस भिक्षु ने अपनी फरारी बेच दी – वे विश्वास रखते हैं कि मनुष्य की आत्मा तथा प्रवृत्ति इस संसार का कल्याण करने के लिए उपयुक्त हो सकती है। वे उन सत्यों को प्रकट करने के लिए सामने आए हैं जिन पर एक सुंदर जीवन रचा जा सकता है; और अगर आप भाग्यशाली रहे तो आप उनके अगले छात्र भी हो सकते हैं।'

मैंने लेख को मोड़ा और शर्ट की अगली जेब में, अपने हृदय के पास रख लिया।

अध्याय 3

जिज्ञासु जीवन की सच्ची पुकार व नियति के छिपे अर्थ को सीखता है।

कल्पना करें कि आपके जीवन का उद्देश्य केवल आपकी अपनी प्रसन्नता ही है – तब यह जीवन एक क्रूर और निरर्थक वस्तु बन कर रह जाएगा। आपको मानवता की प्रज्ञा को गले लगाना ही होगा। आपकी बुद्धि और हृदय आपसे कहेंगे कि उस शक्ति की सहायता करना ही आपके जीवन का अर्थ है, जिसने आपको इस संसार में भेजा है। तब आपका जीवन एक आनंद बन जाएगा।

–लिओ टॉलस्टॉय

मैं उस रात की थोड़ी सी नींद के दौरान भी करवटें बदलता रहा और ऐसे विचित्र सपने देखे, जो पूरे जीवन में कभी नहीं देखे थे। मैंने सपना देखा कि मैं सड़कों पर निर्वस्त्र दौड़ा जा रहा था। मैंने एक और सपना देखा जिसमें मैं एक कार में बंद था और कार एक पुल पर तेज़ी से भागते हुए, समुद्र में जा गिरी। एक और सपने में मैंने उड़ने की योग्यता पा ली थी। इन सपनों का मेरी मानसिक अवस्था से कोई न कोई सबंध अवश्य था। मैंने कहीं पढ़ा था। 'सपने आत्मा की भाषा होते हैं।'

सड़कों पर स्वयं को नग्न भागते देखने का अर्थ शायद यही था कि मैं और अधिक संवेदनशील होना चाहता था और अपने–आप को उस सार्वजनिक मुखौटे से दूर कर देना चाहता था, जिसे मैं आजीवन दूसरों की तरह दिखने व उनके लायक बने रहने के लिए लगाता आया था। यह सपना काफी हद तक प्रामाणिक लगा पर इसके साथ ही मुक्त रूप से सामने आने का भय भी प्रकट हो रहा था। बंद कार में डूबने के भय का संबंध, शायद उन सभी भयों व आशंकाओं से था, जो कल रात जूलियन से मिलने के बाद सिर उठाने लगी थीं। मुझे उनकी कही कुछ बातों पर संदेह हो रहा था। क्या मैं वास्तव में अपने जीवन को

रूपांतरित कर सकता था? क्या मेरे आंतरिक ज्ञान तथा अपने–आप को पा लेने से ही मेरी नियति सामने आ जाएगी? क्या यह सच था कि अधिकतर लोग अपने–आप को अपने जीवन के साधारण स्तर तक सीमित कर देते हैं और उस चमचमाते अस्तित्व से अछूते रह जाते हैं, जो उनके लिए बना था? और जूलियन की सात चरणों वाली आत्म–जागरण की प्रक्रियाओं का क्या? मैं जूलियन पर भरोसा करता था और उनकी बौद्धिक क्षमता किसी भी चुनौती से परे थी पर उन्होंने मेरे साथ जो भी बांटा, वह अपने–आप में किसी रहस्य से कम न था।

और वह उड़ान भरने वाला सपना, मेरे भीतर से कोई कह रहा था कि उसका मेरी अंतरात्मा से कोई संबंध अवश्य था, संभवत: मैं अपनी असीम संभावनाओं तक जाना चाहता था। मुझे दो दिन पूर्व ही मोटल के कमरे में सुने गए शब्द याद आ गए: जीवन एक खज़ाना है और तुम अपने बारे में जितना जानते हो, उससे कहीं अधिक हो। सुबह के उस हल्के अंधकार में अपने सपनों के बारे में सोचते हुए, मैं इस बारे में कहीं अधिक निश्चिंत होने लगा था कि अगर जूलियन मेरे लाइफ कोच होंगे तो वाकई मेरे जीवन को उड़ान भरने में देर नहीं लगेगी।

हमारे बुटिक होटल पोर्टफोलियो में 'Q' होटल मेरी प्रिय संपत्तियों में से था। यह बहुत ही स्टाइलिश होने के कारण फैशनप्रेमियों व जैट–सैट हस्तियों में लोकप्रिय था। मैं बड़ी कठिनाई से साढे चार बजे उठा। जूलियन के साथ होने वाली भेंट के लिए देर से नहीं जाना चाहता था। मैं जानता था कि वे समय के पाबंद थे और उन्हें वादा निभाना भी आता था। मेरे डैड ने मुझे बताया था।

अपनी कार चला कर होटल 'Q' पहुंचा तो वहां नाजुक़ सी आलीशान कार पार्क हुई देखी। यह तो क्लासिक फरारी थी, बिल्कुल जगमगाती लाल फरारी। मैं उससे अपनी नज़रें नहीं हटा पा रहा था। उसे देखते ही मेरे बचपन की वे यादें उमड़ आईं जब मैं डैड के साथ जूलियन के विशाल बंगले की ओर विशेष रूप से इसे देखने जाया करता था।

मैं अपने डैड को वाकई बहुत याद करता हूं। वे एक महान व्यक्ति थे। उन्हें इस संसार से गए कई बरस हो गए पर जब भी उन्हें याद करता हूं तो मन उदास हो आता है। मुझे रोज़ उनकी याद आती है। मैं अपने बच्चों को भी बहुत याद करता हूं। बेशक उनसे एक सप्ताह बाद मिलने जाता हूं पर वे मेरे दिल का टुकड़ा हैं और काश वे हमेशा मेरे साथ रह पाते। खैर, जैसा कि मैंने कहा कि फरारी को देखते ही मन में बहुत सी यादें उमड़ आईं पर वे सब सुखद ही थीं।

ज्यों ही मैंने अपनी कार फरारी के पीछे पार्क की तो नया बैलमैन जेक झट से मेरा अभिवादन करने के लिए आगे आ गया।

"गुडमार्निंग सेंडरसन! 'Q' में आपका स्वागत है।" वह हंस कर बोला, "बॉस आपको यहां देख कर अच्छा लगा।"

“जेक! मुझे भी खुशी हुई।” मैंने भी पूरे दिल से जवाब दिया। मैंने कार की ओर संकेत किया, “यह किसकी जान है?”

“पक्का नहीं कह सकता। मझे तो इतना पता है कि पिछले सप्ताह से हमारे होटल में एक लामा ठहरे हुए हैं। सभी उनके बारे में ही बात कर रहे हैं। वे आज सुबह चार बजे इसे चला कर लाए थे। मेरी पारी उसी समय आरंभ हुई थी। ये बंदा वाकई फरारी चलाना जानता है – आप देखते तो यकीन कर लेते। बंदा ज़बरदस्त है और अगर आप बुरा न मानें तो बताना चाहूंगा कि उन्होंने मुझे बीस की टिप भी दी।”

महान जूलियन मैंटल, हमेशा आश्चर्यो से भरपूर! मैं जानता था कि वे अब भी कुछ चल–अचल संपत्ति के स्वामी थे और समाचार–पत्र के आलेखों ने भी इसकी पुष्टि कर दी थी। उसमें लिखा था कि वे अपनी पुरानी जीवनशैली को फिर से पाना नहीं चाहते थे। पर मैं जानता था कि जूलियन को अब भी जीवन के सभी पहलुओं से लगाव था। उन्हें अपने जीवन की विलासिताओं और बेहतर पाने की रूचि के लिए कोई अपराध–बोध नहीं था। अंतर केवल इतना था कि अब ये वस्तुएं उनके जीवन की प्राथमिकता सूची में ऊपर नहीं रही थीं। वे इन सभी सुविधाओं व विलासिताओं का आनंद तो लेते थे परंतु उन्हें इनकी कोई आवश्यकता न थी।

मुझे कुछ पता नहीं था कि जूलियन को फरारी कहां से मिली या उन्हें होटल ‘Q’ में ठहरने का पैसा कहां से मिला। मैं तो हाल में ही यह विश्वास करने लगा था कि ब्रह्माण्ड में सब कुछ अपने ठिकाने पर सही तरह से घट रहा था। मैंने जेक से हाथ मिलाया और लॉबी में कदम रखा। सामने ही इतालवी सुंदरी मारिआ दिखाई दी। उसने मेरा स्वागत किया, “मि. सेंडरसन! शुभ प्रभात! मि. जूलियन मैंटल अपने कमरे में आपकी प्रतीक्षा कर रहे हैं।”

“मारिआ वे किस कक्ष में हैं?”

“हमने उन्हें लोटस लॉफ्ट दिया है।”

“वह तो इस होटल के सबसे दामी कमरों में से है।” मैंने हैरानी से कहा।

वे यहां आए और एक कमरा मांगा। उन्होंने कहा कि उन्हें इस बात से कोई अंतर नहीं पड़ता कि हम उन्हें कौन सा कमरा दें, उन्हें जो भी मिलेगा, वे उसी में आरामदेह रहेंगे। वे बहुत ही विनम्र और दोस्ताना तरीके से पेश आए। हमने उन्हें होटल में अपना सबसे प्रिय कमरा दे दिया। भले ही यह बहुत बड़ा नहीं पर मेरे अनुसार इसकी ऊर्जा सबसे बेहतरीन है।

मैंने अपनी गर्दन हिला कर मुस्कान दी। जब मैं जूलियन के तल पर पहुंचा और उनके कमरे की ओर जाने लगा तो कहीं से संगीत के स्वर सुनाई देने लगे। यह इतना तेज़ नहीं था कि हमारे सोए हुए मेहमानों की नींद में खलल आता पर इसे सुना जा सकता था। जब मैं अपनी मंजिल़ के पास पहुंचा तो पाया कि वे रॉकस्टार दीवाने और कोई नहीं बल्कि हमारे महान जूलियन ही थे।

ज्यों ही मैंने द्वार खटखटाया, वह खुल गया... कैसा विचित्र दृश्य था। जूलियन अपने चेहरे पर बड़ी सी मुस्कान लिए खड़े थे और उन्होंने सफेद बॉक्सर शार्टस के सिवा कुछ नहीं पहना हुआ था। उनका सुडौल शरीर धूप में तपा दिख रहा था और उनकी गठी मांसपेशियों को चमड़ी में उभरा हुआ देखा जा सकता था। मैंने आज तक किसी को इतनी अच्छी शारीरिक अवस्था में नहीं देखा था और वह भी किसी ऐसे इंसान को, जो कि मेरे पिता की आयु का हो सकता था और जीवित था। जूलियन के बाल बड़ी अदा से पीछे की ओर संवरे हुए थे और वे शांतिपूर्ण परंतु ऊर्जा से लबालब दिख रहे थे। उन्होंने हाथ में संतरे के रस का गिलास थामा हुआ था।

“गुडमार्निंग दोस्त! मैं थोड़ा संगीत सुन रहा था। यह डेव मैथ्यूज़ है और मैं ‘ग्रेवडिग्गर’गाना सुन रहा था। मुझे यह बहुत भाता है। मेरे लिए यह गीत संदेश देता है कि जब भी जीवन को भरपूर तरीके से जीने का अवसर आए, तो उससे पीछे नहीं हटना चाहिए। हर क्षण को भरपूर जीना, यहां तक कि उन्हें भी जो पूरी तरह से आदर्श क्षण न हों। क्योंकि यह जीवन बहुत जल्द समाप्त हो जाएगा। इससे पहले कि हम जान सकें, हम धरती के तले होंगे और उन सभी आनंदों से हमेशा के लिए वंचित कर दिए जाएंगे, जिन्हें हम आज तक उपेक्षित करते आए थे जैसे अपने चेहरे पर वर्षा की बरसती बूंदों को अनुभव करना, अपने बच्चों को खिलखिलाते या सूरज को उगते देखना। ये बस बीते कल की बातें हो जाएंगी। डार! मैं तुम्हें कुछ बताना चाहता हूं। आमतौर पर हम अपने जीवन के बीस, तीस या चालीस बरसों के दौरान जिन बातों को महत्व देते हैं, उन्हें ही अपने जीवन के अंत तक आते–आते बहुत कम महत्व देने लगते हैं। और हममें से तकरीबन लोग जिन बातों को सबसे कम महत्व दे रहे हैं उनमें गहन मानवीय संबंधों, दयालुतापूर्ण कार्यो, अच्छी शारीरिक अवस्था, कार्य की गुणवत्ता, एक विरासत छोड़ने व प्रतिदिन अपने पर काम करने जैसी बातों को शामिल कर सकते हैं ताकि हमारे भीतर जो भी श्रेष्ठ है, वह सामने आ सके। इन सभी बातों का जीवन के अंत में सर्वाधिक महत्व होना चाहिए। **जब हम मृत्यु शैय्या पर होते हैं तो हममें से कोई नहीं चाहता कि हमारे पास बैंक के खातों में अधिक धन होता या हमारे घर के बाहर और बड़ी कार खड़ी होती। जब हम आखिरी सांसें गिन रहे होते हैं तो उस समय हमारी यही इच्छा होती है कि काश हम एक साहसी, प्रामाणिक व स्नेहपूर्ण जीवन जी पाते।**

“बिल्कुल सच। फिर भी हम अपने जीवन का अधिकतर भाग नाम और शोहरत पाने के लिए काट देते हैं।”

“सही कहा। हम ऐस इसलिए करते हैं क्योंकि आसपास के लोगों ने सिखाया है कि हमारे लिए यही सबसे अधिक महत्व रखता है। पर हमारे पास एक चुनाव होता है: हम भीड़ के मूल्यों को अपना सकते हैं या अपनी उन शर्तो पर अकेले चल सकते हैं, जिन्हें हम सटीक व उचित मानते हैं। पैसा कमाने में कोई बुराई नहीं है। यह एक अद्‌भुत चीज़ है और इसे सही तरह से प्रयोग में लाया जाए तो यह प्रसन्नता व मानव कल्याण का श्रेष्ठ साधन बन सकता है।

पैसा कमाना अच्छी बात है और अगर आप एक सुखद जीवन जीने की इच्छा रखते हैं तो यह आपकी प्राथमिकताओं में शामिल होना चाहिए।"

"बस ध्यान यही देना है कि यह मेरी सबसे उच्च प्राथमिकता न हो।"

"सही कहा। इसे उस शक्ति से भी ऊपर रखने की भूल मत करना, जिसने तुम्हें इस धरती पर भेजा है ताकि तुम अपने परिवार को स्नेह देते हुए, इस ग्रह पर कुछ अलग करते हुए अपने महान अस्तित्व को पा सको। याद रखो कि संपदा के भी अनेक रूप होते हैं और आर्थिक संपदा को उसका एक भाग माना जा सकता है। जिसके पास स्नेही संबंध व स्नेही समुदाय हो, मेरे अनुसार तो वही सबसे धनी माना जाना चाहिए। जो व्यक्ति सारे जीवन से आध्यात्मिक रूप से जुड़ा हो और हर सुबह शांतिपूर्ण अस्तित्व व जागरण के साथ उठता हो, उसने भी अपने लिए एक प्रकार की संपदा एकत्र की है। भीड़, जिसे हम समाज भी कहते हैं, इसने हमें यही सिखाया है कि हमें हमेशा वित्तीय संपदा के पीछे जाना चाहिए। एक झूठ! और कृपया धन के बारे में इस अनिवार्य तथ्य को कभी मत भूलना: धन एक उपोत्पाद है।"

"यह किसका उपोत्पाद है?"

"दूसरों के जीवन को मान देना व उनके लिए कुछ कल्याणकारी करने का उपोत्पाद है। जो भी करो, उसे पूरी महानता से करने के लिए केंद्रित रहो। दूसरों के जीवन को बेहतर बनाने के लिए जो भी कर सको, उसके लिए स्वयं को समर्पित कर दो। अपने व्यक्तिगत व व्यासायिक जीवन के हर पहलू में, सही मायनों में सच्चे रहो और मैं इस बात की गारंटी दे सकता हूं कि पैसा तुम्हारे पीछे आएगा। **देखो डार! जब तुम दूसरों को उनका मनचाहा पाने के लिए सहायक होते हो तो धन स्वयं तुम्हारे पीछे आता है। जब तुम दूसरों के जीवन को समृद्ध बनाते हो तो बदले में ब्रह्माण्ड तुम्हें धन प्रदान करता है। तुम जो बोते हो, वही काटते हो।"**

"ओह जूलियन! आपके लबादे कहां हैं। मैं जानता हूं कि कल रात आपने कहा था कि हमें अपने बीच की औपचारिकता को समाप्त करना होगा पर ये कुछ ज़्यादा नहीं हो गया? खैर, बॉक्सर्स अच्छे लग रहे हैं।" मैंने दबी हंसी के साथ कहा। मैं जानता था कि जूलियन एक हास्यप्रिय व्यक्ति थे और उनसे इस स्तर पर आ कर बात की जा सकती थी।

"डार! मेरे लबादे ड्राईक्लीन होने गए हैं। तुम्हारे स्टाफ से मैं प्रभावित हूं। उन्होंने कहा कि वे कुछ ही घंटों में चोगों को तैयार करवा देंगे। तभी तो इस समय मैं आराम से अपने बॉक्सर्स में बैठा हूं। बस संगीत का आनंद ले रहा हूं – संगीत के साथ मेरी आत्मा नाच उठती है। यह मेरे जीवन में इतना मायने रखता है। इसे सुन कर मैं बहुत बेहतर महसूस करता हूं। मैं संगीत के बिना अपने जीवन की कल्पना तक नहीं कर सकता।"

एक ऐसा लामा जिसे डेव मैथ्यूज़ पसंद है। जो चिक होटलों व अच्छी चीज़ों को पंसद करता है। वाकई यकीन करना मुश्किल है। जूलियन ने अपने जूस का गिलास पीया और फिर सीडी प्लेयर बंद कर दिया। उन्होंने मुझे शर्मिंदगी के साथ देखते हुए कहा, "उम्मीद

करता हूं कि मैंने तुम्हें बॉक्सर्स में भेंट करके लजाया नहीं है। दरअसल मैं अपनी पोशाक की कतई परवाह नहीं करता। आज सुबह कितना मज़ा आ रहा था। भारत में सिवना के संतों से मैंने जो कुछ भी सीखा, यह उनमें से बहुत ही अद्‌भुत चीज़ है, जिसे हम जीवन के प्रति कामना कह सकते हैं। प्रत्येक व्यक्ति को ऐसा कुछ करना चाहिए जिससे उसकी जीवन के प्रति कामना विकसित हो सके। हम सबको जीवन के उन छोटे व सादे आनंदों के लिए समय निकालना चाहिए, जिन्हें हम बचपन में बहुत पसंद करते थे जैसे मुझे पानी के पार कंकड़ उछालना या कड़कड़ाती सर्दी के दौरान बर्फ के पुतले बनाना बहुत भाता था। या फिर संगीत की धुन पर मदमस्त हो कर ऐसे नाचना मानो आप अकेले हों और आपको कोई न देख रहा हो। आजकल मैं अपने वर्तमान में ही इतना मग्न रहने लगा हूं कि उन सामाजिक औपचारिकताओं का ध्यान ही नहीं रख पाता, जिनके लिए एक वकील के रूप में बहुत चिंतित रहा करता था। अब उनमें से कोई भी बात मेरे लिए मायने नहीं रखती। वर्तमान में पूरी तरह से मग्न रहना – बस जीवन इसी का नाम हो गया है। मेरे लिए, भरपूर रूप से वर्तमान में रहने के सिवा कुछ भी महत्वपूर्ण नहीं रहा। **मेरे दोस्त! जीवन को वर्तमान में ही जीया जाता है।** जैसा कि मैंने पहले भी कहा: अतीत एक कब्र है। जीवन जीने के लिए बना है। हममें से बुद्धिमान इस तथ्य को समझते हैं। जैसा कि महान लेखक व दार्शनिक पॉलो कोएल्हो ने अपनी सुंदर पुस्तक ॲल्कैमिस्ट में लिखा है: 'मैं केवल वर्तमान में रूचि रखता हूं। अगर तुम केवल वर्तमान पर केंद्रित रह सकते हो, तो तुम एक प्रसन्न व्यक्ति बन जाओगे। तुम पाओगे कि रेगिस्तान में भी जीवन है, आसमान में सितारे हैं और कबीले वाले आपस में इसलिए लड़ते हैं क्योंकि वे मानवजाति के अंश हैं। तब जीवन तुम्हारे लिए एक उत्सव होगा, एक महोत्सव क्योंकि जीवन वही वर्तमान क्षण है, जिसमें हम अभी जी रहे हैं।"

"जूलियन! क्या मुझे इन सभी बातों को कहीं लिख लेना चाहिए?"

"नहीं, अभी तो नहीं। वैसे आत्म–अन्वेषण की प्रक्रिया में डायरी लेखन बहुत महत्व रखता है। मैं हिमालय में जिन संतों से मिला, उन्होंने मुझे सिखाया था कि प्रतिदिन डायरी लेखन कितना मूल्यवान हो सकता है। इस अनुशासन ने मेरा जीवन ही बदल दिया। डार, जिस तरह तुम किसी दूसरे आदमी से गहरी बातचीत के बाद उसे जान पाते हो, उसी तरह अपने–आप को जानने के लिए भी यही प्रक्रिया काम आती है। मैंने पाया कि मैं क्या चाहता था और ऐसा क्या था जो मुझे मेरे जीवन के महानतम शिखरों तक जाने से रोक रहा था। मैंने अपनी डायरी में सीखे गए सारे सबकों को उतारा, बाधा देने वाली भावनाओं को दर्ज .किया और अपने उस दर्शन को लिपिबद्ध किया, जिसके अनुसार मैं अपना जीवन जीना चाहता था। परंतु डायरी लेखन भावात्मक शुद्धि व आरोग्य के लिए कारगर हो सकती है। यह गतिविधि मस्तिष्क केंद्रित भी है। और अभी तो मैं यही चाहता हूं कि तुम अपना सारा ध्यान मस्तिष्क से हटा कर हृदय पर केंद्रित कर दो। मैं तुम्हें तुम्हारी बुद्धिमता के माध्यम से भावनाओं को मार्गदर्शन देना चाहता हूं। तुमने अपना सारा जीवन मस्तिष्क के साथ बिताया है और आज इसी कारण से तुम यहां आ पहुंचे हो।"

“मैं आज भी दयनीय दशा में हूं।” मैंने पूरी ईमानदारी से जवाब दिया।

“मेरे दोस्त! हो सकता है कि कोई एक या दो तत्व अपने स्थान पर न हों। तुम्हें अपना दिल खोल कर आगे चलना होगा। अपने मस्तिष्क की बजाए हृदय की बात सुननी होगी। क्या कभी ऐसा भी हुआ है कि तुम डूबते सूर्य के आगे बैठे हो और उसकी सुंदरता पर ध्यान देने की बजाए अपने काम, अपनी दिनचर्या या किसी दूसरी समस्या में खोए हुए हो?”

“हां, कई बार।”

“ऐसा इसलिए होता है क्योंकि तुम हमेशा अपने मस्तिष्क के वश में रहते हो। यह मस्तिष्क एक अच्छा नौकर है परंतु अत्यचारी मालिक भी हो सकता है। यह एक अद्भुत साधन है पर इसे नियोजन, विचार तथा पिछली भूलों से सबक लेने के लिए ही प्रयोग में लाया जाना चाहिए ताकि वे दोबारा दोहराई न जाएं। यह तुम्हें ज्ञान प्राप्त करने और जीवन की शिक्षाओं से सबक पाने में सहायक होगा परंतु जैसा कि अधिकतर लोगों के साथ ऐसा होता है, तुम्हारे ऊपर मस्तिष्क का कैंजा नहीं होना चाहिए। जैसा कि मैंने तुम्हें पिछली रात बताया, तुम्हें अपने दिल में रहते हुए, दिमाग से काम लेना है और इसे ही संतुलन के साथ जीना कहते हैं। तुम्हारे दिल और दिमाग की यह संतुलित सांझेदारी बहुत मायने रखती है। हृदय तुम्हें उगते सूर्य से जुड़े उपहारों की ओर ले जाना चाहता है। वह जानता है कि वर्तमान क्षण में जो जी लिया, वही जीवन है।”

जूलियन कुछ क्षण के लिए मौन में चले गए। लोटस लॉफ्ट से सारा शहर दिख रहा था। ट्रैवल एंड लैजर पत्रिका के अनुसार यह कमरा, दुनिया के बेहतरीन होटल कक्षों में से था।

मुझे अचानक फरारी का ध्यान आया तो मैंने पूछा, “ये फरारी कहां से आई। मैंने सुना कि आप इसे आज सुबह ही यहां लाए तो क्या आपने कल रात नींद नहीं ली?”

“नहीं, मैंने पूरी नींद ली। शरीर के लिए अच्छा विश्राम बहुत आवश्यक होता है। मैं अधिकतर लोगों की तरह बहुत ज़्यादा नींद नहीं लेता। जीवन बहुत छोटा है और मेरे पास व्यर्थ करने के लिए समय नहीं है। कौन जाने – मैं कल ही इस दुनिया में न रहूं? तो मैं अपने हर दिन को भरपूर जीता हूं। जीवन में इतना आनंद भरा है कि इससे दूर रहा ही नहीं जा सकता। मुझे एक काम पूरा करना है, एक विरासत छोड़नी है। मुझे कुछ अद्भुत उपहार दिए गए थे और मुझे एक अभियान को पूरा करना है, एक ऐसा अभियान जो बहुत लोगों को उनके जीवन के समृद्ध पक्ष की ओर ले जाएगा। जब आप स्वयं को जीवन में किसी बड़े उद्देश्य या लक्ष्य से जोड़ लेते हैं, तो आपके जीवन में निरंतर ऊर्जा व जुनून का प्रवाह होने लगेगा। अपने जीवन में जुनून का वह असाधारण स्तर पाने का रहस्य यही है कि आप अपने विशालतम उद्देश्य को तलाशें। एक बार जब आपको अपना लक्ष्य मिल जाएगा तो जीवन में उत्साह का अभाव नहीं रहेगा। और जीवन में लक्ष्य के प्रति उत्साह जितना अधिक होगा, नींद के लिए लगाव व आवश्यकता उतने ही घटते जाएंगे। अधिकतर लोग नींद को नशे की तरह उपयोग में लाते हैं। वे अपना समय काटने व अपना ध्यान दूसरी ओर लगाने के लिए

नींद का सहारा लेते हैं। जब लोग अपने बृहत्तर लक्ष्यों व अपनी उच्चतम क्षमताओं से प्रतिकूल जीवन जीने लगते हैं, तो उनके भीतर दर्द का एक सोता उमड़ने लगता है। अधिकतर लोगों को इस बारे में पता ही नहीं होता – यह सब अवचेतन स्तर पर घटता है परंतु इसका अर्थ यही नहीं कि इसका कोई प्रभाव नहीं होता, यह क्षण-प्रतिक्षण उन्हें हर तल, हर चुनाव पर प्रताड़ित व पीड़ित कर रहा होता है। हममें से बहुत से लोग तो उस पीड़ा से बचाव के लिए ही नींद का आश्रय लेते हैं।"

"जूलियन! यह तो बहुत ही रोचक नज़रिया है। मैंने आज तक इस बारे में ऐसे कभी विचार नहीं किया था। मैंने हमेशा से ही पीड़ा को प्रत्यक्ष जाना था।" मैंने हामी भरी।

जूलियन ने गर्दन हिलाते हुए बात को आगे बढ़ाया, "पर ज़रा उन लोगों को देखो, जिन्होंने एक उद्देश्य के लिए अपने जीवन को समर्पित कर दिया जैसे बेंजामिन फ्रेंकलिन, महात्मा गांधी, मार्टिन लूथर किंग जूनियर, मदर टेरेसा व नेल्सन मंडेला। उन्होंने स्वयं को एक ऐसे अभियान से जोड़ा जिसके लिए वे अपना जीवन समर्पित करने को प्रस्तुत थे। उन्होंने इन अभियानों के साथ हार्दिक लगाव रखा और जो भी वे करते, वह भावनात्मक रूप से अनुप्राणित हो जाता। और जब आप किसी काम के साथ केवल बौद्धिक श्रम करने की बजाए उसके साथ भावात्मक संपर्क स्थापित कर लेते हैं, तो उत्साह प्रवाहित होता है तथा ऊर्जा का विस्फोट होने लगता है। मेरे दोस्त! तुम्हें अपने जीवन के इस मोड़ पर इसी बारे में सोचना होगा। अपने दिमाग के साथ नहीं बल्कि दिल से, किसी एक अभियान के साथ जुड़ो और फिर अपनी कुर्सी की पेटी बांध लो क्योंकि तुम्हारा जीवन तेज़ी से उड़ान भरने के लिए प्रस्तुत होगा।"

"क्या मुझे अपने जीवन के इस उद्देश्य को पाने के लिए अपने काम और नौकरी को छोड़ना होगा? आपने जिन लोगों का नाम लिया वे स्वतंत्रता सेनानी व सामाजिक कार्यकर्ता थे। जूलियन, आप बुरा मत मानना, पर ये सब तो मेरे बस के बाहर है।"

"डार! सही कहा। बेशक तुम जहां हो, जो भी कर रहे हो, उसके साथ ही अपने जीवन का उद्देश्य पा सकते हो। किसी को भी अपने लिए कोई दिली लगाव रखने वाला काम खोजने के लिए अपनी नौकरी छोड़ने या व्यवसाय बदलने की आवश्यकता नहीं है। प्राय: केवल उन्हें अपने आसपास के माहौल को नए नज़रिए से देखने की आवश्यकता होती है। जैसे कि तुम होटलों के मालिक होने के नाते, बहुत से लोगों के जीवन में भारी बदलाव ला सकते हो। अब यह तुम्हें उत्साहित करने के लिए पर्याप्त होगा।"

"क्या मैं ऐसा कर सकता हूं?"

"बिल्कुल। तुम्हारे लिए जितने भी लोग काम करते हैं, वे अपने घर की बजाए तुम्हारे यहां कहीं अधिक समय बिताते हैं। वे हर सुबह अपने परिवारों को छोड़ कर तुम्हारे पास आ जाते हैं ताकि तुम्हारे सपनों को साकार करने में मदद कर सकें। कल्पना करो, वे अपने जीवन के सबसे बेहतरीन दिनों के कुछ घंटे तुम्हारे नाम कर देते हैं। तो इस उपहार के बदले,

अगर तुमन अपने प्रयासों से उनके लिए ऐसा माहौल बनाया, जिसमें वे सुरक्षित अनुभव करते हुए काम कर सके, तो तुमने कोई बड़ा काम नहीं किया। कल्पना करो कि अगर तुम्हारे कर्मचारियों के लिए यह कार्य आनंद पाने का एक स्त्रोत हो, वे यहां कुछ सीख सकें, वृद्धि कर सकें और उनकी नैसर्गिक प्रतिभा खुल कर सामने आ सके। अगर तुम अपनी प्राथमिकता बना लो कि उनके काम को आनंददायक बनाओगे और एक ऐसी संस्कृति विकसित करोगे जहां अच्छे मूल्यों का विकास होता हो। तुम करना चाहो तो अपने हर होटल में ऐसी ही संस्कृति विकसित कर सकते हो। बस थोड़े समय, प्रयास व खोजी प्रवृत्ति की आवश्यकता होगी। मैं हाल ही में लंदन में था और इआन शरेजर्स सेंट मार्टिन लेन में ठहरा था। वह होटल एक ऐसे स्थान का आदर्श उदाहरण है, जहां लोग बहुत ही आनंद से, अन्वेषण करते हुए, अपने काम से लगाव रखते हुए कार्यरत हैं। और मैं तुम्हें यह भी बताना चाहूंगा कि उनका यह जुनून किसी छूत के रोग की तरह था, जो मुझ तक भी आ पहुंचा। मैं वहां जितना भी समय रहा, मुझे बहुत अच्छा लगा। याद रखो, लोग उन्हीं लोगों के साथ काम करना पसंद करते हैं, जिन्हें अपने पेशे से लगाव होता है।"

"हां, ये आपने सही कहा।"

"ज़रा कल्पना करो कि तुम इस बात से कितना उत्साहित होगे कि तुम लोगों के काम करने के लिए एक विशेष वातावरण तैयार करने पर काम कर रहे हो। यदि इसी सोच में कुछ बदलाव लाते हुए, अपने कर्मचारियों के लिए कुछ काम कर सके तो तुम अपने द्वार पर आने वाले हर ग्राहक के बारे में भी कुछ करने का विचार बना कर, अपने लिए उत्साह व भावात्मक ऊर्जा पा सकते हो। तुम अपने व अपने दल के प्रयासों के बल पर सुंदर स्मृतियां रच सकते हो। तुम उनके चेहरों पर हंसी ला कर, उन्हें बेहतर अनुभव करवा सकते हो। उनमें से अनेक लोग अवकाश मनाने आए हैं और तुम अपने बर्ताव से उनके आनंद को दोगुना कर सकते हो। कल्पना करो कि तुम हर सुबह उठ कर, यह संकल्प लेते हो कि अपने ग्राहकों के लिए अविस्मरणीय अनुभव तैयार करोगे। क्या इससे तुम्हें उत्साहित होने का अवसर नहीं मिलेगा?"

"बिल्कुल! मैं तो इस अवसर के बारे में सोच कर ही कितना उत्साहित व प्रेरित अनुभव कर रहा हूं और जब मैं ऐसी प्रतिबद्धताओं के साथ और गहराई में उतरूंगा तो मेरे उत्साह के स्तर में और भी वृद्धि होगी। अब मैं जान गया कि आप हम लोगों की तुलना में कम नींद क्यों लेते हैं – आप एक विशेष उद्देश्य से जुड़े हैं, उसके लिए प्रतिबद्ध हैं। और यह स्पष्ट है कि आपका उद्देश्य आपको ऊर्जान्वित करने की क्षमता रखता है।"

"हां डार! इससे मुझे बहुत आशा व ऊर्जा प्राप्त होती है। एक ऐसा उद्देश्य, **जो भले ही तुम्हें काम देने वाले ग्राहकों के लिए अविस्मरणीय अनुभव देने से जुड़ा हो या कुछ ऐसा जिसमें संसार का कल्याण छिपा हो, वह असीमित ऊर्जा का स्त्रोत हो सकता है।** यह बात याद रखने योग्य है कि जब तुम अपने–आप को किसी महान व बृहत्तर उद्देश्य के साथ जोड़ते हो तो तुम्हें अपने भीतर से यह सुखद एहसास होने लगता है कि तुम किसी

महान काम के लिए सार्थक जीवन व्यतीत कर रहे हो। तुम्हारा हृदय मुक्त होने लगता है, वह इस तरह उन्मुक्त हो उठता है जितना पहले कभी न था। मेरे दोस्त, बुद्धि नियोजन व मनन आदि के लिए अच्छी होने के बावजूद सीमित होती है। अक्सर लोगों के दिमाग में जो बातचीत चलती रहती है, वह उन्हें यही कहती रहती है कि उन्हें कोई काम क्यों नहीं करना चाहिए और साथ ही असफलता से जुड़े परिणाम भी गिनाती रहती है। प्राय: मस्तिष्क हमें नीचा दिखाता रहता है। **हृदय और भाव मुक्तिदाता हैं। वे हमें आगे बढ़ने और महानता तक जाने में सहायक होते हैं। वे उत्साह व जुनून रचते हैं और हमारे भीतर के उस महान अस्तित्व को बाहर आ कर, अपना प्रदर्शन करने का निमंत्रण देते हैं।"**

"निश्चित रूप से आपकी बातें बहुत ही मूल्यवान हैं। मेरा मानना है कि अपने उद्देश्य की तलाश भी लोगों को उनके कठिन समय से बाहर लाने में सहायक हो सकती है।"

"बहुत अच्छा कहा, डार! तुम तो एक अद्भुत छात्र हो। मेरे अब के छात्रों में सबसे बेहतर!" वे आगे बढ़े और वहां एक सादे गुलदान में रखे गुलाब के फूल की गंध लेने लगे। लिआनार्दो द विंसी ने बहुत ही सुंदर शब्दों में कहा था, **'अपनी दिशा एक सितारे की ओर तय करो और तुम तूफ़ानों का रूख बदल सकते हो।'** जब तुम जीवन में एक बार अपने प्रमुख उद्देश्य को पा लेते हो, तो यह प्रधान मिशन तुम्हारे लिए नॉर्थ स्टार की तरह काम करेगा। अच्छे व बुरे समय में तुम्हारा मार्गदर्शन करेगा।"

जूलियन एक पल को थमे और अपने सुघड़ तांबई हाथों को बालों में फिराया, "क्षमा करना, तुमने तो केवल यह पूछा था कि मैं कम नींद क्यों लेता हूं परंतु मैंने उत्तर को थोड़ा घुमा-फिरा कर प्रस्तुत किया। मैं जानता हूं, तुम्हें एहसास है कि मैंने अभी-अभी तुम्हारे साथ जो कुछ भी बांटा, वह तुम्हारे बेहतर जीवन के निर्माण के लिए बहुत महत्व रखता है। अपने उद्देश्य व काज को जानो और पूरे गर्व व स्नेह के साथ अपना काम करो – प्रेम किसी भी भले काम के लिए प्रेरक का काम करता है। श्रेष्ठता के प्रति समर्पण के साथ इसे करो। यह संसार अकल्पनीय रूपों से तुम्हें पुरस्कार देगा।"

"गर्व, स्नेह तथा श्रेष्ठता के प्रति समर्पण – इन शब्दों के लिए लगाव पैदा करो। एक खूबसूरत जीवन की रचना के लिए सकारात्मक गर्व को एक महत्वपूर्ण तत्व माना जा सकता है। तुम जानते हो, महात्मा गांधी ने एक बार कहा था: 'भले ही तुम कितना भी अमहत्वपूर्ण कार्य क्यों न कर रहे हो, उसे उसी तरह पूरे ध्यान व मनोयोग से करो, जिस तरह तुम अपने सबसे महत्वपूर्ण कार्य को करते, क्योंकि उन्हीं छोटी-छोटी बातों से ही तुम्हें परखा जाएगा।'डार! यहां भी एक क्रम है: जब तुम अपने किए जाने वाले हर कार्य में श्रेष्ठता के प्रति समर्पित रहते हो, काम के समय एक नेता की भूमिका से ले कर, व्यक्तिगत जीवन में पिता की भूमिका तक, तो तुम अपने लिए एक प्रकार के सकारात्मक गर्व का अनुभव करने लगते हो। इससे स्वाभिमान और आत्मविश्वास में वृद्धि होती है, और ऊर्जा व जुनून उत्पन्न होते हैं यही वह जीवन के प्रति कामना है, जिसके आने के बाद, तुम अपने-आप के लिए अच्छा व बेहतर महसूस करने लगते हो। जो लोग अपने बारे में अच्छा महसूस करते हैं, वे

बहुत अच्छे काम कर पाते हैं और उन्हें अपने श्रेष्ठता के स्तरों को बढ़ाने में भी देर नहीं लगती। यह एक ऊपर की ओर ले जाने वाला वर्तुल है, जो लोगों को आनंद, सार्थकता व आंतरिक शांति के स्थल तक ले जाता है।"

"जूलियन! यह सब सुन कर मुझे वाकई बहुत प्रेरणा मिल रही है।", मैंने खिड़की के पास रखे पतले से डिजाईनर सोफे पर बैठते हुए कहा। अब मैं आपसे पूछना चाहता हूं, क्या हममें से प्रत्येक को किसी विशेष उद्देश्य के साथ भेजा गया है और एक प्रामाणिक व विशुद्ध जीवन जीने के लिए उसकी तलाश करना अनिवार्य होगा?

"मेरे दोस्त! यह एक बड़ा सवाल है। कोई भी इसका जवाब नहीं जानता, क्या तुम्हें लगता है कि लोग जानते हैं? कई लोग ऐसा जानने का दिखावा करते हैं, उनकी पुस्तकें पढ़ कर लगता है कि उन्होंने सारी सृष्टि के स्त्रोत के साथ कोई संपर्क साध लिया हो। जब तक आप प्रबुद्ध नहीं होते, आप उत्तर नहीं जान सकते – तुम केवल इतना कर सकते हो कि यह जान लो कि तुम्हारे लिए सही तरह से काम करने वाला जीवन कैसा होना चाहिए। मेरा व्यक्तिगत रूप से यह मानना है कि हम सबके जीवन में, पहले से ही एक योजना नियत है, उसे पहले से ही लिखित रूप दे दिया गया है। चाहो तो इसे भाग्य भी कह सकते हो। मेरा निजी रूप से यह भी मानना है कि हम जो भी जीवन जीते हैं, उसमें हमारे पास चुनावों का अभाव नहीं होता और हमारे चुनाव के कारण ही हमारी नियति रची जाती है। मानो आकाश में बैठे उस बुद्धिमान वास्तुकार ने हमारे जीवन का रफ खाका तो खींच दिया है परंतु हमें उसे पूरी सूक्ष्मता के साथ तैयार करना है। हम कई रूपों में अपना वह जीवन पा सकते हैं, जिसके लिए हमने सपना देखा था। यह भी सच है कि एक मनुष्य होने के नाते हर चीज़ पर हमारा वश नहीं होता, वहां नियति अपना कार्य करती है। जीवन तो अपने अनुसार तय दिशा में ही चलता है। परंतु जीवन हमे जो देता है उस पर हम कैसी प्रतिक्रिया प्रकट करते हैं, यह पूरी तरह से हमारे ही वश में होती है। तो यही सांझेदारी है: **अपनी ओर से बेहतर करो – अपने जीवन के प्रत्येक आयाम में जितना बेहतर कर सको – और बाकी सब जीवन के हाथों में छोड़ दो। वाकई यह अपने–आप में एक बहुत ही महीन संतुलन होता है, जिसे साधना आसान नहीं है।** हम वास्तव में अपना भाग्य स्वयं रच सकते हैं, जो लोग अच्छे काम करते हैं, उनके साथ बहुत अच्छी बातें घटती हैं और वे प्राय: अच्छा समय बिताते हैं। ऐसा नहीं कि पूरा जीवन पहले से तयशुदा ढांचे पर चलेगा और आपके कुछ भी करने से, उस पर कोई असर नहीं होगा। यह कोरी बकवास है और उन लोगों द्वारा फैलाई गई है जो अपने जीवन से जुड़े निजी उत्तरदायित्व से मुंह चुराना चाहते हैं। परंतु जब तुम अपनी ओर से एक बार बेहतरीन प्रदर्शन दे दो तो उसके बाद बाकी सब छोड़ दो और यह विश्वास रखो कि **जो भी सामने आएगा, वह उस वृद्धि के लिए आवश्यक होगा, जो आपके भीतर के उन्नत रूप को बाहर लाने में सहायक होगी।"**

"जूलियन! यह वही उद्देश्य होगा जिसके बारे में आपने अभी बताया था।"

"हां, मेरे अनुसार तो अपने–आप का स्मरण तथा वृद्धि ही जीवन का उद्देश्य है। अपने

भीतर से विकसित होते हुए, स्वयं को याद दिलाते रहना कि हम कितने अद्भुत जीव हैं। जब हम इस धरती पर आए थे तो इसके सारे व्यर्थ व दूषित विचारों से परे, कितना संपूर्ण थे। हमें उसी स्वरूप को याद रखना है ताकि हमें याद रह सके कि हमें कितनी सुंदर और अच्छी बातों के लिए धरती पर भेजा गया है।"

"जूलियन! मैं अब तक इस बारे में निश्चित नहीं हो सका कि क्या वास्तव में हम सबके पास एक विशेष उद्देश्य होता है। मैं जानता हूं कि यह सवाल बहुत पेचीदा और बड़ा है पर यह मेरे लिए बहुत मायने रखता है। क्या मेरे लिए कोई निश्चित कार्य चुना गया है? क्या मुझे अपने लिए किसी खास स्त्री, अपनी जीवनसाथी की तलाश करनी है? क्या आप इन बिंदुओं पर विस्तार से प्रकाश डाल सकते हैं?"

"सही कहा। ये बहुत ही चुनौतीपूर्ण प्रश्न हैं। तुमने पूछ कर अच्छा किया।" जूलियन प्रसन्न दिखाई दिए। वे मेरी ओर आए और मुस्कुराते हुए मेरी पीठ थपथपा दी।

"पहले तो मैं यह बता दूं कि कई प्रकार से तुम्हारे इन प्रश्नों के कोई उत्तर हैं ही नहीं। तुम एक ऐसी बात को समझने की चेष्टा कर रहे हो, जिसे मानवीय स्तर पर, सीमित बोध के द्वारा समझा ही नहीं जा सकता। परंतु अगर तुम इस बारे में पूछ रहे हो तो वह इस बात का सूचक है कि तुम बहुत ही गहराई से विचार करते हुए, अपने लिए एक उपयुक्त जीवन दर्शन की तलाश में हो। मेरा एक अंश यह कहना चाहता है कि ये सब जीवन के रहस्य हैं पर एक अंश कहता है कि मैं तुम्हें अपनी अंतरात्मा से इनके बारे में उठ रहे उत्तर दूं। और कृपया यह मत भूलना कि मैं भारत में जिन संतों से मिला था, वे सभी प्रबुद्ध जन थे और उनके द्वारा तलाशे गए बहुत से सत्य ऐसे थे, जिन्हें मनुष्य आज तक नहीं तलाश सके। मैं तुम्हें जो भी बता रहा हूं, वह बहुत ही विश्वसनीय स्त्रोतों से सीखा गया है।"

"मैं समझ गया।" मैंने झट से कहा। मैं उन सभी रहस्यों को अतिशीघ्र जान लेना चाहता था, जो मेरी समझ को हमेशा के लिए बदल देने वाले थे।

"एक ऐसा रास्ता है जो हमेशा कारगर होता है। हमारे बेहतर जीवन के लिए बहुत से संभावित पथ लिखे गए हैं। परमांनद तक जाने के लिए अनेक प्रवेश द्वार हैं। जिस तरह तुम काम से लौटते समय किसी भी मार्ग से घर जा सकते हो, उसी तरह तुम अपने उस विशालस्तरीय जीवन तक भी जा सकते हो, जिसे तुम्हारे लिए ही बनाया गया है – और वहां पहुंचना कुछ ऐसा ही होगा मानो तुम अपने घर लौट गए हो। बहुत से काम ऐसे हैं जो तुम्हें तुम्हारी नियति तक ले जा सकते हैं। ठीक इसी तरह तुम्हें बहुत से साथी मिलेंगे जो अलग–अलग सबक देंगे पर वे सभी तुम्हें जागृत करने व तुम्हारे बेहतर अस्तित्व को बाहर लाने में अपनी ओर से सहायक होंगे। अपने उच्चतर अस्तित्व तथा विशाल जीवन को सामने लाना ही तुम्हारे जीवन का उद्देश्य होना चाहिए। तुम्हें अपनी बुद्धिमता, स्नेह व भयहीनता के उस घर में लौटना होगा, जो तुम्हारे अस्तित्व का प्रमुख कारण है। अब यह तुम पर निर्भर करता है कि उस यथार्थ जीवन को पाने के लिए तुम किस मार्ग का चुनाव करना चाहोगे। कोई भी मार्ग, किसी दूसरे से बेहतर नहीं होता – वे केवल अलग दिखाई देते हैं। हो सकता है कि कोई

मार्ग किसी दूसरे मार्ग से लंबा हो या उस मार्ग में कुछ ऊबड़-खाबड़ पगडंडियों को पार करना पड़े। हो सकता है कि कोई मार्ग बहुत ही तेज़ी से वहां पहुंचा दे, मार्ग भी सहज व सुंदर हो। यह सब तुम पर ही निर्भर करता है। उन दिनों में तुम जो भी निर्णय लोगे, यह सब उन्हीं पर निर्भर होगा। मेरे दोस्त, तुम्हारे जीवन के लिए जो कहानी लिखी गई है, तुम भी उसका सहलेखन करते हो!"

"अच्छा जूलियन, अब मैं पूछना चाहता हूं: कोई व्यक्ति अपने लिए बने उन एक्सप्रेस मार्गो तक कैसे जा सकता है, जबकि आपने कहा कि सबके जीवन के लिए एक रफ़ खाका पहले से ही तैयार कर दिया गया है?"

"अच्छा करो और अच्छे बनो। हमारा यह संसार अनेक ऐसे प्राकृतिक नियमों से संचालित होता है, जिन्हें उस शक्ति ने रचा है, जिसने संसार को बनाया और आपको मेरे पास भेजा। हम सॉकर जैसे खेल को नियम जाने बिना नहीं खेल सकते। जीवन भी तो एक खेल ही है। और जीतने व खेलने के लिए आवश्यक है कि तुम्हें उसके नियम मालूम हों। अपने जीवन को उनके अनुसार जीओ और तुम्हारा जीवन कारगर होगा। क्या तुम जानते हो कि ब्रह्माण्ड तुम्हारी जीत चाहता है? तुम्हें केवल यही करना है कि अपने तरीके छोड़ कर, उन नियमों को जानो, जिनके अनुसार खेल खेलना है। और इस खेल के नियमों को सीखने के लिए समय लगेगा, तुम्हें एकांत में गहन मनन करना होगा और तुम्हारे भीतर दार्शनिक बनने की एक सच्ची इच्छा होनी चाहिए।"

"एक दार्शनिक बनने की?" मैंने सवाल किया।

"हां, बिल्कुल, दर्शन की परिभाषा यही है कि 'विवेक के प्रति प्रेम'। कोई भी व्यक्ति, जो अपने लिए नियतजीवन पथ पर चलना चाहता है उसे विवेक बुद्धि के लिए लगाव पैदा करना होगा और यह जानने की भूख पैदा करनी होगी कि उनका यह जीवन किसलिए बना है? यदि हम सभी अपने-आपको दार्शनिक के रूप में देखने लगें तो यह संसार कहीं बेहतर स्थान बन सकता है। हमें विचार करते हुए, कलात्मक रूप से और अधिक आनंददायी व सार्थक जीवन को गढ़ने का कार्य करना होगा। तो उन असीम प्राकृतिक नियमों की ओर लौटो, अपने नियमित कार्यो को उनके अधीन करो और तुम निश्चित रूप से एक्सप्रेस मार्ग को पा लोगे। यदि उनकी अवमानना की तो तुम्हें अपने लिए लंबे मार्ग का चुनाव करना होगा।"

"वैसे ये प्राकृतिक नियम क्या हैं?" मैंने और अधिक जानने की जिज्ञासा के साथ पूछा।

"ये वही नियम हैं, जो संसार के आरंभ होने के साथ ही संचालन करते आए हैं। इनमें कुछ मूलभूत सिद्धांत शामिल हैं जैसे 'हमेशा दूसरों को उनका मनचाहा पाने में सहायक रहो और इसी प्रक्रिया में तुम अपना मनचाहा पा लोगे।', 'एक निष्कलंक अखंडता बनाए रखो।', 'वर्तमान क्षण में जीओ', 'एक दयालु व्यक्ति बनो।' 'अपने हर कार्य में श्रेष्ठता का प्रदर्शन करो।', 'अपने प्रति सच्चे रहो।', 'पूरे साहस के साथ सपने देखो।'हममें से तकरीबन लोग

इनके बारे में जानते तो हैं परंतु इनके अनुसार जी नहीं पाते। वॉल्टेयर ने एक बार कहा था: 'सामान्य ज्ञान जो भी हो, बस सामान्य ही है।"

"जूलियन! आपने बिल्कुल ठीक कहा। आजकल तो जो भी जटिल और परिष्कृत नहीं होता, हम उसका बहुत कम मूल्य लगा देते हैं, हालांकि अधिकतर सत्य बिल्कुल सादे ही होते हैं, हैं न?"

"यदि वह सादा न हो तो उसे सत्य ही नहीं कहा जा सकता।" जूलियन ने उत्तर दिया।

"आपने कहा कि यदि इन प्राकृतिक नियमों के अनुसार चलें तो अपना एक्सप्रेस मार्ग पा सकते है। अन्यथा हमें घर वापसी के लिए लंबे मार्ग को अपनाना होगा। क्या आप कहना चाहते हैं कि हममें से जिन लोगों ने जीवन के दौरान कष्ट व पीड़ा का सामना किया है या जिन लोगों ने ऐसा कष्ट नहीं झेला, उन्होंने कुछ प्राकृतिक नियमों को भंग किया होगा या उनका पालन किया होगा, जिनके अनुसार ही उन्हें घर वापसी के लिए मार्ग मिले हैं?"

"देखो डार! जैसा कि तुमने देखा कि इस ग्रह पर हर व्यक्ति को अच्छे व बुरे दिन देखने होते हैं, फिर भले ही वह कोई संत ही क्यों न हो। पीड़ादायी घटनाएं जीवन में हमें वे सबक सिखाने आती हैं, जो कि उस समय हमारे लिए आवश्यक होते हैं। विषम अनुभव हमें गहराई से आरोग्य प्रदान करने और अधिक दार्शनिक बनाने के लिए आते हैं। उनसे कोई नहीं बच सकता क्योंकि कोई भी संपूर्ण नहीं होता। तो अगर हम एक अच्छा, नेक व दयालु जीवन ही क्यों न जी रहे हों, असंपूर्ण होने के नाते हमें बहुत से सबक सीखने होंगे।"

"संपूर्ण रूप से समझ आ गया।" मैंने जूलियन के ही शब्द उधार ले कर कहा।

"तो भले ही हममें से कोई जागृत व्यक्ति ही क्यों न हो, उसे भी जीवन में पीड़ा व कष्टों का सामना करना होगा क्योंकि वे उसे कुछ खास सबक देने आए हैं ताकि वह समझ व उद्भव के अगले स्तर तक जा सके। 'कोई भी भूल या संयोग नहीं होते, हर घटना एक छिपे वरदान के रूप में हमें सबक देने आती है', एलिज़ाबेथ कुबलर रोज़ ने कहा है। क्या अब तुम देख सकते हो कि पीड़ा व कष्ट भी कितने अद्भुत और अनिवार्य हैं?"

"जी"

"एक संत ने इस बात को परिभाषित करते हुए कहा है कि यह जीवन दो किनारों वाली नदी के समान है। एक किनारे पर हम प्रसन्नता पाएंगे और दूसरे किनारे पर दुःख होगा। जब हम नदी के साथ आगे चलेंगे तो हमें अनिवार्य रूप से दोनों किनारों से टकराना होगा। बस अहम बात यह है कि हमें किसी भी एक किनारे पर बहुत देर तक टिके नहीं रहना।"

"बहुत अच्छे जूलियन! मुझे यह उपमा पसंद आई। तो किसी का भी जीवन पीड़ा व समस्याओं से रहित नहीं होता क्योंकि ये सब हमें सबक सिखाने आते हैं; और हममें से प्रत्येक, भले ही कितने भी उन्नत क्यों न हों, हमें यह सबक सीखने ही होते हैं।"

"ठीक कहा! केवल वही लोग कष्टों संघर्षों से परे हैं, जो धरती में छह फुट नीचे दबे हैं।

जीने के लिए तो समस्याओं, पीड़ाओं व कष्टों का सामना करना ही होगा। यही बातें वृद्धि, विस्तार व आजीवन सबक पाने का साधन बनती हैं। जीवन की ये घटनाएं हमें ऐसी विवेक बुद्धि प्रदान करती हैं, जिसके बल पर हम अपने सच्चे स्वरूप को याद रख सकते हैं। पर हमें यह भी भूलना नहीं चाहिए कि हर जीवन के पास अपने विजय के क्षण व खूबसूरत पल भी होते हैं। कोई भी समस्या या संकट हमेशा बना नहीं रहता। कोई भी हानि या कमी हमेशा नहीं रहती। कोई भी कष्ट शाश्वत नहीं होता। हो सकता है कि अनुभव के दौरान ऐसा लगे कि हम उनसे कभी मुक्त नहीं हो पाएंगे पर यह सच नहीं होता। यदि तुम चाहोगे तो जीवन के भी अपने मौसम, अपने अध्याय होते हैं। और कठिन समय, ऐसे समय होते हैं जो हमें बेहतरी के लिए गढ़ते हैं। **बस यह ध्यान रहे कि हमें प्राकृतिक नियमों के अनुसार चलना है, इस तरह हमें आगे चलने के लिए एक्सप्रेस वे मिल जाएगा और हम उन भटके हुए लोगों से बेहतर स्थिति में होंगे, जो लंबे रास्ते से कठिनाईयां झेलते हुए आ रहे हैं। इस तरह हम अपनी पीड़ा या संकट की अवधि व मात्रा को घटासकते हैं।"**

"तो पीड़ा हमें यह सिखाने आती है कि हम एक बेहतर इंसान बनें या अपने जीवन के साथ खुल कर जीएं, और अगर हम इन नियमों को सही तरह से समझते हैं तो हमें उन्हें पीड़ादायी तरीके से समझने की आवश्यकता नहीं रहेगी। हम अपने जीवन में थोड़ी कम पीड़ा का अनुभव कर सकेंगे क्योंकि कष्ट या पीड़ा तभी सामने आते हैं जब संसार को चलाने वाले नियमों के अनुकूल नहीं चलते। तो हम अपने आगे आने वाले जीवन पर नाटकीय प्रभाव छोड़ सकते हैं।"

"डार! बहुत अच्छे! पर याद रखो। तुम्हें फिर भी संघर्षों का सामना करना ही होगा क्योंकि हम जितने अधूरे और असंपूर्ण हैं, उस के लिए ही हमें हमेशा कुछ सबक सीखने की आवश्यकता होगी और ये सबक हमेशा थोड़े कष्ट के साथ ही आते हैं। यह सब ऐसा ही है। हां, हम अपने जीवन का दायित्व पूरी तरह से अपने पर ले लें और बेहतर चुनाव करें तो पीड़ा को घटा सकते हैं। इस तरह, हम अपनी नियति को एक नया रूप दे सकते हैं और कहीं प्रसन्नतादायक जीवन जीने की शक्ति पा सकते हैं।"

जूलियन अपनी बात कहते–कहते सीडी प्लेयर के पास गए और वहां रखे कैसेट्स को देखने लगे, **"यह ब्रह्माण्ड तुम्हारी हार्दिक इच्छाओं से अनजान नहीं है।"** तुम्हारे लिए योजना का जो भी अंश लिखा गया है, वह तुम्हें कभी किसी ऐसे काम में शामिल नहीं करेगा, जो तुम्हारे लिए उचित न हो। वह तुम्हें सदा प्रसन्न देखना चाहता है। तुम्हारी नियति कभी तुम्हें ऐसी दिशा में नहीं ले जाएगी, जहां तुम्हारे हाथ केवल अप्रसन्नता आए। अगर तुम व्यवसाय करना पसंद करते हो, तो तुम्हारे जीवन की योजना ऐसी नहीं होगी कि तुम्हारा जीवन एक डॉक्टर या नायक बनने के लिए केंद्रित हो जाए। यदि कोई लेखक बनना चाहता है, तो कंम्यूटर के सामने अकेले बैठते ही उसका दिल उड़ान भरने लगता है, वह ऐसे गहरे संकल्प व जुनून के साथ लिखता है मानो संसार में और कुछ भी मायने ही न रखता हो – तब उसकी आत्मा का उद्देश्य यह नहीं होगा कि वह सेल्समैन बन कर, लोगों के दरवाजे–

दरवाजे जा कर, अपना माल बेचे। **यह "ब्रह्माण्ड वास्तव में आपकी जीत चाहता है। आपके लिए योजना यही बनाई गई है कि आपको सबसे अधिक प्रसन्नता मिल सके।"**

जूलियन ने मुझे अपनी कुछ सीडी दिखाईं, जैसे कोई बच्चा अपने दोस्त को अपने मनपसंद खिलौने दिखाता है। उनके पास मोर्चीबा की पार्ट ऑफ प्रोसेस, कोल्डप्ले की ए रश ऑफ ब्लड टू द हैड, एक बॉन जोवी की बेस्टसेलर और दो ऐसी सीडी थीं जिनके बारे में मैं कुछ नहीं जानता था। एक तो किसी अवर लेडी पीस की ग्रेविटी थी और दूसरी लॉयड कोल की द निगेटिव्स थी।

"जूलियन आपकी संगीत रूचि तो बेहद विचित्र है। आप तो इस ग्रह के सबसे हिप्पी लामा होंगे।"

वे हंसने लगे और उनका चेहरा रोशनी से नहा सा गया। "डार! मैंने कहा न कि संगीत सुन कर मेरी आत्मा थिरक उठती है। यह मेरे जीवन के सबसे मधुर आनंदों में से है। मैं अपना बहुत सा वक्त म्यूजिक स्टोर व किताबों की दुकानों में बिताता हूं। संगीत व पुस्तकें, मेरे दो बड़े आनंदों में से हैं।"

जूलियन के पलंग पर तीन किताबें पड़ी दिखाई दीं, जो शायद बहुत पढ़ने के कारण तार–तार हो रही थीं। मारकस ऑरीलियस की मेडीटेशंस, ओग मेंडिनो की द ग्रेटेस्ट सेल्समैन इन द वर्ल्ड और द सेंट, द सर्फर एंड द सीईओ – इन लेखकों ने पुस्तकों के जो शीर्षक रखे हैं, इन्हें देख कर तो मैं दंग रह जाता हूं। उनके कमरे में बहुत कम कपड़े दिखाई दिए। उनका झोला कोने में रखा था। बेशक जूलियन बहुत सादगी से जीते थे।

जूलियन ने खाकीपैंट, एक सफेद टी–शर्ट और सैंडिल की जोड़ी कोने में रखी। मैंने देखा कि उनके सैंडिल 'द गेप'से थे। मेरे लिए यह पूरी तरह से साफ होता जा रहा था कि जूलियन के पास नाममात्र का सामान था और वे जीवन को बहुत सादगी से जी रहे थे पर वे उन अध्यात्मवादियों में से नहीं थे, जो वास्तविक संसार को त्याग देते हैं और यह अनुभव करते हैं कि केवल एक तपस्वी बन कर ही प्रबोध पाया जा सकता है। उन्हें इस संसार में से मिलने वाली सुविधाओं या आनंदों के प्रति कोई अपराधबोध नहीं था। मुझे तो उनका कुल दर्शन, बहुत ही संतुलित लगा। पूरी तरह से संतुलित दिल व दिमाग। सपनों के पीछे भागना, उन्हें साकार करना, फिर सब कुछ उस पर ही छोड़ना और उच्चतर योजना पर विश्वास रखना; इन सबके बीच एक सूक्ष्म संतुलन! एक ऐसी सजगता साधना, जिसके अनुसार, हमें अपने आध्यात्मिक स्वरूप की ओर लौटना है और यह नहीं भूलना कि हम बहुत सी असंपूर्णताओं से भरे मनुष्य हैं, जो बहुत सुंदर व प्यारे आनंदों से घिरे जगत में रहते हैं, जिन्हें बिना किसी अपराध बोध के ग्रहण किया जा सकता है। **अंतत: मुझे लगने लगा है, जूलियन यही कह रहे हैं कि एक सुंदर जीवन की कुंजी यही है कि स्वर्ग व धरती के बीच संतुलन बना दिया जाए। मुझे भी यही बिल्कुल सटीक लगता है।**

जूलियन ने मैंडिनो की पुस्तक ली और उसमें एक पंक्ति की ओर संकेत किया, जिसे पीले रंग से रंगा गया था। “दोस्त! इस शानदार बात को पढ़ो। वह पंक्ति बिल्कुल सादी थी जैसा कि प्राय: सभी सत्य हुआ करते हैं। ‘मैं इस धरती पर संयोगवश नहीं हूं। मैं यहां एक उद्देश्य के साथ आया हूं और वह उद्देश्य यह है कि मुझे विशाल पर्वत बनना है, एक रेत के दाने की तरह सिकुड़ना नहीं है।”

“धन्यवाद जूलियन! मेरा जीवन बचाने के लिए आपका आभार!”मैंने सादगी से कहा।

अध्याय 4

जिज्ञासु आत्म-विश्वासघात के अपराध व जंजीरों से मुक्त होने का उपाय सीखता है।

अपने विज़न का आनंद लें; अपने आदर्शों का आनंद लें; अपने हृदय में बज रहे संगीत का आनंद लें; उस सुंदरता का आनंद लें जो आपके मन में आकार ले रही है, वह सुंदरता जिसने आपके विचारों को घेर रखा है क्योंकि उनमें से ही सभी आनंदपूर्ण अवस्थाएं, स्वर्गीय परिवेश उत्पन्न होगा; यदि आप इनके प्रति सच्चे रहे तो, अंतत: इनसे ही आपके संसार की नींव खड़ी होगी।

-जेम्स एलन, एज़ यू थिंक

तुम संकोच कैसे कर सकते हो? खतरा मोल लो! किसी भी चीज़ का खतरा मोल लो!दूसरों की राय की परवाह मत करो! धरती पर अपने लिए सबसे कठिन कार्य करो। अपने लिए कार्य करो। सच्चाई का डट कर सामना करो!

-कैथरीन मैंसफील्ड

जूलियन जानते थे कि मैं अपने गहन विचारों में खोया था इसलिए उन्होंने कुछ क्षण के लिए मुझे अकेला छोड़ दिया। मानो वे चाहते हों कि मैं सारी सुनी हुई बातों को अपने मन में संजो लूं। जब वे बाथरूम गए तो मैं उन सभी तरीकों पर गौर करने लगा, जिनके साथ मैंने अपना पिछला जीवन जीया था। मैं उन्हें बहते पानी के साथ गाते हुए सुन सकता था। अतीत की कई भूलें आंखों के आगे नाच उठीं तो मेरे भीतर पश्चाताप का सोता जाग उठा। उन भूलों से सबक लेने की बजाए, उन्हें अपनी शिक्षा तथा वृद्धि के लिए प्रयोग में लाने की बजाए, मैं उनकी ओर से आंखें मूंदे बैठा रहा. आत्म-दया के सागर में डूबे डार ने उन सभी अवसरों को खो दिया, जो जीवन में कुछ सिखाने आए थे। मुझे खेद था कि मैं अपने जीवन के प्रारंभिक

वर्षों में जूलियन के दर्शन को क्यों नहीं पा सका और उन सभी प्राकृतिक नियमों के अनुसार क्यों नहीं चल सका, जिनके बारे में मुझे बताया गया था। जाने कितने कीमती बरस हाथ से फिसल गए थे। मैं दूसरों की अपेक्षाओं पर खरे उतरने वाले जीवन को जीने की बजाए, अपने जीवन की ओर से मिले उपहारों व प्रतिभाओं का आनंद ले सकता था। मुझे भीड़ ने निगल लिया था और लगभग पूरी तरह से नष्ट करने के आदेश दे दिए गए थे।

जब जूलियन लौटे तो उन्होंने मेरे कंधों के पर अपनी बांह डाल दी। वे जान सकते थे कि मैं कैसी मनोदशा से गुजर रहा था। "बुद्धिमान संत तिक न्यात हन्ह ने कहा है, 'क्षमा समझ से उपजती है।'तुम इस समय ठीक वहीं हो, जहां तुम्हें तुम्हारी नियति के अनुसार होना चाहिए था। ज्यों-ज्यों जीवन के प्रति समझ और जागरूकता विकसित होगी, तुम्हारे भीतर अपने-आप को क्षमा करने का सुंदर भाव भी विकसित होगा। तुम अपने साथ कठोरता से पेश नहीं आ सकते।" जूलियन ने इन शब्दों के साथ ही मुझे अपनी अंतर्जात शक्तियों से भी आश्चर्य में डाल दिया। उन्होंने मेरे मन की बात जान ली थी।

वे मुझे अपने साथ कमरे से बाहर, एक गलियारे में ले गए। दीवारों पर सुदंर कलाकृतियां टंगी थीं और छिपे स्पीकरों से मधुर संगीत हवा में तैर रहा था। ऐसा लगता था कि अब भी होटल के अधिकतर मेहमान नींद ही ले रहे थे।

"जूलियन, मुझे और कुछ बताएं।" मैंने खुद को संभाला और अपने कोच की बुद्धिमता से भरी बातें जानने के लिए कौतूहल प्रकट किया। मेरे लाइफ कोच, मेरे साथ जीवन की गैरपारंपरिक प्रज्ञा बांट रहे थे।

उन्होंने लिफ्ट की ओर जाते हुए कहा, "दोस्त, जो इंसान एक मनुष्य के रूप में अपने जीवन का सबसे बड़ा दांव खेलता है, अपनी विशालतम संभावना के साथ जीते हुए, प्रामाणिक मिशन के पथ पर चलता है, वह एक ऐसा व्यक्ति है जो अपने-आप से प्रेम करता है। **एक श्रेष्ठतम जीवन जीना, इस बात का द्योतक है कि आप अपने-आप से प्रेम करते हैं।"**

"मैंने तो कभी इस तरह सोचा ही नहीं था।" मैंने कहा

"जो व्यक्ति इस संसार में ऐसे जीता है मानो वही इस ग्रह का सबसे महान व्यक्ति वही है - वास्तव में एक महान व्यक्तित्व - तो वह न केवल आत्मविश्वासी होता है बल्कि उस प्राकृतिक बल से भी अपार सम्मान पाता है, जिसे उसने रचा है। आजकल वर्तमान के साथ जीने और वर्तमान पल का आनंद लेने जैसी बातें बहुत होती हैं। मुझे गलत मत समझना, बेहतर तरीके से जीने के लिए ऐसा करना बहुत अनिवार्य है। मैं इस बात को पूरी तरह से मान देते हुए अपनाता हूं। तुमने मुझे इस तरह की बातें करते सुना भी होगा **परंतु यह सब संतुलन की बात है, हमें सितारों तक तो जाना ही है परंतु साथ ही अपने भीतरी छिपी प्रतिभा को बाहर लाने का हरसंभव प्रयास भी करना है। सच्चाई यह है कि जब आप बड़े लक्ष्य तय करते हैं या बड़े सपनों का पीछा करते हैं तो आप स्वयं को एक**

रचनात्मक कार्य से जोड़ रहे हैं। आप कुछ अद्‌भुत रचने के लिए अपनी कल्पना व योग्यता का मेल कर रहे हैं। इसे ही रचनात्मक कर्म कहते हैं।"

"बहुत सुंदर विचार! मैंने तो अपने सार्थक लक्ष्यों को कभी इस रूप में नहीं लिया था। पर क्या वास्तव में ऐसा ही होता है? ऐसा करने का अर्थ है कि आप कुछ रचनात्मक कर रहे हैं। अगर आप कोई नया व्यवसाय कर रहे हैं, कोई नया उत्पाद बाजार में ला रहे हैं, या किसी नए जुनून का पीछा कर रहे हैं तो यह सब उस कलाकार के कर्म से कम नहीं है जो अपने मन में छिपी कल्पना को एक सुंदर कलाकृति के रूप में ढाल देता है।"

"हां, और जब हम सपनों का जीवन गढ़ते हैं तो क्या तुम जानते हो कि हम किसे अपना आदर्श चुनते हैं?"

"नहीं बता सकता"

'हम उस असीम शक्तिशाली बल को अपना आदर्श चुनते हैं, जिसने इस संसार को रचा है। उसे तुम अपने हिसाब से कोई भी नाम दे सकते हो जैसे भगवान, ब्रह्माण्ड, प्रकृति..। यह एक शब्द है और मैं इन शब्दों के जाल में नहीं उलझना चाहता। खास बात यह है कि जब तुम पूरे प्रेम व आवेग के साथ अपना मनचाहा पा लेते हो तो उस ऊर्जा का स्त्रोत उमड़ पड़ता है जिसने इन सितारों व सागरों को रचा है। तुम्हारे जीवन में एक तरह का संगीत पनपने लगता है और कुछ ऐसा घटने लगता है, जो तुम्हारी समझ से भी कहीं परे है। कुछ चिन्ह प्रकट होने लगते हैं, जो यह बताते हैं कि तुम सही रास्ते पर चल रहे हो। तुम सीधा अपने घर की ओर जाने लगते हो और मार्ग में एक भी लाल बत्ती नहीं आती, जैसे आप सोच ही रहे होते हैं कि क्या आपने सही व्यक्ति को भेंट का समय दिया है, उसी समय वह उचित व्यक्ति आपको फोन कर देता है। आपको यह निर्णय लेने में मदद करता है कि आप नौकरी के लिए जो संघर्ष कर रहे थे, वह वास्तव में उपयोगी है भी या नहीं? या फिर दंतचिकित्सक के प्रतीक्षाकक्ष में अचानक समय काटने के लिए उठा ली गई पुस्तक के किसी पृष्ठ पर आपको अपनी एक कठिन समस्या का हल मिल जाता है। कहते हैं : **'अज्ञात बने रहने के लिए ही ईश्वर समाकालिकता का प्रयोग करते हैं। यानी घटनाएं एक ही समय पर घटने से संयोग बनते दिखाई देते हैं।'**

"जूलियन, यह तो आपने बहुत सुंदर बात कही।"

मैं उनके साथ चमचमाती लॉबी में निकल आया था। कांच की खिड़कियों से धूप छन कर भीतर आ रही थी और वहां रखे फूलों ने वातावरण को और भी मोहक बना दिया था। मुझे उस होटल और उसकी एक-एक चीज़ पर गर्व था। मैंने जो भी रचा था, उसे देख कर गर्व की अनुभूति होने लगी।

जब तुम सबसे बेहतर काम करते हो और अपने-आप को श्रेष्ठता के लिए समर्पित कर देते हो तो सारा ब्रह्माण्ड तुम्हें अपना समर्थन देता है और तुम्हारी पंखों को नई उड़ान दे देता है यह उस मनुष्य पर नज़र रखता है, जो अपने आदर्शो को पाना चाह रहा है और वह बनने

का प्रयास कर रहा है, जो उसे यहां आ कर बनना था। पूरे संसार को देखने वाली आंखों से वह प्रयास कभी अनदेखा नहीं रहता। अब यह भी याद रखो कि सब कुछ तुम्हारे मनचाहे तरीके से नहीं घटेगा। कोई उच्चतर बुद्धिमता भी है, जिसके तर्क हमारी समझ से बाहर हैं। अगर तुम अपना श्रेष्ठ योगदान देते हुए, बाकी सब प्रकृति के हाथों में छोड़ते रहे, जो भी सामने आए, उसे स्वीकारते रहे और उसे ही अपना कल्याण मानते रहे तो यह जीवन अद्‌भुत रूप से कारगर हो जाएगा। दरअसल यह तुम्हारी अपेक्षा से भी कहीं बेहतर होगा।

मैं जूलियन की इन बातों को मन ही मन संजो ही रहा था कि वे वहीं फर्श पर लेट कर विचित्र सी मुद्राएं बनाने लगे। वहां खड़ी टीम देख कर, दबे शब्दों में खिलखिलाने लगी थी। मारिआ मुग्ध थी और इतना तो तय था कि जूलियन अपने ही संसार में जीते थे। वे इस बात की परवाह नहीं करते थे कि लोग उनके बारे में क्या सोचते थे। यह साफ था कि उन्हें अपने लिए जो भी सही लगता था, वे उसे करने से कभी नहीं चूकते थे। वे अपनी शर्तों पर जीवन जीते थे और उन्होंने मुझे सिखा दिया था कि सफलता के असली मायने यही थे।

“मैं एक योगासन कर रहा हूं, जिसमें नीचे की ओर मुख किए हुए श्वान जैसी मुद्रा बनाई जाती है। मैं अपने-आप को ऊर्जान्वित रखने और अपने शरीर को उचित दशा में रखने के लिए प्रतिदिन योगाभ्यास करता हूं। तुम्हें भी कोशिश करनी चाहिए। यह हज़ारों सालों से चला आ रहा है और वाकई कारगर है। हे, अगर मैडोना और स्टिंग इसकी कसमें खा सकते हैं तो यह इतना बुरा तो नहीं होगा न?” उन्होंने मस्कुराहट के साथ कहा और उस मुद्रा के दौरान, उनकी मांसपेशियां फड़क उठीं।

कुछ क्षण तक उसी मुद्रा में रहने के बाद वे उठे और आगे चल दिए। “खैर, मैं अपनी बात पर वापिस आता हूं। हमारे संसार में बहुत से आध्यात्मिक व्यक्ति ऐसे हैं जो मेरे हिसाब से आध्यात्मिक समानुभूति का शिकार हैं। वे तुमसे कहेंगे कि अपने सपनों के पीछे मत भागो या बहुत बड़ा दांव मत खेलो। वे कहेंगे कि इससे तुम्हारी नियति नियंत्रित होगी और परिणामों पर दबाव आएगा। क्या बकवास है!!” जूलियन ने बड़े ही नाटकीय अंदाज़ में, अपनी बांहें हवा में लहराईं।

“हां, उम्मीद करता हूं कि मैंने बातों को स्पष्ट रूप से समझा दिया है। जो लोग अपना जीवन बेहतर तरीके से जी रहे हैं – ऐसा जीवन जो उनकी नियति उनसे चाहती है। उन्होंने किसी चीज़ के घटने या उसे घटित होने देने के बीच एक संतुलन साधना सीख लिया है। मैं मानता हूं कि अगर आप अपनी ओर से बहुत प्रयास करते हैं तो वह कुछ ऐसा ही होगा मानो आप नदी के बहाव की विपरीत दिशा में बल लगा रहे हैं। परंतु अनेक अध्यात्मविदों का यही मानना है कि कड़ी मेहनत करना, अनुशासित रहना और अपना मनचाहा पाना, गैरआध्यात्मिक व गैरसेहतमंद होता है। इसमें कोई सच्चाई नहीं है। लक्ष्य तय करना, समय का प्रबंधन करना और अपना मनचाहा पाने के लिए सोचे-समझे गए खतरे मोल लेना ही वास्तव में आध्यात्मिक होना है क्योंकि आप अपनी प्रतिभाओं व शक्तियों को किसी भले काज के लिए निवेश कर रहे हैं। अन्यथा सोचने वाले लोग, इस संसार के उन लोगों में से हो

सकते हैं जो अपने काम के दीवाने हैं परंतु उनके विचार बहुत ही अति से पूर्ण तथा असंतुलित हैं। जहां तक मेरा सवाल है, अति किसी भी रूप में बुरी ही होती है।"

"क्या किसी व्यक्ति के लिए बहुत अधिक आध्यात्मिक होना संभव है?"

"बिल्कुल! सारा दिन अपने कमरे में बंद रह कर प्रार्थना करने से तुम अपने सपनों का जीवन नहीं पा सकते और अलग तरह से सोच रखना भी जादुई सोच रखने से अधिक कुछ नहीं है। दरअसल यह एक भ्रम है। मैंने तुमसे कहा न कि हम सबके लिए योजना का एक रफ खाका पहले से तैयार कर दिया गया है – यह तो इस संसार में हमारे जन्म से भी बहुत पहले लिख दिया गया था। कहते हैं कि इंसान को केवल चुनाव की आजादी दी गई है : वह ऐसे कदम उठा सकता है ताकि अपनी नियति तक जा सके, उसे पा सके। हमें बहुत से रिक्त स्थानों को भरने का अवसर दिया जाता है और बहुत से बिंदुओं को मिलाने की शक्ति दी जाती है। तुम्हें अपनी ओर से हरसंभव प्रयास करना चाहिए और अपने सपनों से भरा जीवन पाने के लिए, हर तरह का त्याग करने के लिए प्रस्तुत होना चाहिए। तुम्हें अनुशासन का पालन करते हुए, अपने जीवन में बुद्धिमतापूर्ण चुनाव करना चाहिए। कर्मो के परिणाम होते हैं और अपने सपनों की फसल बोने के लिए, आपको बीज तो बोने ही होंगे। यह भी एक प्राकृतिक नियम ही है। और अगर तुम्हें मेरी बात का विश्वास नहीं आता तो किसी भी सफल किसान से पूछो। वे तुम्हें बताएंगे कि खेत में कड़ी मेहनत किए बिना और कोई बीज उगाए बिना, कुछ नहीं उगाया जा सकता। यदि वे सारा दिन वहीं बैठे ध्यान व प्रार्थना ही करते रहें और कुछ न करें तो वे अपना खेत खो देंगे।"

"मुझे भी यह बात सही लग रही है। मैं कल्पना भी नहीं कर सकता कि अगर मैं अपनी नियति को आकर्षित करने के लिए कुछ नहीं करता तो वह स्वयं मेरा द्वार खटखटाने आएगी। जूलियन, मैं आपकी बात से सहमत हूं। यदि हमें व्यक्तिगत शक्ति को प्रयोग में लाने का अधिकार न होता तो संभवत: इंसानों के रूप में हमें इसे दिया ही न गया होता।"

हम बाहर निकल आए और सुबह की ताज़ी हवा में सांस ली।

"ठीक कहा डार! हम सभी को उपहार दिए गए हैं और हमें जो भी उपहार दिया गया है, उसका कोई न कोई कारण अवश्य है। हमें मिले हर उपहार के साथ यह उत्तरदायित्व भी आता है कि हम उसे गढ़ें, उसे विकसित करें और इस संसार में इस तरह लागू करें कि वह दूसरों के जीवन को समृद्ध कर सके। जो लोग जीवन से अपना मनचाहा पाने और उसे साहसपूर्वक आगे लाने की मंशा नहीं रखते, ये वही लोग हैं जो भीतर ही भीतर भय से आतंकित रहते हैं। वे डरे हुए हैं। उन्हें अपने कुछ मुद्दों का समाधान करना होगा और कुछ सायों से पीछा छुड़ाना होगा।"

"जूलियन, वे किसी तरह के भय के सायों में जी रहे हैं?"

"सफलता का भय, असफलता का भय, अज्ञात का भय, अस्वीकृति का भय, सबसे अलग दिखने का भय, बहुत अच्छा न बन पाने का भय....यह सूची अंतहीन हो सकती है।

जो भी व्यक्ति अपने सबसे बेहतर प्रदर्शन के साथ आगे नहीं है, अपने जीवन के सबसे श्रेष्ठतम स्तर के लिए कार्य नहीं कर रहा, कहीं न कहीं उसके भीतर भय भरा है, जिसे जड़ से मिटाने की आवश्यकता है। अब मैं साफ शब्दों में बताता हूं; इस संसार में ऐसी कोई भी आत्मा नहीं है जिसके भीतर ऐसा भय न हो, जो उसे उसकी सच्ची संभावनाओं तक जाने से रोकता है। मनुष्य असंपूर्णता के मेल से बना है और जब हमने संसार में आ कर, अपने मूल स्वभाव की संपूर्णता को त्याग कर, जिन भयों को अपना लिया था, उन्हीं के कारण आज हम असंपूर्ण हैं, अधूरे हैं।"

"तो आज जब लोग बात करते हैं, 'परिणाम की चितां मत करो।' या 'वर्तमान पर केंद्रित रहो' तो क्या इससे उनका भय झलकता है?"

"नहीं डार! **इस दर्शन में कुछ बुरा नहीं है पर वे इसे जिस तरह प्रयोग में ला रहे हैं, वह गलत है।** वह वाक्य याद है, जो मैंने सिखाया था : **'अपनी ओर से बेहतरीन करो और बाकी सब जीवन पर छोड़ दो।'** अपने सपनों का पीछा करो। अपना मनचाहा जीवन पाने के लिए हर संभव प्रयास करो। उन स्थानों पर जाओ, जहां जाने से तुम्हे भय लगता हो और संसार को दिखाने के लिए तुम्हें जो महानता दी गई थी, उससे अपने–आप को सीमित व दूर मत करो। और जब अपनी शक्ति व क्षमता के अनुसार सब कुछ कर लो तो इसके बाद, परिणाम की परवाह मत करो। अपनी ओर से सारा श्रम देने के बाद, आराम से बैठो, जो भी तुम्हें वापिस मिले, उसे सहजता से स्वीकारो। तुम जो कुछ भी कर सकते थे, वह तुमने किया। तुमने पूरी जिम्मेवारी से कदम उठाया और अपनी शक्ति के अनुसार बेहतरीन निर्णय लिए। अब उस उच्चतम शक्ति को अपना काम करने दो, जो तुम्हें वहां ले जाना चाहती है, जहां के लिए तुम्हें बनाया गया है। अब जीवन को अपनी नियति की डोर थामने दो। यही वह बिंदु है जहां सहज भाव से समर्पण करना होगा।

"आपने सही कहा। मुझे बात समझ आ रही है। यह भी संतुलन की ही बात है। मुझे अपनी ओर से अपना काम करना है और इसके बाद प्रकृति, भगवान, अनंत बुद्धिमता या शक्ति आदि, हम जो भी नाम दें, वह अपनी ओर से बाकी का काम करेगी। और मेरे सामने जो भी आए, मुझे समझ लेना चाहिए कि वह किसी कारण से ही आया है।"

"यह दरअसल तुम्हारी भलाई के लिए ही आया है ताकि तुम्हें वहां ले जा सके, जहां तुम्हें जाना है। अगर तुमने अपनी ओर से सब कुछ बेहतर तरीके से किया और प्रकृति के नियमों के अनुसार किया, तो जो भी सामने आएगा, वह एक वरदान ही होगा, भले ही वह आरंभ में एक शाप क्यों न दिखे।"

"जूलियन आपके विचार वास्तव में बहुत शक्तिशाली हैं। तो फिर ये जो अध्यात्मवादी, जीवन को लक्ष्य के बिना जीने, क्षण के प्रति समर्पित होने की बात करते हैं, वे सही मायनों में डरे हुए लोग हैं। वे बहुत छोटे स्तर पर खेलते हुए, भय के साए में जी रहे हैं। वे संतुलन से परे हैं।" मैंने जूलियन के शब्दों का सारांश देने का प्रयास किया।

“हां, उनमें से अनेक लोगों के लिए उनकी आध्यात्मिकता एक नकाब से कम नहीं है, जिसे उन्होंने अपने भीतर बैठे नन्हे बालक को भयभीत करने के लिए लगा रखा है, जो यह कारोबार चला रहा है। उन्हें डर है कि वे असफल हो जाएंगे, वे बहुत अच्छे साबित नहीं हो सकेंगे या रास्ता कठिन हो सकता है तो वे स्वयं को किसी भी तरह जिम्मेदारी से बचाने के लिए बहाने गढ़ते हैं। वे ग्रहों की दशा के अनुसार अपने जीवन को चलाने का प्रयत्न करते हैं या ज्योतिषियों के पास जा कर अपना भविष्य जानते हैं। डार, मुझे गलत मत समझो। मैंने भारत में सीखा कि ज्योतिष एक अद्‌भुत विज्ञान है, जो कि पूरी तरह से विश्वसनीय हो सकता है। यह सालों से सफलतापूर्वक प्रयोग में लाया जाता रहा है। पर सही मायनों में सारी बात संतुलन से ही जुड़ी है। अगर मैं सारा जीवन इसी के सहारे बिताता हूं तो मैं अपने मूड को दोष दूंगा, अपनी निष्क्रियता को दोष दूंगा। इस तरह मैं अपनी उस शक्ति को भी नकार रहा हूं, जो एक इंसान होने के नाते मुझे दी गई है। यह जीने का दुर्बल तरीका है। याद रखो, तुम अपनी प्रवृत्ति नहीं बल्कि उससे कहीं अधिक शक्तिशाली हो। **तुम केवल अपनी सोच नहीं बल्कि उससे कहीं अधिक बुद्धिमान शक्ति हो।**

“जूलियन आप मुझे यह बताना चाहते हैं कि अगर कोई व्यक्ति जीने के लिए अपनी संपूर्ण मानव क्षमता का प्रयोग नहीं करता तो वह सही मायनों में गैरजिम्मेदार है क्योंकि वह उपहार का पूरा प्रयोग नहीं कर रहा, जो कि उसे दिया गया है।”

जैसा कि मैंने कल रात भी कहा था। प्रसन्नता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है। हमें इसी तरह बनाया गया है कि अपने जीवन के साथ असाधारण कार्य कर सकें और इस संसार को दुर्लभ उपहार दे सकें। मार्टिन लूथर किंग जूनियर के शब्दों में: ‘प्रत्येक के पास महानता पाने की शक्ति है। शोहरत पाने की न हो परंतु महानता पाने के लिए अवश्य है।’ परंतु हम स्वयं को ही छलते हैं। हम अपने जीवन को कायरतापूर्वक जीते हैं। हम अपने-आप को उसी विश्वास तंत्र के अनुसार ढाल लेते हैं जो हमें आसपास के लोगों द्वारा सिखाया गया होता है। ‘ऐसा साहस मत करना’, ‘सपने मत देखो।’, ‘बहुत ज्यादा मत चमको वरना तुम गिरोगे और असफल हो जाओगे।’

हम सूरज की उजली धूप से खिले दिन में बाहर आ गए। होटल आने वाले बहुत से लोग फरारी को प्रशंसक निगाहों से देख रहे थे। यह एक आलीशान वाहन था और इसे उसी तरह संभाला भी गया था, हालांकि मॉडल पुराना था। जूलियन उसे देख कर मुस्कुराए।

“आओ दोस्त! चलो सैर पर चलें।”

मैं पहले कभी फरारी में नहीं बैठा था इसलिए इस लोभनीय प्रस्ताव ने मुझे रोमांचित कर दिया। मैं गहरे रंग की सीट पर बैठा और इटैलियन चमड़े की गंध को अपने भीतर तक जाते हुए महसूस करने लगा। जब जूलियन ने इंजन चालू किया तो उन्हें उसे होटल से बाहर लाते देर नहीं लगी, वहां खड़े प्रशंसक फरारी और उसके दो भाग्यशाली सवारों को ताकते ही रह गए।

जूलियन ने सीडी प्लेयर चला दिया। जब हम शहर की शांत सड़कों से देहाती इलाके की ओर चले तो बढ़िया साउंड सिस्टम से यू टू कि ब्यूटीफुल डे की धुन गूंज रही थी।

“हे जूलियन! वैसे ये कार किसकी है?”

“यह एक रहस्य है।” उन्होंने संगीत की धुन पर थिरकती अंगुलियों के साथ बताया।

“आप कम से कम यह तो बता ही सकते हैं कि हम कहां जा रहे हैं?”

जूलियन ने गति बढ़ाते हुए कहा, “कैमडन गुफाएं।”उनकी आंखें पूरी तरह से सड़क पर टिकी थीं और उनके चेहरे की रौनक देखते ही बन रही थी। बेशक उन्हें यह कार चलाना बहुत भाता था।

मैंने उन गुफाओं के बारे में सुन रखा था। वे एक झरने के पास स्थित थीं और रोमांचप्रिय व पुरातत्वविद् वहां जाना पसंद करते थे। मुझे यह नहीं पता चल सका कि जूलियन मुझे वहां क्यों ले जा रहे थे और न ही मैंने इस बारे में सवाल किया।

“डार! समय आ गया है कि मैं तुम्हें आत्म-जागरण की सात चरणीय प्रक्रिया का परिचय दूं। डार! पिछली रात और आज सुबह का समय तो आंरभ मात्र था। तुम बहुत अच्छे तरीके से प्रतिक्रिया दे रहे हो। मैं यह भी जानता हूं कि आने वाले सप्ताह में ही तुम इन सबके शक्तिशाली परिणाम पाने लगोगे। मैं तुम्हारी आंखों में देख कर बता सकता हूं कि तुम इसे पाने के लिए कितना गहरा संकल्प ले चुके हो। मेरे लिए वचनबद्धता एक बहुत ही बड़ा और महत्वपूर्ण शब्द है। एक विश्वसनीय व वचनबद्ध जीवन जीना बहुत मायने रखता है। वचनबद्धता और जवाबदेही, इन दो शब्दों को तुम्हारे अस्तित्व का एक अंग होना चाहिए। तुम्हें प्राय: इनके बारे में विचार करना चाहिए और उनके लिए हमेशा खड़े होना चाहिए।”

“जूलियन! मैं वादा करता हूं कि उन्हें हमेशा गंभीरता से लूंगा।” मैंने पूरी गंभीरता से कहा।

“यदि हम अपने जीवन को एक विशाल स्तर पर, नियति के पथ पर चलते हुए बिताना चाहते हैं तो हमारे लिए आत्म-जागरण की सात चरणों वाली प्रक्रिया बहुत महत्व रखती है। इनके माध्यम से तुम अपनी उस शक्ति को जागृत कर सकते हो, जो तुम्हें उस शक्ति द्वारा सौंपी गई है, जिसने इस संसार को रचा है। वर्तमान जगत में बहुत कम लोगों को इस बारे में जानकारी है परंतु बहुत जल्दी यह सब बदल जाएगा।” जूलियन ने अपने शब्दों को थोड़ा रहस्यमयी बनाते हुए कहा। “ये सातों चरण, उस मार्ग को दर्शाते हैं, जिस पर चल कर ही कोई जिज्ञासु अपने मूल स्वभाव तक लौट सकता है – मन, शरीर व आत्मा की उस अवस्था को पा सकता है, जो उसने तब अनुभव की थी, जब वह पूरी तरह से संपूर्ण व विशुद्ध था।”

“यदि मैं इन चरणों को सीख लूंगा तो एक मनुष्य के रूप में क्या बदलाव पा सकता हूं?” मैंने पूरी आशा के साथ पूछा।

“मेरे दोस्त! यदि तुम इन सारे चरणों को अपना लोगे तो तुम प्रबुद्ध हो जाओगे। अभी

तक इस ग्रह पर मुट्ठी भर लोग ही इस अवस्था तक आ सके हैं परंतु अब यह सब बदल जाएगा। जब संसार आत्म–जागरण के इन चरणों को जान लेगा तो निश्चित रूप से यह बदल जाएगा।"

"जूलियन! आपका यह वादा वाकई अद्भुत और विश्वसनीय है।"

"मैं जानता हूं कि यह है। मैं यह भी जानता हूं कि मैं तुम्हारे साथ जो तंत्र बांटने जा रहा हूं, वह बिल्कुल सादा है परंतु चुनौती यही है कि तुम इसे अपने जीवन में कैसे उतारते हो। मुझे गलत मत समझना, मैं यह नहीं कह रहा कि इसका पालन करना कठिन है। दअरसल इसके कुछ अंश तो अविश्वसनीय रूप से सरल हैं। केवल आपको प्रक्रिया के शिक्षण के लिए समर्पित रहना होगा और इसके साथ तब तक रहना होगा, जब तक यह आपके मूल स्वभाव का अंग न बन जाए।"

"अच्छा! आप मुझे इसके बारे में बताएं।"

"पहला चरण वही है, जहां इस समय संसार के अधिकतर लोग हैं। यह एक अवचेतन रूप से जीवन जीने की अवस्था है। कह सकते हैं कि चेतन रूप से जागृत न होना। यह चरण कहलाता है – एक झूठ के साथ जीना। निजी उद्भव के मंच के इस चरण में लोग दुनिया के काम करने और उसमें अपने अस्तित्व के बारे में झूठी मान्यता व धारणा रखते हैं। मैं उन लोगों के लिए कुछ नहीं कहना चाहता, जिनका पूरा जीवन इसी मंच पर बीत जाता है। भला मैं दूसरे मनुष्य को परखने वाला कौन होता हूं? परंतु मैं तुम्हें यह बता रहा हूं कि यह एक तथ्य है कि यह चेतना का सबसे निचला चरण है और पहले चरण पर रहने वालों का सत्य से कोई संपर्क नहीं होता।"

"जूलियन आप कहना क्या चाहते हो?"

"आने वाले सप्ताहों में मैं तुम्हारे साथ कई ऐसे सत्य बांटूंगा कि हमारा यह संसार कैसे काम करता है और यदि तुम यहां प्रामाणिक सफलता पाना चाहते हो तो इसके लिए तुम्हें क्या करना चाहिए? यदि तुम सत्य से अनजान हो तो जान लो कि तुम झूठ के साथ जी रहे हो। जीवन के प्रति अवचेतन बने रहना और यह न जान पाना कि हम इस संसार में क्यों हैं, यह अपने–आप में मिथ्या कथन है और दुखद बात यह है कि इस ग्रह के अधिकतर लोग ऐसे ही हैं। जैसा कि मैंने तुम्हें पिछली रात कहा सब कुछ बदल रहा है और बहुत जल्दी लोगों की चेतना में क्रांतिकारी परिवर्तन आने वाला है। क्या तुमने मैट्रिक्स मूवी देखी है?" जूलियन ने मुझसे पूछा।

"हां, मैंने देखी है। उसके स्पेशल इफेक्ट्स बहुत अच्छे हैं।" मैंने हामी भरी।

"डार! वह मूवी केवल स्पेशल इफेक्ट्स के मुकाबले और भी बहुत कुछ दिखाती है। अधिकतर लोग केवल मूवी के बारे में यही बात करते हैं। कई लोगों के लिए वह हॉलीवुड की एक और एक्शन मूवी से ज्यादा नहीं है। परंतु हमारे बीच बसे जिज्ञासु, जो कि इस प्रश्न का उत्तर तलाश रहे हैं कि हम यहां क्यों हैं और संसार की सच्ची प्रकृति क्या है, उनके लिए

मैट्रिक्स दार्शनिक मास्टरपीस से कम नहीं थी! ऐसी मूवी आज तक नहीं बनी।"

"क्या आप सच कह रहे हैं?" मैं जूलियन की बात सुन कर दंग रह गया।

"बिल्कुल। मोरफियस मूवी में निओ से कहता है 'हम जिस संसार को अपनी आंखों से देखते हैं वह एक भ्रम से अधिक नहीं है। यह एक ऐसा झूठ है जिसे हम अपने-आप को बताते और बेचते हैं। अब मूवी में, चरित्र जिन सभी वस्तुओं को वास्तविक जगत की देन समझ रहे थे, वे कंम्यूटर से उत्पन्न किया गया भ्रम है, जिसे मैट्रिक्स के नाम से जाना जाता है। यही स्काई-फाई है, मूवी का बॉलीवुड अंश। हमारा यह जगत कंम्यूटर से उत्पन्न कल्पना नहीं है, पर मेरे दोस्त, तुम वास्तविक जगत में जो भी देखते हो, वह एक भ्रम मात्र है।

"जूलियन, मैं समझा नहीं। जब आप यह कहते हैं कि मैं जिस जगत को अपनी आंखों से देख रहा हूं, यह वह नहीं है जैसा कि मैं सोच रहा हूं तो आपके कहने का क्या तात्पर्य है? मैं समझ नहीं पा रहा।"

"खैर, तुम इस दुनिया को जिस तरह से देखते हो, वह उस तरीके का एक भाग है, जिसके अनुसार तुम्हें इस संसार को देखना सिखाया गया है। जब तुम बहुत छोटे थे, तुम्हें तभी से कुछ निश्चित बातों पर विश्वास करने का प्रशिक्षण दिया गया है। जैसे तुमसे कहा गया कि भीड़ का हिस्सा बनो और वही करो, जो दूसरे लोग करते हैं। तुम्हें सिखाया गया कि प्रसन्न होने पर भी जोर से गाना मत गाओ और प्रेरित होने पर भी बड़ा सपना मत देखो। तुमने सीखा कि अलग लोगों को स्वीकार नहीं किया जाएगा और तभी तुम सफल हो सकोगे, जब तुम्हें लोगों से पहचान मिलेगी। तुम्हें सिखाया गया कि अपना सच किसी से मत कहो या किसी से बहुत प्यार मत करो वरना लोग तुम्हारा फायदा उठाने लगेंगे। तुम्हें सिखाया गया कि केवल संपत्ति व बाहरी शक्ति से ही तुम अंतहीन प्रसन्नता पा सकते हो।"

"हमें ये मान्यताएं किसने सिखाईं?"

"तुम्हारे माता-पिता, तुम्हारे अध्यापकों और धार्मिक नेताओं ने। तुम्हारे दोस्तों, टी.वी. और मीडिया ने!"

".....और मुझे जो भी सिखाया गया, वह झूठ था ?"

"खैर, लोग जितना जानते हैं, इस संसार में उससे भी कहीं अधिक, बहुत कुछ चल रहा है। या मैं और बेहतर शब्दों में बताना चाहूंगा : 'तुम जो वर्तमान में अपने बारे में सोचते हो, तुम वह नहीं हो। तुम सपने में भी कल्पना नहीं कर सकते कि तुम्हारे पास कितनी आंतरिक शक्ति व संभावना है। तुम्हें महानता पाने के लिए ही रचा गया है। हमारे इस बड़े और सुंदर संसार के बारे में जो कुछ भी तुम्हें सिखाया गया है, उसमें से अधिकतर झूठ है।"

'जैसे?'

"सबसे पहले, **हम सभी अदृश्य स्तर पर जुड़े हैं। हम सभी भाई-बहन हैं तो एक ही परिवार से संबंध रखते हैं। यह केवल एक भ्रम है कि हम अलग-अलग हैं।**

रहस्यदर्शियों व संतों ने हमें बताया है कि हज़ारों सालों से हम सब एक ही हैं। जब हम किसी दूसरे को चोट पहुंचाते हैं तो अपने-आप को भी चोट लगती है। यह प्रकृति के बुनियादी सच में से एक है और पहले चरण में रहने वालों के सीमित बोध के कारण, वे इसे देख नहीं सकते। तो हम एक झूठ के साथ जीते हैं। हमें लगता है कि हमारे पास संसाधनों का अभाव है और इसके लिए हम दूसरों के साथ प्रतियोगिता करते हैं। हम एक-दूसरे को सहयोग नहीं दे पाते। हम दूसरों के साथ छीना-झपटी भी करते हैं क्योंकि हम निरंतर भय के साथ जीते हैं।"

"कैसा भय?"

"हां, हमें भय रहता है कि अगर किसी को जीतना है तो हमें हारना होगा। हमें भय रहता है कि इस संसार में सबके लिए पर्याप्त समृद्धि नहीं है। हमें भय रहता है कि हमने सही मायनों में दूसरे की मदद की तो हमें हानि होगी जबकि हम इस तथ्य को नहीं जानते कि हम दूसरों की जितनी मदद करते हैं, बदले में उससे कई गुना पाते हैं। ब्रह्माण्ड के इस शाश्वत सत्य को सादे शब्दों में प्रकट किया जा सकता है: **जब आप उत्तरजीविता की विवशता से निकलकर, सेवा करने की हार्दिक वचनबद्धता की ओर आते हैं, तो आपका जीवन सफलता के शिखर तक जाने में देर नहीं करता।"**

"बहुत शक्तिशाली पंक्ति है।" मैंने कहा।

"तो पहला चरण आत्म-विश्वासघात से जुड़ा है। हम संपूर्णता के साथ जन्मे थे – निर्भीक, असीम रूप से बुद्धिमान, शाश्वत संभावना तथा विशुद्ध प्रेम से भरपूर! और जब हमें यह भय सताने लगता है कि हम भीड़ से अलग हो जाएंगे तो हम अपने मूल स्वभाव को भूलते हुए, अपने आसपास की दुनिया की मान्यताओं, मूल्यों तथा व्यवहारों को अपनाने लगते हैं। परंतु हमारे आसपास के जगत की घृणा को तो देखो। संसार अपने तौर-तरीके भूल गया और इतनी दुखद अवस्था में है, जितना कि आज तक कभी नहीं रहा। आजकल ग्रह पर कितनी घृणा तथा भय का बोलबाला है।" जूलियन ने उदासी के साथ कहा, "भीड़ से परे चलने और अपने मूल स्वभाव को पाने के लिए असीम शक्ति की आवश्यकता होती है। परंतु यही तो नेतृत्व है – भीड़ से परे हटो और जो भी हो, उसके प्रति सच्चे बने रहो। तुम्हें भंडारघरों में हीरे, पंक्तियों में चंदन वृक्ष, झुंडों में शेर तथा लोगों के रेवड़ में संत नहीं मिल सकते।" रहस्यवादी कबीर ने कहा है।

"कोई झूठ से भरा जीवन जीते हुए, अपने-आप को ही धोखा क्यों देना चाहेगा?"

"अच्छा सवाल है। पहले तो मैं बताना चाहूंगा कि जब तुम सही मायनों में खुद को छलते हो, तो तुम्हारे भीतर कोई जानता है कि तुम क्या कर रहे हो? हम सबके भीतर एक साक्षी उपस्थित होता है, हमारी अंतरात्मा, जो यह जानती है कि हम क्या कर रहे हैं। यह अंतरात्मा साक्षी बनती है, इसे पता होता है कि हम अपना जीवन सही तरीके से नहीं जी रहे। जब हम किसी से धोखा करते हैं, झूठ बोलते हैं या स्वार्थी भाव से पेश आते हैं तो साक्षी उसे देखती

है। जब हम अपने जीवन के साथ छोटा दांव खेलते हुए, इसका अपमान करते हैं ओर अपने भीतर निवेश की गई अद्‌भुत संभावना को नकार कर जीते हैं तो साक्षी सब देखती है। साक्षी को पता चल जाता है कि हम संसार को भरपूर प्रेम नहीं दे पा रहे। अपने प्रति किया गया सारा विश्वासघात हमें एक धीमी और दर्दनाक मौत की ओर ले जाता है। साक्षी विश्वास नहीं कर पाती कि हम अपने साथ क्या कर रहे हैं। यह सहन नही कर पाती कि हम अपनी ही मानवता के प्रति कितना बड़ा अपराध कर रहे हैं। तो यह अपनी ओर से द्वार बंद करने लगती है। हम जैसे लोग, अपना आत्म-सम्मान खोने लगते हैं। हमारा स्वाभिमान चूर-चूर होने लगता है। हम अप्रसन्न, क्रोधित व कुढ़ा हुआ अनुभव करते हैं। भौतिक स्तर पर ऊर्जा व जीवंतता का अभाव होने से हम रोगी भी हो सकते हैं। हम सभी अपने साथ ऐसा करते हैं परंतु यह सब अवचेतन स्तर पर होता है। हम स्वयं इसी झूठ के साथ जीते हैं कि हमें क्या होना चाहिए और हमें कैसे जीना चाहिए। और यह अंत में हमें मार देता है। और फिर अपनी मृत्युशैय्या पर जा कर, अंतत: हम समझ पाते हैं कि हम वैसा जीवन नहीं जी सके, जैसा जीवन जीने के लिए हमें बनाया गया था। परंतु तब तक बहुत देर हो चुकी होती है।"

"पर कोई अपने साथ ऐसा क्यों करना चाहेगा?" मैंने जोर दिया।

"क्योंकि हम इससे बेहतर कुछ नहीं जानते। यह सब तभी आरंभ हो जाता है, जब हम नवजात होते हैं। और उस समय हम अपने माता-पिता से सीखना चाहते हैं कि यह संसार कैसे काम करता है। हम उनके स्नेह के भूखे होते हैं। और हम वह सब करते हैं, जिससे उनकी तरह दिख सकें, हम उम्मीद करते हैं कि अगर हम उनकी तरह सोचेंगे, महसूस करेंगे और काम करेंगे तो हमें उनकी सराहना मिलेगी। दुर्भाग्यवश, ऐसा करने पर हम अपने सच्चे अस्तित्व से दूर होते चले जाते हैं।"

"आत्म-विश्वासघात।" मैंने कहा।

"बिल्कुल ठीक! तो यदि अपने सच्चे अस्तित्व को जागरूक करना है तो एक यात्रा करनी होगी – इस यात्रा में तुम जहां हो, जैसी अवस्था में हो; वहां से अपनी नवजात अवस्था तक लौटना होगा। यह अपने घर लौटने, अपने मूल स्वभाव तक लौटने की यात्रा है। हमारे पास पहले से वह सब है, जिसके लिए हम सपना देखते आए हैं। बस हम अपनी राह में इसे भूल गए थे और तभी मैं मानता हूं कि आत्म-सुधार की सारी अवधारणा ही बकवास है। इस ग्रह पर एक भी व्यक्ति ऐसा नहीं है, जिसे सुधार की आवश्यकता है। कोई भी व्यक्ति इतना सुधार नहीं कर सकता कि वह संपूर्ण हो सके और यदि हम ऐसा करते हैं तो हमारे पास अपराधबोध के सिवा कुछ हाथ नहीं आता कि हम पर्याप्त नहीं पा सके। **हर मनुष्य का कर्तव्य यह नहीं कि वह आत्म-सुधार करे, उसका कर्तव्य बनता है कि वह अपना स्मरण करे।** अपने-आप को याद करते हुए, आप अपनी उस अवस्था तक जा सकते हैं, जब आप एक नवजात थे और भय से भरे हुए जगत में कदम रखा था, एक ऐसा जगत जो हमें इसी प्रक्रिया में दूषित कर देता है।"

"इसी दूषित करने की प्रक्रिया में हम सभी एक भ्रम के साथ जीने लगते हैं। जीवन के

सत्य तथा मनुष्य के बोध के बीच एक संदर्भ आ जाता है। यह निजी संदर्भ उन सभी झूठों के मेल से बनता है, जिन्हें हमें सिखाया गया होता है। हम जिस संसार को देखते हैं, यदि हम जीवन को पहले चरण पर ही देखते रहे और जीते रहे, तो यह वास्तव में एक कल्पना से अधिक कुछ भी नहीं है। यह वास्तव में एक झूठ है। हम अपने आसपास जो भी देख रहे हैं, वह उन सभी तरीकों का मिला-जुला रूप है, जिनके लिए हमें आसपास के लोगों द्वारा प्रशिक्षित किया गया है।"

"मानो हम प्रयोगशाला के चूहों का एक दल हैं, जिन्हें इसी तरह तैयार कर दिया गया है कि वे एक टुकड़ा चीज़ के लोभ में निरंतर ट्रेडमिल पर दौड़ते रहें।" मैंने कहा।

"मैं तुम्हारी बात से सहमत हूं। याद रखो, यह संसार वैसा नहीं, जैसा हम इसे देखते हैं परंतु वैसा है, जैसे कि हम हैं। हम इस संसार को अपने निजी परिप्रेक्ष्य के साथ देखते हैं, जिसमें वे सारे भय, धारणाएं, मान्यताएं तथा मूल्य शामिल हैं, जिन्हें हमने अपने माता-पिता व अध्यापकों से सीखा ताकि इस भीड़ के अनुकूल बन सकें, इसका स्नेह पा सकें।"

"जूलियन! यह तो वास्तव में कमाल है। दरअसल यकीन ही नहीं आता। मैंने तो कभी एक पल के लिए भी अपने जीवन में नहीं सोचा था कि मैं जिस संसार को देख रहा हूं, हो सकता है कि वह वास्तविक घटनाओं के सत्य को प्रतिबिंबित न करता हो।"

"कुछ समय पहले, एक कोचिंग सत्र के दौरान, मैं एक छात्र के पास कक्षा में बैठा, सबक दे रहा था। उसने मुझसे एक प्रश्न पूछा और मैंने बहुत ही आराम से उसका उत्तर दिया। अचानक उसकी शारीरिक भाव-भंगिमा बदली और उसे गुस्सा आ गया। जब मैंने उससे ऐसे व्यवहार का कारण पूछा तो उसने कहा, उसे लगा था कि मैंने उसे अस्वीकृत कर दिया है। जबकि सच्चाई यह है कि मैंने ऐसा कुछ नहीं किया था। जब हम उसकी बेचैनी के कारण की गहराई में गए तो उसके जीवन में एक गहरा मोड़ दिखाई दिया। उसके पिता बहुत ही कठोर व्यक्ति थे और प्राय: मेरे छात्र को यह महसूस करवाते थे कि वे उसे अस्वीकृत करते हैं। उसके भीतर एक विश्वास जम गया था, जिसके अनुसार उसे लगता था कि लोग उसे अस्वीकृत करते हैं और यह प्राचीन ढांचा बार-बार उसके जीवन में दोहराया जाता था। मैं जानता था कि यह मेरे छात्र के लिए कितना महत्व रखता था। याद रखो, कि सजगता के बाद चुनाव आता है और चुनाव के बाद बदलाव आता है।" जूलियन ने कहा और कार को गुफाओं की ओर जाने वाली सड़क पर मोड़ दिया।

"इसका क्या अर्थ हुआ?"

"जब तुम जीवन में एक बार जान जाते हो कि यह तुम्हारे लिए उचित नहीं है, तब तुम नए चुनाव कर सकते हो। और ये नए चुनाव ही सकारात्मक बदलावों की ओर ले जाते हैं। मिसाल के लिए, तुम्हारी मानसिकता अभाव से जुड़ी है। तुम सोचते हो कि तुम इस संसार के सबसे उदार व्यक्ति हो परंतु यह एक इंकार से अधिक कुछ नहीं है। तुम देखना ही नहीं चाहते कि सतह पर वास्तव में तुम्हारे साथ क्या घट रहा है। वास्तविकता यही है कि तुम स्वार्थी हो

और हर वस्तु को अपने स्वार्थ के लिए रखना चाहते हो। तुम्हारे आसपास हर व्यक्ति तुम्हारे स्वार्थी स्वभाव को देखता है। वे बता सकते हैं कि आप इस संसार को एक प्रचुरता से भरे स्थान के रूप में नहीं देखते इसलिए सब कुछ संग्रह कर लेना चाहते हैं। अगर वे जीवन में व्यक्तिगत विकास के किसी उच्च स्तर तक हों, तो वे जान सकते हैं कि आप इस तरह इसलिए पेश आ रहे हैं क्योंकि आप किसी स्तर पर भय के साए में जी रहे हैं। तुम्हें भय है कि जो तुम्हारे पास है, वह कहीं खो न जाए, कोई तुम्हारा अनुचित लाभ न उठा ले, कहीं तुम असफल न हो जाओ – बाकी गहरे मसले यहां मायने नहीं रखते। पर वे देख सकते हैं कि कोई भय तुम्हारे व्यवहार को संचालित कर रहा है और यह तुम्हें बचपन में मिली किसी ठेस का नतीजा है – जिस तरह सभी इंसानों को इस ग्रहों पर ऐसे भयों का सामना करना होता है। अब तुम अपने–आप को स्नेही व उदार मानते हो। मान लेते हैं कि तुम साहस दिखाते हुए, लोगों से पूरी ईमानदारी से उनकी राय भी मांगने लगते हो कि तुम एक मनुष्य के रूप में सुधार कैसे ला सकते हो। और मान लेते हैं कि आपके प्रियजन इतने साहसी हैं कि वे सच बोल सकते हैं। वे आपको वह सब बताते हैं, जो वे अभी तक देखते आए हैं; आप अपने नज़रिए से देखते हैं और यही मान कर चलते आए हैं कि आप बहुत कुछ देते हैं। यदि आप उनकी बात सुनेंगे तो इससे आपके भीतर एक नई सजगता जन्म लेगी। जो साए अवचेतन जगत में थे, वे चेतन भाव से सामने होंगे और आप उन्हें देख सकेंगे। व्यक्तिगत महानता पानी हो तो आत्म–निरीक्षण को पहला कदम कह सकते हैं। तुम जांच–पड़ताल कर सकते हो कि यह विश्वास तंत्र कहां से आया और ये भय कहां से उपजने आरंभ हुए। यह नई सजगता, चाहने पर तुम्हें नए चुनावों की ओर ले जा सकती है। तुम पहले से कहीं उदार बनते हुए, अपने स्वार्थी तौर–तरीकों को छोड़ सकते हो। ये नए चुनाव तुम्हारी सोच, भावनाओं और कार्यो में नए बदलावों को इंगित करेंगे। और तब तुम्हारा जीवन भी बदल जाएगा। कितनी अच्छी छोटी सी प्रक्रिया है, है न?"

"जूलियन! बहुत ही रोचक! मैं जानता हूं कि हम गुफाओं तक आ पहुंचे हैं। वाह, यह तो संसार के सुंदर भागों में से है।" मैंने पीले फूलों से भरे हरे–भरे खेतों को देखते हुए कहा। सड़क के किनारे ही एक झरना बह रहा था और वहीं से बलूत के वृक्षों की एक पंक्ति जा रही थी। "बाकी चरण क्या हैं? पहले चरण के अनुसार लोग अपने जीवन के सत्यों के प्रति सजग नहीं होते और यह तक नहीं जानते कि यह संसार कैसे काम करता है। वे इस तथ्य से अनजान होते हैं कि वे इस जगत में अपने ही भय, झूठी मान्यताओं, धारणाओं व पूर्वाग्रहों को मूर्त रूप दे रहे हैं। उन्हें यथार्थ का तिरछा रूप ही देखने को मिल पाता है। मुझे तो लगता है कि अधिकतर लोग इसी चरण में हैं इसलिए तो संसार में इतनी अस्त–व्यस्तता है। हम अपने ही मूल स्वभाव से दूर हो गए हैं। हम अपने ही भव्य रूप के झूठे अंशों के साथ बड़े हुए हैं। इसी आत्म–विश्वासघात ने हमें चारों ओर से बंद कर दिया है और आत्म–जुगुप्सा को जन्म दिया है। ज्यों–ज्यों हम अपने स्नेही, निर्भीक व असाधारण रूप को त्यागते हुए, भीड़ के अनुरूप बने सांचों में ढालते जाते हैं, हम बहुत ही गहराई में, अवचेतन रूप से , अपने–आप से घृणा करने लगते हैं। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि आज कितने लोग दुखी व क्रोधित

हैं।"

जूलियन हॉर्न बजाने लगे। उन्होंने एक हाथ से स्टीयरिंग संभाला और दूसरी मुठ्ठी को हवा में लहराते हुए, कार में बज रहे गीत को, जोर–जोर से गाने लगे। मैं जिस तत्परता से उनकी विवेक बुद्धि व प्रक्रियाओं को समझ रहा था, उसे देख वे प्रसन्न हो उठे थे। मैं जानता था कि मैं उनका शिष्य बन कर प्रसन्न था और उन्हें भी मेरा कोच बन कर उतना ही अच्छा लग रहा था। मैं जूलियन से जो भी सीख रहा था, वह वास्तव में अनमोल था। मैं जो भी सुन रहा था, उसे यदि और अधिक लोगों को सुनने का अवसर मिल पाता तो यह संसार वाकई एक अलग दुनिया बन सकता था। यह कहीं अधिक बेहतर न्याय, प्रामाणिकता व प्रेम से परिपूर्ण स्थल होता। मैंने संकल्प लिया था कि मैं न केवल प्राप्त की गई सूचना को पूरी तरह से अपनाऊंगा बल्कि उसे सबके बीच भी बांटूंगा। इन दिनों मेरी नकारात्मकता पर संकल्पबुद्धि का साम्राज्य हो गया था। सच में, जिस तरह कोई शुभ समाचार को प्रेषित करता है। मैं उसी तरह सबको जूलियन का संदेश दूंगा। मैं एक सुसमाचार लेखक व प्रेषक बनूंगा।

जूलियन ने घास से भरी ढलान पर गाड़ी लगाई और हम गुफाओं की ओर जाने वाले मार्ग की ओर चल दिए। उन्होंने अपने सैंडिल उतारे व नंगे पांव चलने लगे। जूलियन अपने आसपास बिखरे कुदरत के नज़ारों को देखते हुए, एक गीत गुनगुनाते रहे। जब हम गुफाओं के पास पहुंचे तो वे बोलने लगे।

"सातों अवस्थाओं में से, सबसे पहली है – एक झूठ के साथ जीना। तुम जानते हो कि सही सवाल पूछने से ही सही जवाब मिलता है। प्रश्नों के कारण ही आत्म–सजगता प्रोत्साहित होती है। दरअसल, इसके साथ ही एक और अच्छा बिंदु सामने आ गया: तुम यह पूछ सकते हो कि 'तुम अपने जीवन में किन बातों को सहन नहीं करोगे?' खैर, मैं यह तो जानता हूं कि तुम अब अपने– आप को धोखा नहीं दोगे और ऐसा जीवन नहीं जीओगे, जो तुम्हारा नहीं है। इस प्रक्रिया की दूसरी अवस्था कहलाती है – चुनावबिंदु। जब तुम यह जान जाते हो कि तुम भीड़ के पीछे चल रहे हो और एक अप्रामाणिक जीवन जी रहे हो तो तुम्हारे सामने एक चुनाव आता है।"

यह वही चुनाव है, जो मैट्रिक्स में भी आया था, जब निओ से कहा जाता है कि उसे नीली या लाल गोली में से, किसी एक को निगलना होगा, है न? "जूलियन! मैं समझने लगा हूं कि वह फिल्म वास्वत में कितनी अर्थवान थी। मुझे इसे दोबारा देखना है। मैं वादा करता हूं।"

"गुड आइडिया, और तुम ठीक कह रहे हो। जब तुम भीड़ के उस भ्रम को पहचान लेते हो, जो तुम्हें आज तक वास्तविक कह कर, दिखाया जाता रहा था, तो तुम्हारे पास एक चुनाव होगा। उसी तरह जीते रहो, जैसे कि अब तक जीते आए थे और अपने–आप को अप्रसन्नता और सामान्य कोटि के जीवन के हवाले कर दो या लाल गोली चुन लो यानी अपने लिए बने विशाल जीवन की ओर कदम उठा दो। डेविड व्हाईट के इन शब्दों को कभी मत

भूलो: 'आत्मा किसी दूसरे के जीवन में सफल होने की बजाए अपने जीवन में असफल होना चाहेगी।' अपने जीवन को साहसपूर्वक जीने से बढ़ कर, कुछ भी अधिक महत्वपूर्ण हो ही नहीं सकता। तीसरा चरण है – आश्चर्य व संभावना की सजगता। इस चरण में तुम एक नई दृष्टी से दुनिया को देखने लगते हो। आप इतना अधिक सत्य देखने लगते हैं, जितना आपने जीवन में कभी नहीं देखा होता। आप समझने लगते हैं कि यह संसार आपकी जीत चाहता है और यह स्थान प्रचुरता, अवसर व भव्यता से परिपूर्ण है। आप यह भी देखने लगते हैं कि सभी लोग वास्तव में अच्छे ही होते हैं और वे अपने जीवन में मिली ठेसों के कारण बुरे काम करने लगते हैं। मैं यह नहीं कह रहा कि हमारे पास चुनाव नहीं होते – निःसंदेह सबके पास चुनाव होते हैं, भले ही कितने भी कष्ट क्यों न आएं; व्यक्ति दयालु व भला बना रहने का चुनाव कर सकता है। मैं तो केवल यह सलाह दे रहा हूं कि इस चरण में, तुम यह जानने लगते हो कि कौन से लोग अपने व्यवहार के कारण ऐसे हैं, जो कि बहुत ही दुखद व नीच भी हो सकता है। कोई भी प्रसन्न व मुक्त हृदय व्यक्ति, किसी दूसरे व्यक्ति के दिल को ठेस दे ही नहीं सकता। आत्म–जागरण की इस प्रक्रिया के मोड़ पर, इस अवस्था में आप अपने अस्तित्व के लिए भी सजग हो उठते हैं।आप आत्म–विश्वासघात को कहीं स्पष्टता से देखने लगते हैं और जान जाते हैं कि आपका वास्तविक मूल क्या है। यह अपने घर लौटने की अद्‌भुत व प्रेरणादायक यात्रा है।"

"चौथा चरण क्या है?"

जब तुम एक झूठ के साथ जीने और उस चुनावबिंदु से आगे आ जाते हो, जो तुम्हारे भीतर छिपे श्रेष्ठ को बाहर लाने में सहायक हो सकता है तो तुम भ्रम के पीछे छिपे जगत के लिए सजग होने लगते हो – एक ऐसा जगत जो असाधारण आश्चर्य व असीमित संभावनाओं से भरा है – तब तुम चौथे चरण में आ जाते हो, 'गुरूओं से प्राप्त निर्देश'। इसी चरण में आने के बाद जिज्ञासु प्राय: विविध गुरूओं की तलाश करता है और शिक्षण के लिए विविध पथ तलाशता है। वह अपने लिए कुछ उत्तर चाहता है, अपने लिए आरोग्य पाना चाहता है। यह समय बहुत ही भ्रामक हो सकता है क्योंकि थोड़े ही समय में जिज्ञासु बहुत सारी जानकारी से घिर जाता है, उसके लिए सारी जानकारी को पचाना भारी हो जाता है। पर कृपया भूलें नहीं कि कुछ समय के बाद भ्रम का कोहरा छंटता है और सब कुछ साफ दिखने लगता है और ऐसा क्षण भी आता है जब आपकी सारी नई शिक्षा आपकी समझ के साथ तालमेल बिठा लेती है। यही वास्तविक विवेक बुद्धि का प्रारंभ है। इसके बाद पांचवां चरण आता है: 'रूपांतरण व पुनर्जन्म', यह बहुत ही चुनौतीपूर्ण अवस्था हो सकती है। परंतु यही सबसे अधिक अविस्मरणीय भी है। इसी चरण में आपका स्वअस्तित्व नियमित रूप से अपने–आप को प्रस्तुत करने लगता है और आपका संसार मानो बदलने लगता है। सच है कि बदलाव हमेशा सरल नहीं होता पर इस प्रक्रिया के मोड़ पर आप जो लाभ पाएंगे, वे आजीवन आपके साथ रहेंगे। छठा चरण है: 'योग्यता की परीक्षा'। इससे पूर्व कि साधक को उसका खज़ाना सौंपा जाए, उसे एक परीक्षा देनी होगी। इस परीक्षा का दोहरा उद्‌देश्य होता है: पहले तो यह देखा जाता है कि उसने राह में मिले वे सारे सबक याद कर लिए, जो उसके लिए दिए गए थे

और दूसरे यह देखना कि वह अपना पुरस्कार पाने के लिए कितना लालायित है। अक्सर इसी अवस्था में आ कर लोग हार मान लेते हैं। बहुत से लोग, इसी मोड़ से आ कर लौट जाते हैं। यह कितने खेद की बात है, जब वे ज़रा से परिश्रम के बाद अपना सबसे महानतम उपहार पा सकते थे, वे अपना मुंह मोड़ लेते हैं। और अंत में सातवां चरण आता है: 'महान आत्म–जागरण' इस बिंदु पर बहुत ही कम लोग आ पाते हैं परंतु जो भी आते हैं, वे प्रबुद्ध बन जाते हैं। तुम वही सब वस्तुएं बन जाते हो, जिनसे तुम्हारा मूल स्वभाव प्रतिबिंबित होता है। तुम अपने अस्तित्व के उस रूप तक आ जाते हो, जो तुम्हें इस संसार में आते समय सौंपा गया था। तुम निर्भीक, निर्दोष, असीम रूप से प्रज्ञावान, संभावनाओं से भरपूर तथा विशुद्ध प्रेम बन जाते हो। तब कोई साया नहीं रहता, चारों ओर प्रकाश ही प्रकाश छा जाता है। यदि तुम चाहो और समर्पित हो सको, तो उस अवस्था तक आ सकते हो परंतु वहां जाने के लिए तुम्हें अपने भीतर जीवन के प्रति लगाव से भी अधिक तड़प पैदा करनी होगी। एक बार शीला ग्राहम ने लिखा था : 'यदि तुम किसी चीज़ को दिल से चाहते हो, तो कुछ भी पा सकते हो। तुम्हारे भीतर उसे पाने की तड़प इतनी गहरी हो कि वह तुम्हारे रोम–रोम से फूटे और इस संसार को रचने वाली ऊर्जा से मिल जाए।'

"बहुत सुंदर शब्द।" मैंने तालियां बजाईं।

"और प्रबोध से बेहतर तो कोई अवस्था हो ही नहीं सकती, जिसे मनुष्य अपने लिए चाह सकता है।" जूलियन ने कहा और हम एक अंधेरी गुफा की ओर बढ़े। "अब मैं तुम्हें यह बताना चाहता हूं कि ये सातों चरण कोई जादू की गोली नहीं हैं या निजी रूपांतरण की ऐसी प्रक्रिया नहीं है, जिसे झटपट निपटाया जा सके। इसके लिए समय, धैर्य व प्रयास की आवश्यकता होगी। आने वाले सप्ताहों में, मैं तुम्हें विविध अनुभवों से ले जाते हुए, प्रक्रिया के सातवें चरण तक ले जाऊंगा। मैं तुम्हारा कोच हूं और मेरा कर्तव्य बनता है कि तुम्हें यह प्रक्रिया सिखाऊं परंतु यह तुम पर निर्भर करेगा कि आने वाले सप्ताह, माह या फिर मेरे जाने के बाद, तुम इसे अपने जीवन में कैसे उतारते हो।"

मैंने अपने भीतर एक हल्की सी उदासी को अनुभव किया। जूलियन ने कल रात ही मेरे जीवन में कदम रखा था और अब वे जाने की बातें भी करने लगे थे। इतने थोड़े से समय में ही उन्होंने मुझे महान प्रेरणा से भर दिया था और इतनी अच्छी विवेक बुद्धि प्रदान की थी। मैं जानता था कि मैंने अगर उनके द्वारा दिए गए इस ज्ञान के थोड़े से अंश को भी जीवन में उतारा, तो मेरा पूरा जीवन एक नया ही रूख लेने वाला था।

जूलियन ने एक बार फिर मेरी भावनाओं को भांप लिया।

"हे दोस्त! दिल छोटा मत करो। मैं तुम्हारे पास ही हूं और हमें अभी मिल कर बहुत बड़े काम करने हैं। और जब तक मेरे साथ तुम्हारा काम समाप्त होगा, तुम्हें मेरी आवश्यकता ही नहीं होगी। तुम अपने–आप ही जीवन का भरपूर आनंद पाना सीख चुके होगे।" यह कह कर जूलियन दिल खोल कर हंसे।

फिर वे मेरा हाथ थाम कर एक अंधेरी गुफा में ले गए। एक मिनट तक चलने के बाद, उन्होंने मुझे जमीन पर बैठने को कहा और बोले कि मुझे अपने सामने दिख रही पथरीली दीवार को ताकना होगा। “डार! केवल उसी दीवार पर पूरी तरह से केंद्रित रहो। अपनी आंखें वहां से मत हटाना। वादा?”

“मैं वादा करता हूं।” मैंने कहा।

अचानक ही गुफा में रोशनी फैल गई। मुझे कुछ अंदाजा नहीं था कि मेरे पीछे क्या चल रहा था पर मैं जूलियन को अपने आसपास कोई गतिविधि करते हुए सुन सकता था। जब मैं दीवार को ताक रहा था तो मेरे आगे तरह–तरह की आकृतियां नाच उठीं।

मैं करीबन दस मिनट तक गुफा की दीवार पर नाचती आकृतियों को ताकता रहा और उसके बाद जूलियन का स्वर सुनाई दिया।?

“तुम गुफा की दीवार पर जो भी देख रहे हो, वह भ्रम मात्र है। यह एक झूठ है और अब सच को देखने का समय आ गया है। क्या तुम तैयार हो?”

“हां, मैं तैयार हूं।” मैंने अपनी आंखें आगे की ओर रखते हुए जवाब दिया।

“तो पीछे मुड़ कर देखो कि असलियत में हो क्या रहा है।”

मैं मुड़ा तो पाया कि जूलियन ने छोटी सी आग जला रखी थी। उनके हाथ में पत्थर के छोटे–छोटे टुकड़े भी थे, जिन्हें वे बार–बार आग के सामने रख रहे थे। उनके कारण ही मेरे सामने की दीवार पर कुछ विचित्र आकृतियां दिखाई दे रही थी।

“डार! प्लेटो की रिपब्लिक पढ़ी है?” उन्होंने पूछा

“नहीं, मुझे कभी मौका नहीं मिला।”

“अच्छी किताबें पढ़ना बहुत मायने रखता है। वरना बाद में पता चलता है कि अब तुम्हारे पास समय ही नहीं रहा। खैर, इसी किताब में लिखा है कि एक बार गुफा में कुछ लोगों का एक दल बैठा था, जैसे कि आज तुम बैठे हो। वे भी दीवार पर आ रही आकृतियों को देख रहे थे पर खेद की बात यह है कि उन्होंने आजीवन उन आकृतियों को सच मान लिया; उन्हें कभी एहसास नहीं हो पाया कि वे एक भ्रम के साथ जी रहे थे। एक दिन, भीड़ में से एक इंसान ने अलग होने का साहस दिखाया। वह एक जिज्ञासु बना और उसने सच को तलाश लिया। उसने खुद को धरती से अलग किया और भीड़ को छोड़ कर, पूरे साहस के साथ यह देखने निकल पड़ा कि उसके पीछे क्या था। और उसने जो देखा, उसने उसे हिला कर रख दिया।”

“उसने वहां आग जलते हुए देखी होगी, मैं दावे से कह सकता हुं। और उसने देखा कि वे लोग आग के आगे रखी वस्तुओं की परछाईयों को ही गुफा की दीवार पर देखते आए थे। उसने उस झूठ पर विश्वास करना छोड़ दिया, जिस पर वे बरसों से विश्वास करते आए थे और उसने जीवन में पहली बार सच का सामना किया।”

“बहुत अच्छे।” जूलियन ने हामी भरी। “तुमने सही अनुमान लगाया। और उसी सजगता ने उसका जीवन बदल दिया। अब बात समझ आ गई हो तो यहां से बाहर चलें। मुझे यहां बहुत अच्छा नहीं लग रहा।” उन्होंने दबी हंसी के साथ कहा। फिर जूलियन ने वह आग बुझा दी और हम अंधकारमयी गुफा से बाहर आ गए।

जूलियन मुझे एक जंगली पगडंडी से ले चले। आसपास के पेड़ों की गंध ने बचपन की उन यादों को ताज़ा कर दिया, जब मैं अपने डैड के साथ जंगल में हाईकिंग के लिए आता था। जल्दी मुझे पानी बहने का स्वर सुनाई दिया। जब हम पास पहुंचे तो एक झरना बहता दिखाई दिया और उसके ऊपर एक इंद्रधनुष जगमगा रहा था।

जूलियन ने प्रसन्नतापूर्वक कहा, “यह तो बहुत ही शुभ संकेत है। अब उस झरने के नीचे खड़े हो जाओ।” निर्देश मिला।

“क्या आप मज़ाक कर रहे हैं?”

“नहीं, मैं चाहता हूं कि तुम कुछ मिनट तक ऐसा करो। इस तरह तुम्हारी शुद्धि होगी और यह एक प्रतीक के रूप में तुम्हें याद रहेगा। झरने के नीचे खड़े कर आंखें मूंद लो और कल्पना करो कि तुम्हारी सीमित मान्यताएं, झूठी धारणाएं, भय व पूर्वाग्रह, सब पानी के साथ बहे चले जा रहे हैं।”

मैंने वैसा ही किया। हालांकि कुछ क्षण के लिए पानी ठंडा लगा पर फिर मेरा तन और मन दोनों ही शीतल और शांत हो गए। मैंने स्वयं को पहले से हल्का और शुद्ध पाया।

“अब तुम उस भ्रम के प्रति सचेत हो, जिसके साथ तुम अपना जीवन व्यतीत करते आए हो।” जूलियन ने कहा और मैं वहीं सूरज की धूप में अपने-आप को सुखाने लगा। अब तुम तैयार हो कि तुम अपने-आप से कोई झूठ न कहो और सच की तलाश में भीड़ का साथ छोड़ दो। स्वयं को उन जंजीरों से मुक्त करो, जिन्होंने तुम्हें धरती से बांध रखा था और इसके साथ ही अपने सबसे बड़े जीवन को पाने के लिए तैयार हो जाओ। इस तरह तुम झूठ से उबर कर, वह जीवन जी सकोगे, जो तुम्हारे लिए बना है। तुम उसे पा लोगे, जो हम सभी पाना चाहते हैं – स्वतंत्रता। अब तुम आत्म-जागरण की प्रक्रिया के पहले चरण से आगे चलने के लिए प्रस्तुत हो।

फिर जूलियन ने कहा कि मैं वहीं आलथी-पालथी लगा कर, घास पर बैठूं और आंखें मूंद लूं। “ये शब्द महान लेखक हरमन हैसे के हैं और मैं चाहता हूं डार कि तुम इन्हें कंठस्थ कर लो। आज सुबह तुमने जो सीखा, ये उसी को प्रकट करते हैं।” जूलियन ज़ोर-ज़ोर से बोलने लगे मानो सारी प्रकृति के सामने इस सच की घोषणा कर देना चाहते हों:

“अपनी बुद्धि की ओर लौटने का समय आ गया है। तुम्हें जीना और हंसना सीखना होगा। तुम्हें जीवन के अभिशापित संगीत व उसके पीछे छिपी आत्मा को सुनना सीखना होगा और उस संगीत की विकृतियों पर हंसना सीखना होगा। तो तुम यहां हो और तुमसे इससे अधिक कुछ नहीं मांगा जाएगा।!”

अध्याय 5

जिज्ञासु मनुष्य द्वारा किए जा सकने वाले एकमात्र चुनाव को तलाशता है।

मुझे यही तथ्य सर्वाधिक प्रेरित करता है कि एक मनुष्य निरंतर प्रयासों द्वारा अपने जीवन को उन्नत बना सकता है। मानो किसी तस्वीर में रंग भरने हों, कोई मूर्ति गढ़नी हो या कुछ सुंदर वस्तुएं तैयार करनी हों। जिस परिवेश और माध्यम से हम देखते हैं, उसे नया रूप देना व गढ़ना, कहीं अधिक भव्यता प्रदान करेगा। हम नैतिक रूप से ऐसा कर सकते हैं।

– हेनरी डेविड थोरियू

हम उस निर्जन वन प्रांतर से बाहर आ रहे हैं, जहां मैंने आत्म–जागरण की प्रक्रिया का पहला चरण सीखा। जूलियन एक बार फिर से लाल फरारी को दौड़ा रहे थे। प्रत्येक जिज्ञासु चेतना व आत्मानुभूति के पथ पर चलते हुए अंतत: एक ऐसे स्थान पर आ जाता है, जहां उसे एक चुनाव करने का अवसर दिया जाएगा जो नाटकीय रूप से उसके जीवन को सदा के लिए बदल देगा। कभी–कभी यह रूपांतरकारी बिंदु गहन पीड़ा के बीच दिया जाता है जैसे प्रियजन से वियोग, कोई रोग, वित्तीय संकट या दुखद दुर्घटना। कई बार ये ऐसे भी उत्पन्न हो जाता है क्योंकि जिज्ञासु अगले स्तर तक जाने के लिए तैयार है और उसने इस संभावना से जुड़ी सारी आंतरिक कार्यवाही पूरी कर ली है। जूलियन ने एक गहरा मोड़ लिया और फरारी हाई वे पर आ गई। अगर तुमने पूरे दिल से पहले चरण को पूरा किया है और यह जान गए हो कि तुम आज तक किसी झूठ के साथ जीते आ रहे थे और अपने–आप को ही धोखा देते आ रहे थे तो जान लो कि अब तुम सच के जिज्ञासु हो और अपने बृहत्तर जीवन की तलाश में हो –इस तरह तुम दूसरे चरण तक आ गए हो: जिसे चुनावबिंदु कहते हैं।

“जूलियन! यहां किसी व्यक्ति का चुनाव ही उसकी नियति को तय करेगा, ऐसा ही है न? एक निर्णय और आप जीवन के सबसे सहज व सरल पथ पर होंगे और एक गलत कदम,

ऊबड़-खाबड़ मार्ग पर ले जाने के लिए पर्याप्त होगा।"

"हां डार, सही कहा। इस चुनावबिंदु पर तुम्हें एक सच्चा निर्णय लेना होगा, या तो अपने प्रामाणिक जीवन की ओर पूरे आत्म-विश्वास से कदम बढ़ाना है या फिर उसी संसार में लौटना है, जहां आप सोते हुए अपना जीवन बिता रहे थे। **अंतत: आपको चुनाव का अवसर दिया जा रहा है कि आप अपने लिए एक बृहत्तर जीवन की चाह रखें या उसी भीड़ का हिस्सा बन कर जीते रहें, जहां आप अवचेतन रूप से उन्हीं लोगों के साथ चल रहे थे, जो एक-एक कर तीखी चट्टान से लुढ़कने के लिए अभिशप्त हैं। मैं तुम्हें निजी अनुभव से एक बात बताना चाहता हूं: यदि तुमने इसी समय सही निर्णय न लिया तो तुम अपने लिए पश्चाताप से भरा एक ऐसा जीवन चुन लोगे, जहां तुम्हें अपने दिल के टूटे टुकड़ों के सिवा कुछ हाथ नहीं आएगा। जब आपको यह एहसास होगा कि आपने अपने सामने आई असीम संभावना को स्वयं ही चूर-चूर कर दिया और उस पुकार को अनसुना कर दिया तो नि:संदेह आप बुरी तरह से टूट कर रह जाएंगे। यदि आप अपने जीवन की उस पुकार को इंकार कर रहे हैं तो जान लें कि आप उस महान शक्ति की अवमानना कर रहे हैं, जिसने आपको रचा है।"** जूलियन ने बहुत ही गहनता से कहा। अचानक ही उन्होंने कार को एक सामुदायिक अस्पताल के सामने रोक दिया, जो कि शहर के एक उपप्रांत में स्थित था।

"जूलियन! हम यहां क्यों जा रहे हैं?" मैंने थोड़ी उलझन के साथ पूछा। जूलियन की कोचिंग तो वाकई आश्चर्यो व रहस्यों से भरी थी।

"तुम अभी जान लोगे।" मेरे कोच का जवाब आया।

जब हम अस्पताल के मेन रिसेप्शन एरिया में आए तो दो आकर्षक नर्सें जूलियन को अभिवादन करने के लिए भाग कर आगे आ गईं। "हे, हनी! " उनमें से एक ने चापलूसी भरे सुर में कहा, "तुम हमसे मिलने आए हो, बहुत अच्छा लगा।" दूसरी ने भी हल्का सा चिढ़ाते हुए दांत निपोरे, "हाय जूलियन! तो आपने हमसे मिलने का फैसला ले ही लिया।" वे दोनों खिलखिलाने लगीं और मेरे कोच को प्यार से आंलिगन में बांध लिया। "सच कहूं जूलियन! तुम्हें यहां आता देख बहुत अच्छा लगता है। जाओ, वे लोग तुम्हारी ही बाट देख रहे हैं।" उनमें से एक ने कहा,

"लेडीज़! मैं अभी आया। क्या आप मेरे दोस्त का ध्यान रख सकती हैं?"

जब जूलियन अपना काम करने चल दिए तो मैंने जानना चाहा कि भला ये माजरा क्या था। मुझे अपने लिए कुछ सवालों के जवाब चाहिए थे।

"आप दोनों जूलियन को कैसे जानती हैं?" मैंने पूछा

"ओह! वे तो हर रोज़ यहां आते हैं। वे हमारे सबसे बेहतर स्वयंसेवक हैं। सभी जूलियन को बहुत चाहते हैं। वे कुछ सप्ताह पहले, एक दिन यहां आए और कहा कि वे कोई मदद करना चाहते थे। उन्होंने कहा कि उन्हें असाध्य रोग के रोगियों में सेवा का अवसर दिया

जाए। मैं आज भी याद कर सकती हूं, उन्होंने कहा था : 'मैं लोगों की सेवा करने व उनके जीवन का मोल बढ़ाने के लिए अपनी सेवाएं देना चाहता हूं।' आप जानते हैं कि जूलियन एक आदर्शवादी हैं।"

"मैं जानता हूं।" मैंने हामी भरी।

जूलियन अपने साथ फूलों का बड़ा सा गुच्छा लिए लौट आए। "चलो डार! मैं तुम्हें कुछ खास लोगों के दल से मिलवाना चाहता हूं।"

हम एक लंबे गलियारे से होते हुए आगे बढ़े, जिसकी दीवारें पूरी तरह से सफेद थीं। सारी जगह से अमोनिया व कॉफी की गंध आ रही थी। गलियारे के अंत में एक प्रतीक्षालय था। जब हम वहां गए तो वहां बैठे छह लोग एक साथ खड़े हो गए। उनके चेहरों की मुस्कान बता रही थी कि उन्हें जूलियन को देख कर कितना अच्छा लगा। उन्होंने जूलियन को बांहों में बांध लिया और साफ देखा जा सकता था कि जूलियन को भी उनसे बहुत स्नेह था। मुझे जूलियन की आंखों में नमी दिखाई दी और उन्होंने मुझे ऐसा देखते हुए भांप लिया था।

वे मेरे कान में बोले, "एक इंसान के लिए रोना या भावुक होना कोई बुरी बात नहीं है। यह कभी मत भूलना। जो व्यक्ति अपनी भावनाओं से दूर हो जाता है, उसमें संवेदनशीलता, करूणा व समानुभूति का अभाव होता है। ऐसे ही लोग युद्ध छेड़ते हैं, अपराध करते हैं और लोगों के बीच घृणा फैलाते हैं। डार! अपनी भावनाओं को नज़रंदाज मत करो। वे तुम्हारे जैसे प्रामाणिक व्यक्ति के जीवन का अनिवार्य अंश होनी चाहिए।"

अब जूलियन मेरे सामने खड़े लोगों से बोले, "हैलो दोस्तों! मेरे दोस्त डार से मिलिए।" सबने बहुत ही गर्मजोशी के साथ मुझसे हाथ मिलाया। मुझे वहीं बिठा लिया गया।

"जूलियन हम तुम्हारी ही प्रतीक्षा में थे। क्या तुमने इन्हीं की बात की थी। क्या मुझे इन्हें ही सब कुछ बताना है?" एक अस्सी साल के दिखने वाले बूढ़े ने कहा। उन्होंने चैक सूट के साथ सफेद कमीज पहनी थी और एक बो–टाई लगाई हुई थी। उनके पतले सफेद बाल, ढंग से पीछे की ओर संवरे हुए थे।

"हां पीटर, ये वही हैं। जब मैं यहां आया था तो आपने अपनी जो कहानी मुझे सुनाई थी, वही आप इन्हें भी क्यों नहीं बताते। आपके शब्द बहुत ताकतवर थे और मैं चाहता हूं कि ये आपके मुंह से ही उन्हें सुनें।"

उस व्यक्ति ने कहा, "मैंने आपके दोस्त जूलियन को बताया था कि आज जब मैं यहां अपने जीवन के कुछ आखिरी दिन जी रहा हूं तो मेरे लिए सबसे बड़ा पछतावा यही रहा है कि मैं अपने भीतर छिपे संगीत को गा नहीं सका। मैं मन ही मन जानता हूं कि मेरे भीतर एक गीत था, जिसे प्रकट करना बहुत अनिवार्य था पर मैं ऐसा नहीं कर सका। मेरे भीतर एक सृजनशील अभियान छिपा था, जो बाहर आना चाहता था। प्रकट होना चाहता था। मेरा मतलब है कि हम सभी को जीवन जीने के लिए कोई न कोई विशेष हुनर दिया जाता है।

हममें से प्रत्येक एक विशेष जीव है जो चमत्कारिक क्षमताओं व अविश्वसनीय योग्यताओं का धनी है।"

"पीटर यहां आने से पूर्व एक प्रेरक वक्ता थे।" उनमें से एक महिला ने मज़ाक में कहा। सभी एक साथ हंसने लगे। कहा जाता है कि हंसी से इंसानों के दिलों के बीच की दूरी मिटाई जा सकती है। जब हम एक साथ हंसते हैं तो सारी सामाजिक औपचारिकताएं कहीं ढह जाती हैं और हम सच्चे इंसान के रूप में जुड़ाव महसूस करते हैं। यह वास्तव में एक बहुत सुंदर चीज़ है। उसी क्षण में, मुझे जूलियन की कही एक बात का मोल समझ आया। जूलियन मुझे बता चुके थे: हम सभी एक ही परिवार के भाई और बहन हैं। हम सभी अदृश्य स्तर पर जुड़ाव रखते हैं और मेरे भीतर अंतरात्मा से स्वर उठ रहा था कि अगर मैं इस सच का अपमान करता हूं तो मुझे जान लेना चाहिए कि मैं भीड़ के साथ भ्रम में जी रहा हूं। मैंने इस बात को सराहा कि हम अलग-अलग नहीं हैं। हम सभी अदृश्य धागों से बंधे हैं। उस हंसी के अतिरिक्त, मैंने यह भी जान लिया था कि हम आपस में दु:ख बांट कर भी जुड़ाव महसूस कर सकते हैं। यदि आधे घंटे के लिए सारी दुनिया एक साथ आ जाए और उस दु:ख को बांट ले, जिसे वह पूरा जीवन सहन करती आई है, तो हम सभी दोस्त होंगे। तब कोई दुश्मन नहीं होगा। तब आपस में कोई युद्ध नहीं होंगे।

उस बूढ़े व्यक्ति ने अपनी बात जारी रखी। जैसा कि मैं कह रहा था कि मेरे जीवन का सबसे बड़ा पछतावा यही रहा कि मैंने अपने मन की बात नहीं मानी। मैं जानता था कि मैं अपने जीवन में बहुत बड़े-बड़े काम कर सकता था। जब मैं बहुत छोटा था तो बहुत अच्छा लिखता था। मैंने अपने कॉलेज के दिनों में साहित्य के लिए कुछ पुरस्कार भी पाए। पर मॉम चाहती थीं कि मैं एक एकांउटेंट बनूं। उन्होंने कहा कि मैंने अगर उनकी बात न मानी तो यह मेरे जीवन की सबसे बड़ी भूल होगी। दरअसल मेरे जीवन की सबसे बड़ी भूल यह थी कि मैंने अपनी अंतरात्मा के स्वर को अनसुना कर दिया और अब डॉक्टरों ने मुझे बता दिया है कि मेरे जीवन के कुछ ही सप्ताह शेष हैं। मैं अपने उस चुनाव के लिए बहुत ही दुखी हूं। ऐसा लगता है मानो मैंने अपना पूरा जीवन ही व्यर्थ कर दिया हो। जीवन के सत्तासी साल एक ही झटके में निकल गए। ऐसा लगता है कि अभी कल ही तो मेरा विवाह हुआ था। कल ही मेरे घर संतान का जन्म हुआ। अब मार्गेट दुनिया में नहीं है और बच्चे अपने-अपने जीवन में मग्न हैं। तुम्हारा जीवन कल्पना से भी कहीं तेज़ी से, आगे निकल जाएगा। दिन, सप्ताहों में, सप्ताह माहों में और माह सालों में बदलते चले जाएंगे। तुम अभी जवान दिखते हो पर तुम्हें पता तक नहीं चलेगा और तुम मेरी तरह बूढ़े दिखने लगोगे। जीवन ऐसा ही है इसलिए वह जीवन जीओ जिसके लिए तुम्हें भेजा गया है, जिसके लिए तुम बने हो। सारी जिंदगी यूं ही बिताने के बाद, आखिरी वक्त में चेत आने से तो बेहतर होगा कि पहले ही संभल जाओ। जब मुझे अपना जीवन जीना चाहिए था तब मैंने अपनी मां के लिए जीवन जीया। मैंने अपना जीवन दूसरों को प्रसन्न करने में बिता दिया। पर अब वे सब कहां हैं? जिन्हें प्रसन्न करने के लिए मैं जीता रहा, वे एक-एक कर दूर होते चले गए। अपनी मृत्युशैय्या पर तुम्हें केवल एक ही व्यक्ति को जवाब देना होगा और वह वही है, जिसे तुम हर रोज दर्पण में देखते हो। बेहतर

होगा कि उसके प्रति सच्चे रहो।" जूलियन के शब्दों में मैंने अपने साथ विश्वासघात करने का अपराध किया है और कैंसर नहीं बल्कि यही अपराध मुझे तिल–तिल मार रहा है।

कमरे में गहरी खामोशी छाई थी। पीटर के सभी दोस्त ज़मीन की ओर ताक रहे थे, वे अपने मित्र के उस गहन पछतावे को सुन कर दुखी थे और उन्हें इस बात का भी खेद था कि उनका मित्र जल्दी ही उनसे दूर हो जाएगा। **जीवन ऐसा ही क्षणभंगुर है। मैंने अब तक इसे इस रूप में नहीं जाना था। यह एक अनमोल खज़ाना है, जिसे रक्षा के लिए हमें सौंपा गया है और अपनी योग्यता के अनुसार उपयोग में लाने का अवसर प्रदान किया गया है।** और फिर भी अधिकतर लोग भीड़ के साथ चलने में इतना मग्न रहते हैं कि उन्हें कुछ क्षण थम कर, यह विचार करने का भी समय नहीं होता कि वे यहां क्यों हैं और उन्हें किस काम के लिए भेजा गया है।

जब हम कैमडन गुफाओं से बाहर आ रहे थे तो जूलियन ने मुझे एक छोटी सी कहानी सुनाई थी। एक बुद्धिमान संत की भेंट सड़क पर जा रहे भिक्षुक से हुई। भिखारी नहीं जानता था कि वह किससे बात कर रहा था। वह संत के पास खड़ा हुआ और उससे तीन प्रश्न पूछे: तुम यहां क्यों हो? तुम कहां जा रहे हो? क्या वहां जाने का कोई महत्वपूर्ण कारण है? संत ने उससे पूछा कि वह एक दिन में भिक्षा से कितना कमा लेता था। भिखारी का जवाब सुनने के बाद संत ने कहा, "कृपया मेरे लिए काम करो। अगर तुम हर सुबह, मेरे ध्यान पर बैठने से पहले इन्हीं तीन प्रश्नों को दोहरा सको, तो मैं तुम्हें तुम्हारी दैनिक कमाई का दस गुना देने को तैयार हूं।"

मैंने तभी से जाना कि मनन से प्रज्ञा का जन्म होता है। हमें प्रतिदिन थोड़ा समय ऐसा भी निकालना चाहिए जब हम यह सोच सकें कि हम यहां क्यों आए हैं, हम कैसे जी रहे हैं या हम उन उपहारों का प्रयोग कर पा रहे हैं, जो हमें कुदरत की ओर से दिए गए हैं? हमें जीवन की ओर निश्चित रूप से ध्यान देना चाहिए। हमें प्राय: अपने सपनों को दोहराते रहना चाहिए। हमारा यह ब्रह्माण्ड वास्तव में एक मैत्रीपूर्ण स्थान है और किसी सपने को अपने जीवन में उतारे बिना, उसे पाने के बारे में सोचा भी कैसे जा सकता है। जूलियन प्राय: कहते हैं कि ब्रह्माण्ड हमारी जीत चाहता है बस हमें अपने तौर–तरीके छोड़ने होंगे।

पीटर की बातों ने मेरे दिल को छू लिया। मैं जानता था कि जूलियन को पता था, यहां ऐसा ही होगा। मुझे भी कुछ निर्णय लेने थे। मुझे भी हमेशा के लिए, अपने बृहत्तर जीवन के लिए कुछ चुनाव करने होंगे।

हमने अस्पताल में आधा घंटा और बिताया और हर्बल चाय के साथ उन प्यारे लोगों की बातें बांटी। जूलियन ने उस कमरे में वे ताजे फूल भी फूलदान में लगा दिए। वे वास्तव में बहुत ही करूणामयी और संवदेनशील व्यक्ति थे। हमने उन्हें उनकी मेजबानी के लिए धन्यवाद दिया और फिर सभी बाहर फरारी के पास आ गए। सभी जूलियन को बहुत प्यार करते थे और उन्हें जूलियन की फरारी भी बेहद भाई।

“तो जब तुम अपने लिए प्रामाणिक जीवन का पथ चुन लोगे– तब तुम भीड़ को छोड़ कर, अपने मूल्यों, इच्छाओं व मान्यताओं के अनुसार जीओगे और अंत में चुनावबिंदु तक आ जाओगे। इस बिंदु पर दी गई प्रतिक्रिया ही तुम्हारे आने वाले जीवन की रूपरेखा बनेगी। हैरियट बीकर स्टो के इन शब्दों को भी मत भूलना : ‘कब्रों पर गिरने वाले सबसे कटुतापूर्ण अश्रु उन्हीं बातों के लिए होते हैं, जो नहीं कही गईं या जो कार्य किए नहीं गए।’ एक सक्रिय व्यक्ति बनो और इस तरह आगे बढ़ो कि तुम एक दुर्जेय आत्मा के रूप में अपने लिए बृहत्तर जीवन की तलाश करने निकले हो। किसी भी काम को उसके हर संभव बेहतर तरीके से करो। और फिर जो भी परिणाम आए, उसे प्रसन्नतापूर्वक आभार सहित स्वीकार करो। यह कभी न भूलो कि कुदरत ने तुम्हारे लिए यही रच रखा था।”

“कोच, समझ आ गया। पर आपने अभी तक यह नहीं बताया कि यह कार किसकी है। यह तो आपकी नहीं थी?”

“नहीं, यह मेरी नहीं है। मैं इन दिनों बहुत हल्का सामान ले कर निकला हूं और बहुत सादगी से जीता हूं। पर यह कभी मेरी थी।” जूलियन ने स्वीकार किया कि वह उनकी पुरानी फरारी थी।

“सच्ची!!!” मैंने कहा। “जब मैं बच्चा था तो अक्सर अपने डैड के साथ आपके पड़ोस से निकला करता और इस कार को एकटक ताकता। मैन! मुझे आपकी इस बेबी से बहुत लगाव है।”

“मैं जानता हूं। मैंने तुम्हें इसे समय–समय पर लगाव से ताकते देखा है।” उन्होंने आंख दबाई।

“सच कह रहे हैं?”

“हां, जब मैं भारत जा रहा था तो मेरे एक व्यवसायी ग्राहक ने मुझसे इसे खरीद लिया था। उन्होंने कहा कि मैं कभी भी उसे वापिस खरीद सकता था और वे एक भी बार कोई सवाल नहीं करेंगे। उन्होंने यह भी कहा कि जब मैं शहर में आऊं तो इसे अपने लिए प्रयोग में ला सकता था। वे मेरे प्रति कई तरह से उदार रहे हैं। जब भी मैं यहां होता हूं तो वे मुझे इसे उधार दे देते हैं।”

हम बड़ी देर तक खामोशी के बीच सफर करते रहे। जब हमने होटल के बरामदे में प्रवेश किया तो जूलियन ने कार रोक दी। वहां खड़े कर्मचारी ने मुझे देख कर अंगूठा ऊंचा किया। वह वाकई जूलियन से बेहद प्रभावित था।

“डार! दस्ताने रखने वाला दराज खोलो। वहां तुम्हारे लिए कुछ रखा है। मैं चाहता हूं कि मेरे जाने के बाद तुम उसे खोल कर देखो और उसके लिए अभी कुछ मिनट तक इंतज़ार करना होगा। मेरे लिए मालिश का समय हो गया है और मैं कभी इसके लिए देर से जाना पसंद नही करता।”

“मैंने तो कभी सोचा नहीं था कि आप मालिश के इतने दीवाने होंगे।” मैंने कहा

“क्यों नहीं डार, मालिश करवाने से शरीर की जीवंतता व ओज में वृद्धि होती है, व्यर्थ पदार्थ बाहर निकलते हैं और कुल मिला कर सेहत को बहुत लाभ होता है। मैं अपने–आप को गहन शांति, प्रसन्नता व स्वास्थ्य से घिरा रखने के लिए कुछ बातों का पालन करता हूं और पूरे सप्ताह में उनके लिए समय निर्धारित कर रखा है। मैं इन्हें सफलता के ढांचे कहता हूं। नियमित व्यायाम, सुसंतुलित आहार, ध्यान, प्रकृति के बीच कुछ समय और मालिश। सप्ताह के सातों दिन, मैं अपने लिए इसी चर्या को अपनाता हूं ताकि लंबे समय तक जी सकूं और वह कार्य अच्छी तरह कर सकूं, जिसके लिए मुझे धरती पर भेजा गया है। मुझे अपने जीवन में एक मिशन दिया गया है और मुझे इसे हर हाल में निभाना है। हो सकता है कि लोगों को मालिश एक महंगा शौक लगे पर मेरे लिए यह किसी निवेश से कम नहीं है। यह धन की बरबादी नहीं है। अगर मैं अस्पताल के किसी कमरे में बीमार पड़ा रहा, तो किसी के काम नहीं आ सकता। सच कहूं तो अपने शरीर को स्वस्थ रखने व अपने काम को चलाने के लिए मेरा मालिश करवाना जरूरी है।”

“जूलियन! वाकई बहुत अच्छी सोच है।”

“डार! आज तुम्हारे जीवन का बहुत बड़ा दिन है। मैंने कुछ बीज बोए हैं जो निश्चित समय आने पर सुंदर फूलों के रूप में खिलेंगे। मेरा विश्वास करो, आज तुमने कुछ बड़े सबक सीखे हैं।”

“जूलियन! मैं आपके साथ आज का दिन बिताने के लिए आभारी हूं। आपने मेरे साथ कुछ बहुत ही गहन व महत्वपूर्ण पाठ बांटे। मैं जानता हूं कि आपने उन्हें अनूठे तरीके से देते हुए, अविस्मरणीय बना दिया है। मुझे तो अनुमान तक नहीं था कि शिक्षा भी इतनी रोचक, यादगार व भावुक कर देनेवाली हो सकती है।”

“शिक्षा को ऐसा ही होना चाहिए। बौद्धिक रूप से, पुस्तकों से सीखना अच्छी बात है पर जब आप किसी शिक्षा के साथ भावात्मक रूप से जुड़ते हैं तो वह आपके लिए कहीं शक्तिशाली व लंबे समय तक बनी रहने वाली हो जाती है। अनुभव सदा से ही श्रेष्ठ अध्यापक रहा है। खैर, आज का सबक अच्छा रहा।”

मैंने दराज खोला तो उपहार के रूप में एक पैकेट दिखाई दिया। उसे देख कर पता लग रहा था कि पैकिंग स्वयं जूलियन ने ही की होगी पर उनके इस प्रयास व सोच के लिए पूरे अंक देने को जी चाह रहा था।

“थैंक्स जूलियन! मैं कल्पना नहीं कर सकता कि इसमें क्या होगा पर यह तय है कि इसे आपकी ओर से दिया गया है इसलिए यह अवश्य ही मेरे लिए महत्वपूर्ण होगा।”

“ओह, खैर, ये भी तुम्हारे लिए हैं।” उन्होंने मुझे फरारी की चाबी देते हुए कहा “क्या मैं आपके लिए कार को पार्क कर दूं।” मैंने जूलियन की मदद करने के लिहाज से पूछा, “नहीं दोस्त! अब यह कार तुम्हारी है।”

मैं तो सुन कर दंग रह गया। क्या जूलियन वाकई वह कार मुझे देना चाहते थे? जब मैं छोटा था तो मेरे लिए इससे बड़ा सपना कोई और नहीं था कि वह लाल फरारी मेरे पास हो। यहां तक कि अब भी उस क्लासिक और सही तरीके से संभाली गई फरारी का स्वामित्व पाने की बात ने मुझे रोमांचित कर दिया था।

“डार! मैं तुम्हारे लिए चुनावबिंदु नहीं बनाना चाहता – एक जिज्ञासु के पथ पर चल रहे व्यक्ति के लिए वे स्वयं ही उत्पन्न होते हैं। जब तुम सच की तलाश में अपनी आंखें खुली रखोगे तो वे चुनाव स्वयं ही सामने आ जाएंगे। पर मैं चाहता हूं आत्म–जागरण की सारी प्रक्रिया तुम तक पहुंचे और वही कारण है कि मैं कुछ यादगार अनुभव रचना चाहता हूं ताकि तुम हर चरण का सार पा सको। अब मैं तुम्हें एक चुनाव देने जा रहा हूं: मैं पूरी गंभीरता के साथ यह बात कह रहा हूं : यदि चाहो तो तुम यह फरारी रख सकते हो। मेरे पहले ग्राहक को इससे कोई परेशानी नहीं होगी। उन्होंने कहा कि जो मेरी इच्छा है, वही उनकी भी इच्छा होगी। मैंने अतीत में उनका बहुत भला किया है इसलिए वे मेरी कद्र करते हैं पर एक छोटी सी शर्त होगी।”

“वह भी सुन लेते हैं।” मैंने एक मुस्कान के साथ कहा और मन ही मन किसी आशंका से भी घिर गया।

“अगर तुम कार को लेने का चुनाव करोगे तो मैं तुम्हारा कोच नहीं रहूंगा। हम मित्र तो बने रहेंगे पर मुझे अपने अगले काम की ओर जाना होगा। मैं कोचिंग नहीं दे सकूंगा। मेरी कार या कोचिंग? एक चीज़ चुन लो। यही चुनावबिंदु है –कोई न कोई त्याग करना ही होता है। किसी त्याग के बिना कुछ भी अच्छा नहीं पाया जा सकता। तुम्हें अपने ज्ञात जीवन के दायरे से निकल कर, बृहत्तर जीवन की सीमाओं में प्रवेश करना होगा। और वह जीवन पाने के लिए तुम्हें संसार में किसी भी वस्तु से अधिक उसकी ही कामना करनी होगी। तुम्हें इस फरारी से भी अधिक उसकी कामना करनी होगी। अधिकतर लोग समझते हैं कि जीवन का रूपांतरण होने में महीनों व सालों लगते हैं जबकि असलियत में आप एक ही क्षण में इसे बदल सकते हैं, आप निर्णय ले लेते हैं कि पिछले जीवन की ओर लौट कर नहीं जाएंगे – भले ही कुछ भी हो जाए पर पुराने तरीके से जीवन को नहीं जीएंगे। जो काम होने में कई बार सालों और दशकों लग जाते हैं, वह एक ही निर्णय में संभव हो जाता है।”

‘जूलियन, बहुत अच्छे! ”

“तो दोस्त! यह क्लासिक स्पोर्ट्स कार या मेरी कोचिंग। अपने प्रति सच्चाई बरतते हुए चुनाव करना। यह सब पूरी तरह से तुम पर ही निर्भर है।”

“ओह जूलियन! आप तो मेरी जान ले कर ही छोड़ोगे। मैंने हंस कर कहा, आप मेरा जवाब जानते हैं। मैं कोई मूर्ख नहीं हूं। मुझे कार की तुलना में कोचिंग कहीं अधिक प्यारी है। मैं अपने लिए बृहत्तर जीवन का चुनाव करूंगा।”

जूलियन ने मेरे निर्णय से प्रसन्न होते हुए, हाथों से ताली बजाई। जहां तक मैं जानता हूं

कि चुनावबिंदु पर आ कर, यही निर्णय सबसे अहम होता है कि आप सितारों तक जाना चाहते हैं ताकि अपने लिए नियत जीवन को पा सकें। वैसे मेरे पास तुम्हारे लिए एक और डील भी है। यदि तुम चाहो तो शहर का चक्कर काटने के बाद, इसे इसके मालिक के घर यानी मेरे दोस्त के पास छोड़ कर आ सकते हो।

"डील! "

जूलियन ने मुझे गलबांही देते हुए कार से बाहर आ गये। फिर वे अपना सिर खिड़की से अंदर लाते हुए बोले, "आज से सात दिन बाद, सुबह ठीक पांच बजे यहीं भेंट होगी। मैं तुमसे तीसरे चरण के बारे में बात करना चाहता हूं। बेशक तुम्हें वह सब बहुत अच्छा लगेगा। तब तक अपने प्रति कोमलता का बर्ताव रखो। तुम बहुत से बदलावों के दौर से गुज़रने वाले हो इसलिए अपना ध्यान रखना मत भूलना। जंगलों में, कुदरत के बीच लंबी सैर के लिए जाओ। अपना मनपसंद संगीत सुनो। मालिश करवाओ। और बेशक मौन, स्थायित्व व एकांत का अनुभव करने के लिए भी कुछ समय निकालो। तुम बहुत अच्छे से चल रहे हो। दोस्त, जल्द ही भेंट होगी।"

और इन्हीं निर्देशों के साथ, भूतपूर्व वकील सुपरस्टार से भिक्षु व कोच बने, जूलियन होटल 'Q' में जा कर अदृश्य हो गए। मैं बहुत देर तक फरारी की चालक सीट पर बैठा, आज के दिन और अपने भीतर चल रहे उस गहन बदलाव के प्रति वचनबद्धता के बारे में विचार करता रहा। मैंने जूलियन का दिया उपहार खोला। वह प्लेटो के रिपब्लिक की नई प्रति थी। मैंने पन्ने पलटे तो प्रारंभ के दो खाली पन्नों पर जूलियन की लिखावट में कुछ लिखा दिखाई दिया :

प्रिय डार!

पहले तो मैं तुम्हें तुम्हारे साहस के लिए धन्यवाद देना चाहूंगा। भीड़ के गुरूत्वाकर्षण बल को पछाड़ते हुए, अपने प्रति सच्चे बनते हुए जीने के लिए बहुत साहस की आवश्यकता होती है। स्पेस शटल अपने पहले तीन मिनटों के अंदर उड़ान भरते हुए अधिक ईंधन लेता है क्योंकि गुरूत्वाकर्षण का बल उसे अपनी ओर खींचता है। इसी तरह संसार भी आने वाली महान ऊर्जा को मिलने के लिए अपनी ओर से पूरा ज़ोर लगा देता है। पर दोस्त! अगर पछतावे और उदासी से भरे जीवन से बचना चाहते हो तो तुम्हें इनसे पार पाना ही होगा।

जब तक तुम यह पुस्तक देखोगे, तब तक तुम अपने जीवन का एक बड़ा निर्णय ले चुके होगे: अपनी नियति के पथ पर चलना और अपना बृहत्तर जीवन पा लेना। (मैं जानता था कि तुम यही निर्णय लोगे क्योंकि तुम्हारे पिता एक बुद्धिमान व महान व्यक्ति थे और फल अपने वृक्ष से अधिक दूरी पर नहीं गिरते।) मैं अब तुम्हें नियमित दिनचर्या से जुड़े चुनाव करने के लिए निमंत्रित कर रहा हूं ताकि तुम एक इंसान के रूप में अपने जीवन का सबसे बड़ा दांव खेल सको। तुम्हें आने वाले सप्ताहों में इन पांच अभ्यासों को अपने जीवन में अनिवार्य रूप से लाना होगा, तभी तुम अपने लिए नियत खूबसूरत जीवन तक जा सकोगे। मैं इन्हें प्रतिदिन

किए जाने वाले पांच समर्पण कहता हूं।

1. हर सुबह पांच बजे उठने का नियम बनाओ। जो लोग सुबह जल्दी उठते हैं, उन्हें जीवन से सब श्रेष्ठ ही मिलता है।

2. अपने दिन के पहले साठ मिनट को पवित्र घंटे की संज्ञा देते हुए बिताओ। इस दौरान तुम अपने श्रेष्ठ स्वरूप को बाहर लाने के लिए आंतरिक तैयारी कर सकते हो। इस समय में प्रज्ञावान साहित्य पढ़ो, ध्यान का अभ्यास करो, प्रार्थना करो, अपने जीवन की वास्तविक दशा पर विचार करो, अपनी डायरी में अपने सपनों की प्रगति के बारे में लिखो और सारे दिन की चर्या बनाओ ताकि तुम जो भी करो, उसमें पूरी तरह से सफल हो सको। प्रतिदन ऐसा करने से तुम संसार में चमकोगे और अपने जीवन के श्रेष्ठतम स्वरूप के साथ जी सकोगे।

3. अपने–आप को ध्यान, करूणा व चरित्र के ऐसे रूप के लिए समर्पित कर दो कि उससे परे जा कर, तुम्हारी कल्पना तक न की जा सके। ऐसा करने से तुम अपनी ओर से नए जगत के निर्माण के लिए भी सहयोग दे सकोगे।

4. अपने ही काम में श्रेष्ठता का ऐसा स्तर प्रदर्शित करो कि उससे अधिक की तुमसे कभी किसी ने अपेक्षा तक न की हों तब प्रचुरता व प्रवाह तुम्हारी ओर प्रवाहित होंगे।

5. अपने–आप को एक ऐसा स्नेही व्यक्ति बनने के लिए समर्पित कर दो, उसी की तरह सोचो, बोलो और महसूस करो, मानो तुम ग्रह के सबसे महान व्यक्तियों में से हो और ऐसा है भी। तुम्हारा जीवन फिर कभी पहले जैसा नहीं रहेगा और तुम अनेक जीवनों को धन्य कर सकोगे।

मैं अपनी बात समाप्त करने से पहले कहना चाहूंगा कि मैं एक व्यक्ति के रूप में तुम्हें बहुत सराहता हूं। तुम्हारे पास पहले से कहीं बेहतर और अच्छा समय आने के लिए प्रतीक्षारत है। हर शीत के हृदय में कहीं बसंत छिपा है। हर रात के पर्दे के पीछे एक मुस्कुराती सुबह इंतज़ार कर रही है।'

– खलील जिब्रान।

तुम जानते हो कि उन्होंने गलत नहीं कहा है।

तुम्हारा एक प्रशंसक.....जूलियन

मुझे कोई संदेह नहीं रहा कि मेरे जीवन के सबसे प्रसन्नतादायक सत्र आने ही वाले थे। मुझे कोई संदेह नहीं रहा था कि अभी मेरा श्रेष्ठ स्वरूप सामने आना बाकी था।

अध्याय 6

जिज्ञासु द्वारा विस्मय तथा संभावना में प्रवेश

मैंने जीवन के साथ धावा बोल रखा है, अथक रूप से हर आनंद को पाने का प्रयास कर रहरा हूं, उत्तरों की तलाश कर रहा हूं, फिर भले ही वे पीड़ा से क्यों न निकलें। मैं जीवन को खोज रहा हूं, इसकी तलाश में हूं।

–मार्टिआ गोल्डन

यह संसार एक बड़ी पुस्तक के समान है, जो लोग अपने घरों से निकले तक नहीं, उन्होंने केवल इसका एक ही पृष्ठ पढ़ा है।

–सेंट ऑग्स्टाइन

जूलियन से भेंट के बाद वाले सप्ताह में मेरे जीवन में गहन बदलाव आने लगे। मैं बेहतर तरीके से सोचने लगा, मुझे एहसास हो रहा था कि मुझे अपनी शर्तों पर जीवन जीना आ गया था और मैं पहले से कहीं अधिक सजग चेतना के साथ जी रहा था। मैं अपनी सोच, अनुभव तथा कार्यों से जुड़े हर तरह के चुनाव पर पूरा ध्यान दे रहा था और यह सुनिश्चित कर रहा था कि मेरा हर चुनाव पूरी तरह से ईमानदार व आदरणीय हो। इस तरह मुझे ऐसी आंतरिक शांति का अनुभव होने लगा था, जैसी मैंने अपने जीवन में पहले कभी अनुभव नहीं की थी। मैं स्वयं को ओज से भरपूर, जीवंत और आनंदित पा रहा था। ऐसा लग रहा था कि मैं अपना ही एक बेहतर संस्करण बन गया हूं। मैं जानता था कि मैं भीतर से जागरूक हो रहा था।

हालांकि, सच कहूं तो कई तरह के भय व आशंकाएं भी अपना सिर उठाने लगे थे। जब भी कोई जिज्ञासु अपने सच्चे घर की ओर लौटने लगता है तो ऐसी आशंकाएं सामने आती हैं, जिनका आज तक कोई अस्तित्व तक नहीं था। जब हम अवचेतन रूप से जीते हैं तो बहुत से भय हमारे अवचेतन के भीतर कहीं छिपे रहते हैं। हम चेतन रूप से उनके बारे में जान तक

नहीं पाते। परंतु वे वहीं होते हैं, हमारे हर चुनाव को प्रभावित करते हुए, अदृश्य स्तर पर हमारे जीवन का संचालन करते हुए बने रहते हैं। जब हम सजग भाव से अपने जीवन को एक नए सत्य के संदर्भ में देखने लगते हैं, तो हमारे सारे भय प्रकाश में आ जाते हैं और हमें उनका सामना करना ही चाहिए। प्राय: यह सब भयभीत कर देने वाला होता है।

पर मैंने यह भी पाया कि हमारे भय तिनकों से बने दैत्यों जैसे होते हैं। यदि हम उन्हें कबूल न करें तो वे सतह में छिपे बैठे, गुप्त रूप से हमारे जीवनों को अपने वश में किए रहते हैं और हमें हमारे ही सपनों से दूर कर देते हैं। पर यदि हम उनका सामना करें, और इन भयंकर दैत्यों को अपने यहां चाय का बुलावा दें, और उन्हें जानें तो हम पाएंगे कि वे तो हमारी सोच से कहीं छोटे निकले। जिस तरह सूर्य के प्रकाश में आते ही परछाईं धूमिल हो जाती है, मनुष्य की सजगता के दायरे में आते ही भय भी सिर पर पांव रख कर भाग खड़ा होता है। हम जिसका प्रतिरोध करते हैं, वह निरंतर बना रहता है। यदि हम अपने भय को दूर करने के लिए आवश्यक आंतरिक कार्य नहीं करते तो वे हमेशा भगाते रहेंगे। यदि हम आत्म–अन्वेषण का साहस रखते हैं और अपने भय को पहचानते हैं, तो उन्हें हमसे दूर जाने में देर नहीं लगेगी। हम जिसे अपना लेते हैं, उससे पार पाने में देर नहीं लगती।

जूलियन ने मुझे एक बार एक पर्वतारोही की कहानी सुनाई थी, वह दोपहर के समय एक पर्वत के शिखर पर पहुंचा। अब चुनौती यही थी कि उसे रात घिरने से पहले, किसी सुरक्षित स्थान तक पहुंचना था। वह उतरते समय देखता आ रहा था कि सूर्य अस्त होता जा रहा था। उसने अपनी गति भी बढ़ाई पर घंटे तो जैसे हाथों से फिसलते चले गए। अंधेरा छाने लगा और सूरज क्षितिज पर डूबने लगा। बहुत से भय सिर उठाने लगे। उसे लगा कि अगर वह नीचे नहीं उतर सका तो वह बीच में ही फंस जाएगा और ऐसे खतरनाक हालात में घिर जाएगा कि शायद जान बचाना ही कठिन हो जाए।

अंत में सूरज डूबा तो चारों ओर अंधकार छा गया। वह कुछ ऐसा खोजने लगा जिसे पकड़ कर खुद को सहारा दिया जा सके। तभी उसके हाथ एक टहनी आ गई जो किसी चट्टान की दरार से निकल रही थी। उसने वह सारी रात उसी टहनी से लटकते हुए बिताई और उसे यही लगता रहा कि अगर उसने टहनी छोड़ी तो नीचे चट्टानों पर गिर कर मारा जाएगा। वह रात उसके लिए किसी डरावने सपने से कम नहीं रही।

पर जब सूरज की पहली किरण फूटी तो वह हंसने लगा। उसने जो देखा, उस पर यकीन नहीं कर सका। उसका भय भ्रम मात्र था। उससे केवल छह इंच नीचे एक लट्ठा पड़ा था पर वह अंधेरे में उसे देख नहीं सका और वह अगर छह इंच नीचे उतर जाता तो पूरी रात बहुत आराम और सुरक्षा के बीच बिता सकता था। उसके भय निराधार निकले। वास्तव में उसके भय का कोई आधार था ही नहीं। और मैंने सीखा है कि भय ऐसे ही होते हैं। वे हमें छोटा और कमजोर बना कर, हमारे जीवन का नास कर देते हैं। हम जिस भी भय से भयभीत होते हैं, वह केवल छह इंच गहरा है। इन्हें अपने पर हावी मत होने दो। इन्हें अपने जीवन के साथ खिलवाड़ करने व उसे नष्ट करने की अनुमति मत दो।

मैं ठीक पांच बजे 'Q' जा पहुंचा। अब सुबह उठना आसान हो गया था और मैं सुबह जल्दी उठने के उस अनुशासन के लाभों का आनंद भी लेने लगा था। जैसा कि जूलियन ने कहा था मैं उस बेस कैंप समय का सदुपयोग करते हुए उसे नियोजन, मानसिक चित्रण, मनन व महान पुस्तकों के अंशों को पढ़ते हुए, बिताने लगा था। इस तरह मैं हर महान जीवन की बुनियाद से जुड़े अनिवार्य सत्यों को जानने लगा था। हर सुबह पढ़ने से मुझे प्रेरणा मिलती थी और यह याद दिलाती थी कि कोई भी जीवन, भले ही कितना अद्‌भुत क्यों न हो, कठिनाईयों व चुनौतियों से रहित नहीं होता। दरअसल इनका अस्तित्व ही तो हमें बड़ा, बुद्धिमान व शक्तिशाली बनाता है। इनसे केवल वही बच सकता है, जो अब इस जीवन में नहीं रहा। हम इनसे भाग सकते हैं, इनके लिए कटुता जता कर शिकायत कर सकते हैं या इन्हें अपना कर, बेहतर बना सकते हैं। गहन पीड़ा के बीच ही हम अपने स्वरूप व अस्तित्व से संपर्क कर पाते हैं। मार्टिन लूथर किंग जूनियर के शब्दों में, 'कोई व्यक्ति अपने विश्वास से भरे क्षणों में कहां खड़ा है, इससे उसकी माप नहीं होती। उसकी परख तब होती है जब वह चुनौती व विवादों से घिरा होता है।'

जब मैं लॉबी के दरवाजों से निकला तो जूलियन को स्टाफ से बतियाते देखा। वे सब मिल कर हंस रहे थे। उनकी हंसी का स्वर सुन कर मुझे भी हंसी आ गई। उनकी हंसी कितनी शुद्ध, निर्दोष व बच्चों की तरह मासूम थी। मैं आज तक जूलियन जैसे इंसान से नहीं मिला था। वे सचमुच कितने निश्चल थे, किसी से कोई दुराव–छिपाव नहीं, कोई औपचारिकता नहीं! वे मुझे उस तरह के इंसान जैसे दिखते थे, जैसा कि हममें से प्रत्येक बनना चाहता है। आनंदी, प्यारे, बुद्धिमान और निर्भीक।

मैं यह देख कर दंग रह गया कि जूलियन आज अपने चोगे में थे। मैंने तो आज भी उन्हें आम वस्त्रों में देखने की अपेक्षा की थी पर मैं उनके वस्त्रों व उससे निकलती आब को देख मुग्ध रह गया। मैंने अनुमान लगा लिया था कि जूलियन, सिवना के उन संतों द्वारा दी गई पोषाक को धारण कर, गर्व का अनुभव करते थे। मुझे यह अनुमान भी था कि चोगा पहनने से न केवल उन्हें अपने चुने पथ का स्मरण रहता होगा बल्कि यह उन्हें उन संतों का भी स्मरण करवाता होगा।

"गुडमार्निंग दोस्त! वे लॉबी के दूसरे कोने से बोले। बस सुबह जल्दी उठने वालों के साथ थोड़ी मस्ती कर रहा था। तुम तो जानते ही हो कि हम सब एक खास क्लब से जुड़े हैं। अपने जीवन को बड़ा और सुंदर बनाने से बढ़ कर कोई और अनुशासन हो ही नहीं सकता।"

"जूलियन, मैं भी इसका आदी होता जा रहा हूं।"

"बहुत अच्छे! " वे आगे आए और मुझे गलबांही दी।" पता है, मैं तुम्हें याद कर रहा था।"

"जूलियन, मुझे भी आपकी बहुत याद आई। मैं पिछले सप्ताह की उस भेंट को भुला नहीं सकता और देखें कि आज मेरे लिए क्या सामने आने वाला है।"

“आज तुम आत्मजागरण के तीसरे चरण को सीखने जा रहे हो। इस चरण का मतलब है कि आज से तुम दुनिया को एक नई दृष्टि से देखोगे। देखो दोस्त! इस ग्रह पर तकरीबन लोग इस समय भेड़चाल में व्यस्त हैं और आंखों पर पट्टी बांधे चले जा रहे हैं। वे एक झूठ के साथ जी रहे हैं। उन्हें लगता है कि वे यथार्थ को देख रहे हैं पर भीड़ के साथ चलते हुए, उन्हें केवल वही आकृतियां दिखाई दे रही हैं, जो गुफा में बैठी भीड़ को दिखाई देती थीं। वे एक भ्रम को देख रहे हैं। वे जितना जीवन को सराहते हैं, वह तो उससे कहीं अधिक है। उन्हें इन्हीं झूठी मान्यताओं, धारणाओं व सोच के साथ खुद को नहीं छलना चाहिए, हालांकि वे अंदर ही अंदर जानते भी हैं कि ये उनके लिए ठीक नहीं हैं। उन्हें दूसरों की अपेक्षाओं के अनुसार अपना जीवन नहीं जीना चाहिए। उन्हें साधारण तथा नीरस जीवन जीते हुए, अपने सपनों को दफन नहीं करना चाहिए। वे अपनी जंजीरें तोड़ सकते हैं, अपने बृहत्तर जीवन के लिए खड़े हो सकते हैं और दुनिया को एक नई दृष्टि से देख सकते हैं, जो झूठ देखने की बजाए सच देखना पसंद करती हैं।

हम एक टैक्सी कैब की ओर बढ़े तो मैंने जूलियन से कहा, “क्या आप मुझे याद दिला सकते हैं कि इस तीसरे चरण का क्या नाम था?”

“इसे आश्चर्य व संभावनाओं की सजगता कह सकते हैं। जब कोई जिज्ञासु या साधक अपने सच्चे घर की वापसी यात्रा पर निकलता है, अपनी नियति की ओर बढ़ता है तो वह पहले चरण के झूठ को त्याग देता है और एक ऐसे जीवन की ओर चलने का सजग निर्णय ले लेता है, जो उसके लिए ही बना था, तब वह अपने जीवन के चुनाव बिंदु तक आ जाता है। इसके बाद तीसरे चरण में वह पाता है कि एक सबसे अनूठा संसार भी था, जो उसने कभी देखा तक नहीं था। यह किसी भी मनुष्य के लिए अद्भुत स्थल हो सकता है। जरा इस बारे में सोचो। जिज्ञासु ने भीड़ की जंजीरें तोड़ दी हैं और अधिक प्रामाणिक तरीके से जीने लगा है। सीमाएं कहीं नहीं रहीं। वह संभावनाओं के साथ खेलने को तैयार है। वह उन मूल्यों, मान्यताओं व व्यवहारों पर केंद्रित है, जिन्हें वह उचित मानता है, भले ही दूसरे कुछ भी क्यों न सोचते रहें। वह अपने प्रति सच्चा होता है। वह पहले से कहीं अधिक गहराई से अपने भीतर उतरता है, अपने विश्वासों, धारणाओं, भय व आशंकाओं को देखता है, जिनके लिए उसे सिखाया गया था कि जीवन में सफल होने का कोई और रास्ता नहीं है। अब वास्तव में बदलने का समय आ गया है। परंतु यह समय रोमांच से भी भरा है।”

“कैसे?”

“क्योंकि अब वह वास्तव में सच को देखने लगा है। उसे समझ आने लगा है कि यह संसार चमत्कार से कम नहीं है। यह विस्मय व संभावनाओं से भरा एक भव्य ब्रह्माण्ड है। हां, इसी अवस्था में आ कर वह अपने उस ज्ञात जीवन को त्याग कर अज्ञात में प्रवेश करता है, एक ऐसा स्थान जो अनिश्चितता व रहस्य से भरा है। और निःसंदेह इससे भय उत्पन्न होगा क्योंकि मनुष्य अपने सुविधाजनक दायरे से बाहर आते समय भय का अनुभव करते हैं। परंतु उस अज्ञात के भीतर ही तो नई संभावनाओं का वास है। ज्ञात के भीतर कुछ भी नया निवास

नहीं करता क्योंकि ऐसा हुआ तो वह नया नहीं होगा। क्या वह नया होगा?" जूलियन ने पूछा

"शायद मुझे आपकी बात समझ आ रही है। आप कह रहे हैं कि अज्ञात तथा विदेशी स्थलों पर ही मेरे जीवन की अज्ञात संभावनाएं छिपी हैं। ठीक?"

"बिल्कुल, ठीक कहा। कोलंबस, नई दुनिया को देखने वाला पहला यूरोपियन था क्योंकि वह उन स्थानों को छोड़ने के लिए तैयार था, जो उसके लिए ज्ञात थीं और वह नए तथा भयभीत कर देने वाले स्थानों पर जाने के लिए प्रस्तुत था। सारी नई खोजें तथा अन्वेषण, उन साहसी स्त्री पुरूषों के साहस का परिणाम हैं, जिन्होंने अज्ञात में जाने का प्रयास किया। एक व्यक्ति के रूप में वृद्धि करना चाहते हो तो अपने भय व आशंकाओं की ओर बढ़ो, नए स्थानों पर जाओ और उन खज़ानों को पाने का प्रयत्न करो, जो तुम्हारे लिए प्रतीक्षारत हैं। आज तक तुम जिस संसार में जीते आए हो, वह तुम्हें छोटा और कमजोर ही बनाता आया था।"

"समझ गया।" मैंने पूरे संतोष के साथ कहा।

"तो जब प्रबोध के पथ का साधक, अपने झूठ को त्याग कर, सच्चे व प्रामाणिक जीवन के दावे की ओर बढ़ता है तो वह देखेगा कि जीवन में बदलाव आ रहा है। वह वाकई दुनिया को नई आंखों से देख सकेगा। वास्तव में उसके सामने नए प्रकार के अनुभव प्रकट होने लगेंगे। वह एक ऐसे नए संसार में आ जाएगा, जो विस्मय व नए चुनावों से परिपूर्ण होगा। डार! मैं जानता हूं कि तुम्हारे जीवन में यह सब पहले से घटने लगा है। अगर तुम अपने सजगता के पथ पर यूं ही चलते रहे तो ऐसी घटनाओं की संख्या बढ़ जाएगी।"

"क्या आप मुझे कुछ उदाहरण दे सकते हैं?"

"क्यों नहीं। जब तुम तीसरे चरण में आते हो तो ऐसी भावनाएं महसूस करोगे, जैसी पहले कभी महसूस नहीं की थीं। या कह सकते हैं कि तुमने एक बालक के रूप में उन्हें महसूस किया था पर फिर संसार ने उन्हें दबा दिया और तुम्हें सिखाया कि जोर से गाना विनम्रता नहीं होती या सबके बीच चमकना भी सही नहीं है। तुम उसी आनंद को महसूस करने लगोगे जिसके कारण तुम्हारी आंखों में आंसू आ जाया करते थे। और सूरज की रोशनी में जीवंतता को अनुभव करते हुए उसी आभार से भर उठोगे, जो तुम्हारे हृदय को सबसे शक्तिशाल बनाने की क्षमता रखता है।"

"बहुत अच्छे।" मैं जूलियन के बताए अनुभवों को महसूस करने के लिए व्याकुल था और यह भी जानता था कि मेरे जीवन में ऐसे अनुभव प्रकट होने आरंभ हो गए थे।

"तुम एक नए स्तर पर अपनी भावनाओं को अनुभव करोगे और मैं यह बताना चाहूंगा कि केवल आनंद ही नहीं बल्कि तुम्हें अपने भीतर छिपी पीड़ा का भी गहनता से एहसास होगा। तुम अपने जीवन के झूठ से निकल कर सजगता व सच्चाई की ओर जा रहे हो, अपने मन की गहराईयों में उतर रहे हो और सच यह है कि तुम आज तक अपनी उदासी को भी नकारते आए हो। तुमने उस आदमी को बहुत पीछे छोड़ दिया है, जो तुम वाकई में थे, जब तुमने आत्म-विश्वासघात की प्रक्रिया में अपने मूल स्वभाव को छोड़ा तो तुम्हारा एक अंश

वहीं मर गया था। और उसने तुम्हें चोट पहुंचाई है। जब तुमने हमारे प्रेम से रहित भयभीत जगत में कदम रखा तो तुम्हारे भीतर एक गहरी उदासी ने जन्म ले लिया। इस दुनिया ने तुम्हें तरह–तरह से सताया। तुम्हारी आशाओं को रौंदा। तुम्हारी आत्मा को कुचल कर रख दिया। तुम्हारे सपनों को मिट्टी में मिला दिया। तुम्हें जानबूझ कर गलत कामों में धकेला गया। उन्होंने हर चीज़ से भयभीत होना सिखाया और यह विश्वास करने को कहा कि तुम अपने जिस भाग को बड़ा और विश्वसनीय मानते थे, वह गलत था पर तुमने वह सब किया।"

"लोगों का प्रेम पाने व भीड़ का हिस्सा बनने के लिए" .....मैंने भी जूलियन की कही बात दोहरा दी।

"बिल्कुल ठीक! तुम्हें अपनी इस उदासी से भी पार पाना होगा। अपने साथ उठाए दुखों के भार को हल्का करना होगा, अपने अवचेतन में बरसों से छिपे दुख को खींच बाहर लाना होगा। इस तरह तुम्हारी भावनाओं का विस्तार होने लगेगा। इस उदासी व पीड़ा का उपचार करते ही जीवन में प्रसन्नता व आनंद का साम्राज्य होगा। तुम किसी सूर्योदय व इंद्रधनुष को उगते देख, पहले सा रोमांच अनुभव करोगे। तुम जान सकोगे कि तुमने जो सोचा था, यह संसार तो उससे कहीं अधिक रंगीन व जीवंत है। तुम प्रेम व स्नेह को पहले से कहीं अधिक गहराई से महसूस करने लगोगे। और यह न केवल अपने आसपास के लोगों के लिए होगा बल्कि तुम दूसरों को भी गहराई से अपना प्यार दे सकोगे।"

"उल्लेखनीय! "

"तीसरे चरण में भ्रम के जाल से बाहर आने के बाद, जीवन एक शास्वत सुंदरता जान पडेग़ा, जहां सब कुछ एक प्राकृतिक तालमेल के साथ चलता है। मेरे दोस्त! तुम पाओगे कि ब्रह्माण्ड तुमसे जैसे जीवन को जीने की चाहना रखता है, तुम कहीं अधिक साहस व समर्पण के साथ उसे जी रहे हो और बदले में उससे उतने ही वरदान भी पा रहे हो। इस तरह ऐसी बातें घटेंगीं जिन्हें देख कर तुम विस्मित हो उठोगे। लोग सही समय पर ऐसे प्रकट होंगे मानो तुम्हारी इच्छा पूरी करने के लिए देवदूतों को भेजा जा रहा हो। तुम्हें लगने लगेगा कि इस संसार में एक जोड़ा अदृश्य हाथ तुम्हारे मार्गदर्शन के लिए साथ आ गए हैं। तुम उसी सुंदर जीवन को जी सकोगे, जो कभी केवल तुम्हारी कल्पना का अंग था। तुम्हारे सपने साकार रूप लेना आरंभ कर देंगे।"

जब टैक्सी शहर की खाली सड़कों पर दौड़ रही थी तो जूलियन ने अपने चोगे की जेब से एक कपड़ा निकाला। इससे पहले कि मैं कुछ समझ पाता, उन्होंने बहुत ही कोमलता से मेरी आंखों पर उसे बांध दिया।

"जूलियन ये क्या हो रहा है?" मैंने आश्चर्य व उत्सुकता के मिले–जुले भाव के साथ पूछा। "दोस्त! धीरज रखो। देखो, इस ग्रह पर अधिकतर लोग इस तरह आंखों पर पट्टी बांध कर जी रहे हैं। वे इस समय अंधेरे में हैं। वे पूरी तरह से अनजान हैं कि यह संसार कैसे काम करता है और उन्हें यहां क्या भूमिका निभानी है। अनिवार्य रूप से तकरीबन लोग, वैसे

मैं किसी का अनादर नहीं करना चाहता, मै सामान्य रूप से बता रहा हूं कि वे लोग अवचेतन रूप से अक्षम हो कर जी रहे है।"

"जूलियन आप कहना क्या चाहते हैं?" मैंने उनसे पूछा और हमारी कार किसी अज्ञात दिशा की ओर चलती रही।

"जब भी हम कोई कौशल सीखते हैं जैसे साइकिल चलाना या जीवन जीने का तरीका सीखना; किसी भी सीखने वाले को चार पड़ाव पार करने होते हैं। पहला पड़ाव अवचेतन अक्षमता से संबंध रखता है। छात्र इस समय न केवल अक्षम है बल्कि उसे पता भी नहीं है कि उसकी अक्षमता का क्या कारण है। यहां छात्र यह नहीं जानता कि वह क्या नहीं जानता। तो उसे साइकिल चलाना नहीं आता और वह यह भी नहीं जानता कि उसके पास साइकिल चलाने के कौशल का अभाव है। अधिकतर लोग, अपने जीवन के बेहतरीन अंश को इसी पड़ाव में बिता देते हैं। वे अपनी आंखों पर पट्टी बांध कर इसी तरह जीते चले जाते हैं, वे अनुमान तक नहीं लगा पाते कि वे सही मायनों में कौन हैं और उन्हें कैसा जीवन जीने के लिए भेजा गया था।" मैंने गर्दन हिला कर हामी भरी।

इन लोगों के पास यह जानने व देखने का भी समय नहीं होता कि उनके चुनावों की गुणवत्ता व स्वभाव क्या रहा और जीवन के मैदान में बड़ा दांव खेलने के लिए उन्हें क्या सुधार लाना होगा। यदि सुधार की इच्छा हो तो लोग दूसरे चरण तक आ जाते हैं जिसे सजग या चेतन अक्षमता का नाम दिया गया है। यहां अब भी व्यक्ति के पास कौशल का अभाव है परंतु उसे यह पता है कि वह क्या नहीं जानता और उसे क्या सीखने की आवश्यकता है। वह अब भी साइकिल नहीं चला सकता पर उसे यह पता है कि साइकिल को आगे ले जाने के लिए संतुलन को सुधारना होगा, उसके हैंडिल को सही तरह से पकड़ना होगा, पैरों से पैडिल मारने होंगे तभी साइकिल आगे जाएगी। उसकी सजगता में सुधार हो रहा है। जब यह सजगता बढ़ती है तब कुछ नए चुनाव किए जा सकते हैं और नए व बेहतर चुनावों से सकारात्मक बदलाव आते हैं।"

यदि कोई सजग अक्षमता के साथ जीवन जीने का कौशल सीखना चाहे तो?

"अच्छा सवाल है। हालांकि ऐसा व्यक्ति अपने कौशल से अब भी बहुत दूर होगा परंतु वह कम से कम यह तो जान ही सकता है कि वह अब तक क्या नहीं जानता था और उस पर काम करने की आवश्यकता है। वह अब भी जीवन जीने में अक्षम ही होगा परंतु उसमें अपनी भूलों को पहचानने की सजगता आ जाएगी। मिसाल के लिए, वह अपने जीवन के उन सभी क्षेत्रों को देख सकेगा, जब उस पर भय हावी था या जब उसे अपने जीवन को पूरी भव्यता के साथ जीने की बजाए सामान्य कोटि से ही संतुष्ट होना पड़ा। अब वह नए चुनावों व नए बदलावों के साथ कुछ बड़े कदम उठा सकता है। तब यह ज्ञान उसे तीसरे पड़ाव तक ले आएगा, जिसे हम सजग क्षमता का नाम देते हैं। अब छात्र सक्षम हो गया है। उसे अब भी अपने काम पर बहुत सी ऊर्जा का निवेश करना होगा पर वह संपूर्ण कौशल से बहुत दूर है। यदि साइकिल वाली मिसाल ही लें तो अब वह व्यक्ति साइकिल पर चढ़ सकता है पर अब भी

उसे हैंडिल पकड़ते समय व अपना संतुलन बनाते हुए बहुत ध्यान रखना पड़ता है।"

"किसी व्यक्ति के जीवन में सजग क्षमता से क्या अभिप्राय हो सकता है?"

"वे बहुत अच्छा कर रहे हैं। उन्होंने संसार को चलाने वाले बहुत से प्राकृतिक नियमों को जान लिया है। वे अपने जीवन के झूठ तथा आत्म-विश्वासघात से बहुत दूर आ गए हैं। वे भीड़ से हट कर अपना जीवन जी रहे हैं, अपने दिल की हल्की सुगबुगाहट को भी सुन पा रहे हैं पर अब भी उन्हें अपने नियमित चुनावों के लिए बहुत सजग रहना है। उन्हें अपने हर काम को ध्यान से करना होगा। यह स्थान अपने-आप में बहुत अद्‌भुत होता है। फिर साइकिल सवार अगले चरण में पूरा कौशल पा लेता है। अब उसे साइकिल पर बैठते समय कोई विचार नहीं करना पड़ता। वह साइकिल को बाहर ले जाता है। उस पर उछल कर बैठता है और सड़क पर दौड़ा देता है। अब उसे हैंडिल की स्थिति से ज्यादा मुंह पर लगती हवा और पीठ पड़ती धूप का एहसास रहता है। जो व्यक्ति अपने जीवन को इस पड़ाव के साथ जी रहा है, जान लो कि वह वर्तमान का पूरा आनंद ले रहा है। वह अपने आने वाले दिनों में और भी कौशलपूर्ण होता जाएगा। वह पूरी तरह से विवेकवान व जागृत होगा। और यह एक खूबसूरत बात होगी।" जूलियन ने कहा और एक आवाज के साथ कैब रूक गई।

"हम आ गए दोस्त! कृपया इमारत में जाने तक अपनी पट्‌टी बंधी रहने दो।"

"हम कहां हैं?"

सात चरणों वाली प्रक्रिया के तीसरे चरण में नियंत्रण को छोड़ना होगा। तुम्हें अपने सारे ज्ञान का त्याग करना होगा ताकि एक नई वास्तविकता के बारे में सीख सको। हां, यह बहुत चुनौतीपूर्ण हो सकता है परंतु यह तुम्हारे सबसे बेहतरीन कदमों में से एक होगा, जिससे संभावनाओं का एक असीम ब्रह्माण्ड सामने आ जाएगा और अनमोल उपहारों का अभाव नहीं होगा। लेखक मार्सल प्रोस्ट ने अपने निरीक्षण के बाद बहुत ही सुंदर शब्दों में कहा है: "जीवन की प्रतीक्षा मत करो। इसकी चाहना मत करो। सजग रहो। हर क्षण, हर पल सजग रहो क्योंकि चमत्कार यहीं और अभी होंगे।" ई. ई. क्यूमिंग्स ने तो और भी संक्षेप में कहा है: 'जो आप सही मायने में हैं, वह बनने और उसी रूप में फलने-फूलने के लिए वास्तव में साहस की आवश्यकता होती है। '

हम कार से बाहर आए और जूलियन मुझे हाथ से थाम कर एक इमारत में ले गए।

"अच्छा दोस्त! अब तुम अंधेरे से बाहर आ कर, इस अद्‌भुत विस्मयकारी स्थान को देख सकते हो।"

मैंने अपनी पट्‌टी उतार दी। मैं देखते ही पहचान गया कि हम अपनी स्थानीय आर्ट गैलरी के प्रमुख प्रदर्शन कक्ष में थे। जूलियन खड़े दांत निपोर रहे थे।

इस गैलरी में पूरे एक माह से इंटरनेशनल सल्वाडोर डाली की प्रदर्शनी लगी है। वे उनके कुछ जाने-माने चित्र लाए हैं। उनकी कला कमाल की है। मैं यहां हर रोज़ घंटों इन चित्रों को

ताकते हुए बिता देता हूं। मैं तुम्हें यहां इसलिए लाया क्योंकि यह तीसरे चरण के बिंदु का संदर्भ है। जब तुम अपने जीवन के झूठ को त्याग कर, सजग भाव से अपने चुने पथ पर चलने लगते हो तो तीसरा चरण अपने-आप आगे आएगा और तुम दुनिया को एक नई नज़र से देखने लगोगे, जैसा कि मैंने पहले भी बताया। अब तुम जानते हो कि इस पथ पर चलना इतना सरल भी नहीं होता। पर अगर तुम अपने लिए एक भला जीवन जीना चाहते हो तो तुम्हें इसी पर चलना होगा। 'रोज़मर्रा के साहस के बहुत से साक्षी नहीं होते परंतु तुम्हारा भी कुछ कम भला काज नहीं है क्योंकि यहां न तो तुम्हारे नाम से नगाड़े बजेंगे और न ही भीड़ तुम्हारे नाम की जयजयकार करेगी।' रॉबर्ट लुईस स्टीवन्सन लिखते हैं। जिस पट्टी के कारण तुम इतनी बड़ी और हसीन दुनिया को नहीं देख पा रहे थे, अब वह हट गई है और तुम अपने जीवन को एक कलाकृति के रूप में देख सकोगे। साल्वाडोर की कला भी अद्वितीय है। वे दुनिया को एक अलग ही नज़र से देखते हैं नतीजन उन्होंने ऐसी कलाकृतियां बनाई हैं जो सृजन के क्षेत्र में बेजोड़ हैं। मैं चाहता हूं तुम अपने जीवन के अंधकार से बाहर आओ। मैं चाहता हूं कि तुम सजग क्षमता के साथ अपने दिन इस तरह बिताओ कि एक दिन अवचेतन क्षमता के छोर तक जा पहुंचो। मैं चाहता हूं कि तुम्हारा जीवन एक कला का उत्कृष्ट नमूना बन जाए।"

"तुम्हारे व हम सबके भीतर वह क्षमता विद्यमान है परंतु अंतर इतना ही होता है कि क्या हम उसे पाने के लिए आवश्यक आंतरिक तैयारी करने के लिए प्रस्तुत हैं? दोस्त! अपने जीवन के साल्वाडोर बनो और देखो कि कैसे-कैसे विस्मय सामने आते हैं।"

इसके बाद मैं और जूलियन एक साथ घूमते हुए कला को सराहते रहे। एक-दूसरे के साथ का आनंद उठाते रहे। जूलियन ने मेरे साथ और खुल कर बात की और बताया कि उन्हें एक वकील के रूप में किन व्यक्तिगत चुनौतियों का सामना करना पड़ा और किन परिस्थितियों के कारण वह सब कुछ त्याग कर, अपने उन प्रश्नों की तलाश में भारत चले गए, जिनके साथ वे जाने कब से जूझ रहे थे। उन्होंने मुझे अपने वकील जीवन के रोमांचों व उनके मुकदमों की जिरह के किस्से सुना-सुना कर इतना हंसाया जितना मैं पिछले एक लंबे अरसे से नहीं हंसा था। फिर उन्होंने एक ऐसी घटना बताई जिसने मुझे रूला ही दिया। उन्होंने बताया कि जब वे सार्वजनिक रूप से वकालत का काम छोड़ रहे थे तो उन्हीं दिनों उनकी अपनी बच्ची एक कार दुर्घटना में मारी गई। किसी पियक्कड़ ट्रक ड्राईवर ने उस कार को ठोंक दिया था, जिसमें वह सवार थी। इसके बाद उन्होंने अपना काम पूरी तरह से छोड़ दिया।

उन्होंने मिल्टन एरिकसन के शब्दों का संदर्भ देते हुए कहा, "जीवन आपको पीड़ा ही देगा। आपका कर्तव्य बनता है कि आप उसे आनंद में बदलें।" जीवन ने मुझे भी बहुत से संघर्ष व पीड़ाएं सौंपे हैं परंतु मैं बच गया और मुझे कोई भी चीज़ झुका नहीं सकती। मैंने यह भी पाया है कि हमारे साथ जीवन में जो भी घटता है, उसका वही अर्थ होता है, जो अर्थ हम उसे देते हैं। पीड़ा व संघर्ष केवल परख से ही पैदा होते हैं। जब हम परख छोड़ कर वस्तुओं

को सकारात्मक या नकारात्मक का लेबल देने की बजाए, अपनी बेहतरी के लिए सामने आए अवसरों के रूप में लेने लगते हैं तो हमारे जीवन रूपांतरित हो जाते हैं। अच्छे या बुरे अनुभव जैसा कुछ नहीं होता। अगर मेरी बात समझ पा रहे हो तो जीवन ऐसा ही है, हम जिस तरह से अपने अनुभवों व प्रक्रियाओं की व्याख्या करते हैं, उसी तरह हमारी वास्तविकता आकार लेती है। हमारे विचार ही कई तरह से हमारा संसार गढ़ते हैं। मैं इस जीवन को एक अद्भुत अनुभव के रूप में देखता हूं। कठिन समय मुझे और बुद्धिमान बनाने के लिए आते हैं। जब सब सही रहता है तो मैं आनंदित होता हूं कि मैं प्राकृतिक नियमों के अनुसार चल रहा हूं। जैसा कि हमें पीटर ने पिछले सप्ताह बताया था, दोस्त! जीवन बहुत छोटा है और अपने भीतर छिपी महानता को पाने के लिए प्रतिदिन कदम उठाने होंगे। जीवन एक संवेदनशील यात्रा है और मुझे इसका भरपूर आनंद लेना है।"

अध्याय 7

जिज्ञासु गुरूओं से निर्देश पाता है।

पहले अपने–आप से कहें कि आप क्या होते; और फिर वह करें जो आपको करना ही है।

– एपिकटेटस

यदि मुझे यह पता चले कि सबसे निर्धन तथा दुष्ट अपराधी मेरे ही भीतर छिपा है और मुझे ही अपनी तरस की सबसे बड़ी आवश्यकता है; और स्वयं मैं ही वह शत्रु हूं, जिसे प्यार किया जाना चाहिए, तो क्या हो?

– कार्ल जुंग

लगभग एक माह पहले, जूलियन से आर्ट गेलरी में भेंट हुई थी। मैं हर सुबह जल्दी उठता, मौन भाव से मनन करता, अपने भीतर उतनी गहराई तक जाने की चेष्टा करता जितना मैं पहले कभी नहीं गया था। मैं अब अपने उन सभी पुराने ढांचों से पूरी तरह परिचित हो गया था, जिनके अनुसार अपने जीवन को चलाता आ रहा था। जूलियन की कोचिंग से पूर्व मैंने कभी उनके बारे में सोचा तक नहीं था। सजगता वास्तव में नए चुनावों को जन्म देती है। यदि मैं यही नहीं जानता था कि किस सुधार की आवश्यकता थी तो मैं जीवन जीने के बेहतर तरीके चुन भी कैसे सकता था? और इस तरह मेरे नए चुनाव वास्तव में नए बदलावों की ओर ले चले। मैं यह देखने लगा कि अक्सर मैं किस तरह अपने–आप को दबा देता और अपने जीवन के आकार को छोटा कर देता। मैं अपने व्यवहार की सीमाओं से भी पार गया और जीवन में पहली बार कुछ गंभीर आत्म–परीक्षण किए कि उनमें मूल कारण क्या थे। यह वास्वत में मेरे लिए उल्लेखनीय उत्साहवर्द्धक समय था। मैं अपने–आप को जानने लगा था। यह समय उदासी से भी भरा था क्योंकि मैं अब देख सकता था कि मैंने कितनी बार अपने–आप को ही छला था।

जूलियन से अलग होने के बाद वाले सप्ताहों में, ज्यों ही मैं अपने पुराने आत्म–पराजित

करने वाले व्यवहार की ओर मुड़ता तो अपने–आप को वहीं रोक देता। अब मैं देख सकता था कि वही बर्ताव मुझे कितनी पीड़ा व संघर्ष के बीच ले जाते थे। जबकि पहले मैं बिना किसी सोच के, नकारात्मक चिंतन करने लगता था, अब मैं किसी भी प्रतिक्रिया से पूर्व थम कर विचार करता था। अब तो यह यकीन करना भी मुश्किल लगता था कि किस तरह मैं लोगों व हालात के हाथों का खिलौना बना हुआ था। यदि पुराने दिन होते तो मैं निश्चित रूप से अपनी भावनाओं व प्रतिक्रियाओं तथा लोगों को दोषी ठहरा देता। अब जूलियन की बुद्धिमताभरी सलाह को धन्यवाद देना चाहूंगा कि मैंने यह जिम्मेदारी लेना आरंभ कर दिया था – सब कुछ मुझ से ही आरंभ हुआ था। मेरे लिए यह निरीक्षण बहुत ही अद्‌भुत रहा और मैं स्वयं को कहीं बेहतर महसूस करने लगा। शायद मैं सही मायनों में वृद्धि कर रहा था और एक ऐसा व्यक्ति बनने की तैयारी में था, जैसा कि मैं हमेशा से बनना चाहता था।

मैंने जूलियन को फोन किया तो उन्होंने भी पुष्टि की कि ये सभी लक्षण मेरे विस्तार व वृद्धि से संबंध रखते थे। उन्होंने यह भी बताया कि न्यूरोवैज्ञानिकों ने हाल में ही पता लगाया है कि मनुष्य के पास किसी भी हालात के लिए अपनी प्रतिक्रिया देने से पूर्व विचार के लिए .25 सैकेंड का समय होता है। यदि वह उस समय सजगतापूर्वक निर्णय ले तो एक बेहतर चुनाव कर सकता है। उन्होंने कहा कि इस अल्प समय के दौरान ही मैं अपने जीवन में बहुत कुछ बदल सकता था और उसे एक नया आकार दे सकता था। ऐसे निर्णय ले सकता था जो मुझे और अधिक सजग अवस्था में ले जा सकते थे।

मैं जितना जूलियन द्वारा दी गई बुद्धिमता व समझ के बारे में विचार करता था, उतना ही सुनिश्चित होता जाता था कि उन्होंने वास्तव में एक सुंदर जीवन जीने के लिए गहन परंतु असाधरण रूप से व्यावहारिक दर्शन विकसित किया था। हां, मेरे नियमित चुनाव वाकई मेरे जीवन को प्रभावित करने की क्षमता रखते थे। मैं जो भी चाहता था, उसे पाने के लिए मेरी अपनी भी बहुत बड़ी भूमिका थी। परंतु मेरी नियति मेरे लिए क्या परिणाम लाने वाली थी, एक मनुष्य होने के नाते इस बात पर नियंत्रण पाना या इसे वश में करना मेरे बस में नहीं था। जूलियन अक्सर अपने कोचिंग सत्रों में मुझसे कहतेः 'तुम अपना सबसे बेहतर प्रदर्शन दो और बाकी सब कुदरत पर छोड़ दो।' मैं तो केवल एक श्रेष्ठ मनुष्य के रूप में यही प्रयत्न कर सकता था कि अपने जीवन के हर चरण पर एक सच्चे मनुष्य की तरह जी सकूं और इस तरह जीवन मुझे स्वयं वहां ले जाता है, जहां जाने के लिए मुझे चुना गया था। हो सकता था कि मैं हमेशा सही जगह न पहुंच सकूं पर जूलियन ने हमेशा यही सिखाया था कि मुझे पूरे भरोसे के साथ उसे स्वीकार करना चाहिए क्योंकि वही स्थान होगा जो मुझे सर्वाधिक वृद्धि, आरोग्य व शिक्षण प्रदान करेगा। बेशक कोई बहुत बड़ी शक्ति है जो इस सारे तमाशे को संचालित करती है, एक बहुत बड़ी व्यवस्था। हो सकता है कि एक मनुष्य के सीमित अवबोध के साथ मैं उसे देखने व समझने में सक्षम ही न हो सकूं।

मैं अपनी युवावस्था में टेनिस खेलने का शौक रखता था और कई बार जूलियन का दर्शन मुझे इस खेल की याद दिला देता। वे नियति और चुनाव तथा हमारी नियति पर उनके प्रभाव

के बारे में ऐसी ही कुछ बातें कहते थे। मैं केवल उसी चीज़ पर नियंत्रण कर सकता था, जो खेल के मैदान में, कोर्ट में मेरी ओर घटती थी। मेरे लिए बस यही आवश्यक था कि मैं सही तरह से अपनी डिलीवरी दूं और अपना सबसे बेहतरीन शॉट दूं। जीवन के प्रति भी मेरा यह कर्तव्य बनता था कि मैं अपने प्रकाश को जगमगाने दूं और अपने सपनों के आसपास कदम उठाऊं। यदि मैं इससे कुछ भी थोड़ा सा कम करता तो इसका अर्थ होता कि मैं उन उपहारों का अनादर कर रहा था, जो मुझे सौंपे गए थे पर जब एक बार मैं वैसा कर देता तो और गेंद दूसरी ओर चली जाती, तो मुझे स्वयं को परिणामों से काट कर, रिलैक्स होना था। मुझे अपने इस असीम बुद्धिमता से भरे ब्रह्माण्ड की मैत्री पर भरोसा करना सीखना था। यह मेरा भय था जिसके कारण मैं परिणामों के लिए चिंता प्रकट करता था। जूलियन ने वादा किया था कि जब मैं एक बार अपने भय से मुक्त हो जाऊंगा और विशाल योजना में विश्वास रखने लगूंगा तो मैं देख पाऊंगा कि हमारे आसपास सब कुछ बेहतरी के लिए ही कारगर होता है।

मैंने जूलियन से भेंट के बाद अपने व्यक्तिगत उत्तरदायित्व व जवाबदेही में भी पहले से बहुत सुधार किया था। हालांकि मैं इस बात को सराहता था कि नियति ने पहले से ही एक रफ खाका तैयार कर रखा है परंतु अब मुझे इस बात के लिए पहले से भी कहीं अधिक विश्वास हो गया था कि मैं नियति के रिक्त स्थानों को भरने के लिए जिन निर्णयों व चुनावों का सहारा लूंगा, उन्हीं के आधार पर मेरी नियति अपना अंतिम प्रारूप लेगी। यदि मैं प्रामाणिक रहा, सब कुछ समुचित रूप से किया, अपना मनचाहा पाने के लिए प्रतिभा का सदुपयोग किया, अपने सपनों को जीया तो मेरे मन में यह सवाल कभी आ ही नहीं सकता था कि मेरा जीवन इससे भी कहीं बेहतर तरीके से काम कर सकता था। जूलियन ने एक बार कहा था: 'स्वर्ग भी उनकी मदद करता है, जो अपनी मदद स्वयं करते हैं।' उन्होंने कहा था कि हम काफी हद तक अपने भाग्य का निर्माण स्वयं कर सकते हैं। यह वास्तव मे संतुलन का बड़ा सा खेल था, जो कि मेरे चुनावों की शक्ति तथा नियति के हाथों के बीच था। बातों के घटने या उन्हें स्वयं होने देने के बीच का संतुलन था।

अपनी इस सारी नई शिक्षा के दौरान मैं अपनी जागरूकता व सजगता को विशेष रूप से सराह रहा था क्योंकि वे बहुत ही शक्तिशाली थे और मैं अब जानने लगा था कि मैं अपने जीवन में किन प्रतिरोधों के साथ जीता आया था। 'अपने ही प्रतिरोधों का निरंतर सामना करना।' जूलियन इसके लिए विशेष रूप से आग्रही थे और अब मैं स्वयं देखने लगा था कि मैं किस तरह अपने ही जीवन से भागता आया था। लेखक साम कीन ने एक बार लिखा था : 'हम उन्हीं चीज़ों से पकड़े जाते हैं, जिनसे बच कर भागते हैं।' कितने सुंदर शब्द हैं।

जूलियन ने मुझसे आग्रह किया था कि मैं स्टोन इंस्टीट्यूट के स्कूल हाउस में मिलूं, जो कि प्रतिभाशाली बच्चों के लिए खोला गया था। उन्होंने मेरे साथ देर शाम की मीटिंग रखी थी और मैं सोच रहा था कि आज के शिक्षण सत्र में मेरे रोमांचप्रिय कोच ने क्या योजना बना रखी थी। मैं यह भी विचार कर रहा था कि मुझे जूलियन की इस कोचिंग का लाभ कब तक मिल सकेगा। मीडिया को अब तक यह पता नहीं चल सका था कि जूलियन शहर में आ गए

थे और मैं जानता था कि वे जान कर अपनी पहचान को छिपाए हुए थे। वे अस्पताल में पीटर के दल की सेवा करते हुए, गैलरी में कला का आनंद लेते हुए, मेरे साथ काम करते हुए, ध्यान–मनन, पठन–पाठन आदि के बीच अपना समय बिता रहे थे। वे प्रायः निर्जन वन प्रांतर में निकल जाते ताकि प्रकृति के साथ तादात्मय स्थापित कर सकें। जूलियन वाकई बहुत ही सादगीप्रिय लोगों में से थे। मुझे यह भी स्पष्ट दिखने लगा था कि वे वाकई एक महान आत्मा थे।

ज्यों ही मैंने इमारत में कदम रखा तो पाया कि जूलियन की लिखावट में एक पर्चा दीवार पर चिपकाया गया था। उस पर लिखा था : जीवन एक ऐसा स्कूल है, जहां हम वृद्धि पाते हैं, यह हमें ऐसे अवसर प्रदान करता है, जो हमें इस ग्रह पर अपने प्रवास के दौरान सीखने ही होते हैं। हम स्कूलहाउस पृथ्वी पर रहते हैं और तुम्हारा एक अध्यापक बहुत उत्सुकता से तुम्हारे आने की बाट देख रहा है। मैं कमरा नंबर 101 में हूं। आज का प्रोग्राम है: 'अपने बेहतरीन अस्तित्व या बोध को कैसे जागृत करें। पन्ने के अंत में संक्षेप में लिखा था, द मौंक हू सोल्ड हिज़ फरारी और साथ ही एक स्माइली का चिन्ह भी अंकित था।

मैं अंधेरे गलियारे में आगे बढ़ता गया। अचानक ही मुझे ड्रम बजने का स्वर सुनाई दिया। बेशक यह आवाज कमरा नंबर 101 से ही आ रही थी। मुझे कोई अनुमान नहीं था कि इसके बाद क्या होने वाला था। दरवाजा बंद था और वहां जाते ही सुर तेजी से सुनाई देने लगे। मेरा दिल तेजी से धड़क रहा था। दरवाजे के दूसरी ओर क्या हो रहा था?

"उन स्थानों पर जाओ, जिनसे तुम्हें भय लगता हो।" मैंने जूलियन से मिली शिक्षाओं के आधार पर, जिन वाक्यों के साथ जीवन जीने का निर्णय लिया था यह भी उनमें से एक था, इसलिए मैं पूरे साहस के साथ दरवाजा खोल कर भीतर चला गया। एक बड़े से गोले में सैकड़ों छोटी मोमबत्तियां जल रही थीं और उनके अतिरिक्त पूरे कमरे में अंधेरा था। वृत्त के बीच जूलियन अपना चोगा पहने खड़े थे और पूरी लय व नाटकीय अंदाज में ड्रम बजा रहे थे। उनकी आंखें बंद थीं और वे मन ही मन कुछ बुदबुदा भी रहे थे। उन शब्दों का अर्थ यही समझ में आया: 'तुम्हारे ही हृदय के भीतर छिपे हैं सारे उत्तर! अपने भय से ऊपर उठो, तुम सीख जाओगे उड़ना।' वे बारंबार इन्हीं शब्दों को दोहरा रहे थे। पांच मिनट बाद उन्होंने वाद्ययंत्र बजाना बंद किया तो चारों ओर सन्नाटा छा गया। उन्होंने आंखें खोल दीं।

"डार! स्वागत है। मेरी गैरपारंपरिक शिक्षण पद्धतियों के लिए क्षमा करना!" उन्होंने हंसते हुए कहा। जैसा कि हम परिणामों से ही परखते हैं। ज्यों–ज्यों वक्त बीतेगा, तुम पाओगे कि मेरा कोचिंग सत्र तुम्हारे जीवन में चमत्कार लाने में सफल रहा। बस विश्वास करते रहो। तुम अब तक एक उल्लेखनीय छात्र के रूप में सामने आए हो और मैं इसके लिए तुम्हें सम्मान देना चाहता हूं और मैं यह भी जानता हूं कि पहले ही अपने बृहत्तर जीवन की ओर चल भी पड़े हो।"

"जूलियन, मुझे कहां बैठना है?" मैं अपनी अगली कोचिंग के बारे में विचार कर रहा था।

“आओ, इस ‘ट्रुथ सर्कल’ के बीच में बैठो।” नेटिव अमेरिकी भारतीय यह मानते हैं कि जीवन एक चक्र में ही चलता है। इसे वे जीवन का चक्र कहते हैं। जीवन के अंत में हम वहीं लौट आते हैं, जहां से हमने यह यात्रा आरंभ की थी। एक केंद्र संपूर्णता व अखंडता को परिभाषित करता है। आज इसी केंद्र के बीच, हम केवल सत्य ही बोलेंगे। याद रखो, जीवन का उद्देश्य यही है कि हमें अपने संपूर्ण घर की ओर लौटना है, अपने प्रामाणिक स्वरूप तक वापिस आना है –एक ऐसा स्वरूप जो निर्भीक, सर्वज्ञानी तथा असीम स्नेह से भरपूर है। जीवन का उद्देश्य यही है कि संपूर्णता के अंतराल को पाट दिया जाए। इंटेग्रिटी गैप को समाप्त कर दिया जाए।”

“क्या आप मुझे इंटेग्रिटी गैप के बारे में विस्तार से बताना चाहेंगे?”

“नहीं दोस्त, मैं तुम्हें केवल इसका परिचय दे रहा हूं क्योंकि तुम इसके लिए तैयार हो। मैंने तुम्हें उस प्रक्रिया के बारे में बताया है, जब मनुष्य जन्म के बाद अपने सच्चे स्वरूप से दूर होता चला जाता है। हम पूरी तरह से विशुद्ध व प्रामाणिक रूप में जन्म लेते हैं। हम पूरी तरह से मुक्तमन व निर्भीक होते हैं। हम उन सभी प्राकृतिक नियमों की जानकारी के साथ ही इस संसार में आते हैं, जो इस संसार को संचालित करते हैं। परंतु, मैं जानता हूं कि अब तुम भी इस बारे में अनजान नहीं हो – हम अपने आसपास के लोगों को प्रसन्न करना चाहते हैं और भीड़ में पूरी तरह से फिट होना चाहते हैं....

वही भीड़ जो वास्तविकता को जानने की बजाए, दीवार पर दिख रही आकृतियों को ही आजीवन सच मानती है पर सच को कभी नहीं जान पाती।” मैंने प्लेटो की रिपब्लिक वाले उसी उदाहरण का वर्णन किया, जो कैमडन गुफाओं में मुझे दिया गया था।

“बिल्कुल ठीक! जूलियन ने अपनी मुट्ठी हवा में लहराई। यह वही प्रक्रिया है जिसमें हम अपने सच्चे स्वरूप को त्याग कर ऐसे व्यक्ति के रूप में बदल जाते हैं, जो हम नहीं हैं। हम अपने आसपास के लोगों की मान्यताओं, धारणाओं व विश्वासों को ही अपना बना लेते हैं, इसे हम आसपास के लोगों के विचारों को अपना मान लेना कहते हैं। और जब हम ऐसा करते हैं तो एक अंतराल पैदा होने लगता है। हम अपना मूल स्वभाव त्याग कर एक छद्म आवरण ओढ़ लेते हैं। हमारे सार्वजनिक स्वरूप तथा मूल रूप के बीच अंतर जितना अधिक होता है, हमार जीवन उतना ही कम तरीके से कारगर होगा। अंतराल जितना अधिक होगा, ब्रह्माण्ड हमें उतना ही कम समर्थन देगा क्योंकि हम भूल गए हैं कि हम कौन हैं और हम उन नियमों के अनुसार नहीं चल रहे, जिनके अनुसार हमें चलना चाहिए था। जब यह अंतराल चौड़ा होता जाता है, हम आनंद व ऊर्जा के अभाव में बहुत छोटा जीवन जीने लगते हैं। तब हमारा व्यक्तित्व असली नहीं होता। यह एक ऐसी छवि है जिसे आपने लोगों से पसंद पाने के लिए रचा है, यह प्यार पाने के लिए नहीं बनी है। तुमने भयवश एक सामाजिक मुखौटा ओढ़ लिया है।

“सच कह रहे हैं?”

“बिल्कुल सच। एक छोटा बच्चा अपने आसपास के लोगों जैसा बनने की चाहना रखता है क्योंकि वह उनका प्यार पाना चाहता है। उसे भय है कि वह पूरी तरह ढांचे में फिट नहीं हो सकेगा। यह बच्चा अपने मां–बाप और आसपास के लोगों की नकल कर रहा है और उम्मीद करता है कि अगर वह उनके जैसा बनेगा तो वे उसे वही मान्यता प्रदान करेंगे, जिसे पाने के लिए वह इतना बेताब है। हर व्यक्ति के मन में यह इच्छा होती है कि उसे समाज में सराहा जाए। तो इसी तरह हम एक जाल में फंसते चले जाते हैं। हम अपने–आप को छलने लगते हैं, अपने सपनों को त्याग कर, ऐसे रास्ते अपना लेते हैं, जो हमारे लिए बने ही नहीं थे।

इस तरह यह संपूर्णता अंतराल पैदा होता है जो हमारे जीवन को सदा के लिए बंद कर देता है। यह सब भय से ही चालित होता है। अब मैं देख सकता हूं कि किसी व्यक्ति के लिए अपने–आप पर काम करना कितना महत्वपूर्ण हो सकता है। जब हम अपने भय से आगे जाने के लिए आवश्यक आंतरिक कार्य कर लेते हैं तो वे साए मानवीय सजगता के प्रकाश में आ जाते हैं। और जैसा कि आपने बताया, उनके प्रकाश में आते ही विलीन होने का समय आ जाता है। वे भय हमें छोड़ कर चले जाते हैं।”

“दअरसल डार, वे भय न केवल हमें छोड़ते हैं बल्कि प्रेम का रूप ले लेते हैं। जैसा कि मैंने कहा कि अंधकार कुछ नहीं है। प्रकाश की अनुपस्थिति को ही अंधकार कहा जाता है। जब आप अपने अस्तित्व के अंधकारमय कोनों पर सजगता का प्रकाश डालते हैं तो वे जगमगा उठते हैं। इस तरह जहां भय था, वहां प्रेम का साम्राज्य हो जाएगा। याद रखें कि इनलाइटेंड होने का क्या अर्थ है यानी आप प्रकाश से भर रहे हैं। आपका एक–एक कदम उस अंतराल को पाटता जाएगा और आप अपने लिए नियत प्रकाश तक जा पहुंचेंगे। जब भी भय सताए तो पूरे साहस के साथ कदम बढ़ाएं और अपने मूल स्वभाव को स्मरण करते हुए, उसे प्रेम में बदल दें। आप संसार के सामने अपने सच्चे स्वरूप को लाने के लिए जो भी कदम बढ़ाएंगे, वह आपको आपके उस रूप की ओर ले जाएगा जिसके साथ आपका जन्म हुआ था। तभी तो मैं कहता हूं कि आत्म–सुधार की अवधारणा ही मूर्खतापूर्ण है। हमारा काम यह नहीं कि हम सुधार लाएं – हम तो पहले से संपूर्ण हैं और जो संपूर्ण हो, उसमें कोई सुधार नहीं लाया जा सकता। दोस्त! क्या मैंने तुम्हें सुनहरे बुद्धा की कहानी सुनाई थी?”

“नहीं, शायद आपने नहीं सुनाई।”

जूलियन सत्य के केंद्र में जा बैठे और अपनी टांगें मोड़ लीं। वह कमरा टिमटिमाती मोमबत्तियों के बीच रहस्यमयी दिख रहा था। जूलियन का चेहरा शांति से दमक रहा था और ऐसा लगता था मानो उनकी नज़र ने मेरे भीतर गहराई तक कहीं टकटकी बांध ली हो। मानो वे मेरे भीतर देख रहे थे और मेरे भीतर के सबसे भले व वास्तविक अंश को बड़ी कोमलता से बाहर आने के लिए पुकार रहे थे।

“कई वर्ष पहले की बात है। पूर्व में, लामाओं का एक दल था, उनके पास एक सुनहरे बुद्ध की विशाल मूर्ति थी, जिसकी वे पूजा किया करते। वे उसके आगे प्रार्थना करते, ध्यान लगाते और उसकी उपस्थिति में स्वयं को धन्य पाते। एक समय आया जब उनके स्थान पर

विदेशी हमलावरों ने धावा बोल दिया। लामाओं को डर था कि वे अपने समुदाय के उस अनमोल खज़ाने को खो देंगे इसलिए वे उसे बचाने के तरीके खोजने लगे। एक लामा ने सादा परंतु प्रभावी उपाय सुझाया। उसने कहा कि वे अपने बुद्ध को चिकनी मिट्टी की परतों तले छिपा देंगे। इस तरह उसे हमलावरों की नज़रों से बचाया जा सकता था। सभी ने मिल कर ऐसा ही किया और हमलावर प्रतिमा को नहीं देख सके। वह उनके कहर से बच गई।"

"बहुत अच्छे।"

"पर दोस्त! कहानी अभी यहीं खत्म नहीं होती। सालों बाद, एक युवा भिक्षु ने अपनी सुबह की सैर के दौरान पर्वत की धूल के बीच कुछ चमकते हुए देखा। वह अक्सर वहां से आया–जाया करता था। उसने अपने भिक्षु भाई–बहनों को बुलाया और वे मिल कर उसकी परतें उतारने लगे और वे यह देख कर द्रवित हो उठे कि हर परत के बाद भीतर से सुनहरे बुद्ध झांकते हुए दिख रहे थे। इस तरह और अधिक सुवर्ण दिखाई देने लगा। अंत में जब सारी माटी उतार दी गई तो सुनहरे बुद्ध अपनी पूरी आभा के साथ प्रकट हो उठे। उन्होंने अपने उस अनमोल खज़ाने को पा लिया था।"

"बहुत अच्छी कहानी है।" मैंने कहा

"यह आज रात इस स्कूल हाउस में हमारे लिए शक्तिशाली रूपक का काम करेगी। देखो, यह जीवन शिक्षा के लिए ही बना है। हर दिन जीवन कुछ सबक देगा और अगर तुम कुछ सीखना चाहते हो तो तुम्हें इस पर ध्यान देना ही होगा। समस्या यह है कि अधिकतर लोग इस पर ध्यान नहीं देते। वे गहरी निद्रा में बेसुध हैं। जैसा कि तुम जानते हो वे आत्मजागरण के पहले चरण में ही बैठे हैं। पर जब तुम आगे बढ़ते हुए पूरी सजगता के साथ अपने सच्चे स्वरूप को पाने का दावा करते हो तो अपने मूल स्वभाव को जानने लगते हो। हर दिन तुम्हारे लिए ऐसे अवसर पैदा करेगा कि तुम अपने मूल सुवर्ण व बुद्धिमता पर पड़ी धूल की परत को हटा सको और तभी मैं तुमसे बार–बार कहता हूं कि तुम्हें अपने घर लौटने की वापसी यात्रा में संपूर्णता अंतराल को भरना होगा और आत्म–अन्वेषण करते हुए, अपने भीतर की गहराईयों तक काम करना होगा। तुम्हें अपने प्रतिरोध का सामना करने के लिए भी समय निकालना चाहिए और जब भी भय या कुंठा सतह पर दिखें तो उनका निरीक्षण करना चाहिए। उस समय दूसरों पर इसका दोष देना और अपनी जिम्मेदारी से भागना गलत होगा। जब तुम्हें अपने गुस्से व कुढ़न के लिए दूसरों को दोष देते हो, तो उन सायों से पीछा छुड़ाने का एक अनमोल अवसर गंवा देते हो, जो तुम्हारे भीतर छिपे बैठे हैं। तुम अपने भीतर गहराई तक जाने और अवचेतन को चेतना के स्तर तक लाने का अवसर गंवा देते हो, जहां ला कर उसे मुक्त किया जा सकता था, आरोग्य प्रदान किया जा सकता था। आज जो भी व्यक्ति जीवित है, उसके प्रामाणिक स्वरूप पर धूल की परतें जमा हैं। कईयों के पास दूसरों की तुलना में कहीं अधिक परतें जमा होती हैं। हम अपने प्रामाणिक व सच्चे स्वरूप को भुला कर इन परतों को ही असली मान लेते हैं और भीड़ का हिस्सा बन जाते हैं।"

"और इसी प्रक्रिया को हम कह दे सकते हैं कि हम अपने आसपास के लोगों के विचारों

व धारणाओं को अपना मानने लगे हैं?" मैंने कहा।

"बिल्कुल ठीक! जीवन का उद्देश्य यही है कि हम इन परतों को हटाएं ताकि हमारे भीतर से सोना चमक उठे और वह दिन के प्रकाश में दिखाई दे जैसे धूल की परतें हटाने से सुनहरे बुद्ध प्रकट हुए थे। और सबसे रोचक बात यह है **कि हर साहसपूर्ण कार्य, हर नेक काम और अपने पर ली गई जिम्मेवारी तुम्हारे लिए लाभदायक होगी; जितनी बार तुम वही करोगे, जो तुम्हें सही लगेगा या अपने दिल की सुन कर चलोगे, उतनी ही बार तुम्हारे पर चढ़ी धूल की परत उतरेगी, तुम्हारे भीतर की चमक दिखाई देने लगेगी। जब भी तुम भय की बजाए सप्रेम आगे आओगे, तुम वही बनते जाओगे, जो कि तुम्हें होना चाहिए था।** इसी तरह तुम अपने-आप को जान सकते हो इसी तरह अपने जीवन का सबसे बड़ा दांव खेल सकते हो। इसी तरह अपनी नियति को जी सकते हो।"

जूलियन एक पल के लिए थमे। "तो मैं आज तुम्हें यह सिखाना चाहता हूं कि इस स्कूलहाउस में तुम जो सर्वाधिक महत्वपूर्ण पाठ सीख सकते हो, वह यह है कि इंटेग्रिटी गैप को भरना ही जीवन का उद्देश्य है। आदर्श रूप से कोई अंतराल होना ही नहीं चाहिए और तब संसार के सामने जिस व्यक्ति को प्रस्तुत करोगे, वही तुम्हारा सच्चा स्वरूप होगा। आदर्श रूप से वही व्यक्ति तुम्हारे प्रामाणिक स्वरूप की सच्ची झलक देगा। तुम्हें किसी का प्यार पाने या किसी के अनुसार, उसके ढांचे में फिट होने व उनका प्यार पाने की आवश्यकता महसूस नहीं होगी। तुम अपने-आप से इतना प्यार करोगे कि तुम्हारे लिए उनका प्यार करना या न करना कोई मायने नहीं रखेगा। जब तब तुम अपने प्रति सच्चे रहोगे, तब तक सब कुछ सही तरह से चलता रहेगा। और मेरे दोस्त! एक मनुष्य के रूप में वही तुम्हारी सबसे बड़ी सफलता होगी।"

"जूलियन आपका दर्शन बहुत गहरा है। वास्तव में यह जीवन को बदलने की क्षमता रखता है। मुझे इस इंटेग्रिटी गैप यानी संपूर्णता अंतराल को भरने के लिए आवश्यक रूप से और कौन से कदम उठाने चाहिए?"

"नियमित रूप से डायरी लेखन तुम्हारे लिए कारगर हो सकता है। इस तरह तुम अपने-आप को गहराई तक जान सकोगे और तुम्हें अपने साथ बने संबंध के बारे में पता चलेगा। इसी सजगता के साथ, तुम बेहतर चुनाव करने का संकल्प ले सकते हो। मैंने ध्यान व मौन के बारे में भी बताया था। प्रतिदिन कुछ समय मौन के बीच बिताना भी जरूरी है क्योंकि इस तरह तुम्हें अपने प्रामाणिक स्वरूप को जागृत करने में मदद मिलेगी। निःसंदेह यदि तुम स्कूलहाउस पृथ्वी पर सफल होना चाहते हो, तो तुम्हें अच्छे अध्यापकों की भी आवश्यकता होगी। और इस तरह तुम पूरी गरिमा के साथ आत्मजागरण की सात अवस्थाओं में से चौथी अवस्था तक आ जाओगे।"

"जागरण के पथ पर चल रहे जिज्ञासुओं को उन यात्रियों के रूप में लिया जा सकता है जो एक पुराने संसार को त्याग कर, नई दुनिया में कदम रखने जा रहे हैं। जब भी तुम किसी नई जगह पर जाते हो तो तुम्हें गाइडों की आवश्यकता होती है ताकि वे तुम्हें मार्ग दिखा

सकें। चौथे चरण को हम 'गुरूओं का निर्देश प्राप्त करने' से जोड़ सकते हैं। इसी अवस्था में जिज्ञासु अनेक अध्यापकों, पुस्तकों व अन्य प्रकार के शिक्षण संसाधनों से स्वयं को जोड़ने का प्रयास करता है। चौथे चरण में ही साधक घंटों डायरी लेखन करते हैं और एक के बाद एक पुस्तकें पढ़ते चले जाते हैं। कभी–कभी आपके भीतर भय भी सिर उठा सकता है। आप कुंठित व भयभीत अनुभव करते हैं क्योंकि आपकी दुनिया बदल रही है। आपको थोड़े से ही समय में बहुत कुछ सीखना है। सब कुछ बदलाव की प्रक्रिया में है। विभिन्न स्त्रोतों से शिक्षा पाने के बाद तुम एक अच्छे छात्र की भूमिका निभा रहे हो और सच के प्रति तुम्हारी वचनबद्धता पहले से कहीं अधिक तीव्र हो उठी है। तुम जानना चाहते हो कि यह जीवन कैसे काम करता है और इसमें तुम्हारी क्या भूमिका हो सकती है।"

"जूलियन, मैं भी यही अनुभव कर रहा हूं। मैं अपने–आप को जितना मुक्त करते हुए, जीवन के अज्ञात चरणों की ओर जा रहा हूं, उतने ही प्रश्न भीतर से उमड़ने लगे हैं। मैं सोचने लगा हूं कि मैं वास्तव में कौन हूं। मैं सोचने लगा हूं कि मेरी नियति क्या है? मैं सोचने लगा हूं कि वास्तव में मेरे गहन मूल्य क्या हैं? मैं संसार के काम करने के तरीके से जुड़ी धारणाओं से जूझ रहा हूं और प्रकृति के उन सच्चे नियमों को जानना चाहता हूं, जिन पर यह संसार टिका है। मैं यह भी सोच रहा था कि क्या कोई ईश्वर है और मुझे इतनी पीड़ा का सामना क्यों करना पड़ता है? और मैं जानना चाहता हूं कि मेरा जीवन क्या रूप लेगा और मुझे अपना सच्चा और प्रामाणिक जीवन पाने के लिए क्या–क्या करना होगा।"

"ये सभी संघर्ष तुम्हारे लिए बहुत अच्छे हैं। इतने बड़े सवाल पूछ रहे हो, जो इस बात का संकेत देते हैं कि तुम जागरूक हो रहे हो, सजग हो रहे हो। तुम भीड़ से हट कर सजगता की ओर जा रहे हो। इसलिए तुम हर बारे में सवाल पूछते हो। बहुत अच्छे! प्रायः सही सवाल पूछने पर सही जवाब भी सामने आ जाते हैं। इस तरह तुम अपने सच और प्रामाणिक जीवन की भी तलाश कर रहे हो। और याद रखो, सवाल पूछने से वह ज्ञान सामने आता है, जो पहले से ही तुम्हारे भीतर उपस्थित है। सही सवाल पूछो और वादा करता हूं कि सही समय आने पर, तुम्हारे भीतर से ही उनके सही जवाब भी सामने आ जाएंगे।"

"जब आप कहते हैं, सही समय आने पर....इससे आपका क्या अभिप्राय है जूलियन?"

"एक अहम कुदरती नियम यह है कि हमें उतना ही दिया जाता है, जितना कि हम संभाल सकते हैं। यह पथ तुम्हारे लिए बहुत ही प्रेम से नियोजित किया गया है और तुम कभी भी उससे अधिक ज्ञान या सत्य नहीं पा सकते, जितने के लिए तुम तैयार हो। तो यह सब स्वयं ही तुम्हारे सामने आएगा जब तुम उन्हें पाने के लिए तैयार होगे। छात्र को धीरज रखना चाहिए। जवाब अवश्य आते हैं।"

जूलियन ने आगे बताया: "भरोसा करो कि तुम ठीक वहीं हो, जहां तुम्हें होना चाहिए था। तुम उस पथ पर हो जिस पर तुमसे पहले कई बुद्धिमान आत्माएं चल चुकी हैं। तुम्हारा यह अनुभव अनूठा नहीं है। इसी भरोसे को बनाए रखो और अपने भीतर गहराई तक उतरते चले जाओ। तुम जो भी उत्तर तलाश रहे हो, वे तुम्हारे ही भीतर समाए हैं। हां उन किताबों,

सेमीनारों व अध्यापकों से तुम्हें मदद तो मिलेगी पर एक बात याद रखनाः दूसरे व्यक्ति की पुस्तक पढ़ने का अर्थ होगा कि आप दूसरे व्यक्ति के सच को प्रतिबिंबित कर रहे हो। किसी वक्ता को सुनने का अर्थ होगा कि आप इस जगत के बारे में उनके सच व दर्शन को जान रहे हो। तुम्हारी यात्रा के इस चरण में ऐसा करने में कोई हर्ज़ नहीं है। दूसरों के चिंतन के बारे में जानने से तुम्हें पता चलेगा कि वे लोग क्या सोचते हैं परंतु यह समझने की भूल कभी मत करना कि उसके जीवन का सत्य अनिवार्य रूप से तुम्हारे जीवन का सत्य भी होगा। किसी के अनुयायी बनने की बजाए नेता बनो। नेता ऐसी जगह जाते हैं, जहां कोई नहीं जाता और वे अपना रास्ता खुद चुनते हैं। यह सारा रोमांच प्रामाणिक बनने से ही जुड़ा है। जब तुम आत्म-कौशल के उच्चतर सोपानों तक पहुंचते जाओगे तो तुम पाओगे कि तुमने अपने जीवन और उसमें अपने स्थान के बारे में अपना ही दर्शन विकसित कर लिया है। तुम दूसरों के सत्य चुनोगे, जिनकी गूंज तुम्हें अपने भीतर से सुनाई देगी। तुम दूसरों की उसी बुद्धिमता को अपने लिए चुनोगे जो तुम्हें उपयुक्त जान पड़ेगी। और तुम्हें उन सभी विचारों को त्याग देना चाहिए, जो तुम्हारे काम के न हों और जिनका कोई अर्थ न निकलता हो। ऐसा करने से तुम स्वयं अपने लिए प्रामाणिक नियम बनाते हुए, अपने बृहत्तर जीवन का संविधान बना सकोगे। मेरे लिए सफलता के यही मायने हैं, जीवन को अपने ही तरीके से जीना। तुम्हें अपना मनपसंद जीवन पाने के लिए दिन-रात इसी प्रक्रिया के साथ रहना होगा। आपको दूसरों के द्वारा चुने गए जीवन को जीने की बजाए वही जीना है, जिसमें आपके जीवन का सत्य उद्घाटित होता है। और इसी दौरान आप ऐसी शक्ति पाएंगे, जो इस संसार में आपको एक प्राकृतिक बल में बदल देगी।"

"जूलियन, यह सब वास्तव में अद्भुत है। जैसा कि मैंने कहा, मैं इस समय ठीक यही अनुभव कर रहा हूं। मेरे भीतर भी यही भूख जाग गई है। मैंने किसी भी चीज़ को अपने वश में करना त्याग दिया है और अपनी अज्ञानता के लिए पूरी तरह से सचेत हूं। नतीजन मैं एक के बाद एक किताबें पढ़ रहा हूं। मैं उन सभी जवाबों की तलाश में हूं। मैं वास्तव में एक जिज्ञासु बन गया हूं।"

"हां डार! तुम सचेत होते जा रहे हो। तुम जागृत हो रहे हो। तुम अपने घर वापिस लौटने के लिए मार्ग तलाश रहे हो। कुछ किताबें सकारात्मक चिंतन के माध्यम से एक प्रसन्नतापूर्ण जीवन व प्रबोध का मार्ग सुझाती हैं। कुछ किताबें कहती हैं कि तुम्हें दिमाग की बजाए अपने दिल की सुननी चाहिए। कुछ गाइड प्रोत्साहित करते हैं कि जीवन में लक्ष्य बनाओ और निरंतर उनका पीछा करते रहो। दूसरी किताबें वर्तमान में जीने की सलाह देती हैं ताकि जीवन आपको यह दिखा सके कि आपके लिए क्या चुना गया है।"

"बिलकुल ठीक। मुझे किसका विश्वास करना चाहिए? यह सब तो कितना विरोधाभासी दिखता है। क्या मुझे इस संसार में रहना चाहिए या आध्यात्मिक पथ का चुनाव करना चाहिए?"

"आह! ये सभी वही प्रश्न हैं जो तुम्हें अपना सत्य जानने के लिए पूछने ही चाहिए। तुम

वास्तव में वृद्धि कर रहे हो और यह बहुत अच्छी बात है। तुम वास्तव में उस संपूर्णता अंतराल को भरने की तैयारी में हो तो तुम इस समय विभिन्न आदर्शों के साथ प्रयोग कर रहे हो, अनेक अध्यापकों के साथ जुड़े हो और यह अच्छी बात है।" जूलियन ने आत्मविश्वास से भरी मुस्कान के साथ कहा।

"मेरे सामने मानो बहुत से द्वार खुलते जा रहे हैं। मैं देखने लगा हूं कि मैं अपने **संपूर्णता अंतराल** (इंटेग्रिटी गॅप) से कितना दूर हूं। वाकई यह अंतर बहुत गहरा रहा होगा। मुझे लगता है कि मैंने आसपास के लोगों, अपने माता-पिता और दूसरे लोगों को प्रसन्न करने में अपना अधिकतर जीवन व्यतीत किया है। मुझे नहीं लगता कि मैं अभी तक यह भी जान सका हूं कि मैं कौन हूं? आप कहते हैं कि प्रबुद्ध होना है तो पहले अपने-आप को जानना होगा। अपने साथ संबंध विकसित करना होगा। मुझे वास्वत में पता नहीं है कि मैं कौन हूं। सच कहूं, यह सोच कर मेरा मन उदास हो जाता है।" मेरी आंखों में आंसू उमड़ आए। मैंने कभी ऐसे भावों को अनुभव नहीं किया था।

"डार! मैंने तुमसे पहले भी कहा था। इस उदासी को अनुभव करो।" जूलियन ने मेरे कंधे पर हाथ रखते हुए कहा, "तुम अपनी भावनाओं को जितना महसूस करोगे, उन्हें अपने भीतर उतनी ही पूर्णता दे सकोगे। भावनाएं वर्षा के तूफानों की तरह होती हैं जिनका एक आदि, मध्य व अंत होता है। और जब तुम एक-एक कर अपने गुस्से, निराशा व कुंठा आदि भावों को समाप्त करते जाओगे तो तुम्हारे भीतर से धूल की परतें हटेंगी और सुनहरे बुद्ध प्रकट होते चले जाएंगे।"

मैंने खुद को संभालने में थोड़ा वक्त लिया और जूलियन पूरे धैर्य के साथ प्रतीक्षा करते रहे।

"अच्छा डार! यदि उस **संपूर्णता अंतराल** को भरना ही जीवन का उद्देश्य है तो ऐसी कौन सी प्रक्रिया हो सकती है जिससे जीवन तुम्हें ऐसा करने के लिए टोहका देता है। देखो, मैंने बताया है ने कि ब्रह्माण्ड तुम्हारी जीत चाहता है। जीवन को इसी तरह रचा गया है कि तुम प्रसन्न व महान अनुभव कर सको।"

"परंतु मुझे खेल के नियमों के अनुसार खेलना होगा।" मैंने कहा। "और अगर मैं उनके प्रति सचेत न रहा, पहले ही चरण में रहा तो मेरे जीवन के कारगर होने का कोई मतलब ही नहीं होगा।"

"बहुत अच्छे!" जूलियन ने मुझे गलबांही देते हुए कहा। वे फिर से पहले धीरे और फिर स्नेह से ड्रम बजाने लगे। मैं जानता था कि वे इस तरह मुझे अपनी बुद्धिमता के साथ तालमेल बिठाने की शाबाशी दे रहे थे। जूलियन ने अपना हाथ रोका तो एक बार फिर से सन्नाटा छा गया।

"जिस प्रक्रिया के द्वारा कुदरत, ब्रह्माण्ड या ईश्वर या असीम बुद्धिमता तुम्हें **संपूर्णता अंतराल** को भरने के लिए प्रोत्साहित करते हैं, उसे रीसाइकलिंग कहते हैं। रीसाइकलिंग एक

ऐसा शब्द है, जो यह बताता है कि जीवन कितना काम करता है। यह हमें बताता है कि जब हम अपने सच्चे जीवन की ओर बढ़ेंगे तो हमें निश्चित लोगों व हालातों के पास भेजा जाएगा ताकि पथ पर चलने के लिए आवश्यक सबक सीखे जा सकें। मान लेते हैं कि हमें जीवन के किसी मोड़ पर क्षमा प्रदान करने का सबक सीखना है। तब हमें ब्रह्माण्ड द्वारा एक ऐसा व्यक्ति भेजा जाएगा जो हमें छलेगा। हमेशा की तरह हमारे पास चुनाव होगा कि हम उसके व्यवहार के लिए कैसी प्रतिक्रिया देंगे। अगर हम दूसरे व्यक्ति के साथ दोषारोपण का खेल खेलेंगे तो ऐसे ही लोग बार-बार सामने आते रहेंगे। वे रीसाइकिल होते रहेंगे। समस्या यही है कि तुम उस सबक को अपने से जितना ज्यादा दूर करने का प्रयास करोगे, वह उतना ही नए-नए रूपों में तुम्हारे सामने आता जाएगा। हर बार यह और अधिक ताकतवर, गहन व पीड़ादायी होगा।"

"तो यह मेरे ध्यानाकर्षण का केंद्र बनेगा।"

"हां, तुम जिसका प्रतिरोध करोगे, वह बार-बार सामने आएगा। तुम जिसे स्वीकार लोगे, उससे पार पा लोगे। कुदरत चाहती है कि तुम **संपूर्णता अंतराल** को भरते हुए अपने सबक लो और अपने उस घर तक जा पहुंचो, जो सही मायनों में तुम्हारा अपना है। इसी गति को बल देने के लिए ही रीसाइकलिंग होती है पर यदि तुम जीवन को चलाने वाली प्रक्रिया के लिए जागरूक न रहे तो यह तुम पर गहरा वार करेगी। यदि तुमने जागृत भाव से इस पर ध्यान दिया, अपने आरोग्य व वृद्धि के लिए निजी उत्तरदायित्व लिया तो तुम अपने लिए निश्चित सबक सीखोगे और अपने सच्चे अस्तित्व के निकट आ जाओगे। जब तुम प्रतिरोध को त्याग कर अपने सबकों को स्वीकार करोगे तो यह अंतराल भर जाएगा और जीवन पहले से कहीं बेहतर हो जाएगा।"

"कमाल है!" जीवन के काम करने की गहरी समझ के बारे में जूलियन के विचार सुन कर, मेरे मुख से केवल यही निकल सका। मुझे एहसास हुआ कि यदि मैं अपने भीतर उठ रहे गुस्से, जलन व खीझ के लिए दूसरे को दोषी ठहरा रहा था तो मैं अपने लिए निश्चित एक सबक को सीखने से इंकार कर रहा था। वह सबक मेरे जीवन में अधिक पीड़ा व गहनता के साथ बार-बार प्रकट होगा। मेरे लिए सबसे अनिवार्य बिंदु केवल यही था, **'मेरे भीतर जो भी चल रहा है, उसके लिए निजी जिम्मेदारी लेने से और अपनी नकारात्मक प्रतिक्रियाओं व अपने बारे में जानकारी रखने से, मैं अपने जीवन में रीसाइकलिंग की मात्रा को घटा सकता था।** मुझे जो भी स्नेहहीन प्रतिक्रियाएं मिलें, उनके लिए दूसरों को दोषी ठहराने की बजाए खुद को जिम्मेदार मान कर, मैं अपने जीवन में मिलने वाली पीड़ा को नाटकीय रूप से घटा सकता था। यदि मैं प्रकृति के नियमों के अनुसार चलूंगा तो प्रकृति भी मुझे अपना सहयोग देगी। मैं जीवन के काम करने के सत्यों के प्रति जागरूक रहूंगा ताकि वह मुझे बेहतर पुरस्कारों से नवाज़ सके।

जूलियन उठे व ट्रुथ सर्कल से बाहर आ गए। वे कक्षा में एक ओर बने ब्लैकबोर्ड के पास चले गए। उन्होंने वहां पास में कुछ मोमबत्तियां रखीं ताकि मैं लिखे अक्षरों को पढ़ सकूं।

उन्होंने चॉक ले कर वहां एक बड़ा सा गोला बना दिया और उसे चार हिस्सों में बांटा। पहले हिस्से में लिखाः मन, दूसरे में लिखा–शरीर, तीसरे में लिखा– भाव तथा चौथे में लिखा– आत्मा। फिर उन्होंने लिखा– चार जागरण। उन्होंने मेरी ओर देखा व अपना प्रवचन आरंभ कर दिया।

"जैसा कि मैंने पहले भी कहा एक नेता के रूप में अपने सच्चे घर की वापसी यात्रा को ही हम **संपूर्णता अंतराल** भरने का नाम देते हैं। संपूर्णता को एक वृत्त से दर्शाया जा सकता है। जीवन का उद्देश्य यही है कि हम इसी संपूर्णता की ओर लौटें। जीवन जिस प्रक्रिया के द्वारा इसे अपना सहयोग प्रदान करता है, उसे रीसाइकलिंग कहते हैं। अंतिम चरण में कुछ ऐसे अभ्यास होते हैं जो उस **संपूर्णता अंतराल** को भरते हैं। चौथे चरण में तुम उस संपूर्णता की ओर जाने के लिए सजग चुनाव करने लगते हो। तुम्हारे सच्चे स्वरूप के चार चरण हैं, जिन्हें जागरूक होना ही होगा ताकि तुम एक बार फिर से संपूर्ण बन सको। जब तुम उन चारों आयामों को जागृत कर लेते हो तो तुम्हें याद आ जाएगा कि तुम सही मायनों में कौन हो। तो ये हैं वे चार जागरण। उन्होंने बोर्ड की ओर संकेत किया। घर वापसी की यात्रा के दौरान तुम्हें अपने मन, शरीर, भाव व आत्मा को निश्चित रूप से जागृत करना चाहिए।"

"जूलियन यह सब तो बहुत रोचक है। मैं इसी बिंदु से जूझता रहा हूं। कुछ किताबें कहती हैं कि अपनी असीम संभावना को जगा कर ही बेहतर जीवन जीया जा सकता है। ये लेखक कहते हैं कि हमें अधिक से अधिक किताबें पढ़नी चाहिए और अधिक से अधिक सीखना चाहिए ताकि अपने चिंतन की गुणवत्ता का अन्वेषण किया जा सके। वे कहते हैं कि अपनी सोच बदलने से, हम अपने जीवन में बदलाव ला सकते हैं।"

"डार! यह काफी हद तक सच है। परंतु सारी बात यहीं समाप्त नहीं होती। यदि तुम अपने मन को जागृत कर लेते हो तो जान लो कि तुमने पच्चीस प्रतिशत कार्य कर लिया है। तुम अपनी संपूर्णता पाने के लिए थोड़ा निकट आ गए हो। हां, तुम्हें निश्चित रूप से अपने मन को जगाना चाहिए, यानी तुम्हें अपनी मूल भावनाओं, मान्यताओं, धारणाओं व भय का अन्वेषण करना होगा। इसे तुम दूसरे लोगों के सत्य जान कर कर सकते हो, जिसके लिए उनकी किताबों, सीडी व सेमीनारों की मदद ले सकते हैं। डायरी लेखन, गहन मनन तथा अपने जीवन के काम करने के तरीके के बारे में सजग भाव अपना कर भी यह कार्य किया जा सकता है। यह पहला जागरण संग्रह, ज्ञान, शिक्षा तथा तुम्हारे लिए उपलब्ध उच्चतर चुनावों से संबंध रखता है। एक आध्यात्मिक पथ के छात्र को यह बौद्धिक कार्य करना ही चाहिए। परंतु तुम्हें अपने मन को जगाने के बाद बाकी तीन आयामों पर भी ध्यान देना होगा तभी अपने संपूर्ण वृत्त तक जा सकोगे। तुम्हें अपने शरीर को भी जागृत करना होगा। यदि शरीर स्वस्थ न हो तो स्वस्थ मन संपूर्णता को नहीं दर्शा सकता। वहां कोई संपूर्णता नहीं रहती। तो पहले जागरण के साथ ही तुम्हें दूसरा जागरण भी करना होगा।"

"उसके लिए हमें क्या करना चाहिए?"

"नियमित व्यायाम, संतुलित आहार, सूर्य का प्रकाश, मालिश, ताज़ी हवा, बहुत सा

पानी, विटामिन व सप्लीमेंट, रेकी, योगा...”

“जूलियन, मैं समझ गया। मेरे पास ऐसे बहुत से साधनों की श्रृंखला है, जिनकी मदद ली जा सकती है।”

“बिल्कुल ठीक! दूसरे जागरण में तुम्हें अपने शरीर को आरोग्य प्रदान करना है। तुम्हें यह सुनिश्चित करना कि तुम्हारे भौतिक आयाम समुचित दशा में हों और इसके बाद तुम्हें अपने भावों को जागृत करना होगा। यह बहुत मायने रखता है कि तुम्हारे भीतर कोई गुस्सा शेष न रहे। यह मायने रखता है कि तुम उस व्यक्ति को माफ कर दो, जिसने तुम्हें चोट या ठेस दी हो। तुम जानते हो कि दूसरों को दी गई वह क्षमा, तुम्हारे अपने काम आएगी।”

“मैं यह नहीं जानता था।” मैंने स्वीकार किया।

“ऐसा ही होता हैं यदि तुमने किसी को क्षमा नहीं किया तो ऐसा होगा मानो तुमने उस व्यक्ति के भार को अपने पीठ पर लाद रखा है। और जब तुम उसे माफ कर देते हो तुम उस भार को छोड़ देते हो। अब तुम अपने जीवन के साथ आगे बढ़ सकते हो। अब तुम्हें कोई पीछे की ओर नहीं खींचेगा और तुम एक मनुष्य के रूप में मुक्त हो। क्षमा करते समय तुम्हें यह याद रखना होगा कि अक्सर लोग पीड़ा में होने पर ही दूसरों को पीड़ा देते हैं। तुम्हें उनके व्यवहार की भर्त्सना नहीं करनी।”

“पर क्या किसी के द्वारा चोट पहुंचाए जाने पर उसके खिलाफ न बोलना स्वस्थ होगा?” मैंने पूछा।

“मैं तुम्हें यह बताना चाह रहा हूं कि दूसरों को परखते समय, उसके पीछे छिपे अपने सच को भी पहचानना चाहिए। मैं तुम्हें यह समझने के लिए प्रोत्साहित करना चाहता हूं कि जो लोग दूसरों को चोट पहुंचाते हैं, वे स्वयं भी चोट खाए हुए होते हैं। जो लोग खुद से प्यार नहीं करते, वे दूसरों से भी प्यार नहीं जता सकते। **और जिन लोगों के पास स्वाभिमान नहीं होता, वे भला दूसरों को इज्जत कैसे देनी है यह कैसे जानेंगे।** इसे याद रखो और तुम मुक्त हो जाओगे। इन वास्तविकताओं को अपनी डायरी में स्थान देते रहो और इन समयातीत सत्यों को अपने भीतर गहराई तक उतरने दो। अपने भय को आवाज़ देते रहो और वे तुमसे पार हो जाएंगे। याद रखो कि भावनाओं को जकड़ा तो वे नासूर बन कर कष्ट देंगी। अगर उन्हें सजगता के प्रकाश में लाया गया तो वे अपने-आप पूर्णता को प्राप्त हो जाएंगीं। और हम अच्छे व बेहतर स्वास्थ्य की ओर जा सकेंगे।”

“और आत्मा के जागरण के लिए क्या किया जाना चाहिए?” मैंने उनके पास जाते हुए पूछा।

“बहुत अच्छा सवाल! जब हम अपनी आत्मा को जागृत करते हैं तो अपने उच्चतर अस्तित्व को भी जगा देते हैं। विभिन्न लोग इसे विभिन्न रूपों में ले सकते हैं। कुछ लोगों के लिए प्रार्थना या ईश्वर से वार्तालाप को इसमें शामिल किया जा सकता है। कुछ लोगों के लिए प्रकृति के साथ तालमेल बिठाना या भावुक कर देने वाला संगीत सुनना, इस श्रेणी में आता

है। कुछ लोग इसे सेवा तथा अपने से भी बड़े अभियान से जुड़ाव से जोड़ते हैं। तुम जो भी साधन चुनो, यह याद रखना कि **हमें एक साथ ही इन चारों आयामों के जागरण की प्रक्रिया आरंभ करनी होगी।"**

"जूलियन, यह तो बहुत भारी काम हो जाएगा।" मैंने ईमानदारी से कहा

"याद रखो कि हज़ार मील की यात्रा भी एक कदम से ही आरंभ होती है। तुम्हें यह सारा काम एक सप्ताह या माह में नहीं करना। बस यह ध्यान दो कि **हर दिन कुछ ऐसा करना** होगा, जो यह याद दिला सके कि तुम कौन हो, फिर चाहे वह काम कितना भी अमहत्वपूर्ण ही क्यों न जान पड़े। मैं चाहूंगा कि तुम इस कमरे में एक संकल्प लो कि अपनी सुबह के पहले साठ मिनट यानी पवित्र घंटे को इन चार आयामों के जागरण के लिए प्रयुक्त करोगे। यही तुम्हारे सबसे बड़े जीवन को जीने और तुम्हारी नियति को साकार करने का उल्लेखनीय साधन होगा। इस कक्ष में यह संकल्प लेने के बाद यह भी वादा करो कि तुम इस दौरान डायरी लेखन, ध्यान व मनन के लिए भी समय निकालोगे। तुम इस दौरान कोई प्रार्थना या व्यायाम भी कर सकते हो। यदि तुमने इस समय का सदुपयोग किया तो लाभ भी अवश्य पाओगे।"

"मैं ऐसा कर सकता हूं।" मैंने संकल्प लिया। "मैं पहले से ही इसी तरह अपनी सुबह का समय बिता रहा हूं, अपने आंतरिक कार्य को आगे ले जा रहा हूं जूलियन! इससे मुझे बहुत विवेक बुद्धि मिलती है।"

"केवल यही एक नीति तुम्हारे जीवन को सदा के लिए बदल देगी। मेरा विश्वास करो। दोस्त, याद रखो कि अगर तुमने जीवन के लिए काम नहीं किया तो यह भी तुम्हारे लिए काम नहीं करेगी। तुम्हें इसका खमियाज़ा भुगतना होगा। दिन, सप्ताहों में, सप्ताह माहों में और माह वर्षों में बदलते चले जाएंगे... इससे पहले कि तुम जान सको, तुम्हारा जीवन समाप्त हो जाएगा। जिंदगी के इस अनमोल व खूबसूरत खज़ाने को अपने हाथों से बरबाद न होने दो। ऐसे चुनाव करते रहो, जो तुम्हें याद दिलाते रहें कि तुम कौन हो? अपने भीतर छिपे सुनहरे बुद्ध को प्रकाश में लाने के लिए इन साठ मिनटों का उपयोग करो। इस तरह तुम अपने–आप को ऐसा उपहार दे सकोगे, जैसा कि तुमने पहले कभी नहीं दिया होगा।"

जूलियन **ट्रुथ सर्कल** में लौट आए।

"मैं इस चौथे चरण के बारे में एक और बात तुम्हारे साथ बांटना चाहूंगा – अपनी नश्वरता के साथ प्रतिदिन संपर्क साधना भी एक बुद्धिमतापूर्ण कार्य होगा। याद रखो कि जीवन बहुत छोटा है और तुम नहीं जानते कि यह कब हाथ से छूट जाएगा। डार, हो सकता है कि कल हम दोनों ही इस दुनिया में न हों। अपनी सबसे बड़ी संभावना को साकार करने के लिए, जीवन का सबसे बड़ा दांव खेलने को तैयार हो जाओ। बुद्धिमान व्यक्ति अपने–आप को हमेशा याद दिलाते रहते हैं कि हर दिन उनका अंतिम दिन हो सकता है। इस तरह वे पूरे दिन में भय के स्थान पर प्रेम को वरीयता देने का संकल्प भी लेते रहते हैं। " जूलियन एक दराज

के पास गए और वहां से एक खूबसूरत कागज़ का टुकड़ा उठा लाए।

वे बोले, "यदि हम चाहें तो हम सबके पास अपने जीवन की कहानी लिखने का चुनाव व अवसर होता है। हर दिन इस बारे में बदलाव लाने का अवसर देता है कि हमारा मृत्युलेख किस रूप में पढ़ा जाएगा। हम अपने दिन के सजग घंटों में यह चुनाव कर सकते हैं कि **संपूर्णता अंतराल** को कैसे भरा जाए और रीसाइकलिंग को घटाया जाए। हम इन चारों जागरणों की वृद्धि के लिए प्रतिदिन कोई निर्णय ले सकते हैं। हम हर दिन को स्प्रिंगबोर्ड के रूप में प्रयोग में ला सकते हैं ताकि एक उच्चतर व बड़ा जीवन जी सकें। हमारे चुनावों में ही हमारी **सुनिश्चित नियति** आकार लेती है।"

"तुम जो शक्तिशाली कार्य कर सकते हो, उनमें से एक यह भी हो सकता है कि तुम अपने जीवन की कहानी पहले से लिख लो। यह पूरी तरह से वैसी तो नहीं होगी, जैसे कि तुम चाहोगे पर एक पुरानी कहावत कहती है कि अगर तुम यह नहीं जानते कि तुम्हें कहां जाना है तो फिर तो कोई भी राह तुम्हें वहां ले जाएगी। कोई भी योजना न बनाने से बेहतर होगा कि तुम्हारे पास कोई योजना हो। तुम तो मेरा दर्शन जानते ही हो कि हमें अपनी ओर से कोई कमी नहीं छोड़नी चाहिए और फिर बाकी सब कुदरत के हाथों में छोड़ देना चाहिए। अपनी ओर से पूरा प्रयास करो, अपनी मंशा साफ रखो, अपने सपनों का पीछा करो और जो सामने आए, उसे सच्चे दिल से अपनाओ। घटनाओं के घटने में सहायता देना या उन्हें अपनी ओर से घटने देना; यह जीवन इसी कोमल संतुलन पर तो टिका है। अपनी ओर से प्रयासों में कभी कमी न आने दो। अपने लक्ष्य व मंशाएं तय करो व सपनों को साकार करने की दिशा में चल दो। फिर पूरी वीरता व बुद्धिमता के साथ, सब कुछ उसके हाथों में छोड़ दो। यह मान कर चलो कि भले ही वह तुम्हें उस समय अच्छा न लगे पर वही नतीजा तुम्हारे सर्वोपरि हित में था। जीवन का ताना-बाना बहुत ही खबूसरती के साथ बुना गया है। हम प्रायः वह नहीं पाते जो हम चाहते हैं परंतु हमें वह मिलता है, जिसकी हमें आवश्यकता होती है। हमें वही मिलता है जो हमारे सर्वोपरि हित में होता है। यही जीवन का सबसे बड़ा सबक है।"

"तो आप मुझसे क्या चाहते हैं?"

"मैं चाहता हूं कि तुम अपने जीवन की कथा लिखो। मैं चाहता हूं कि तुम अपना मृत्युलेख लिखो। मैं चाहता हूं कि तुम फिर से बड़े सपने देखो और उस संभावना के साथ खेलो, जिसके लिए तुम्हारा जीवन रचा गया था। दोस्त, यह एक भावात्मक अनुभव होगा, हो सकता है कि तुम्हारी आंखें नम हो जाएं पर मैं चाहता हूं कि तुम अपने सभी भावों व प्रेम सहित इसे लिखो। इसी अभ्यास के साथ अपना दिल खोल कर रख दो।"

उस कमरे में, उस बसंत की रात, मैंने अपने जीवन की कथा लिखी, मैं मोमबत्तियों के प्रकाश व उस स्नेही आदमी से घिरा बैठा था, जो मेरे जीवन के लिए सबसे बेहतरीन पाने की आकांक्षा रखता था। मैंने लिखा कि मैं कैसा इंसान बनना चाहता था और कैसा जीवन जीना चाहता था। मैंने लिखा कि मैं अपने लिए कैसी महिला मित्र का चुनाव करता और फिर उससे विवाह कर, उसका कैसा पति साबित होता। मैंने उस पारिवारिक जीवन के बारे में लिखा

जिसके लिए मैंने खुद को हमेशा हकदार पाया था। और मैंने लिखा कि मैं एक मनुष्य के रूप में कैसा जीवन चाहता था। मैंने उन सभी मूल्यों, विश्वासों, मान्यताओं व धारणाओं के बारे में लिखा, जिन्हें मैं चाह कर भी अपना नहीं पाया। मैंने उस जादुई शाम में, एक इंसान के रूप में अपना सबसे बड़ा जीवन खेलने के लिए खुद को समर्पित कर दिया और अपने भीतर के उस प्रकाश को भी मुक्त होने दिया, जिसे मैंने उसी शाम पाया था। मेरे सुवर्ण के ऊपर की धूल की परतें उतरने लगीं। मुझे बांधे रखने वाली जंजीरें टूटने लगीं। मैं सत्य और प्रबोध की ओर जा रहा था। मैं जीवन की ओर जा रहा था।

आंखों से निरंतर अश्रुधारा प्रवाहित होने लगी। मैं जोर–जोर से रोने लगा। जल्दी ही मैं किसी बच्चे की तरह सुबक रहा था। जूलियन भी मेरे साथ रोने लगे। वे मेरे साहस तथा भयभीत कर देने वाले स्थानों की यात्रा व गहराई तक भीतर उतरने के संकल्प को देख भावुक हो गए थे। मैं उस व्यक्ति के उदार मन को देख सकता था। उन्होंने मेरे कंधों पर बांहें डालीं व मुझे दिलासा दिया। फिर वे मेरी अनुमति ले कर उस कागज को पढ़ने लगे। मैं उनके साथ अपने दिल की उन बातों को बांटते हुए प्रसन्न अनुभव कर रहा था।

जब उन्होंने उस कागज़ को नीचे रख कर मेरी ओर देखा तो बोलेः “बहुत सुंदर, तुमने अपने घर वापसी की यात्रा आरंभ कर दी है।”

अध्याय 8

छात्र रूपांतरण द्वारा स्वयं को नए सिरे से गढ़ता है।

“सपने देखने वाला व्यक्ति वही है जो अपना रास्ता चांद की रोशनी में ही देख सकता है और उसका दंड यही है कि वह सारी दुनिया से पहले भोर देख लेता है।”

–ऑस्कर वाइल्ड

छोटा संदेह छोटा प्रबोधन, बड़ा संदेह बड़ा प्रबोधन

–झेऩ कहावत

अंधकारपूर्ण समय में ही आंख देखने लगती है।

–थिओडोर रोथकी

यह मेरे जीवन का सबसे कठिन दौर था। स्कूलहाउस में जूलियन से भेंट हुए छह सप्ताह होने को थे। अब मैं संसार को नई आंखों से देखने लगा था और जिन बुनियादों पर मेरी पुरानी दुनिया खड़ी थी, अब वे ढहने लगी थीं। मैं जितना अधिक यह विचार करता कि मेरे साथ क्या हो रहा था, उलझन उतनी ही बढ़ती जाती। हमारे अंतिम सत्र के दौरान जूलियन ने बताया था कि जब मैं वस्तुओं को उनके पुराने तरीके से देखना छोड़ दूंगा, तो मेरे सबसे बड़े भय सतह पर आ जाएंगे ओर मैं अपने पुराने सांसारिक दृष्टिकोण को दोबारा जकड़ने का प्रयास करूंगा। उन्होंने कहा कि हमेशा की तरह मेरे पास चुनाव होंगे। मैं या तो अपने सच्चे घर की ओर जाने वाली यात्रा में कदम बढ़ा सकता था या इस नेतृत्व यात्रा में प्रतिरोध करते हुए, एक ही स्थान पर सड़ते हुए जी सकता था। जूलियन ने जोसेस कैंपबेल के शब्दों में कहा

था: 'व्यक्तिगत रोमांच के साथ जीना ही साहसपूर्ण जीवन है। यदि तुम पुकार को अनसुना करते हो तो सड़ने के लिए तैयार हो जाओ।' मैं अपने भीतर ही भीतर, उस यात्रा को जारी रखना चाहता था, जो मैंने जूलियन से पहली बार उस सेमीनार में मिलने के बाद से प्रारंभ की थी पर मेरे लिए यह कठिन और कठिन होती जा रही थी।

कभी–कभी मन में आता कि अगर जूलियन गलत हुए तो...। अगर उनके सिद्धांत व दुनिया को देखने का तरीका गलत हुआ तो? अगर मेरा पुराना तरीका सही हुआ और अपने परिचित दृष्टिकोण को त्यागने के बाद मैं किसी अज्ञात स्थान पर चला गया तो यह जीवन जीना और भी दूभर हो सकता था। अगर वे सभी मान्यताएं व धारणाएं सही हुए तो...जिनके साथ मैं अब तक अपना जीवन जीता आया था और अब उन्हें ही बदलने की अपील की जा रही थी जैसे: यदि दूसरों को ज्यादा दिया तो वे तुम्हारा नाजायज लाभ लेने लगेंगे। सफल होने का एकमात्र तरीका यही है कि प्रतियोगिता में विजयी हो। संग्रह जितना अधिक होगा, प्रसन्नता भी उतनी ही अधिक होगी। क्या यही वास्तविक सत्य, दुनिया को संचालित नहीं कर रहे थे? अगर मैंने इनका पालन न किया तो हो सकता था कि मेरा पूरा जीवन ही असफल हो जाता। हो सकता था कि समझदार दिखने वाले जूलियन संतुलन से परे थे और उनका दर्शन अति से भरपूर!

काम के समय मेरा तकरीबन समय एक तरह के धुंधलके में बीतने लगा। मैं अपने ही आंतरिक संघर्ष में घिरा था स्पष्टता के क्षणों में मुझे आभास हुआ कि संभवत: मेरा भ्रम इस तथ्य से सामने आया था कि मेरा एक पांव पुरानी दुनिया में था और मैं दूसरा पांव नई दुनिया में रख रहा था। मुझे अरस्तू की कुछ पंक्तियां मिली थीं जो मेरे जैसी ही चुनौतियों का वर्णन करती थीं। मैंने उन्हें बाथरूम की दीवार पर चिपका दिया ताकि उन्हें रोज़ पढ़ा जा सके। उनमें लिखा था:

आत्मा की सुंदरता तभी प्रकाशित होती है जब व्यक्ति पूरे धैर्य के साथ एक के बाद एक दुर्भाग्यों को सहन करता जाता है। ऐसा नहीं कि वह उन्हें अनुभव नहीं करता, ऐसा इसलिए होता है क्योंकि वह और भी उच्च व साहसपूर्ण बनता चला जाता है।

यह भयभीत कर देने वाला था। मैं अपने संसार को छोड़ कर, एक ऐसी दुनिया की ओर जा रहा था जिसे मैंने कभी नहीं जाना था। पर जूलियन ने कहा था कि अज्ञात दिशा में जाने पर ही हम सबसे अधिक जीवंत होते हैं। और अपने भय से परे जाने का साहस रखते हैं। मैं स्वयं को सदा जूलियन के कहे शब्दों का स्मरण करवाता रहता था, उन्होंने कहा था कि भ्रम के बाद सदा स्पष्टता और कोलाहल के बाद विश्वास जागृत होता है। मुझे तो जूलियन पर विश्वास करना ही था। मेरा कोई भी मित्र उन दिनों मेरी बातों को समझ नहीं पा रहा था और सहकर्मियों को लगता होगा कि मैं दीवाना हो गया था। इसी दौरान मैंने खुद को अकेला पाया और तय किया कि मैं प्रकृति के साथ कुछ समय बिताऊंगा। मैं अकेले ही जंगलों की ओर

निकल जाता। मेरे मन को दिलासा सा मिलने लगा था। मैं महसूस करने लगा था कि ब्रह्माण्ड के एक विशाल भाग तथा शांति ने मुझे परिपूरित कर दिया था।

इसी गहन आत्म–परीक्षण के दौरान, मैं अक्सर आधी रात को उठ जाता। मैं पसीने से बुरी तरह भीगा होता व थर–थर कांप रहा होता। कई बार छाती में असहनीय चुभन सी होने लगती। मैंने खुद को इस कोचिंग सत्र से क्यों जोड़ा? मैं प्राय: सोचता। सारी बातें इससे पहले कितनी सरल थीं। मैं देख सकता था कि दार्शनिकों ने अज्ञान को परमानंद क्यों कहा था। हो सकता है कि जूलियन से मिलने से पहले, मैं सत्य को नहीं जानता था परंतु अपने पुराने जीवन में कुछ तो आराम था ही।

और हालांकि, उन सभी सदेंहों व भय तथा दिमाग में लगातार चक्कर काटने वाले सवालों के अलावा, पुराने दर्द के साथ–साथ एक नया तरह का आनंद भी उभर रहा था। पहले–पहल यह प्राय: नही होता था पर मैं स्वयं को इतना जीवंत अनुभव करने लगा था, जितना पहले कभी नहीं किया था। हो सकता है कि मैं जिंद़गी के लिए नए सिरे से जाग रहा था। जब मैंने जूलियन के कहे अनुसार अपने उन पुराने घावों के लिए, अपनी भूलों के लिए जिम्मेदारी लेना आरंभ किया। जब मैंने अपने बचपन व जवानी के उन अनुभवों, भूली हुई यादों तथा भावों पर विचार किया तो बहुत कुछ सतह पर आने लगा। जिसे मैं अपनी डायरी में लिख दिया करता। मैं अपनी भावनाओं को शांत करने के लिए अपने नाम पत्र भी लिखा करता। अपनी भावनाओं को महसूस कर पाने के कारण, अपने भीतर गहराई तक जाना और भी सरल हो गया था। मानो मैं कई परतों से गुज़रते हुए, सच की ओर जा रहा था। मैं जानने लगा था कि मैं सही मायनों में कौन था। और जूलियन का कहना था कि यह बहुत अच्छी बात थी।

एक बार फिर, पूरी ईमानदारी से बताना चाहूंगा कि यह प्रक्रिया इतनी आसान नहीं है। पर यह वास्तव में भरपूर है, मैं जितना गहराई में उतर रहा था। ऐसी प्रसन्नता का अनुभव होने लगा था, जिसे मैंने पहले कभी अनुभव ही नहीं किया था। मेरे भीतर की गहराईयों में कोई जानता था कि यही वास्तव में सच्चा आनंद था।

एक सुबह, मैंने जल्दी उठ कर, सूर्योदय देखा। मैं कुदरत के इस नज़ारे को देख भावुक हो उठा और आंखें नम हो आईं। जिस संगीत को मैं प्राय: सुना करता था अब मानो वह एक नए स्तर पर सुना जाने लगा था। जब भी मैं किसी अच्छे ऑपेरा या प्रेरित करने वाले पॉप को सुनता तो मेरे चेहरे पर एक मीठी सी मुस्कान खिल जाती। लोगों के साथ पेश आने का तरीका भी बदल गया था। मैं अपने दोस्तों, परिवार के मित्रों व सहकर्मियों को नई आंखों से देखने लगा था, उनसे इतना प्यार करने लगा था, जितना मैंने जीवन में कभी किसी से नहीं किया था। पहले लोगों की जिन बातों से मुझे झुंझलाहट हुआ करती थी, अब मैं उतना बुरा नहीं मानता था क्योंकि मुझे एहसास था कि वे अपने भय तथा घावों के कारण ही ऐसा कर रहे थे। वे अपने ज्ञान के अनुसार, जितना बेहतर कर सकते थे, वही कर रहे थे। माया एंजेलो के शब्दों में : 'जब हम बेहतर जानते हैं तो हम बेहतर कर सकते हैं।' मैंने खुद को याद

दिलाया वे सब अपने भीतर सुवर्ण मंडित, भव्य और प्यारे इंसान हैं। जब भी कोई मेरे दिल को हल्की सी भी ठेस देता, तो मुझे जूलियन की बात याद आ जाती कि लोग पीड़ा में होने पर ही दूसरों को पीड़ा देते हैं। उन्हें मेरे गुस्से की नहीं बल्कि क्षमा की आवश्यकता थी। यदि मैं अपने भीतर उस क्षमा को नहीं पा सका था तो किसी को दोष देने की बजाए मुझे अपनी अंतरात्मा के भीतर गहराईयों तक उतर कर, जिम्मेदारी लेने की आवश्यकता थी। दूसरे व्यक्ति में मुझे जो भी बातें परेशान करती थीं, उनमें व्यक्तिगत वृद्धि का एक उपहार छिपा था। मेरी कुंठा का कारण बनने वाली हर परिस्थिति में अपनी ही एक परत से बाहर आने का अवसर छिपा था और ऐसा करने से मैं अपने अस्तित्व का कहीं बेहतर स्मरण कर सकता था– अपनी प्रामाणिक शक्ति को पाने का दावा कर सकता था। यह चुनाव मेरा था – **दूसरों को दोष दूं या अपना दावा पेश करूं।**

मेरे लिए यह दर्शन पूरी तरह से नया था। मैं जिस दुनिया से था, वहां बहुत कम लोग इस तरह से विचार करते थे। परंतु यही उपयुक्त दिखता था: मेरे भीतर का कोई ज्ञान यह जानता था कि मैं जीने के इस तरीके को जितना ज्यादा अपनाता जा रहा था, मेरा जीवन उतना ही बेहतर होता जा रहा था। मेरे भीतर से एक स्वर उठता था कि यही जीने का सबसे बेहतर तरीका था, बुद्धिमता थी।

जूलियन ने कहा था कि मैं उससे मैट्रो चिड़ियाघर में मिलूं। उन्होंने मुझसे बटरफ्लाई हेवन में मिलने को कहा था, जहां देशी-विदेशी हज़ारों तितलियों का जमावड़ा था।

मैं वहां जाने के लिए एक फूलों से भरी क्यारी से गुज़रा तो उनकी मीठी महक ने मेरे पांव बांध लिए। मैं जीवन की सुंदरता की प्रशंसा किए बिना नहीं रह सका। जीवन वास्तव में किसी प्यारे से वरदान से कम नहीं है। प्राय: हम अपने जीवन की असफलताओं में इतना उलझ जाते हैं कि बाकी बातों पर अपना ध्यान ही केंद्रित नहीं कर पाते। जूलियन ने मुझे संसार को चलाने वाले एक प्राकृतिक नियम के बारे में बताया था कि जब आप उस बात पर ध्यान केंद्रित करते हैं, जो आप अपने जीवन में नहीं चाहते, तो वास्तव में आप जीवन में जो पाना चाहते हैं उस बात के आने का मार्ग रोक देते हैं। आप जिस भी वस्तु पर अपने ध्यान का निवेश करेंगे, आपके जीवन में वही फलेगी–फूलेगी। जो नहीं चाहते, उस पर ध्यान केंद्रित किया तो वही पाएंगे। यह संसार एक दर्पण है। उन्होंने मुझे सिखाया कि हम आध्यात्मिक जीव होने के नाते जीवन से वह नहीं पाते, जो हम चाहते हैं, हमें वह दिया जाता है, जिसकी हमें आवश्यकता होती है। मुझे समझ आने लगा था कि जीवन के सादे आनंद ही सबसे अधिक संतुष्टिदायक होते हैं। तो मैं उन पर ही ध्यान केंद्रित करने लगा था।

मैंने जूलियन के लिए आसपास देखा पर वे दिखाई नहीं दिए। मैंने वहां घूम रहे गाइडों से भी पूछा कि क्या उनमें से किसी ने चोगे वाले भिक्षु को वहां देखा था। मैंने कहा, यदि वे यहां होते तो ऐसा सवाल ही नहीं पैदा होता कि आपकी नज़र उन पर न जाए। वे मुस्कुराए और कहा कि उन्होंने किसी को नहीं देखा। मैंने जूलियन की प्रतीक्षा करते हुए, अपनी डायरी में

लिखे नोट्स खोल लिए। मैंने पाया कि लेखन कला के माध्यम से इस उल्लेखनीय यात्रा के पड़ावों को तो दर्ज .किया ही जा सकता है, परंतु साथ ही इस तरह अपने–आप को जानने का अवसर मिलता है और यह समझना आसान हो जाता है कि हमारे जीवन में घट क्या रहा है।

डायरी लेखन ने मुझे सिखा दिया था कि किस तरह कागज़ पर अपने विचार देने के बाद अपने–आप से बाहर आना है, अपने विचारों व कर्मों का निष्पक्ष मूल्यांकन करना है। इस तरह मुझे अपने चिंतन की गुणवत्ता को जानने का भी भरपूर अवसर मिल जाता था। यदि मेरा कोई व्यवहार मेरे जीवन के अनुकूल न दिखता तो मैं उसे नए सिरे से रचने के लिए संकल्पबद्ध था। मैं ऐसे नए चुनाव कर सकता था जो मेरी कुछ बनने की इच्छा व कुछ मनचाहा पाने की इच्छा से संबद्ध हो सकते थे। आत्म–निरीक्षण के लिए मिला यह स्थान वास्तव में बहुत लाभदायक था और जूलियन का कहना था कि इसे अपने–आप से संवाद का नाम दिया जा सकता है। यदि हम अपने साथ बात ही नहीं करेंगे तो यह कैसे जान सकेंगे कि हम जीवन से चाहते क्या हैं? और अपने–आप को जितना गहराई तक जानते जाएंगे, तो अपने घर वापसी की यात्रा के लिए उतने ही प्रामाणिक चुनाव कर सकेंगे, उस स्थान पर जा सकेंगे, जहां हम हमेशा से जाना चाहते थे। पुराने ग्रीक-रोमन मंदिरों में प्राय: प्रवेशद्वार पर अंकित होता: 'अपने–आप को जानो और तुम ब्रह्माण्ड व देवों को जान जाओगे।' यह बात अब पहले से कहीं बेहतर तरीके से समझ आने लगी थी।

मैं उठा और जूलियन को देखने लगा पर दस मिनट बाद भी उनका कोई पता न था। अचानक ही मुझे कांच के उस कक्ष से खटखटाहट सुनाई दी, जहां दुर्लभ तितलियों को रखा गया था। मैंने भीतर देखा और अपनी आंखों पर यकीन नहीं कर सका। जूलियन हमेशा नए–नए तरीकों से हैरान करते रहते थे। वे तो उस कक्ष के भीतर थे और ऐसी सुंदर तितलियों से घिरे थे, जो मैंने अपने जीवन में देखी तक नहीं थीं। उस कमरे में बहुत सारे रंग और ढेर सारी जीवंतता थी। वे तब भी अपने लाल चोगे में थे। वे अपने उन्हीं पुराने सैंडिलों को पहने हुए थे पर सिर पर एक ऐसा हैट लगाया हुआ थ, जिसके आगे जाल लगा रहता है, चिड़ियाघर के कर्मचारी ही प्राय: इसे पहनते हैं। वे मुझे वहां से देखते हुए खिलखिला रहे थे। "दोस्त! यहां आ जाओ। आज का सबक बहुत बड़ा है। और मैं जानता हूं कि तुम इसे जानने के लिए तैयार हो। दरवाजे के बाहर तुम्हारे लिए भी ऐसा ही एक हैट रखा है। मैंने चिड़ियाघर वालों के साथ सारी बात कर ली है।"

मैं दरवाजे के पास गया और वह हैट पहन लिया जिसमें मुंह को ढकने के लिए जाल लगा हुआ था जैसा कि मेरे सनकी पर प्रभावशाली कोच ने कहा था। मैंने कमरे में प्रवेश किया और उन तितलियों में बसे कुदरत के नज़ारे को देख दंग रह गया। हो सकता है कि यह संसार संपूर्ण है और जो भी सामने आता है, वह एक बुद्धिमतापूर्ण नियोजन काही एक अंग होता है। हम यह समझने की कोशिश तो करते हैं कि हमारा जीवन ऐसा क्यों है, जैसा कि दिखाई दे रहा है पर हम उस बुद्धिमता से पार नहीं पा सकते, जिसे हमसे कहीं ऊंची शक्ति ने

रचा है। संभवत: हम सबके जीवन में एक संपूर्णता है और अगर हम परख और भय के चश्मे से उसे देखते रहे तो शायद उसे खो देंगे। हां, हमारे चुनाव मायने रखते हैं। हां, कर्मों के भी परिणाम होते हैं। हां, हमारे पास हमारी नियति को आकार देने के लिए भी शक्ति है परंतु कहीं एक और, अधिक शक्तिशाली बल है, जो अंतत: सब कुछ नियंत्रित करता है।

जूलियन तितलियों के साथ खेलते हुए, किसी छोटे बच्चे की तरह दिख रहे थे। उनका आनंद व विस्मय देखते ही बनता था। वे कमरे में चक्कर लगाते हुए हंस रहे थे और तालियां बजा रहे थे। फिर उन्होंने अपने हाथ के संकेत से अपने पास आई तितलियों को हटा दिया और मेरी ओर बढ़े।

“दोस्त! क्या हालचाल है?” उन्होंने मेरे पास आते हुए प्रसन्नतापूर्वक कहा और गले से लगा लिया। अब भी कुछ तितलियां उनके कंधे पर बैठी थीं।

“बढ़िया! पिछले सप्ताह अच्छे रहे। मेरे लिए बहुत कुछ नया है। जूलियन, कई बार तो यह समझ नहीं आता कि मैं कहीं से आ रहा हूं या कहीं जा रहा हूं। मैं बहुत पीड़ा का अनुभव कर रहा हूं। मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि जागरण का यह पथ पीड़ा से भरा होगा।”

“डार! यह बस सात चरणों वाली प्रक्रिया का हिस्सा है। इसके लिए असीम साहस की आवश्यकता होती है। तुम अपने ही तरीके से, प्रत्यक्ष रूप से सीख रहे हो जो कि सीखने का सबसे बेहतर तरीका है। यदि तुम अपनी आंखें खुली रखो और इससे मिले सबक याद रखो तो कोई भी किताब तुम्हें इतना नहीं सिखा सकती, जितने सबक तुम जिंद़गी से सीख लोगे। मेरे दोस्त! खतरा मोल लेना ही तो जीना है। हम छोटे दांव को सुरक्षित मानते हुए, खुल कर नहीं जीते जबकि यह सबसे असुरक्षित होता है। यह भ्रम का एक हिस्सा है।”

“जूलियन, मैं आपकी बात से सहमत हूं। नील डोनाल्ड वाल्श के शब्दों में: तुम जीने से इतना भयभीत हो, जीवन से इतना डरते हो कि तुमने अपने उस स्वभाव को भी त्याग दिया है, जिसके अनुसार तुम सुरक्षा की चाहना रखते आए हो”

“सुंदर शब्द, पहले नहीं सुने।” उन्होंने आंखें बंद कर लीं मानो उन शब्दों को अपने भीतर आत्मसात् कर रहे हों।

जूलियन एक अच्छे श्रोता थे। मुझे उनके साथ रहना पसंद था। वे मुझे खास होने का एहसास दिलाते थे।

“देखो”, उन्होंने एक कोकून की ओर संकेत किया। “रिचर्ड बाक ने लिखा था: ’एक इल्ली जिसे अपना अंत समझती है, मास्टर उसे तितली के रूप में देखते हैं।’

मुझे वे शब्द बहुत ही हार्दिकता के साथ सुनाए गए थे इसलिए उन्होंने मेरे दिल को छू लिया।

जूलियन ने बात जारी रखी, “तुम भी रूपांतरण की प्रक्रिया से गुजर रहे हो। तुमने अपना सारा जीवन एक बड़े झूठ की तरह जीया है। तुमने अपने–आपको धोखा दिया और

झूठे आवरणों के साथ जीते रहे, ताकि भीड़ में अपने लिए जगह बना सको। तुम्हारे चुनाव और आचरण एक भ्रम पर टिके थे। तुम्हें गुफा की दीवार पर दिखने वाली उन झूठी आकृतियों की याद तो है, न?"

"जूलियन, मैं उन्हें कैसे भुला सकता हूं?" मैंने उत्तर दिया।

"तुम्हें याद होगा कि सत्य के पथ पर चलने के जिज्ञासु के लिए दूसरे चरण में एक आधारभूत चुनाव सामने आता है: सोता रहे और छोटा ही बना रहे या प्रबोधन व अपनी उच्चतर जागरूकता के पथ पर चल दे।

यदि पहले उचित निर्णय लिया जाए तो जिज्ञासु तीसरे चरण की ओर बढ़ता है, जहां कुछ नई वास्तविकताएं सामने आती हैं और चौथे चरण में जब वह अपने गुरू से कुछ प्रश्नों के उत्तर पा लेता है तो उसे भ्रम के पीछे छिपे सच्चे संसार की झलक दिखने लगती है। इस तरह हम पांचवें चरण में आ जाते हैं जिसे रूपांतरण व पुनर्जन्म कहते हैं। यह जिज्ञासु के लिए बहुत कठिन समय होता है क्योंकि यह गहन पारगमन का समय है। यह उसके जीवन का सबसे रोचक व महत्वपूर्ण समय भी है। कई बार वृद्धि कठिन रूपों में सामने आती है। परंतु यह हमेशा भलाई के लिए ही होती है। 'सपनों की दिशा में तभी जाया जा सकता है जब आपका एक पांव शाश्वतता तथा दूसरा अनिश्चितता पर हो।' विचारक रिक टारक्किनियो का तो यही कहना है।"

जूलियन ने आगे कहा: "मैं जानता हूं कि इन दिनों तुम कितना भ्रमित अनुभव कर रहे होगे। मैं समझ सकता हूं कि तुम किस पीड़ा से गुज़र रहे हो। इस पथ पर कष्टों का अनुभव तो होता ही है। मैं तुम्हारी पीड़ा को कमतर नहीं आंकना चाहता पर यह बताना चाहता हूं कि यदि तुम अपने जीवन को पचास हज़ार फुट के नज़रिए से देख सको तो जो भी घट रहा होगा, वह सुंदर ही दिखेगा।"

"सुंदर? मैंने अपने पूरे जीवन में इतना कष्ट कभी नहीं पाया। मैं अपने जीवन में इतना भ्रमित पहले कभी नहीं रहा। मेरा जीवन किसी बेहतर स्थान की ओर जाने की बजाए अस्त-व्यस्तता की ओर जा रहा है।"

"तुम्हें केवल अभी ऐसा लग रहा है।" जूलियन बोले। "तुम्हारी मनुष्य की आंखें केवल कोलाहल व अस्त-व्यस्तता ही देख सकती हैं परंतु तुम इस समय नया विज़न पाने की तैयारी में हो। जब तुम इसे पा लोगे तो पाओगे कि यह सब उसी प्रक्रिया का अंश था, जिसके दौरान तुम जीने के पुराने तरीकों को त्याग कर, नए तरीके अपना रहे थे। तुम्हारे साथ जो भी घट रहा है, वह इस बात का सूचक है कि तुम एक विशाल वृद्धि के स्तर से गुज़र रहे हो। तुम जो भी जानते हो, उससे मुक्त हो रहे हो और जीवन को जीने व देखने के तरीकों में भी गहरा बदलाव आया है। जब तुम सब कुछ त्याग कर, अपने-आप को खाली कर लोगे, तो इस तरह नई वस्तुओं के प्रवेश के लिए स्थान बन जाएगा। तुम एक नई चेतना के लिए स्थान बना रहे हो और यह तुम्हारे अस्तित्व के लिए भी नया होगा। हां, यह समय अस्त-व्यस्तता से भरा

है। ऐसा क्यों न होता, जिस भी बुनियाद पर तुम्हारा जीवन खड़ा था, उसे चुनौती दे कर तार-तार कर दिया गया है। पर मेरा विश्वास करो, जब मैं कहता हूं कि यह तुम्हारे साथ सबसे बेहतर घट रहा है तो ऐसा ही हो रहा है। तुम्हारा मन जागृत हो रहा है। हृदय मुक्त हो रहा है। भावों को आरोग्य मिल रहा है और आत्मा उड़ान भरने के लिए तैयार है। तुम अपनी प्रामाणिक शक्ति को पाने का पुन: दावा कर रहे हो, जो कि बड़ी पदवियों, बैंक के खातों और ऑफिसों से मिली बाहरी शक्ति से कहीं अलग है। ये चीज़ें तो जीवन में आती-जाती रहती हैं। और जब ये चली जाती हैं तो शक्ति भी चली जाती है परंतु प्रामाणिक शक्ति को तुमसे कोई नहीं छीन सकता। डार! इसे तुमने कमाया है और यह आजीवन तुम्हारी रहेगी। तो यह सब बहुत सुंदर है। तुम उस नियंत्रण को छोड़ रहे हो जिसने तुम्हारे अतीत पर कैंजा जमा रखा था। जिस तरह एक इल्ली अपने कोकून से बाहर आती है, तुम भी अंधकार से प्रकाश की ओर आ रहे हो। और हां, कोकून में अंधेरा होता है और ऐसा भी लग सकता है कि बाहर आने का कोई मार्ग ही नहीं है। पर सच्चाई में इल्ली एक तितली बन रही है। उसका ठहराव आजादी में बदल रहा है। गहरा बदलाव ऐसा ही दिखता है और जब तुमने कहा कि यह खुशनुमा नहीं है तो मैंने तुम्हें सुना। एक जिज्ञासु के रूप में, तुम्हारी यात्रा के इस चरण पर, मानो तुम जिस आंतरिक सरकार के बल पर अपना पिछला जीवन चला रहे थे, उसकी जगह पर नया शासन आ गया है। एक क्रांति पनप रही है। भय भी मुक्त हो कर सामने आ रहे हैं। निजी प्रामाणिकता के लिए एक बड़ी वचनबद्धता का अनुभव होने लगा है। क्या तुम देख सकते हो कि यह सब कितना शानदार है? जो भी चल रहा है, उसे रोकने की चेष्टा मत करो। मेरे दोस्त! तुम एक अद्‌भुत स्थान की ओर जा रहे हो। तुम्हारे जीवन के पारगमन के ये चरण, जीवन के सबसे समृद्ध क्षण होते हैं। तुम प्रकाश की ओर जा रहे हो। अंधकार अपने-आप छंट जाएगा। तितली सामने आने वाली है।"

"सचमुच!" मैं पूछे बिना नहीं रह सका।

जूलियन ने बताया, "प्रकृति के नियम जीवन के नियमों की व्याख्या करते हैं। तुम जानते हो। एक इल्ली आजीवन कोकून में नहीं रह सकती। **सही समय आने पर तितली को आगे आना ही होगा।** प्रकृति के समय संकेत पर विश्वास रखो। यह तुम्हारी घड़ी से मेल खाता हुआ नहीं होगा। याद रखो, तुम्हारी पीड़ा का अंत होगा, जैसा कि हमेशा होता है। कार्ल जुंग के शब्दों में : 'पीड़ा के बिना चेतना का आविर्भाव हो ही नहीं सकता' इसके बाद नियंत्रण छोड़ दो और इस बात का एहसास होने दो कि कोई बहुत बड़ी शक्ति कार्यरत है और वह सबकी भलाई के लिए ही कार्यरत है।"

"आप कैसे जानते हैं कि यह सच है?"

"क्योंकि मैंने स्वयं इसी पथ पर चल कर अपने जीवन में जागरण पाया है। टी एस इलियट ने कहा था : 'जो लोग बहुत दूर तक जाने का साहस रखेंगे, केवल वही जान सकते हैं कि कोई कितनी दूर तक जा सकता है।' तुम उस दौर से गुज़र रहे हो जिसे रहस्यवादियों ने आत्मा की अंधेरी रात कहा है। मैं जानता हूं कि तुम हर चीज़ के बारे में सवाल पूछ रहे हो

और यह अच्छी बात है। हर बात पर सवाल पूछने का मतलब है कि अब तुम यथास्थिति को ही सच नहीं मान रहे। अब तुम आंखों पर पट्टी बांध कर चलने वाली भेड़ों के रेवड़ का हिस्सा नहीं हो, तुम जाग रहे हो, तुम विस्तार पा रहे हो। नेता भी यही करते हैं। वे भीड़ का साथ हमेशा के लिए छोड़ कर, अपनी राह खुद बनाते हैं। महात्मा गांधी कभी भीड़ के पीछे नहीं चले। उन्होंने अपना विज़न खुद बनाया और उस पर अडिग रहने का साहस भी दिखाया। हेलन कीलर, एमीलिया ईयरहर्ट, मदर टेरेसा, मार्टिन लूथर किंग जूनियर व अन्य नेताओं – राष्ट्र के नेताओं से ले कर कला के क्षेत्र के नेताओं जैसे सल्वाडोर डाली व पिकासो ने भी यही किया। सल्वाडोर रैमब्रांडट या माईकेलएंजेलो नहीं बनना चाहते थे। वे अपनी ही कल्पना व रचनात्मकता के सहारे, दुनिया को अपने हार्दिक भाव दिखाने में सक्षम रहे।"

"कितना सच कहा।" मैंने कहा और अपने हाथ पर आ बैठी दो तितलियों को न उड़ाने का निर्णय ले लिया।

"अब तुम दूसरों को प्रसन्न करने के लिए यह जीवन नहीं जी रहे और न ही तुम्हें यह भय है कि वे तुम्हें अपने अनुकूल नहीं पाएंगे तो अपने से दूर कर देंगे। इसकी बजाए तुम अपने दिल की सुनते हुए, इस संसार को और अधिक प्यार देने की चेष्टा कर रहे हो ताकि तुम एक सच्चे इंसान के रूप में अपना दावा कर सको। तुम एक तितली बन रहे है और नए सिरे से अपनी आजादी पा रहे हो। मैं तुहारे लिए बहुत प्रसन्न हूं। और हां, यह प्रक्रिया व्यक्ति के जीवन में पीड़ा तो लाती ही है।"

जूलियन ने एक और सहायक उपमा की मदद ली, "जब कोई शिशु गर्भस्थ नाल से नीचे आता है तो इस प्रक्रिया में बहुत दर्द शामिल होता है पर बच्चा व मां हिम्मत नहीं हारते। वे इस पारगमन की अवस्था को सहन करते हैं क्योंकि वे जानते हैं कि परिणाम चमत्कारिक होगा। यदि तुम स्वेच्छा से चुनाव करते रहे तो तुम भी चमत्कार का अनुभव करोगे। मनुष्य होने के नाते हमारे पास सदा चुनाव होते हैं। हमारे पास इतने चुनाव होते हैं कि हमें उसका भान तक नहीं होता। हम सोचते है। कि हम अपने जीवन में बहुत सीमित हैं और हमें वही करते हुए जीना है, जो हम इस समय कर रहे हैं। यह हमेशा तुम पर ही निर्भर करता है कि तुम अपने सामाजिक स्व से प्रामाणिक स्व की दूरी तय करने में कितना समय लोगे। कुछ लोग कभी सचेतन पथ पर नहीं आ पाते और आजीवन गहरी नींद में ही सोए रहते हैं। कुछ लोग घर की ओर कदम बढ़ाते हैं और यह याद रखते हैं कि वे सही मायने में कौन हैं। केवल कुछ लोग ही पूरी तरह से अपने घर वापिस आते हैं और उन्हें अपना सच्चा स्वरूप कभी नहीं भूलता। ये साहसी आत्माएं अपनी प्रामाणिक शक्ति को पूरी तरह पहचानती हैं और संसार में प्रबुद्ध आत्माओं के रूप में जानी जाती हैं। यही इस ग्रह के सबसे बड़े नेता व आध्यात्मिक शक्तियां होते हैं। यह पीड़ा इसलिए अनुभव कर रहे हो क्योंकि तुम जन्म पाने की प्रक्रिया में हो। तुम एक ऐसे पुनर्जन्म का अनुभव कर रहे हो, जिसमें उचित समय आने पर एक नए जीव का उदय होगा। यह ब्रह्माण्ड हमारी सोच से भी कहीं अधिक बुद्धिमान है। हमारे जीवनों में एक अद्‌भुत सामंजस्य संचालित होता है। हम बाहरी परिणामों को रोकने के लिए

जितना कम बल लगाते हैं और प्रवाह के साथ बहते हैं, उतना ही अधिक जादू, हमारे वास्तविक जीवन में प्रकट होगा। यदि तुम चाहते हो कि हर बात की डोर तुम्हारे हाथ में हो और संतुलन के बिना नतीजे भी तुम खुद ही निकालो तो इसे नियंत्रण पाने की इच्छा से अधिक कुछ नहीं कह सकते। बस यह ध्यान रखो कि तुम रूपांतरण की प्रक्रिया से गुज़र रहे हो और इस पल के साथ जीना सीखो। निर्णय लो कि तुम्हारे साथ जो भी घट रहा है, उसका पूरा आनंद लोगे और ये जहां ले जाएगा, इसके साथ चलोगे। इसे बुरा माने या कहे बिना केवल अनुभव करो। अपने-आप को हर तरह की परख से मुक्त करो – यह सब मात्र भ्रम है। यह यथार्थ नहीं है। भीड़ ने तुम्हें सिखाया है कि यह बस बुरा है। भरोसा रखो। सामने आने वाली भावनाओं को महसूस करो और उन्हें संपूर्णता तक लाने का प्रयास करो। समय के साथ-साथ तुम इसे पूरे जीवन को परिभाषत करने वाले क्षणों के रूप में देख सकोगे।"

अब जूलियन ने अपने झोले से एक जर्जर दिख रही किताब निकाली। "ये लो, देखो। इसमें रूमी की कुछ कविताएं हैं, जो मुझे बहुत पसंद हैं। उन्होंने एक पन्ने से पढ़ा: "मैंने दुख को उदासी का प्याला पीते हुए देखा व पुकारा, यह मीठा है, है न?" दुःख ने उत्तर दिया, "और तुम मेरा काम खराब कर रहे हो। तुमने मुझे पकड़ लिया। जब तुम जानते हो कि यह एक वरदान है तो अब मैं इसे कैसे बेच सकता हूं।" तुम्हारी उदासी व पीड़ा वास्तव में एक वरदान है। यह तुम्हें आकार देते हुए, जगा रही है। कृपया याद रखो कि अब तुम पांचवें चरण तक जा रहे हो।"

"जूलियन, यहां क्या करना होगा। सच कहूं, मैं चाहता हूं कि अब सब छोड़ दूं। अब समझ नहीं आता कि किसकी बात सुनूं। मेरे दोस्त व सहकर्मी तो मानो दूसरी ही दुनिया के हो गए हैं। मेरे मन का एक हिस्सा जानता है कि वे भीड़ से संबंध रखते हैं और उनकी मान्यताएं भ्रम पर टिकी हैं पर उनकी बात का अनादर करना भी बहुत कठिन है। मैं जानता हूं कि मैंने एक नई दुनिया में कदम रख लिया है पर ऐसा लगता है कि इन दोनों के बीच ही कहीं उलझ सा गया हूं। कभी-कभी तो मैं खुद से यह सवाल भी करते पकड़ा जाता हूं कि क्या आपकी कही सारी बातें सच हैं? मैं आपकी ईमानदारी व निष्ठा पर संदेह नहीं करता। जूलियन, मैं ऐसा कहना भी नहीं चाहता। मैं तो केवल यह सोचता हूं कि अगर आप गलत हुए तो? अगर मैंने इन बातों को अपना कर, अपने जीवन को और भी जटिल बना लिया तो?"

"बहुत अच्छे, डार! तुम अपने भय को जितना अधिक स्वर दोगे इससे उबरना उतना ही आसान हो जाएगा। तुम इसके बारे में जितना बात कर सकोगे, छिपे हुए साए उतनी ही तेज़ी से बाहर आएंगे और प्रकाश में आते ही, परख के बाद, उनके ओझल होने का समय आ जाएगा। अपना सच कहने के लिए आभार! बहुत कम लोग ऐसा कर पाते हैं। याद रखो, अपने भय के बारे में बात करना और इसे मुक्त मन से दिन की रोशनी के बीच लाना, कुछ ऐसा ही है मानो तुम उस दैत्य को किचन में आ कर, अपने साथ एक प्याला चाय पीने का न्यौता दे रहे हो, जो तुम्हारे घर में बसेमैंट में रहता है। ज्यों ही वह तुम्हारी चेतना के प्रकाश में

आएगा, वह विलीन होना आरंभ हो जाएगा। जो कुछ भी अब तक अवचेतन के पर्दे में छिपा था, जब तुम इसका मूल्यांकन व परीक्षण करते हुए, चुनाव करोगे तो वह सजग मन के क्षेत्र में प्रवेश कर जाएगा। अधिकतर भय, भ्रम के सिवा कुछ होते ही नहीं! अब तुम जानते हो: कि फिर भी वे हमारे जीवन को अपने वश में रखते हैं। हमें नीचा दिखाते हैं। वे हमें जंजीरों से बांधे रखते हैं और हमारे जीवन को संभावनाओं की बजाए सीमाओं से बांध देते हैं। बस मैं इतना कह रहा हूं कि तुम मुझ पर विश्वास रखो। **भोर होने से पहले, अंधेरा हमेशा घना होता है। प्रत्येक के जीवन में ऐसे अवसर आते हैं, जब उन्हें छोर पर काम करते हुए बड़े खतरे मोल लेने होते हैं। हर जिज्ञासु के लिए ऐसा समय आता है जब वह मन ही मन यह जानता है कि यदि उसने खतरा मोल लेने से इंकार किया तो वह हमेशा के लिए एक साधारण जीवन जीने के लिए अभिशप्त हो जाएगा। परंतु छलांग लगाने के लिए भय लगता है और इसके लिए साहस चाहिए। इस तरह वे एक नए जगत में आ सकते हैं। एक ऐसी धरती जो असीम संभावना, आजादी व प्रसन्नता से भरी है। गहराई में उतरो और अपनी अंतरात्मा के स्वर को सुनो। फिर इसके मार्गदर्शन पर विश्वास करो। अनेस निन के शब्दों में, 'जीवन किसी व्यक्ति के साहस के अनुपात में ही सिकुड़ता है या विस्तार पाता है।'**

"जूलियन, आप जानते हैं? इन दिनों मैं अपनी अंतरात्मा के स्वर को कहीं अधिक तेज़ी से सुनने लगा हूं। इन दिनों यह बदलाव भी आ रहा है। इससे पूर्व, मेरे पास केवल आपका मार्गदर्शन था। आपकी कोचिंग ही मुझे यहां तक लाई है। मानो अब मैं अपने विवेक व व्यक्तिगत सत्य से भी साक्षात्कार कर सकता हूं। पर अब यह सब बदल रहा है...।"

"डार! सही कहा। यही वजह है कि तुम न केवल अपने-आप से बल्कि उन लोगों से भी संप्रेषण करना चाहते हो, जो तुम्हारी तरह इस पथ पर चल रहे हैं। और इस संसार में आज बहुत से लोग इस पथ पर हैं। जैसा कि मैंने पहले कहा, संप्रेषण से तुम्हारा संकल्प गहरा होता है। तुम अपनी इच्छा के बारे में जितना बात करोगे, उन बातों के लिए अपने-आप को उतना ही समर्पित कर सकोगे, जो तुम्हारे द्वारा की जानी चाहिए।"

जूलियन तितलियों के साथ खेलने लगे। उनके भीतर बैठा बालक पूरी तरह से जीवंत व सक्रिय था। ऐसा लग रहा था कि तितलियां भी उनके बाजुओं व हाथों पर बैठ कर आनंदित हो रही थीं। मैं भी खेल में शामिल हो गया। हम दोनों उन स्कूली बच्चों की तरह दिख रहे थे, जो अपने में ही मग्न, स्कूल के प्रांगण में पूरी जीवंतता के साथ, किसी भी आत्मानुभूति या वर्जना से परे आनंद उठा रहे थे। हो सकता है कि पिछले समय में मैं जीवन को बहुत अधिक गंभीरता से लेता रहा था। हो सकता है कि यही मेरे जीवन का सबसे महत्वपूर्ण व अहम समय था। मैं जितना गहन रूप से मनन करता था, इस बात का यकीन होता जाता था कि यही सच था। मैं अपने शरीर के रोम-रोम में इसे महसूस कर सकता था पंरतु दिमाग में चल रही उथल-पुथल कुछ और ही कहती थी। जूलियन ने भी गलत नहीं कहा था: प्राय: दिमाग की यह बकवास, भय के अपने स्वर से अधिक कुछ नहीं होती। दिमाग सीमित होता है

जबकि हृदय उदार है। वैसे भी, अब मैं अपने जीवन में नेता की भूमिका निभाना चाहता था। मैं खुल कर सामने आना चाहता था और बाकी दिनों में बड़े दांव खेलना चाहता था। मैं अपनी सीमाओं से परे जाना चाहता था और अपने घर लौटना चाहता था। मैं उसी व्यक्ति को याद करना, तलाशना व पाना चाहता था जो परतों में दबा था, जिसे मेरे सीमित विश्वासों, धारणाओं तथा आसपास की दुनिया के भय ने छिपने को विवश कर दिया था। मेरे भीतर की विशालता प्रकट हो रही थी।

हम सही मायनों में अपने–आप से, अपने अस्तित्व से ही भयभीत होते हैं। हम अपने ही प्रकाश से भयभीत होते हैं। हम अपनी ही बुद्धिमता से भयभीत हैं। हम अपनी ही असीम संभावना से भयभीत हैं। हम अपने ही प्रकाश को दुनिया के सामने आने नहीं देना चाहते क्योंकि हम डरते हैं। महान उपहारों के साथ ही महान उत्तरदायित्व भी आते हैं। मेरा तो यही मानना है कि तकरीबन लोग अपने उपहारों को देखना ही नहीं चाहते क्योंकि वे उनसे जुड़े उत्तरदायित्वों को नहीं निभा सकते। पूरी निर्भीकता के साथ, संसार में अलग तरह से जीने का उत्तरदायित्व। और इस तरह, वे अपनी ही महानता से दूर छिटकते चले जाते हैं। मैंने संकल्प लिया कि मैं अपने साथ ऐसा कभी नहीं होने दूंगा।

जूलियन के साथ हुई इस भेंट के बाद और भी बहुत कुछ खुल कर सामने आने लगा। सब बातों का सार दिखाई देने लगा। सत्य व आत्मजागरण के इस पथ पर बहुत से अभ्यास की आवश्यकता थी। यदि मैं सब कुछ जान कर उसे अपने जीवन में उतारना चाहता था तो मुझे और भी संभल कर चलना था। दरअसल अपने घर वापसी की यात्रा ही हमारे जीवन की सारी जीवंतता का कारण है। यह एक अद्‌भुत यात्रा है। परंतु बहुत से उत्तर भी सामने आने लगे थे। मैंने पाया कि वे तभी सामने आते थे, जब मैं उन्हें पाने के लिए उत्सुक होता था। मैं जिन प्रश्नों के उत्तर पाने के लिए संघर्ष कर रहा था, वे बहुत ही सादे रूप में, मेरे सामने आने लगे थे। जितना अधिक आंतरिक कार्य कर रहा था, उतने ही समाधान व वृद्धि की ओर अग्रसर हो रहा था। जितना भीतर उतर रहा था, मेरी बाहरी दुनिया में उतना ही बदलाव आ रहा था।

जब मैं अपनी बाहरी दुनिया में था तो यही सोचता था कि बाहरी वस्तुओं पर केंद्रित रह कर ही आंतरिक प्रसन्नता पाई जा सकती है। दूसरे शब्दों में, मुझे लगता था कि कहीं अधिक महंगी कार और बढ़िया कपड़े मुझे भीतर से बेहतरी का एहसास दिला सकता था। परंतु जूलियन के साथ जितना समय बिताता गया, मुझे यह स्पष्ट होता गया कि प्रसन्नता का का संबंध भीतर से होता है। हमें अथाह धन–संपदा नहीं बल्कि आत्मविश्वास चाहिए। जीवन को और अधिक सार्थक बनाना होगा। केवल सफल नहीं बल्कि महत्वपूर्ण बनना होगा, यानी एक ऐसा व्यक्ति जो जीवन में कुछ शाश्वत मूल्य रचना चाहता है। यह कहने का मेरा तात्पर्य है कि सब कुछ प्राकृतिक रूप से ही सामने आ रहा था। मानो कोई उच्चतर बुद्धिमता मेरा मार्गदर्शन कर रही थी। मैं हमेशा ही जीवन से लड़ता आया था और जानता था कि यह सब नियंत्रण से जुड़ा था। अब मैं एक अलग ही तरीके से जी रहा था। अब जीवन मेरा नेतृत्व कर

रहा था। ऐसा नहीं कि मैंने कभी पूरी जिम्मेदारी से जीवन को नहीं जीया। जीवन में सब कुछ एक सूक्ष्म संतुलन पर ही टिका है। मुझे अब भी अपने लक्ष्य सोच–समझ कर चुनने होंगे और उन पर व्यावहारिक रूप से कदम उठाना होगा परंतु जीवन का प्रतिरोध करने की बजाए, मैं बहुत ही शिथिल महसूस करने लगा हूं। मैं पहले से कहीं अधिक समर्पण करने लगा हूं। मैंने अपना बेहतर दिया, अब जीवन को अपने तरीके से सामने आने दो। यदि मेरे कुछ बेहतर करने के बाद भी, संतोषजनक नतीजा नहीं आता तो शायद वह मेरे लिए था ही नहीं। और मेरे निजी विकास के लिए उससे भी कुछ गहन व संपूर्ण प्रकट होगा। जब एक द्वार बंद होता है तो दूसरा द्वार अपने–आप खुल जाता है और हर अंत अपने–आप में एक नया आरंभ होता है।

मैं घटनाओं को घटित करने और उनके घटित होने के बीच संतुलन साधने लगा था। मैं करने व होने के बीच संतुलन साधना सीख रहा था। मैं अपने दिल और दिमाग के बीच संतुलन साधते हुए चलना सीख रहा था। अपने तर्क को जुनून के साथ रख कर चलना सीख रहा था। अंतत: मैंने धरती व स्वर्ग के बीच संतुलन साधना आरंभ कर दिया था।

अध्याय 9

जिज्ञासु की परीक्षा ली जाती है।

यदि आपके भीतर कुछ महान है तो वह आपकी पहली ही पुकार पर बाहर नहीं आ जाएगा। यह सरलता से आपके सामने प्रकट नहीं होगा इसके लिए आपको मेहनत और प्रयास करना होगा।

–राल्फ वाल्डो इमर्सन

जूलियन से चिड़ियाघर में हुई उस भेंट के बाद, मेरे जीवन में बहुत से वरदान प्रकट होने लगे। पिछले कुछ सप्ताह में बच्चों के साथ मेरे संबंध पहले से बहुत उदार व स्नेही हुए थे। मैं उनके साथ उस स्तर पर आ कर बात करने लगा था, जो मुझे अपने जीवन में पहले कभी नहीं मिल सका था। हमारे भीतर और गहरा प्यार उमड़ आया था और उन्होंने मुझे बताया कि मैं पहले से कहीं उदार, स्नेही व सहज दिखने लगा था। उन्होंने इससे पहले मुझे इस रूप में कभी नहीं देखा था। अंतत: मैं एक ऐसे पिता के रूप में सामने आ रहा था, जैसा कि मैं हमेशा से ही बनना चाहता था।

एक शाम, हमारे स्थानीय पुस्तकालय में आत्म–अन्वेषण व व्यक्तिगत रूपांतरण पर हो रहे सेमीनार भाषण के दौरान मेरी भेंट साशा से हुई, जो बहुत ही प्यारी व बुद्धिमान थी। मैं उससे प्यार करने लगा था; मैंने कभी सोचा तक नहीं था कि कभी किसी स्त्री के लिए मेरे मन में ऐसे विचार पैदा हो पाएंगे। वह बहुत ही शांत, बुद्धिमान, प्यारी, हास्यप्रिय व ज़मीन से जुड़ी हुई स्त्री थी। उससे मिलने के बाद जान गया था कि नियति ने हम दोनों का शेष जीवन एक साथ ही लिखा था। यह केवल एक एहसास था और इन दिनों मैं अपने एहसासों पर बहुत ध्यान देने लगा था।

जूलियन की कोचिंग व उनके होली ऑवर कांसेप्ट यानी पवित्र घंटे के लिए धन्यवाद देना चाहूंगा, जिसने मेरे आंतरिक जगत को रचना आरंभ कर दिया था। इस पहले जागरण को गति देने के लिए मैंने बहुत सी किताबें पढ़ीं और अपनी बुद्धि के स्तर को सुधारा। मैं नियमित रूप से डायरी लेखन करता रहा और उन सभी जीवन दर्शनों को सुधारता रहा, जिन्हें मैंने

अपने जीवन में उतारना था। मैंने तय कर लिया था कि जूलियन की सलाह पर चलूंगा, दूसरों की बजाए अपनी ही सोच पर केंद्रित रहूंगा। मैंने किसी दूसरे के जीवन को जीने से साफ इंकार कर दिया था। मैं वह जीवन नहीं जीना चाहता था, जिसे जीने के लिए भीड़ सदा प्रोत्साहित करती आई थी। केवल मन का जागरण ही संपूर्णता अंतराल को भरने के लिए पर्याप्त न था इसलिए मैंने शरीर के पोषण पर भी ध्यान देना आरंभ किया, मैं अपने भावों को आरोग्य प्रदान करते हुए, आत्मा पर भी विशेष रूप से ध्यान देने लगा था। मैं सप्ताह में चार बार योग कक्षा में जाता। सप्ताह में तीन बार, अपने भावों पर विचार करने के लिए समय निकालता ताकि अपने भीतर छिपे गुस्से या दबी उदासी को बाहर निकाल दूं ताकि वे मेरी सोच, एहसास व व्यवहार पर किसी भी तरह से प्रभाव न डाल सकें। और मैं प्रतिदिन अपने आध्यात्मिक पक्ष को जागृत करने के लिए कुछ न कुछ अवश्य करता, फिर चाहे वह छोटा सा ही कदम क्यों न हो। कभी-कभी प्रार्थना करता तो कभी उस पवित्र घंटे के दौरान किसी बाग में जा बैठता, गुलाबों की भीनी गंध को महसूस करता और सूरज की धूप को अपने चेहरे पर स्पर्श होने देता। और निःसंदेह मैं अपनी उस वचनबद्धता को भी पूरी तरह से निभा रहा था कि मैं अपने लिए ईमानदार रहूंगा और उन सभी मूल्यों के साथ जीऊंगा, जो मुझे भीड़ में खींच कर ले जाने की बजाए, जीवन में प्रामाणिक लगेंगे और मेरी चेतना का अंग बनना चाहेंगे।

यह सब देख कर लगता था मानो मैंने अपने बृहत्तर जीवन के जागरण में बहुत से समय व ऊर्जा का निवेश किया था। हकीकत यह है कि मैंने अपने आंतरिक जागरण के लिए जो समय लगाया था, उसे उस समय से उधार लिया गया था जिसे मैं अपने भूतपूर्व अवतार में विभिन्न ध्यान बंटाने वाली गतिविधियों में नष्ट कर दिया करता था जैसे आवश्यकता से अधिक सोना या टी.वी. देखना। मैंने यह भी जान लिया था कि इन गतिविधियों पर आवश्यकता से अधिक समय लगाने का तात्पर्य यही था कि मैं अवचेतन में, गहरे स्तर पर पीड़ा का अनुभव कर रहा था। मैं इस तथ्य से पीड़ित था कि मैं अपने असाधारण रूप से खूबसूरत व भरपूर जीवन को न जीते हुए, अपने-आप से छल करता आ रहा था। जब तक मैंने अपने-आप को जगाना आरंभ नहीं किया था या मुझे यह नहीं पता था कि मेरे भीतर क्या चल रहा था, तो मुझे कुछ अंदाजा नहीं था कि मैं ऐसा जीवन क्यों जीया? मैंने केवल भीड़ का पीछा किया और इस बारे में कोई विचार नहीं किया। मैं एक झूठ के साथ जी रहा था। मैं एक भ्रम के बीच उलझ गया था। और यह मुझे मारे दे रहा था। अल्बर्ट आइंस्टाइन के शब्दों में, 'कितने लोग अपनी ही रोज़मर्रा की आदतों में उलझे हैं, वे सुन्न, भयभीत व विरक्त हैं। यदि हम बेहतर जीवन जीना चाहते हैं तो हमें यह चुनाव करना ही होगा कि हम कैसा जीवन जी रहे हैं।'

जीवन जीना एक आनंद बन सकता है। मेरे पास जीवन में इतनी ऊर्जा पहले कभी नहीं रही थी। दोस्तों का कहना था कि मेरी आयु दस साल कम दिखने लगी थी। मैं दूसरे इंसानों के साथ कहीं बेहतर जुड़ाव महसूस करने लगा था। एक महान व्यक्ति बनने की इच्छा व विश्वास ऊंचाई पर था। मेरा व्यवसाय फल-फूल रहा था। जूलियन ने एक बार कहा था: 'हम

जीवन में जो चाहते हैं, उसे आकर्षित नहीं करते, परंतु हम उसे आकर्षित करते हैं, जो हम होते हैं।' जब मैं और अधिक प्रिय, स्नेही, उदार, बुद्धिमान बन जाऊंगा तो यह ब्रह्मण्ड स्वयं आएगा और मेरे पंखों को उड़ान देगा।

जूलियन ने मुझे, द सेंट, **द सर्फर एंड द सीईओ** की व्यक्तिगत प्रति दी थी, जो मैंने होटल 'Q' के कक्ष में पड़ी देखी थी। यह एक ऐसे व्यक्ति की कहानी है, जो अपने महानतम जीवन की तलाश में निकला है, यह पुस्तक तीन विशेष गुरूओं के आसपास केंद्रित है जो उसे ऐसे महत्वपूर्ण सबक देते हैं, जो उसके रूपांतरण को और भी सहज बना देते हैं। यह वास्तव में एक प्रेरणादायी पुस्तक थी और मुझे उसमें लिखी अनेक पंक्तियां विशेष रूप से अच्छी लगीं। मैं देख सकता था कि वह पुस्तक जूलियन को क्यों प्रिय थी। मेरे जीवन की इस अवधि के दौरान, पुस्तक के अंत में दी गई कुछ पंक्तियां तो मेरे लिए नियमित चर्या का अंग बन गई थीं। मैंने उसे अरस्तू की लिखी पंक्तियों के साथ अपने बाथरूम की दीवार पर चिपका दिया था ताकि उसे रोज़ पढ़ा जा सके। ये शब्द हेनरी फ्रेडरिक एमियल के थे। लिखा था:

जीवन की प्रक्रिया आत्मा का जन्म होनी चाहिए।
यही सबसे बड़ी कीमया है,
और यही धरती पर हमारी
उपस्थिति को तर्कसंगत ठहराती है।
यही हमारी पुकार व सद्गुण है।

इस दौरान मैंने और भी कई अच्छी पुस्तकें पढ़ीं जिन्होंने मेरे अस्तित्व को एक नई चमक व रोशनी देने के लिए सहायता प्रदान की, इनमें ट्रीना पॉलस की होप फॉर द फ्लावर्स, हरमन हैंसे की सिद्धार्था, जोसेफ जावोरस्की की सिक्रोनिसिटी, फिल जैकसन की सेकेर्ड हूप्स आदि शामिल थीं पर एक किताब का नाम विशेष रूप से लेना चाहूंगा। इस अद्भुत पुस्तक का नाम था, पीटर बे काइन की द गो गेट्टर। मैंने कभी नहीं जाना था कि ये अद्भुत पुस्तकें भी मुझे मेरे बेहतरीन अस्तित्व के जागरण के लिए तैयार कर सकती थीं।

महान आत्मविश्लेषण व निजी वृद्धि के क्षणों में, मैंने जूलियन द्वारा सिखाई गई तकनीक को भी गहराई से समझना आरंभ कर दिया। मैं समझ गया था कि यह सात चरणों वाली प्रक्रिया ऐसी थी, जिसे पार करने के बाद ही कोई जिज्ञासु अपने घर तक जा सकता था। यह बहुत से रहस्यवादियों तथा विभिन्न संस्कृतियों के चिंतन को एक साथ प्रस्तुत करते हुए, सरल शब्दों में हमें सिखाती थी कि हम यहां क्यों हैं और क्या करने आए हैं? जूलियन ने जिस यात्रा की बात की थी, वह सत्य और प्रबोध से जुड़ी थी, ये वही दो लक्ष्य हैं, जिन तक मनुष्य जाति के उद्भव से ले कर, अब तक पहुंच सका है। जब जूलियन पिछले कुछ माह

से, सरल प्रक्रियाओं में सब कुछ समझा रहे थे तो मैं भी इन बातों को जानने लगा था। उनका मानना था कि मनुष्य को एक जिज्ञासु के रूप में इस पथ पर ऐसे चलना चाहिए मानो वह अपने घर की ओर जा रहा हो, जहां वह हमेशा से जाना चाहता था। जूलियन ने यह भी बताया था कि इस यात्रा को पूरा होने में एक सप्ताह की बजाए पूरा जीवन भी लग सकता था। हकीकत यह थी कि इस रास्ते पर चलने वाला हर व्यक्ति अपनी मंजिल़ तक पहुंचता भी नहीं था। अधिकतर लोग नहीं पहुंच पाते थे। परंतु हर दिन ऐसा अवसर अवश्य प्रदान करता है कि हम अपने आदर्श के और निकट जा सकें और वह बन सकें, जो बनने के लिए हमें भेजा गया था। हर दिन की सचेतन यात्रा ऐसे अवसर पैदा करती है कि हम अपने भीतर के सुनहरे बुद्ध को प्रकट कर सकें जो हमारे भय, सीमित धारणाओं व झूठी मान्यताओं की परत में छिपे हैं। वे मुझे आध्यात्मिक पथ को समझाने के लिए एक स्पष्ट व शक्तिशाली ढांचा देने की चेष्टा कर रहे थे। वे मुझे पूरा मान देते हुए, अपने सीमित समय में भरसक मदद देने की चेष्टा कर रहे थे।

मुझे एहसास हुआ कि जूलियन ने दुनिया में बहुत से लोगों की सहायता करनी थी और वे जल्द से जल्द दूसरे व्यक्ति तक अपनी सहायता पहुंचाना चाहते थे। मैं प्राय: उनके लिए आभार प्रकट करता कि उन्होंने मुझे तलाशा और मेरे जीवन को रूपांतरित करने के लिए अपनी शक्तियां लगा दीं। वे मेरे पिता के एक अच्छे दोस्त रहे थे और मैं अक्सर उन्हें यह बात याद दिलाता रहता था। यह सुन कर उन्हें प्रसन्नता होती। “डार! मेरे लिए मित्रता बहुत मायने रखती है। मैं अपने दोस्तों को मान देता हूं, उनसे स्नेह रखता हूं। तुम्हारे पिता एक अद्भुत व्यक्ति थे। मुझे तुम्हारी सहायता करके प्रसन्नता होगी और मैं इसके अलावा कोई और तरीका जानता ही नहीं।”

जूलियन ने मुझे हाल ही में बताया कि वे वैश्विक शांति आंदोलन का हिस्सा बनना चाहते थे और उस क्षेत्र में सेवा के अवसरों का अन्वेषण कर रहे थे। अनेक राजनीतिक नेताओं को भी उनके काम की जानकारी हो रही थी, जूलियन का संदेश हर जगह प्रसारित हो रहा था और वे हरसंभव रूप में मानवता की सेवा के लिए प्रस्तुत थे। उनका मानना था कि उनकी विवेक बुद्धि व दर्शन संसार की अनेक समस्याओं के लिए हल सुझा सकते थे जैसे मिडिल ईस्ट या नॉरदन आयरलैंड की समस्या आदि। मैं उनकी बात से सहमत था और उस दिन की प्रतीक्षा में था, जब वे विश्व के मंच पर एक अग्रणी नेता के रूप में प्रकट होंगे, सारे देशों के प्रधानमंत्रियों व राष्ट्रपतियों को यह सिखाएंगे कि किस तरह जब वे मुक्त हृदय के साथ अपने सबसे बेहतर अस्तित्व का दावा करेंगे तो युद्धों का नामोनिशान नहीं रहेगा। जब सभी आपस में एक-दूसरे की जीत के लिए आग्रही होंगे तो यह संसार जीने के लिए एक बेहतर व स्नेह से भरा-पूरा स्थल बन जाएगा। हमें इस दुनिया से घृणा को मिटाना है तो पहले अपने भीतर छिपी घृणा को बाहर निकालना होगा। जूलियन ने एक शाम फोन पर बात करते हुए बताया था। मैं जानता था कि वे उस सच की रक्षा के लिए गोली तक खा सकते थे।

जूलियन ने मुझे यह भी बताया कि किसी तरह कुछ माह पहले, एक फिल्म निर्माता उन्हें

खोजने में सफल रहा। उन्हें बताया गया कि अगर उनके जीवन पर कोई फिल्म बनाई जाए तो लोगों द्वारा सराही जाएगी क्योंकि लोग भी देखना चाहते थे कि जूलियन एक नई दुनिया के निर्माण के लिए क्या विचार रखते थे। उनके सामने बहुत से नए अवसर पैदा हो रहे थे। मैं जानता था कि वे इन बातों से परे थे और केवल अपनी सद्भावना के साथ ही आगे बढ़ना चाहते थे। उन्हें अपने लिए धन, मान अथवा यश की कामना नहीं थी।

हालांकि जूलियन के इस बढ़ते मान–सम्मान से मैं बहुत प्रसन्न था। वे सही मायनों में सुसमाचारक थे, वे इस ग्रह पर एक ऐसा संदेश प्रसारित कर रहे थे, जिसकी इसे हार्दिक आवश्यकता थी।

मुझे जूलियन से नौ बजे कोर्टहाउस में मिलना था। वे मुझे बता चुके थे कि उन्होंने मेरे लिए एक बहुत ही विशेष कोचिंग सत्र की योजना तैयार की थी ताकि मुझे जीवन में मिलने वाला वह अगला सबक अविस्मरणीय हो जाए।

जब मैं वहां पहुंचा तो एक पुलिस वाला मेरी ओर भागता आया और बोला

“मि.सैंडरसन!”

मैं हैरान था कि उसे मेरा नाम कैसे पता चला।

“जी....कहिए क्या बात है?”

“कृपया मेरे साथ आएं। मेरा नाम ऑफिसर पेरेज़ है और मुझे आदेश दिए गए हैं कि मैं आपको अपने साथ इमारत में ले जाऊं। मैं आपको इससे अधिक कुछ नहीं बता सकता।”

मेरे मन का एक हिस्सा कह रहा था कि इस कहानी के पीछे जूलियन का हाथ था पर दूसरा हिस्सा थोड़ा संभलने के लिए कह रहा था। वह अधिकारी बहुत गंभीर दिख रहा था। हालांकि मैं कानून की मर्यादा को निभाने वाला एक सभ्य नागरिक था और भला पुलिस को मुझसे क्या काम हो सकता था?

वह ऑफिसर मुझे लंबे गलियारे से ले चला, जहां गाउन व कानूनी पोशाक में सजे, प्राचीन जजों की तस्वीरें टंगी थीं। वह पूरी तरह से शांत था और बहुत ही औपचारिक रूप से पेश आ रहा था। मैं उससे एक–दो कदम पीछे चल रहा था और पहली बार कोर्टहाउस आने के कारण, स्वयं को थोड़ा असहज पा रहा था। वैसे मुझे टी.वी. पर आने वाले वे धारावाहिक भाते थे, जिनमें अदालत के दृश्य दिखाए जाते थे। मम्मा चाहती थीं कि मैं एक वकील बनूं।

“मि. सैंडरसन, हम आ गए। आपका दिन शुभ हो।” उसने एक मुस्कान के साथ कहा।

मुझे कोर्टरूम नंबर 6 में छोड़ा गया और अब मैं लकड़ी के दो विशाल दरवाजों के सामने खड़ा था। इमारत को मरम्मत की जरूरत थी और कालीन लोगों के आने–जाने के कारण खस्ताहाल थे। वहां कोई नहीं था। मैंने दरवाजा धकेला और भीतर चला गया, हालांकि कुछ अंदाजा नहीं था कि वहां क्या देखने को मिलने वाला था। मेरा दिल तेज़ी से धड़क रहा था।

कोर्टरूम में केवल दो लोग ही दिखाई दिए। एक अधेड़ आयु के जज बेंच के पीछे बैठे थे। और उनके सामने ग्रे पिनस्ट्राईप सूट में वकील खड़े दिखे, उनकी पीठ मेरी ओर थी परंतु प्रीमियम क्वालिटी के सूंटों की जानकारी होने के नाते मैं कह सकता था कि वे बहुत दामी कपड़ों में थे। जज और वकील आपस में कुछ बतिया रहे थे, जिसे मैं सुन नहीं सका। दोनों ही नाटकीय अंदाज़ में जारी थे, वकील अपने हाथ हिला-हिला कर बात कर रहा था और जज बार-बार अपनी गर्दन हिला रहे थे। मैं आगे आया और वहां रखें उन बेंचों में से एक पर बैठ गया, जहां प्राय: मुकदमे की पैरवी देखने के लिए आए दर्शकगण बैठते हैं। मैंने अपना मुंह नीचे कर रखा था।

"मि. सैंडरसन, वहां नहीं, आप यहां आएं।" जज ने उस सीट की ओर संकेत किया, जहां प्राय: कैदियों को बिठाते हैं।

"मैंने क्या गलत किया है?" मैंने अपना आपा संभालने की चेष्टा करते हुए पूछा। "मेरे एक दोस्त ने यहां सुबह नौ बजे भेंट का समय दिया था। जब मैं सीढ़ियां चढ़ रहा था तो एक अधिकारी मेरे पास आए, वे मुझे कोर्टरूम तक छोड़ गए। मुझे कुछ पता नहीं कि यह सब क्या हो रहा है। मेरे दोस्त मुझे खोज रहे होंगे और मैं बहुत अकुला रहा हूं क्योंकि मैं नहीं जानता कि उन्होंने मुझे भेंट के लिए यहां क्यों बुलाया? क्या मुझ पर कोई अभियोग लगाया गया है?"

"दोस्त! तुम पर अपने-आप से ही धोखा व छल करने का अभियोग लगा है।" लंबे वकील ने मेरी ओर मुड़ कर, हंसते हुए कहा। ये तो जूलियन थे। वे भाग कर मेरे पास आए और ऐसे गहरे आलिंगन में बांध लिया, जैसा पहले कभी नहीं दिया था। मैंने जज की ओर देखा जो किसी स्कूली बच्चे की तरह खिलखिला रहे थे।

"डार! आशा करता हूं कि हमने तुम्हें डराया नहीं है। ये जज महोदय..." जूलियन ने एक आंख दबाते हुए कहा, "ये वाल्टर हैं, जो आज तुम्हें छोटा सा सबक देने के लिए, मेरे मदद करने आए थे। वाल्टर और मैं तभी से, बहुत सा वक्त एक साथ बिताते आए हैं, जब मैं वकालत का अभ्यास किया करता था। हम अच्छे दोस्त थे। मैंने कल रात उन्हें फोन किया और कहा कि क्या वे मेरी मदद करेंगे।" जूलियन ने एक मुस्कान के साथ स्पष्ट किया।

अब जज ने जूलियन को बहुत ही अपनेपन व प्यार से संबोधित किया, "जूलियन आपके जैसा वकील मैंने अपने कार्यकाल में कभी नहीं देखा। एक वादी वकील के रूप में आपके हुनर का कोई मुकाबला ही नहीं कर सकता। मैंने अपने पूरे कैरियर के दौरान ऐसा कोई व्यक्ति नहीं देखा, जो वकालत की इतनी गहरी समझ रखता हो हालांकि अपने कैरियर के दौरान कुछ हुनरमंद वकील दिखे पर दोस्त, आपको इतने समय बाद देख कर बहुत अच्छा लगा। हम सभी यही सोचते रहे कि आप अपनी वकालत छोड़ कर कहां चले गए थे। हिमालय में आपकी रूपांतरण की कहानी वास्तव में अद्‌भुत है - उसे मेरे साथ बांटने के लिए आभार! अब तो आप बिल्कुल जवां दिखने लगे हैं और यह वास्तव में अविश्वसनीय है। मैंने आज तक, न कभी ऐसा देखा और न ही सुना। यदि आप आज रात का खाना मेरे साथ

खा सकें तो मैं पूरे दिल से आपका स्वागत करता हूं। जूलियन, आप जानते हैं न कि मेरे घर के दरवाजे आपके लिए हमेशा खुले हैं।"

"हां जानता हूं, वाल्टर! बहुत-बहुत धन्यवाद!" जूलियन ने उदारतापूर्वक कहा।

"जूलियन, सारा कानूनी समुदाय तुम्हें बहुत याद करता है और जहां तक आपका सवाल है, मि. सेंडरसन, मैं नहीं जानता कि जूलियन आज आपको यहां कौन सा सबक देने वाले हैं; पर इतना तो तय है कि यह आपके जीवन को हमेशा के लिए बदल देगा।"

"सर, पहले ही ऐसा कर चुके हैं।" मैंने बहुत ही आश्वासन भरे शब्दों में कहा और अपने हास्यप्रिय गुरू की आंखों में निहारा।मैं जानता था कि उन्हें सभी चीज़ों को रोचक अंदाज़ में पेश करना भाता था।

जज अपने स्थान से उठे और अपने दोनों हाथों से, जूलियन से पूरी गर्मजोशी से हाथ मिलाया, वह कुछ इस तरह का भाव था, जो अक्सर चुनाव अभियान के दौरान प्रत्याशी वोटर्स को अपनापन दिखाने के लिए जताते हैं। फिर वे हमें वहीं छोड़ कर, अपने निजी चैंबर में चले गए।

"बेशक! मेरे दोस्त! तुमने कोई गुनाह नहीं किया। मैं जानता हूं कि तुम अपने-आप को धोखा देने वाली अवस्था को महीनों पहले पीछे छोड़ आए हो। मैं कुछ ऐसा करना चहाता हूं ताकि तुम अपने जीवन में सात चरणों वाली आत्म-जागरण प्रक्रिया के छठे चरण तक आ सको। देखो, यह छठा चरण अपने-आप में एक परीक्षा ही तो है।"

"एक कोर्टरूम में।"

"नहीं डार! यह एक अलग तरह का मुकदमा है। जब कोई जिज्ञासु अपने बृहत्तर स्वरूप के आखिरी पड़ाव तक नहीं पहुंच जाता, उसे एक परीक्षा देनी होती है। इससे पूर्व कि वह उस खजाने को पाए, जिससे वह खोजने निकला था, उसे एक परीक्षा देनी होगी। इस पथ पर जीवन इसी तरह कारगर होता है। यदि तुम प्रज्ञा का ज्ञान देने वाले किसी भी महान ग्रंथ को पढ़ो तो उसमें भी यही लिखा मिलेगा। तम पाओगे कि जिज्ञासु को हमेशा अपना मनचाहा पाने से पहले किसी परीक्षा से गुज़रना ही होता है।"

"जूलियन, यह संसार इस तरह काम क्यों करता है? कुदरत के नियम ऐसे क्यों बनाए गए हैं कि इंसान को अपनी यात्रा समाप्त करने से पूर्व परीक्षा देनी होगी?"

"अच्छा सवाल है। इसके भी दो कारण हैं। पहले तो यह देखा जाता है कि क्या जिज्ञासु ने जीवन की राह में सामने आने वाले सभी सबक सीख लिए हैं या नहीं? और दूसरे, इसके साथ ही उसके संकल्प की भी परख होती है। **अधिकतर लोग सपनों के पास पहुंचने से पूर्व ही उनका पीछा करना छोड़ देते हैं। लोग सब कुछ मिलने से केवल एक कदम पहले ही ठिठक जाते हैं।** मानो यह उसी सुनार की कहानी की तरह है। उसने अपना सारा जीवन उस सोने को खोजने में लगा दिया जो उसे अमीर बना सकता था। एक दिन, जब वह

अपने हथौड़े से चट्टान के टुकड़े को खुरच रहा था तो उसने तय किया कि बस बहुत हो गया। पैंतीस साल से अपना पेट भरना तक कठिन हो चला था। तो उसने चट्टान के टुकड़े को परे फेंका। हथौड़ा वहीं रखा और खान से बाहर आ गया। अगली सुबह, एक नए व्यक्ति ने उसका काम संभाला और उसी चट्टान को हाथ में ले लिया। उसने देखा कि उस पर तकरीबन काम हो गया था इसलिए उसने तय किया कि बस अब एक बड़ी चोट ही काफी थी। उसने ऐसा ही किया और वह अपनी आंखों पर यकीन नहीं कर सका। चट्टान के दो टुकड़े हो गए और उसमें से सोने का ऐसा टुकड़ा निकला, जैसा कि खान खोदने वालों ने कभी देखा तक नहीं था। वह युवक यह सब पाने में इसलिए सफल रहा क्योंकि उससे पहले वाला व्यक्ति इतना सब्र नहीं रख सका कि अपना मनचाहा पा सकता।"

"जूलियन बहुत ही आवेग के साथ बोल रहे थे : यूरीपाइड के शब्दों में कष्टों के कारण आत्मा की सहनशक्ति बढ़ती है ताकि वह स्वर्ग से मिले हर उपहार को सहेज सके। **जब भी इस राह में चुनौती का सामना करना पडे तो हार नही माननी चाहिए।** इस तरह बहुत सी चुनौतियाँ सामने आएंगीं। हां, महानतम विजय पाने से पहले महानतम चुनौती का सामना करना ही होगा। इससे पूर्व कि तुम व्यक्तिगत उद्भव की पराकाष्ठा तक जाओ, तुम्हें इस परीक्षा के लिए खुद को तैयार रखना होगा। छठे चरण में यही होता है। पर इससे पूर्व कि तुम अपने भीतर और अधिक गहराई तक जाओ, सही मायनों में जानो कि तुम कौन हो, तुम्हें अनेक कड़ी परीक्षाओं से गुज़ारा जाएगा। तुमने यदि इसी सजगता को बनाए रखा कि तुम अपने सच्चे व प्रामाणिक घर की यात्रा पर हो तो यह सब सहन करना आसान हो जाएगा, तुम हर चीज़ के लिए तैयार होगे।"

"मैं समझ गया। और आप सही कह रहे हैं। केवल यही जानना कि मुझे कुछ संकटों व पीड़ाओं का सामना करना पड़ सकता है, मेरे लिए इस प्रक्रिया को समझना और भी आसान हो जाएगा। जब भी राह में बाधा आएगी तो मैं पहले से यह जानकारी रखूंगा कि यह तो इस पथ में आने वाली एक अवस्था है, जो हर जिज्ञासु के जीवन में आती है। इस तरह मेरे लिए उस अनुभव को सहन करना आसान हो जाएगा। ये कठिन समय मुझे और मजबूत इंसान बनने में भी मदद करेगा। वैसे बताना चाहूंगा कि आपका सूट बहुत अच्छा लग रहा है।" मैंने खीसें निपोरीं।

"मैंने इसे आज सुबह के लिए उधार लिया है। न्याय के मंदिर में इसे पहने बिना नहीं आ सका। इस अदालत में लौटने से बहुत सी यादें भी लौट आई हैं। दोस्त, मुझे अपने नए जीवन से प्यार है, वह जीवन जो मैंने भारत से वापिस आने के बाद पाया है। मैंने खुद को कभी इतना आरामदेह नहीं पाया। मुझे लगता है कि मैं सही मायनों में अपनी जिंदगी जी रहा हूं। मैं हर रोज सुबह असीम ऊर्जा व आनंद के साथ जागता हूं, इस संसार में आना चाहता हूं ताकि उन प्रतिभाओं व उपहारों का पूरा उपयोग हो सके, जो मुझे मानवता की सेवा के लिए दिए गए हैं। मैं अपनी पुरानी जिंदगी के तरीकों को इतना याद नहीं करता। वह तो मैं था ही नहीं। जानता हूं, बाहर से देखने पर लगता होगा कि मेरे पास सब कुछ था। सुंदर स्त्रियां, जैट–सैट

जीवनशैली, कानूनी मुकदमों में जीत, जो कि समाचारपत्रों के पहले पृष्ठों के समाचार बनते और इतना पैसा कि मैं जानता नहीं था कि उसका करना क्या है? पर भीतर ही भीतर मैं कुछ ऐसा था मानो कोई शव चल रहा हो। मेरे भीतर कोई चिंगारी न थी। मेरा भीतरी प्रकाश बहुत मंद था। जीने का तरीका गलत था और मेरा विश्वास करो कि मैं उस अस्तित्व को बिल्कुल याद नहीं करता पर आज यहां आने से बहुत सी यादें जीवित हो गई हैं। मैंने इस पेशे में बहुत से दोस्त बनाए। और सच में बहुत अच्छे लोगों से मेल भी हुआ। डार, जानते हो, हर इंसान भला ही होता है। जब लोग गलत या नीच तरीके से पेश आएं तो यह समझने की भूल कभी मत करना कि तुमने जो देखा, वह उनका असली रूप है। कोई भी अपने दिल से बुरा नहीं होता, वे लोग केवल बुरे तरीके से पेश आते हैं। मैं यह नहीं कह रहा कि तुम्हें उन्हीं लोगों के आसपास रहना चाहिए, जो तुमसे बुरी तरह से पेश आते हैं। बेशक तुम अपनी सीमाएं बना कर, उनसे सुरक्षा पा सकते हो। बस तुम्हें यह भ्रम नहीं पालना चाहिए कि कोई इंसान बुरा हो सकता है। जो लोग दूसरों को चोट या ठेस देते हैं, वे स्वयं चोट खाए हुए लोग होते हैं। तुम्हारे साथ जो भी हो, उनके साथ बुरा बर्ताव मत करो।"

"जूलियन मैंने आपकी बात सुनी। यह बहुत ही रोचक है। हम अपने समाज में हर चीज़ की परख करते रहते हैं। अगर कोई हमारा मनपसंद काम नहीं करता तो हम उसे बुरा करार दे देते हैं या उसे स्वार्थी या दूसरों को अपने वश में रखने वाला कहते हैं। मेरी समझ से तो आप यह कहना चाहते हैं कि यह हालात को देखने का बहुत ही उथला तरीका है। हमें सच को जानने के लिए गहराई तक जाना होगा। जीवन में या किसी परिस्थिति में, सही मायने में क्या चल रहा है, एक सच्चा जिज्ञासु ही यह जान सकता है, है न?"

जूलियन ने मुस्कुरा कर हामी दी। वे इस बात से प्रसन्न थे कि मैं बहुत कुछ सीख रहा था।

"और, गहरे तल पर, जो लोग कठोरता से पेश आते हैं, वे सही मायनों में उन पुराने टेपों को दोहराने के सिवा कुछ नहीं कर रहे होते, जिन्हें वे हमेशा से चलाते आए हैं। वे बचपन में सीखे गए व्यवहार के ढांचों व आदतों को ही दोहरा रहे हैं, उन्हें सिखाया गया था कि जीवन में अपने–आप को बचा कर चलने के लिए ऐसा करना जरूरी है। वे इससे बेहतर कुछ नहीं जानते। वे नहीं जानते कि उनके भीतर क्या चल रहा है। वे अपने जीवन के सही तरह से न चलने पर, बाहरी दुनिया को दोषी ठहराते हैं। ऐसा करने पर वे अपने भय के सायों से कभी मुक्त नहीं हो पाते, सजग चेतना के प्रकाश में नहीं आ पाते। तो इस तरह वे अपने जीवन के झूठ में ही फंसे रह जाते हैं। जब लोगों को काम करने के बेहतर और बुद्धिमतापूर्ण तरीके सिखाए जाते हैं तो वे बेहतर तरीके से काम करने लगते हैं। जब उन्हें एहसास होता है कि जीवन में बदलाव लाने के लिए, उन्हें अपने–आप में भी बदलाव लाना होगा, तो वे उठ कर अपने बृहत्तर जीवन की ओर कदम बढ़ा देते हैं।"

जूलियन ने हाथों से ताली बजाई। फिर वे उठे और अपने सामने पड़ी चमचमाती मेज पर चढ़े और विचित्र सा नृत्य करने लगे। मैं कह नहीं सकता कि उन्होंने उसे हिमालय से सीखा या उन लोगों से सीखा, जिन्हें वे कोचिंग देते थे। मैंने आज से पहले ऐसा कभी नहीं देखा था।

उन्होंने मुझे हंसते देखा पर परवाह नहीं की। वे लगातार अपने हाथों को हवा में लहराते हुए, पैरों को अलग-अलग दिशाओं में घुमाते रहे। कुछ मिलट बाद, वे मेज से उतरे और कक्ष से बाहर ले गए।

"मैंने अदालत और नकली मुकदमे का यह स्वांग इसलिए रचा ताकि तुम इस छठे चरण की याद को दिमाग में हमेशा बनाए रख सको। कुछ अच्छी बातें होने से पहले, कुछ कठोर बातें भी सहनी होती हैं। मैं तुम्हें अपने उस नृत्य से याद दिलाना चाहता था कि यह जीवन एक खेल ही है। इसे गंभीरता से मत लो। दिल खोल कर खेलो। नाचो, हंसो और अपनी संभावनाओं की एक स्वस्थ खुराक बनाए रखो। मैं जानता हूं कि हाल ही में तुम बहुत पीड़ादायी घटनाओं से गुज़रे हो। मैं उनके प्रति संवेदनशील हूं पर मैं तम्हें यह भी याद दिलाना चाहूंगा कि तुमने जीवन में बहुत से वरदान भी पाए हैं। क्या तुम जानते हो कि इस ग्रह पर, एक बिलियन से भी ज्यादा लोग रात को भूखे पेट ही सो जाते हैं। बहुत से बच्चों को भोजन नहीं मिलता। बहुत से भाई-बहन यानी मानवता नामक समुदाय के निवासी, अस्पताल के कमरों में रोगों से घिरे बंदी बने हुए हैं। बहुत से लोग ऐसे हैं, जिनके पास हमारे से भी बहुत कम मात्रा में संसाधन हैं। मेरा दिल उनके लिए अक्सर रो देता है। जूलियन के सुर में और भी कोमलता आ गई थी। काश! मैं उनमें से प्रत्येक की मदद कर पाता। मदर टेरेसा के शब्द याद रखना: 'कोई भी काम महान नहीं होते, केवल छोटे कामों को ही बडे प्रेम के साथ किया जाता है।"

"उन्होंने यह भी कहा कि, 'यदि वे कलकत्ता में पहले व्यक्ति को न उठातीं तो वे बयालीस हज़ार लोगों को न उठा पातीं।' जूलियन, मैंने भी उस दिन एक किताब में पढ़ा। आप ठीक कह रहे थे। पहले मैं जीवन में अपने अभावों पर अधिक ध्यान देता था। मेरे अनुसार तो परिपक्वता इसे ही कहते हैं कि हम उसे सराहें, जो हमारे पास है और जो मनचाहा पाना चाहते हैं, उसे पाने के बारे में चिंता न करें। मैं जानता हूं कि आप सपनों का पीछा करने में विश्वास रखते हैं पर मैंने आपको यह कहते भी सुना है कि अपने जीवन में गहन आभार को अनुभव करना भी बहुत मायने रखता है।"

मुझे पर्शिया की एक कहावत याद आ गई: 'मुझे तभी तक अपने पास जूते न होने की शिकायत थी, जब तक मैंने किसी इंसान को बिना पैरों के नहीं देखा था।' जूलियन बोले।

हम गहरी खामोशी के बीच बाहर आए। जूलियन बरामदों में दोनों ओर लगी तस्वीरों को निहारते रहे। जब हम बाहर की ओर आए तो उन्होंने रूक कर, सामने दिख रहे हरे-भरे बाग की ओर निहारा। उन्होंने अपने सूट जैकेट में हाथ डाला और भीतर से ऐसा कागज निकाला जिसे प्राय: वकील लोग, मुकदमे के दौरान नोट्स लेने के लिए प्रयोग में लाते हैं। उस पर लिखा था: 'परीक्षा में विजय पाने के लिए नियम'

"दोस्त! यह तुम्हारे लिए है।" जूलियन ने मुझे वह कागज देते हुए कहा। "मैं चाहूंगा कि तुम इन नियमों को याद कर लो ताकि जब कठिन व चुनौती से भरा समय आए तो अपने बृहत्तर स्व को जागृत करने के लिए, तुम्हारे पास ऐसे साधन हों, जो सहायक हो सकें।"

जूलियन एक पल के लिए रूके व आकाश की ओर देखा। मैंने सुना कि वे कुछ कह रहे थे पर वे शब्द किसी को सुनाने के लिए नहीं कहे गए थे: "कृपया मुझे शक्ति दो ताकि मैं महानतम सेवा का साधन बन सकूं।"

फिर वे मेरी ओर देख कर बोले। आंखों में हल्की सी उदासी दिखी। "तुम बहुत ताकतवर इंसान हो। कुछ ही माह पूर्व तुम अपने प्राण लेने पर आमादा थे पर तुम्हारे भीतर कुछ था, जिसने तुम्हें ऐसा करने से रोक दिया। इसकी बजाए, तुमने जीवन के हाथ में उसकी बागडोर दे दी और वस्तुओं को एक नई नज़र से देखने लगे। इसके लिए बहुत साहस की आवश्यकता होती है। तुमने मेरे कोचिंग सत्रों को पूरी ईमानदारी से निभाया और उन सभी निर्देशों का भी पालन किया, जो वाकई कई बार बहुत अटपटे लगते रहे हैं। तुम भीतर तक गहराई में गए हो, अपने प्रतिरोधों का सामना किया है, अपने सायों का पीछा करते हुए, हृदय को उन्मुक्त किया है। यह देख कर मेरा दिल तार-तार हो जाता है कि लोग अपनी शक्ति व संभावना का इतना सा भी अंश प्रयोग में नहीं ला पाते। मुझे यह देख कर दुःख होता है कि लोग कितने स्वार्थ से पेश आते हैं, सदा अपने हितों को दूसरों के हितों पर वरीयता देते हैं जबकि उन्हें दूसरों की सहायता करते हुए जीना चाहिए और फिर अपनी मदद करनी चाहिए। क्या तुम जानते हो कि यदि इस ग्रह के लोग प्रतिदिन दूसरों की मदद करने के लिए कुछ समय निकाल सकें तो वे कितना प्रसन्न अनुभव कर सकते हैं? क्या तुम्हें जरा सा भी अनुमान है कि जब कोई व्यक्ति, दूसरों के जीवन में शास्वत मूल्य रचने के लिए समर्पित कर देता है तो उसके जीवन में आनंद का कैसा प्रवेश होता है? यदि तुम दूसरों को उनके सपने पूरे करने में सहायता देते हो तो इस तरह तुम अपने-आप को भी एक महान उपहार दे रहे हो पर अधिकतर लोग इस सच को नहीं देखते।"

जूलियन एकदम शांत हो गए।

अधिकतर लोग अपनी आंखों पर पट्टी बांध कर जी रहे हैं। उन्हें लगता है कि वे जिस संसार को देख रहे हैं, वही वास्तविकता है। अब तुम यह जानते हो। और उन्हें लगता है कि वे जो छोटा व सामान्य जीवन जी रहे हैं, उन्हें जीने के लिए केवल वही दिया गया है। नियति ने हम सबको एक महान जीवन दिया है और हमारे लिए नियति ने जीवन का रफ खाका भी तैयार कर दिया है। अब हम पर निर्भर करता है कि हम इसमें आखिरी रूप कैसे देते हैं। यह वही सांझेदारी है, जिसके बारे में मैंने पिछले सत्र में बताया था। जीवन एक सह-रचनात्मक प्रक्रिया है। अपनी ओर से बेहतर प्रदर्शन करो। अपने सपनों का पीछा करो। अपने दिल को खोल दो। अपनी अंतरात्मा के लिए काम करो। सक्रिय बनो। सुबह जल्दी उठो व अनुशासित जीवन जीयो। अपने संपूर्ण अंतराल को भरने के लिए जो कर सको, उसे अवश्य करो, रीसाइकलिंग बंद करो और चार जागरणों को अनुभव करो। तभी और केवल तभी - सब कुछ अपने हाथ से जाने दो और जो सामने आए, उसे धन्य भाव से स्वीकारो और यह जानो कि तुम्हारे लिए यही सब बेहतर है।

मनुष्य की संभावना के प्रति जूलियन के विश्वास ने मुझे भावुक कर दिया। वे एक ऐसे

समाज में विश्वास रखते थे, जहां तकरीबन हर व्यक्ति इसी धारणा के साथ जीता था कि हम सभी महान बन सकते हैं। कहीं न कहीं, हमें हमेशा यही झूठ सिखाया गया कि महानता तो केवल चुने हुए कुछ लोगों की धरोहर होती है। किसी ने हमें राह में यह हमेशा के लिए सिखा दिया था कि हमारे जीवन असाधारण बनने के लिए नहीं बने। जूलियन इससे अलग जानते थे। वे जानते थे कि हमें बड़े दांव खेलने के लिए ही रचा गया है। वे समझते थे कि हमें इसी तरह रचा गया है कि हम संसार में अपनी चमक बिखेर सकें। वे इस सत्य को जानते थे कि इस ग्रह पर कोई अतिरिक्त मनुष्य नहीं है और हम सभी अपने आसपास के लोगों के प्रति सेवाभाव रखने के कर्तव्य से बंधे हैं।

"मैं कल शहर छोड़ कर जा रहा हूं क्योंकि मेरा अगला काम इंग्लैंड में है। कल शाम को नौ बजे की उड़ान है। दोस्त! खेद से कहना पड़ता है कि तुम्हें छोड़ कर जाना होगा। तुम जो बन गए हो और जिस रूप में सामने आ रहे हो, वाकई उसके लिए मैं बहुत गर्व का अनुभव करता हूं। तुम्हारे साथ जो भी घट रहा है, तुम सही मायनों में इसे पाने के अधिकारी हो। मैंने तुम्हें रास्ता दिखाया और उचित विवेक बुद्धि प्रदान की, परंतु तुम्हारे पास मेरी बुद्धिमता को जीवन में उतारने का साहस व सामान्य ज्ञान था। **यदि हम विवेक बुद्धि को प्रयोग में नहीं लाते, तो उसका होना भी कोई मायने नहीं रखता।"**

मैं यकीन नहीं कर सका कि जूलियन मुझे छोड़ कर जा रहे थे। मैं इस अल्प संपत्तियों के स्वामी से दिली लगाव रखने लगा था, जिन्हें अच्छी कारें चलाने और कभी–कभी आलीशान सूट पहनने का भी शौक था। मैं उन्हें मन ही मन बहुत मान देने लगा था और उनकी भलाई के लिए चिंतित रहता था। ईमानदारी से कहूं तो थोड़ा डर भी लगने लगा था कि अब सब सीखने के बाद, मुझे इस पथ पर अपने मार्गदर्शक के बिना चलना होगा। हमेशा की तरह जूलियन भांप गए कि मेरे दिल में क्या चल रहा था।

"डार! तुम जानते हो कि तुम कभी अकेले नहीं रहोगे। अब साशा तुम्हारे साथ है। और तुम्हें पता होना चाहिए कि इस राह में कुदरतन तुम बहुत से जिज्ञासुओं को अपनी ओर आकर्षित करोगे। तुम्हें अपनी राह में इतना समर्थन मिलेगा, जितना तुमने कभी कल्पना भी नहीं की होगी। कृपया चिंता मत करो और हां, याद रखना अंतत: सारे उत्तर तुम्हारे ही भीतर हैं। तुम्हें किसी गाइड की आवश्यकता नहीं है। यह यात्रा केवल इसलिए नहीं कि तुम्हें थोड़े से समय में बहुत कुछ याद करना है बल्कि तुम्हें उन बातों को याद करना है, जिन्हें तुम भूल गए हो। सुनहरे बुद्ध पहले से तुम्हारे भीतर उपस्थित हैं। केवल तुम्हें धूल की परतें हटानी हैं और तब ये सारा ब्रह्माण्ड तुम्हारा होगा। यहां सब कुछ तुम्हारी भलाई के लिए ही होगा।"

"धन्यवाद जूलियन! आप जानते हैं, अब मैं आपको अपने पिता के रूप में चाहने लगा हूं।"

"जानता हूं। धन्यवाद। मैं तुम्हारे सितारे को परवान चढ़ते देखूंगा। तो कल सुबह पांच बजे मिलते हैं। मैं चाहता हूं कि तुम मुझे रोलिंग हिल्स कब्रगाह में मिलो। मैं जानता हूं, तुम जानना चाहते हो कि मैं वहां भेंट क्यों करना चाहता हूं पर जवाब भी जल्द सामने आ

जाएगा।"

जूलियन ने मुझे अपनी जानी-पहचानी बड़ी सी गलबांही दी और फिर धीरे-धीरे सीढ़ियों से उतरते चले गए।

मैंने उन्हें एक भिखारी को हैलो बोलते हुए, पार्क में जाते देखा। उन्हें जाता देख, मेरी आंखें भर आईं। जूलियन के बिना मेरे जीवन में कितना बड़ा शून्य आ जाएगा।

मैंने हाथ में पकड़े कागज़ को देखा। वहां सात नियम लिखे थे और मैं जानता था कि वे कठिन समय में मेरे सहायक हो सकते थे। वहां लिखा था:

पहला नियम : याद रखो कि जीवन में ऋतुएं आती-जाती रहती हैं। हर इंसान को अपने जीवन में कुछ कठोर शीतऋतुओं को सहन करना ही होगा तभी वह बेहतरीन ग्रीष्म का आनंद ले सकेगा। यह कभी मत भूलना कि शीतऋतु हमेशा नहीं रहती।

दूसरा नियम: होप क्लब का हिस्सा बनो। जब तुम कठिनता से भरे दौर से गुज़रते हो तो बड़े, सुंदर और लगभग असंभव दिखने वाले लक्ष्य, तुम्हें प्रेरित करने के लिए आलीशान साधन बनते हैं। मैंने तुम्हें एक बार विंसी के शब्द बताए थे। उन्हें कभी मत भूलना, 'जब तुम सितारों को अपनी मंजिल़ बना लेते हो तो किसी भी तूफान का रूख .मोड़ सकते हो।' जब तुम अपने उन महान व भले लक्ष्यों की ओर बढ़ रहे हो, जो तुम्हारी अंतरात्मा के स्वर से जुड़े हैं, तो वहां पहुंचने की इच्छा ही तुम्हें हर कठिन दौर से बाहर ले आएगी और तुम जिज्ञासु के पथ पर चल सकोगे।

तीसरा नियम: यह बात हमेशा याद रखो, हम प्राय: अपनी पीड़ाओं से ही जन्म पाते हैं। इस दौरान हमें चोट तो आती है परंतु जब हम इनसे गुज़र जाते हैं, तो ये जख़्म भी भर जाते हैं। जब पानी से भरा जग फ़र्श पर गिर कर टूट जाता है तो जो उसमें छिपा था, वह बाहर आने लगता है। अगर जिंद़गी में ऐसा ही कोई मोड़ आए तो जान लें कि वह आपके भीतर एक ऐसी दरार पैदा करने आया है जिसके बाद आपके भीतर छिपा सारा प्यार, ताकत व संभावना निखर कर दुनिया के आगे आ जाए। और किसी टूटी हुई हड्डी की तरह, हम उन्हीं टूटे हुए स्थानों पर और ज्यादा मजबूत हो जाते हैं।

चौथा नियम: असफलता एक चुनाव है। जिस व्यक्ति ने झुकने से इंकार कर दिया हो, उसे कोई झुका ही नहीं सकता। मैंने गो गैट्टर पुस्तक का नाम लिया था, वह तुम्हारे लिए बहुत सहायक हो सकती है। इसे प्राय: पढ़ते रहना और मन ही मन यह तय कर लेना कि भले ही तुम्हारे साथ जो भी हो, तुम अपने सच्चे व प्रामाणिक पथ पर चलते रहोगे। इस तरह तुम अपने जीवन में वास्तविक सफलता का स्वाद पा सकते हो।

पांचवां नियम: अक्सर हम कठिन समय में हार मानने की प्रवृत्ति रखते हैं। जब भी कठिन

समय आए तो अपनी दिनचर्या बनाए रखो। जल्दी उठो। अपने पवित्र घंटे का उपयोग करो। अच्छी तरह खाओ। व्यायाम करो। कुदरत के साथ समय बिताते हुए, अपने जीवन के सभी चार पहलुओं को संतुलित बनाए रखो। मन, शरीर, भाव व आत्मा आपस में अच्छे तालमेल के साथ जुड़े होने चाहिए।

छठा नियम: अपनी भावनाओं को महसूस कीजिए। जब भी आप पर कठिन समय आएगा लोग कहेंगे कि आप अपनी विचारधारा को सकारात्मक बनाए रखें। ऐसी सलाह कारगर नहीं होती। माना कि आप पिछले शीशे को ताकते हुए, कार को आगे की ओर नहीं ले जा सकते, अतीत के साथ जीना गैरसेहतमंद होता है। हमें किसी भी नकारात्मक घटना को सकारात्मक का दर्जा देने के लिए बहुत जल्दबाज़ी नहीं दिखानी चाहिए। इस तरह आप अस्वीकृति की अवस्था में आ जाएंगे। ठेस, क्रोध या उदासी की उन भावनाओं को महसूस कीजिए, जो आपके भीतर से उमड़ रही हैं। उनके साथ रहने में कोई हर्ज़ नहीं है। ऐसा करना सेहतमंद होगा। इस तरह उनसे मुक्ति पाने में भी मदद मिलेगी। उनके साथ उलझ कर बैठना गलत होगा। उनके बीच एक संतुलन बनाए रखना होगा। उन भावनाओं को महसूस करो, जो आपके भीतर उमड़ रही हैं ताकि वे भीतर ही जड़ें न बना लें। उन्हें स्वीकार करें ताकि वे कुदरतन आपसे अलग हो सकें। इसके साथ ही अपनी बौद्धिक क्षमता का उपयोग करते हुए, यह भी देखें कि हर अंधेरी रात के बाद दिन का प्रकाश दिखाई देता है। यह कोई वैज्ञानिक प्रक्रिया नहीं है और अंतत: आपको वही करना चाहिए, जो आपको उचित जान पड़े।

सातवां नियम: याद रखें, बड़े से बड़ा कठिन समय क्यों न आए, आप कभी अकेले नहीं होते।

मैंने उस कागज को मोड़ लिया। जूलियन की विवेक बुद्धि गहन होने के साथ-साथ व्यावहारिक भी थी। हालांकि मैं इस बारे में निश्चिंत नहीं था, जो उन्होंने सातवें नियम में, अकेले न रहने के बारे में लिखा था। मैंने यही माना कि समय व अनुभव स्वयं ही उस उत्तर को भी मेरे लिए खोज लाएंगे। मैं जिस जीवन को खोज रहा था, वह किसी बेहतरीन अध्यापक से कम नहीं थी।

मैं वहीं सीढ़ियों पर करीबन एक घंटा बैठा रहा। लोगों को वहां से आते-जाते और आकाश में उड़ते पक्षियों को देखता रहा। मैंने सूरज की किरणों को अपने चेहरे पर अनुभव किया और एक हल्की सी हवा मेरे बालों को सहला गई। जूलियन कल मुझे छोड़ कर चले जाएंगे। मेरे कोच चले जाएंगे। वे मेरे जीवन में कितना कुछ लाए हैं। मैंने संकल्प लिया कि मैं भी वह सब लौटाऊंगा।

अध्याय 10

जिज्ञासु जाग्रत हो उठता है।

जब आप किसी महान उद्देश्य, किसी असाधारण परियोजना से प्रेरित होते हैं तो आपके सभी विचार अपना बांध तोड़ देते हैं। आपका मस्तिष्क सीमातीत हो जाता है। आपकी चेतना हर दिशा में प्रवाहित होने लगती है और आप स्वयं को एक नए, महान व अद्भुत जगत में पाते हैं। सुप्त शक्तियां, विभाग तथा प्रतिभाएं जीवंत हो जाते हैं और आप स्वयं को एक ऐसे महान व्यक्ति के रूप में पाते हैं, जिसके बारे में आपने कभी सपने में भी नहीं सोचा था।

–पतंजलि

जब मैं रोलिंग हिल्स कब्रगाह की ओर जा रहा था तो सूर्य उदय हो रहा था। यह छोटी व अनजान सी कब्रगाह, शहर से बाहर एक ऐसे स्थान पर स्थित थी, जो अपने खुले स्थानों व हरे–भरे मैदानों के लिए जाना जाता था। मैं हाई–वे से हट कर, एक ऐसी चौड़ी सड़क पर आ गया जो मुझे एक झील के पास से ले गई, जहां मैं बचपन में अपने पिता के साथ मछली पकड़ने आया करता था।

वहां पहुंचा तो तीव्र स्वर में मंत्रजाप सुनाई दिया। जब मैं कार से बाहर आया तो एहसास हुआ कि किसी ने ग्रेगोरियन चैंट की सीडी चला रखी थी। अभी सुबह की हल्की धुंध बाकी थी और साथ ही उस जाप ने अद्भुत सा समां बांध रखा था। चारों ओर एक रहस्य सा छाया था पर जूलियन का कोई पता न था।

मैं उस छोटी सी इमारत की धूल भरी पगडंडी पर चल दिया, जो एक घास से भरी पहाड़ी पर स्थित थी। जब मैं ढलान पर चढ़ा, तो दूर तक दिख रहे खेतों पर नज़र पड़ी और इसके साथ ही मैं उन सभी जीवनों पर भी विचार करने लगा, जो उनसे जुड़े थे। इसके अलावा मुझे यह भी एहसास हुआ कि अगर शास्वतता के मापदंड से देखा जाए तो सबसे लंबा जीवन भी छोटा जान पड़ता है। हम अपने जीवन में छोटी–छोटी तुच्छ बातों पर इतना

ध्यान देते हैं कि अहम बातों को भूल ही जाते हैं। इसके साथ ही जीवन के उस रूप को भी नहीं सराह पाते, जो हमारे पास से गुज़र जाता है। प्राय: जब आंख खुलती है तो बहुत देर हो चुकी होती है और हमारे बेहतरीन वर्ष हाथों से निकल चुके होते हैं।

मैंने अपने जीवन के तकरबीन वर्ष नाम व यश पाने में बिता दिए। हालांकि, मैंने जितना भी पाया, वह मेरे लिए कभी पर्याप्त नहीं रहा। मानो यह कोई लत थी। किसी भी चीज़ से इसकी पूर्ति नहीं होती थी और भले ही मैं इससे कितना भी उलझ लूं, हर बार मुझे ही हार का सामना करना पड़ता था। इसी राह मैं, मैंने वह सब भी खो दिया, जो मेरे लिए सबसे अधिक मायने रखता था। मैं जानता था कि मैं फिर कभी वैसी भूल नहीं करने वाला था। माना कि बाहरी सफलता मायने रखती है। मुझे यह तथ्य भी पसंद है कि जूलियन का दर्शन निजी समृद्धि के लिए धन कमाने को बुरा नहीं मानता, इसके कारण ही तो संसार में रह कर, अच्छी वस्तुएं पाई जा सकती हैं। दरअसल, उनका तो यह कहना था कि ये सभी गतिविधियां बहुत ही सकारात्मक थीं। हम सभी आध्यात्मिक जीव हैं परंतु हम एक भौतिक संसार में जी रहे हैं और हमें इस संसार से मिलने वाले भौतिक उपहारों को भोगते हुए, किसी भी प्रकार के अपराधबोध से घिरने की आवश्यकता नहीं है। जूलियन यही कहना चाहते थे कि इन बातों को अपने महानतम लक्ष्य से ऊपर नहीं मानना चाहिए। यह वास्वत में अपनी प्राथमिकताओं को वरीयता देने की बात थी और अपने बृहत्तर स्व को जागृत करने के लिए प्राथमिकता सूची में इसे पहले स्थान पर रखना अनुचित है।

जब मैं इमारत के पास पहुंचा तो मंत्रों का स्वर और भी तेज़ हो गया। मैं जानता था कि जूलियन वहीं आसपास ही कहीं थे। नि:संदेह यह भी उनके गैर–पारंपरिक कोचिंग सत्र का ही एक हिस्सा था। मेरे चेहरे पर एक मुस्कान खेल गई।

“जूलियन! मैं जानता हूं कि आप यहां है। आप बताएं कि आप कहां हैं?”

कोई जवाब नहीं आया तो मैं और ज़ोर से बोला, “जूलियन! मुझे पता है कि आप कहां हो। जल्दी सामने आ जाओ।”

फिर मैंने धुंध के कुहासे के बीच एक साए को अपनी ओर आते देखा। वे जूलियन ही थे। उन्होंने अपना चोगा पहना हुआ था और टोपी से अपना चेहरा ढांप रखा था। उनके दोनों हाथों में ताज़े फूलों के गुलदस्ते थे। उनकी पीठ पर वही झोला टंगा था।

“गुडमार्निंग डार!” वे गंभीरता से बोले। “मैं आज एयरपोर्ट के लिए रवाना हो जाऊंगा पर तुमसे मिलना भी जरूरी था और यह हमारे कोचिंग सत्र की आखिरी भेंट है। मैं तुमसे आत्मजागरण के सातवें चरण की जानकारी बांटना चाहता हूं। कृपया, मेरे पीछे आओ।” जूलियन ने मुझे संकेत किया और हम कब्रगाह की ओर बढ़ते चले गए। मंत्र संगीत अब भी जारी था।

हम केवल एक ही मिनट चले होंगे कि जूलियन एक ताजी खोदी गई कब्र के सामने ठहर गए। वे घुटनों के बल झुके और उस जगह के आसपास अपने साथ लाए फूल गोलाई में

बिछा दिए। वे पूरी तरह से शांत थे और देख कर लग रहा था कि वे उस स्थान को बहुत ही आदर की दृष्टि से देखते थे।

“जूलियन! यह किसकी कब्र है?” मैंने हौले से पूछा

“तुम्हारी।” जवाब आया।

मैं समझ नहीं पाया कि जूलियन इन शब्दों के साथ कहना क्या चाहते थे। जब हम कठिन दौर से गुज़रते हैं तो लोग हमसे ऐसी बातें करते हैं या निश्चित तरीकों से पेश आते हैं। हम मनुष्य के रूप में जितनी पीड़ा भोगते हैं, उनमें से अधिकतर तो इसी तथ्य से उपजती है कि हम अपने साथ घट रही घटनाओं के लिए पहले ही धारणाएं बना लेते हैं जैसे हम काम पर गए और किसी सहकर्मी ने हमें अभिवादन नहीं किया। हम मान लेते हैं कि वह हमसे नाराज़ है। यह हमारी गलत धारणा है। सच यह भी तो हो सकता है कि उसका बच्चा बीमार हो और उसका ध्यान उसी ओर लगा हो। यहां हमारी धारणा के सच को जानने का एक तरीका यही हो सकता है कि हम अपनी गलतफहमी को दूर करते हुए, उससे कोमल शब्दों में,इस बारे में पूछें। हमें बस संप्रेषण कला में थोड़ा माहिर होना होगा पर अधिकतर लोग ऐसा नहीं करते। पिछले कुछ सप्ताहों में, मैंने सभी परिस्थितियों में सच को तलाशने का संकल्प ले लिया था। मुझे एहसास हुआ था कि पिछले कुछ समय में, मैं अक्सर कुछ खास हालातों को गलत अर्थों में लेता रहा था और अब मैंने तय कर लिया था कि जब मुझे और अधिक जवाबों की आवश्यकता होगी तो मैं अपना ही सच बोलूंगा।

“जूलियन, आप क्या कह रहे हैं? यह मेरी कब्र कैसे हो सकती है? मैं तो मरा नहीं हूं। मैं तो पहले कभी इतना सेहतमंद और इतना खुश नहीं रहा। पहले कभी इतना जीवंत अनुभव नहीं किया। आप यह क्या कह रहे हैं। मैं थोड़ी उलझन में हूं?” “दोस्त! धीरज रखो! यह कब्र उस अंतिम पाठ का रूपक है, जो मैं तुम्हें देना चाहता हूं। यह कब्र तुम्हारी कब्र हो सकती है। यह कब्र मेरी कब्र हो सकती है। यह किसी की भी कब्र हो सकती है। अहम बात यही है कि अपने बृहत्तर स्व या आत्मा को जागृत करना है तो तुम्हें जीते जी मरना होगा।”

“आपका अभिप्राय क्या है?”

“अधिकतर लोग अपना जीवन इस तरह जीते हैं मानो उनके पास दुनिया में जीने के लिए बहुत वक्त है। वे इच्छा रखते हैं कि उनके पास दिन में और अधिक समय हो और वे फिर भी उस समय को नष्ट करते हैं। वे भविष्य में घटने वाली घटनाओं की प्रतीक्षा करते हुए जीवन ही जीना छोड़ देते हैं। ऐसे लोग कहते हैं, एक बार बड़ी पदोन्नित मिल जाए, मैं अपने बच्चों के साथ अधिक समय व्यतीत करूंगा या जब बच्चे बड़े हो जाएंगे तो मैं अपने जीवन का भरपूर आनंद लूंगा, या थोड़ा पैसा कमा लूं, उसके बाद अपने सपनों को साकार करने के बारे में सोचूंगा। इस तनावपूर्ण समय से बाहर आ जाऊं तो इसके बाद अपनी सेहत का ध्यान रखना आरंभ करूंगा। जीवन किसी के लिए प्रतीक्षा नहीं करता। मैं तुम्हें जो सिखा सकता हूं, उसमें से सबसे अहम बात यह है कि तुम्हें नियमित रूप से अपनी नश्वरता के साथ संपर्क

साधना होगा। अपने-आप को याद दिलाना होगा कि समय तुम्हारा सबसे कीमती संसाधन है। तुम अपने-आप को केवल यह कह कर नहीं बहला सकते कि आने वाले समय में तुम कुछ बनने का प्रयास करोगे। हो सकता है कि कल मैं या तुम जीवित ही न रहें। जैसा कि मैंने 'क्यू' होटल में हुई भेंट के दौरान कहा था : हममें से कोई नहीं जानता कि हमारा समय कब समाप्त हो जाएगा। हर दिन ऐसे जीया जाना चाहिए मानो इस धरती पर तुम्हारा अंतिम दिन हो। जिस भी व्यक्ति से मिलो, उससे ऐसे पेश आओ मानो तुम दोनों की शायद दोबारा भेंट न हो। बड़े खतरे मोल लो और निजी महानता को पाने के लिए सामने आए किसी भी अवसर को हाथ से जाने मत दो। मैं तुम्हें सलाह दूंगा कि तुम हर रविवार या कुछ रविवार तक सुबह जल्दी उठ कर यहां आओ। अकेले आना और इसे एक नियमित अनुष्ठान मान कर निभाओ।"

"और मुझे यहां आ कर क्या करना चाहिए?"

"तुम्हें अपनी मृत्यु के साथ संपर्क साधना होगा। उस जीवन के बारे में सोचो, जो तुम्हें लगता है कि तुम रच सकते हो और स्वयं को याद दिलाओ कि अगर तुमने हर दिन इसे न जीया या इसके साथ सांस न ली तो तुम अपने-आप का अनादर कर रहे हो। इस धरती पर हर एक क्षण अपने-आप में किसी महान अवसर से कम नहीं है। डार! मैंने तुमसे कहा था न कि इस धरती पर जब तुम हर दिन सुबह सो कर उठते हो तो वह अपने-आप में किसी बड़े उपहार से कम नहीं होता। तुम्हारी नियति में लिखा है कि तुम्हें एक दिन चमकना है। यहां आओ ताकि तुम जीवन के साथ नए सिरे से संपर्क साध सको। इस बारे में सोचो, इस धरती पर आज जितने भी लोग सुबह उठेंगे, उनमें से अनेक आज शाम तक जीवित नहीं रहेंगे। उनमें से अनेक ने तो कल्पना तक नहीं की होगी कि उनके साथ ऐसा होने वाला है। उन्होंने भी उचित समय के लिए जाने कितनी योजनाएं बना रखी होंगी। कभी भी कोई मरने की योजना नहीं बनाता।"

"यह अंतिम वाक्य मुझे गहरा दंश दे गया। मैं जानता था कि मैं बहुत अधिक आनंद व उत्साह के साथ जी रहा था, जैसा मैंने अपने जीवन में कभी अनुभव नहीं किया था पर अब भी मैं कुछ छिपा रहा था। मैं अब भी साशा को अपना उन्मुक्त प्रेम नहीं दे पा रहा था। मैं उसके लिए कितना कुछ हो सकता था। जब मैंने इस बारे में गहनता से विचार किया तो पाया कि यह प्रतिरोध भय के कारण ही था। मुझे भय था कि यदि मैंने अपना दिल खोल कर उसके आगे रख दिया तो शायद वह मुझे ठेस दे सकती थी या मेरा अनुचित लाभ उठा सकती थी। दरअसल मेरे भय का कोई वास्तविक आधार नहीं था – साशा कुल मिला कर एक अद्‌भुत स्त्री थी। परंतु प्राय: भय निराधार ही होते हैं, वे हमारे द्वारा रचे गए भ्रम ही तो हैं। और वे वास्तव में केवल छह इंच गहरे ही होते हैं।"

मैं अपने बच्चों के साथ जितने अच्छे तरीके से समय बिता सकता था, उससे कम ही बिता रहा था। मैं जानता था कि मैं एक उल्लेखनीय पिता बन सकता था और उसी क्षण में, मैंने अपने-आप से वादा किया कि मैं ऐसा ही करूंगा। मैं इस बारे में जितना विचार कर रहा

था, उतना ही जान पा रहा था कि इस दिशा में और क्या कुछ किया जा सकता था। मैं अपने उद्योग के महानतम नेताओं में से क्यों नहीं हो सकता था? मैं हज़ारों नहीं तो सैंकड़ों के जीवन में उल्लेखनीय योगदान क्यों नहीं दे सकता था? मैं व्यक्तिगत प्रबोध के उस चरण तक क्यों नहीं जा सकता था, जिसे पाने के लिए आज तक मैंने कल्पना तक नहीं की थी?

"क्या तुम्हें याद है कि मैंने स्कूलहाउस सत्र में तुम्हें एक अभ्यास करने को कहा था?" जूलियन ने पूछा

"मैं उसे कैसे भूल सकता हूं?" मैंने कहा। "आपने मुझे मेरा मृत्युलेख लिखने को कहा था। आपने आग्रह किया था कि मैं अपने जीवन की कथा लिखूं ताकि अपने जीवन को जीने का विवेक तथा बुद्धि पा सकूं। मैं अंत तक अपने-आप को कहां देखने का सपना देखता था, यदि वह जान लेता तो अपने हर दिन के हर घंटे में ऐसे चुनाव कर सकता था जो मुझे वहां ले जाने में सहायक होते।"

"बिल्कुल सही कहा!"

"और मैं अक्सर सुबह उठते ही उन शब्दों को पढ़ता हूं। सुबह के आरंभ के साथ ही उन शब्दों को पढ़ने के कारण मेरे दिन के दौरान सोचने, काम करने व महसूस करने के तौर-तरीकों में भारी बदलाव आया है।

इस तरह मैं बहुत ही नज़ाकत से आत्मजागरण के सातवें चरण में पहुंच सकता हूं...जब मैंने पहले व दूसरे चरण के साथ चलने वाले झूठ को त्यागा था..."

"हां, वही पहला और दूसरा चरण।"

"ठीक। जब तुम उन दो चरणों से गुज़र कर आते हो तो तीसरे चरण में दुनिया को एक नई आंखों से देखते हो। तुम सत्य को पाने लगते हो। तुम्हें पता लगने लगता है तुम्हारे भीतर असीम शक्ति का भंडार छिपा है। तुम्हें यह सजगता प्राप्त होने लगती है कि अब तुम अपने-आप को किस तरह छलते आ रहे थे, धोखे में रखते आ रहे थे। तुम देखने लगते हो कि हमारा यह संसार कितना सुंदर है और तुम्हारे लिए कितना आनंद प्रतीक्षारत है। दोस्त, इसके बाद क्या आता है?" जूलियन ने पूछा।

"चौथा चरण। जब जिज्ञासु अपने सत्य के पथ पर आगे चलता है तो उसके मन में बहुत से प्रश्न सिर उठाने लगते हैं। इस चरण में जिज्ञासु अपने मार्गदर्शक व गुरू की सहायता चाहता है। जिज्ञासु भी नई जानकारी अथवा उच्चतर सजगता ग्रहण कर रहा है, वह उसे भ्रम की ओर ले जाने लगती है।"

"हां, जिज्ञासु अपने जीवन में जिन बुनियादों को ठोस समझ कर खड़ा था, वे भरभरा कर गिरने लगती हैं। यह संसार कैसे काम करता है और उसकी इसमें क्या भूमिका है, उससे जुड़ी सभी धारणाओं व मान्यताओं के बारे में मूल्यांकन होता है और वह नए उत्तर चाहता है। पांचवां चरण अपने-आप में बहुत उथल-पुथल और अव्यवस्था से भरा होता है। यह

सुंदर व्यक्तिगत विकास के लिए भी उपयुक्त काल है। हो सकता है कि इल्ली अपने खोल में छिपी अंधकार का सामना कर रही हो पर वह नहीं जानती कि इसके बाद उसके जीवन में कितना बड़ा बदलाव आने वाला है।"

"हां, एक तितली जन्म लेने वाली है। मैंने पूरे आत्मविश्वास के साथ कहा।"

"समझ गए। बहुत अच्छी बात है। इसक बाद वह अनिवार्य परीक्षा आती है, जिसे इस पथ पर चलने वाले हर व्यक्ति को देना ही होता है। महान विजय से ठीक पहले, जीवन अपने यात्री के लिए बड़ी परीक्षा का आयोजन करता है। उस समय में हम कैसे अपनी प्रतिक्रिया देते हैं, वही कई प्रकार से हमारी नियतियों को परिभाषित करती है। उस समय सबसे बेहतर कदम यही होगा कि तुम साहसी बन कर आगे का रूख करो। और इसके बाद ही अंतिम चरण सामने आ जाता है, जिसे हम तुम्हारा महान आत्म–जागरण कह सकते हैं। हम दोनों ने जो भी वक्त एक साथ बिताया, तुमने हर चरण को आंशिक रूप से अनुभव किया है। हां, मैंने तुम्हारे लिए कुछ दृश्य रचे ताकि प्रक्रिया का प्रत्येक अंश प्रत्यक्ष रूप से अनुभव हो सके। मैंने ऐसा इसलिए किया ताकि तुम्हारी समझ विकसित हो और तुम्हें सीखने में मदद मिले। परंतु तुमने जो भी अनुभव लिए, उनमें से बहुत सारे कुदरत न तुम्हारे पास आए। जब तुमने झूठ को छोड़ कर, उठने का निर्णय लिया, तुम स्वयं पुस्तकों व गाइडों को पढ़ने लगे और अपने विवेक की आधारशिला रखी। और जब तुमने ऐसा किया तो तुम्हें स्वयं उस भ्रम व रूपांतरण का अनुभव हुआ, जो पांचवें चरण में प्रकट होता है। और चूंकि तुमने हार नहीं मानी इसलिए तुम्हारे जीवन में वास्तविक रूपांतरण प्रकट हुआ है। यह सब सुनने में कितना विचित्र लग रहा है, जबकि बहुत पुरानी बात नहीं है।

"बेशक। जूलियन, मेरा जीवन पहले से बहुत सुंदर हो गया है। मैं पहले कभी इतना प्रसन्न नहीं रहा और इसके लिए मैं आपका आभार प्रकट करता हूं।"

"डार! तुम्हारा स्वागत है। और जब मैं चला जाऊंगा तो जीवन तुम्हारे सामने कुछ अनुभव तथा परिदृश्य उपस्थित करेगा और तुम कुछ चरणों को मेरे बिना ही पार करोगे। जीवन ही तुम्हारा कोच व सबसे श्रेष्ठ अध्यापक होगा – अगर तुमने सब कुछ उसके हाथ में छोड़ा तो!"

जूलियन ने एक हाथ अपने चोगे पर हुई कशीदाकारी पर फिराया।

"सातवां चरण अंतिम चरण है। पथ पर इस मंजिल तक आने का अर्थ होगा कि तुम प्रबुद्ध हो रहे हो। जैसा कि मैंने पहले भी कहा, बहुत कम लोग ही इस चरण तक आ पाते हैं। परंतु अब यह बदल जाएगा। मैं चाहता हूं कि तुम इस संदेश को उन लोगों तक पहुंचाओ जो तुम्हारे जीवन को बहुत आत्मीयता से छूते हैं। मुझे ऐसा एहसास है कि मैंने तुम्हें जो भी दिया, उसके बदले में तुम मुझे कुछ लौटाना चाहते हो। कृपया जान लो कि मैं सांसारिक वस्तुओं की चाहना नहीं रखता। बेशक मुझे अपनी पुरानी फरारी चलाने में आनंद आता है या वैसे सूट पहनना पसंद है, जो उस दिन अदालत में पहना था। परंतु वे मेरे लिए बहुत मायने

नहीं रखते। मैं दुनिया को बदलना चाहता हूं। मेरे दोस्त, मैं अधिक से अधिक लोगों को इस प्रभाव में लेना चाहता हूं। यदि आध्यात्मिक रूप से कहा जाए तो मैं एक विषादपूर्ण वकील था जो अपने जीवन से संघर्ष कर रहा था। मेरा जीवन पूरी तरह से असंतुलित और नाटकीय रूप से अनियंत्रित था। परंतु अब मेरी ओर देखो, मैंने उन पर्वतों में जो सीखा, वह कारगर रहा और मैं चाहता हूं कि मैं उन प्रबुद्ध जन की संगति से जो भी पाया व सीखा, उसे प्रत्येक व्यक्ति को जानने व प्रभावित होने का अवसर प्राप्त हो। मैं तुमसे केवल यही चाहता हूं कि मैंने तुम्हें जो भी बताया, तुम उसे दूसरों के साथ भी बांटो। कुछ सीखने का सबसे बेहतर तरीका यही है कि सिखाया जाए, तो इस प्रक्रिया में तुम खुद को भी लाभ दे सकते हो।"

जूलियन मेरे पास आए और दोनों हाथ मेरे कंधों पर रख दिए। उन्होंने एक बार नीले आकाश को देखा व अपनी आंखें बंद कर लीं।

"डार! तुम एक बहुत ही होनहार छात्र रहे हो। आज तुम्हारे जीवन में सब कुछ जितना अच्छा दिख रहा है, उसे देख कर मेरी प्रसन्नता की सीमा नहीं है। तुम अद्‌भुत स्थानों की ओर बढ़ रहे हो और तुम कल्पना नहीं कर सकते कि तुम्हारे लिए कौन–कौन से कौतुक प्रतीक्षारत हैं। मैंने उस समय का भरपूर आनंद लिया है, जो हमने एक साथ बिताया। तुम मेरे साथ बहुत ही दयालुता, आदर व प्रेम के साथ पेश आए। कृपया अपनी अंतरात्मा के भीतर से उठ रहे उस धीमे स्वर को सुनना बंद मत करना, जो अब तुम्हारे भीतर से उठने लगा है। यह तुम्हारे दिल की पुकार है और इस पर भरोसा किया तो यह वहीं ले जाएगी, जहां तुम जाना चाहते हो। तुम्हें जो प्रतिभाएं दी गई हैं, उन्हें संसार के सामने आने दो। अपने जीवन में प्रत्येक को मान देते रहो और भले ही जो भी हो जाए, इसी पथ पर चलते रहो। ऐसा करने से तुम्हारा जीवन बहुत महान होगा और तुम एक बड़ी विरासत छोड़ सकोगे।"

जूलियन ने अपनी आंखें खोलीं। उसके गाल पर एक आंसू खेल गया और चोगे तक बह आया। उन्होंने चोगे पर बने उस निशान को देखा व हंसने लगे।

"हर अंत एक प्रारंभ है। कोच, आपने कुछ देर पहले ही मुझे यह सिखाया है, आपको यह भूलना नहीं चाहिए।" मैंने आनंदी स्वर में कहा

"दोस्त! बहुत सही कहा पर मेरे लिए अक्सर उन लोगों से विदा लेना कठिन हो जाता है, जिन्हें मैं प्यार करता हूं। जब से मैं भारत से आया हूं, तुम्हारे सहित मैंने जितने भी लोगों को कोचिंग दी है, वे मेरे हीरो हैं। मैं तुम्हारी वीरता देख विनय से भर उठा हूं। काश मैं हमेशा यहां रहते हुए, तुम्हारा मार्गदर्शन कर सकता परंतु तुम्हें इसकी आवश्यकता नहीं है और न ही ऐसा मेरे भाग्य में लिखा है। जाने से पहले, अगर मैं कर सकता हूं, तो अवश्य करना चाहूंगा।"

"बेशक जूलियन! आप जो भी करना चाहेंगे, मुझे कबूल होगा।"

जूलियन ने अपना झोला उतारा व उसे खोला। उन्होंने एक जीर्ण–शीर्ण चमड़े के आवरण वाली डायरी खोली और एक पृष्ठ निकाला। कब्र के किनारे खड़े हो कर, जूलियन तेज़ स्वर में बोले: 'मैं कुछ ऐसा करना चाहता हूं, जो मैंने कभी नहीं किया। मैं तेज स्वर में

अपना मृत्युलेख पढ़ना चाहता हूं। फिर वे निम्नलिखित शब्दों को बोलने से पहले थोड़ा थमे :

जूलियन मेंटल का मृत्युलेख

जूलियन मेंटल एक ऐसे संन्यासी थे जो मानवीय आत्मा की शक्ति में विश्वास रखते थे और उनका मानना था कि यह धरती पर एक कल्याणकारी बल हो सकता है। वे एक आदर्शवादी थे और एक ऐसे व्यक्ति थे जो सही मायनों में यहविश्वास रखते थे कि हर जीवंत व्यक्ति यदि अपने जीवन की पुकार को सुनने का चुनाव कर ले तो वह एक भारी परिवर्तन या बदलाव ला सकता है।

जूलियन एक सादगीप्रिय व्यक्ति थे। उन्हें अच्छी किताबों, सूर्यास्त, तारों से भरी रात तथा चॉकलेट केक के मोटे से टुकड़े से बेहद लगाव था। सबसे अधिक, जूलियन लोगों से प्यार करते थे और उन्होंने अपना सारा जीवन लोगों को उनकी सही पहचान से मिलवाने में ही लगा दिया।

उन्होंने अपने समय में बहुत सी भूलें कीं परंतु उन्होंने उनसे सबक भी लिए। उन्होंने भी व्यक्तिगत पीड़ा सही परंतु उससे भी फलने-फूलने का अवसर पा लिया।

जूलियन अपने भय से कभी नहीं भागे। उन्होंने उन्हें भगाया और बदले में अपनी आजादी पा ली। वे एक प्रामाणिक, साहसी व स्नेही व्यक्ति थे।

जूलियन कल रात, 108 वर्ष की सुकुमार आयु में चल बसे। उन्होंने अनेक जीवन को अपने परस से धन्य किया था और उनकी अनुपस्थिति अनुभव की जाएगी।

जूलियन के इन शब्दों को सुन कर मैं रोने लगा। जब मैंने मुंह उठा कर देखा तो वे जा चुके थे। मैंने खेत के पार तक देखा पर वे कहीं दिखाई नहीं दिए। उस पहाड़ी पर बनी इमारत से मंत्र के वे स्वर अब भी सुने जा सकते थे और सूरज तेज़ी से चमक रहा था। आकाश में एक भी बादल तक नहीं था।

जब मैं कब्रों पर खुदे पत्थरों के बीच से अपनी राह बनाता निकल रहा था तो अचानक घास में कुछ चमकता दिखाई दिया। मैंने झुक कर उसे उठाया और देख कर दंग रह गया।

वह तो एक छोटे सुनहरे बुद्ध थे, जिन्हें चमड़े के लंबे टुकड़े से लटकाया गया था ताकि उसे गले में पहना जा सके। सुंदरता से गढ़े उस बुद्ध के पिछले हिस्से पर, बहुत छोटे शब्दों में अंकित था:

अपने सर्वश्रेष्ठ अस्तित्व को जगाओ व चमकते रहो
सस्नेह, जेएम

मैंने जूलियन के दिए उपहार को अपने गले में पहन लिया और अपनी कार की ओर चल दिया। मेरे चेहरे पर निरंतर एक मुस्कान बनी हुई थी। मेरा जीवन सुंदर बन गया था।

आत्म–जागरण के सात चरण

पहला चरण: एक झूठ के साथ जीना (अपने–आप को छलने की अवस्था)

दूसरा चरण: चुनावबिंदु (नियंत्रण की प्रवृत्ति का त्याग तथा जंजीरों को तोड़ना)

तीसरा चरण: चमत्कार व संभावना की सजगता (नई आंखों से देखने की अवस्था)

चौथा चरण: गुरूओं से प्राप्त निर्देश (सीखने, गिरने व प्रस्तुत करने की अवस्था)

पांचवां चरण: रूपांतरण व पुनर्जन्म (रिक्त करने व पुन: भरने की अवस्था)

छठा चरण: परीक्षा (परीक्षण व पुष्टि की अवस्था)

सातवां चरण: महान आत्म–जागरण (निर्भीकता की अवस्था)

पांच नियमित श्रद्धापूर्ण कर्म

1. प्रतिदिन सुबह पांच बजे उठें। जो लोग सुबह जल्दी उठते हैं, वे जीवन से सबसे बेहतरीन पाते हैं।

2. अपने दिन के पहले साठ मिनटों को पवित्र मानते हुए अलग रखें। इस समय आप अपने आंतरिक जागरण के लिए कोई भी कार्य कर सकते हैं जैसे प्रार्थना, ध्यान, डायरी लेखन, विवेकपूर्ण साहित्य का पठन–पाठन, अपने जीवन की अवस्था पर मनन आदि। इस तरह आपको अपने अपने जीवन की उच्चतम अवस्था तक आने में मदद मिलेगी।

3. अपनी ओर से दूसरों के प्रति देखरेख, करूणा व चरित्र का ऐसा प्रदर्शन दें, जो किसी ने आपके विषय में सोचा तक न हो। इस तरह प्रचुरता व संतुष्टि आपकी ओर प्रवाहित होंगे।

4. अपनी ओर से कार्य में ऐसी श्रेष्ठता का प्रदर्शन करें, जितना किसी ने आपसे कभी अपेक्षा तक न की हो।

5. अपने–आप को स्नेही व्यक्ति के रूप में सामने आने के लिए समर्पित करें और इस तरह मानें व महसूस करें कि आप इस समय धरती पर सबसे महान व्यक्ति हैं (क्योंकि आप वास्तव में हैं।) इस तरह आपका जीवन पहले जैसा नहीं रहेगा और आप अनेक जीवनों को अपना आशीर्वाद दे सकेंगे।

रॉबिन शर्मा के साथ निजी कोचिंग सेवाएं

1. **द मंथली कोच**
   द मंथली कोच, रॉबिन की मंथ क्लब की बहुत ही प्रख्यात पुस्तक व सीडी है। हर तीस दिन के बाद आप निजी विकास, नेतृत्व, संबंध या व्यावसायिक सफलता आदि विषयों पर लिखी पुस्तकों में से एक के साथ एक सीडी भी पाएंगे जिसमें रॉबिन ने पुस्तक के सारांश बिंदु देने के साथ–साथ यह भी बताया हुआ है कि पुस्तक के ज्ञान को किस तरह व्यावहारिक जीवन में उतारा जा सकता है ताकि आप पहले से कहीं अधिक सफल, भरपूर तथा प्रसन्नमना बन सकें। रजिस्टर करने के लिए कृपया robinsharma.com पर जाएं।
2. **अवेकनिंग बेस्ट सेल्फ वीकएंड ™ (एबीएस)**
   यह रॉबिन का ढाई दिन का व्यक्तिगत रूपांतरण कार्यक्रम है, जिसने दुनिया भर में अनेक लोगों को उनके बृहत्तर जीवन को खोजने तथा आनंद, प्रचुरता, प्रेम व संपूर्णता के नए स्तर को तलाशने में सहायता की है। आजकल एबीएस वीकएंड को सबसे प्रभावी आत्म–अन्वेषण प्रक्रियाओं में से एक माना जा रहा है, इसमें हिस्सा लेने वालों ने पाया कि इस अनुभव ने उन्हें भयमुक्त हो कर, सीमाओं से बाहर आ कर, अपने प्रामाणिक स्वरूप से जुड़ने तथा ऐसा जीवन जीने में मदद की है, जिसका सपना वे हमेशा से देखते आए थे। इसमें दुनिया भर से आए लोगों ने हिस्सा लिया है। यू.के, मैक्सिको, यू.एस., यूरोप व कनाडा आदि देश उल्लेखनीय हैं यदि आप अगले एबीएस कार्यक्रम के लिए रजिस्टर करवाना चाहते हैं या ताजा साक्ष्य पढ़ना चाहते हैं तो coaching@robinsharma.com को भेट दें या हमें coaching@robinsharma.com पर संपर्क करें।
3. **द एलीट परफॉर्मर्स सीरिज़™ (ईपीएस)**
   द एलीट परफॉर्मर्स सीरिज़ शर्मा लीडरशिप इंटरनेशनल का प्रमुख कार्पोरेट कोचिंग प्रोग्राम है, जो इस तरह तैयार किया गया है कि कर्मचारियों को ऐसे उच्च वर्गीय प्रदर्शनकर्ताओं में बदला जा सके, जो अपने क्षेत्र का नेतृत्व करें। प्रतिभागी नाटकीय रूप से उत्पादकता, रचनात्मकता, आवेग, प्रतिबद्धता आदि में वृद्धि की अपेक्षा रख सकते हैं तथा निजी व व्यावसायिक स्तर पर कहीं बेहतर तरीके से सामने आ सकते हैं। इस प्रोग्राम से जुड़े साक्ष्य सारी कहानी स्वयं ही सुना देते हैं या आप स्वयं भी वेबसाइट पर जा कर सुन सकते हैं। आने वाली तिथियों के लिए या अपने यहां द एलीट परफॉर्मर्स सीरिज़ करवाने के लिए robinsharma.com को भेट दें या हमें coabhing@robinsharma.com पर संपर्क करें।
4. **द मास्टर्स सीरिज़™**

प्रति वर्ष, अपनी चर्या के अनुसार रॉबिन शर्मा इस उत्कृष्ट, विश्वस्तरीय साप्ताहिक कोचिंग प्रोग्राम के लिए पांच ग्राहकों को स्वीकार करते हैं। पूरे एक वर्ष के दौरान रॉबिन आपके लिए व्यक्तिगत एक्जीक़्यूटिव/लाइफ कोच की तरह काम करेंगे ताकि आपके व्यवसाय को अकल्पनीय सफलता के स्तरों तक ले जाने में मदद कर सकें और साथ ही आपको व्यावसायिक, भौतिक, व्यक्तिगत या आध्यात्मिक रूप से भी उच्च स्तरीय बनाने में सहायता दे सकें। पिछले ग्राहकों ने रूपांतरणकारी परिणाम पाए हैं।

इन निजी कोचिंग सेवाओं के बारे में अधिक जानकारी पाने के लिए robinsharma.com को भेट दें या निम्न पते पर संपर्क करें:

Al Moscardelli
Vice President of Coaching Services
Sharma Leadership International
Tel.: 1.888. RSHARMA(774.2762)
e-mail : coaching@robinsharma.com

रॉबिन शर्मा के विषय में

रॉबिन शर्मा नेतृत्व, उत्कृष्ट प्रदर्शन तथा आत्म–अन्वेषण जैसे विषयों पर संसार के सर्वोच्च विशेषज्ञों में गिने जाते हैं। उन्होंने अनेक बेस्टसेलिंग पुस्तकें दी हैं, जिनमें द मौंक हू सोल्ड हिज़ फरारी तथा उसकी लोकप्रिय उत्तरकथाएं लीडरशिप विज़डम फ्रॉम द मौंक हू सोल्ड हिज़ फरारी, फैमिली विज़डम फ्रॉम द मौंक हू सोल्ड हिज़ फरारी, हू विल क्राई वैन यू डाई? द सेंट, द सर्फर एंड द सीईओ आदि का नाम ले सकते हैं। ये सभी पुस्तकें amazon.com पर बेस्टसेलर सूची में नंबर वन पर रही हैं। नेशनल मीडिया पर नियमित रूप से बुलाए जाने वाले अतिथियों में से एक रॉबिन ने अपना पीबीएस स्पेशल चलाया और एक हज़ार से भी अधिक टी.वी. तथा रेडियो शो में हिस्सा ले चुके हैं। दुनिया भर में एक प्रमुख वक्ता के रूप में उनकी बहुत मांग है और वे प्राय: गणमान्य हस्तियों के साथ मंच सांझा करते हैं जैसे जैक वेल्क, बिल क्लिंटन, क्रिस्टोफर रीव, डॉ फिल, दीपक चोपड़ा तथा वेन डायर आदि।

रॉबिन एक भूतपूर्व वकील हैं, जिनके पास दो डिग्रियां हैं और उनमें से एक मास्टर्स भी है। वे शर्मा लीडरशिप इंटरनेशनल के विज़नरी सीईओ हैं, यह एक जानी–मानी तथा प्रतिष्ठित लर्निंग सर्विस फर्म है जो उद्यमियों व कर्मचारियों को उनकी उच्चतम व्यावसायिक व निजी संभावना तक पहुंचने में सहायक होती है। यह फर्म एक उल्लेखनीय तथा विशेष रूप से प्रभावी द एलीट परफॉर्मर्स सीरिज़ भी चलाती है जो दो दिन की कोचिंग प्रक्रिया है, इसमें भाग लेने वाले व्यक्तियों को उनके द्वारा किए जाने वाले प्रत्येक कर्म में श्रेष्ठता के प्रदर्शन के लिए तैयार किया जाता है। इसके अतिरिक्त द मंथली कोच प्रोग्राम, मंथ क्लब में रॉबिन की पुस्तक व सीडी भी उल्लेखनीय हैं। रॉबिन अनेक उच्चस्तरीय सीईओ, उद्यमियों तथा ग्रह के सबसे सफल लोगों में से कुछ के टॉप एक्जीक्यूटिव / लाइफ कोच की भूमिका में भी हैं।

रॉबिन का व्यक्तिगत मिशन यही रहा है कि वे लोगों को यह तलाशने में मदद करें कि वे सही मायने में कौन हैं और वे इस तरह कैसे जीएं कि दूसरों के लिए भी उपयोगी व मूल्यवान हो सकें। द रॉबिन शर्मा फाउंडेशन फॉर चिल्ड्रन के माध्यम से उन्होंने अल्पसुविधाप्राप्त बच्चों को उनके सपने पूरे करने में सहायता की है।

रॉबिन शर्मा तथा उनके किसी भी प्रकार के शिक्षण उत्पादों की जानकारी पाने के लिए कृपया निम्न पर संपर्क करें: robinsharma.com दूरभाष: 1.888 RSHARMA। (774.2762)